प्रकाशक : नागरीप्रचारिणी सभा, काशी ।

मुद्रक : शंभुनाथ वाजपेयी, नागरी मुद्रण, काशी ।

प्रथम संस्करण, १२०० प्रतियाँ, संवत् २०३५ ।

ग्रंथावली का परिचय

सोलहवी शती मे, भारत मे जो नवजीवन तरगित हो रहा था उसमे बुंदेलखड के महाराज वीरसिहदेव का एक विशेष स्थान है। उन्होने ओरछा नगर बसाया, वहाँ अनेक भव्य भवन और चतुर्भुज का बडा विशाल तथा सुदर मदिर बनाया एव दतिया मे तो ऐसा प्रासाद निर्माण किया जैसा मध्ययुग से आज तक उत्तर भारत मे बना ही नही। हिंदू वास्तु का यह नमूना ससार के खास भवनो मे से है। हिंदी कविता मे रीति शैली के जन्मदाता आचार्य केशवदास उन्ही के यहाँ राजकवि थे।

इसी बुंदेला राजवश के समुज्वल रत्न स्व० ओरछा नरेश सवाई महेंद्र महाराज सर वीरसिहदेव, के० सी० एस० आई० थे, जिनका प्रगाढ हिंदीप्रेम सराहनीय है। १९९० वि० मे द्विवेदी-अभिनदन-उत्सव के सभापति आसन से काशी मे महाराज ने २०००) वार्षिक साहित्यसेवा के लिये राज्य की ओर से देने की घोषणा की थी। इसी घोषणा का मूर्तस्वरूप देवपुरस्कार है, जिसमें २०००) वार्षिक, एक साल ब्रजभाषा के, दूसरे साल खडी बोली के सर्वोत्तम काव्यग्रथ पर दिया जाता है। तदनुसार, १९९१ वि० मे यह पुरस्कार ब्रजभाषा की 'दुलारे दोहावली' पर श्री दुलारेलाल भार्गव को, १९९२ वि० मे खडी बोली की 'चित्ररेखा' पर श्री रामकुमार वर्मा को तथा १९९३ वि० मे ब्रजभाषा के 'रामचद्रोदय' काव्य पर श्री रामनाथ 'जोतिसी' को दिया गया।

१९९४ वि० मे पुरस्कार योग्य पुस्तक का अभाव रहा। अतएव पुरस्कार के इस नियम के अनुसार कि, जिस वर्ष पुरस्कार योग्य ग्रथ न हो उस वर्ष की पुरस्कार निधि उत्तम पुस्तको के प्रकाशन मे लगाई जाय, पुरस्कार की सचालक सस्था श्री वीरेंद्रकेशव साहित्य परिषद्, टीकमगढ ने एक एक हजार रुपया हिंदी साहित्य संमेलन, प्रयाग तथा नागरीप्रचारिणी सभा, काशी को प्रकाशनार्थ प्रदान किया।

सभा ने इस निधि को सधन्यवाद स्वीकार करते हुए निश्चय किया कि इससे 'देव पुरस्कार ग्रथावली' का प्रकाशन किया जाय, जिसमे कला और विज्ञान आदि की अच्छी से अच्छी पुस्तकें सुलभ मूल्य पर निकाली जायँ। इस सबध मे हमे जैसे लेखको का सहयोग प्राप्त हो रहा है उससे पूरी आशा है कि उक्त सात्विक दान द्वारा प्रस्तुत यह ग्रथावली अपने उद्देश्यो मे सर्वथा सफल होगी।

प्रकाशकीय

देव-पुरस्कार-ग्रंथावली का परिचय इस पुस्तक में अन्यत्र प्रकाशित है। एतदर्थ १०००) का कृपापूर्ण दान शिरोधार्य करके सभा ने (१) भारतीय मूर्तिकला (ले० श्री राय कृष्णदास), (२) भारत की चित्रकला (ले० श्री राय कृष्णदास) तथा (३) भारतीय वास्तुकला (ले० श्री परमेश्वरीलाल गुप्त) नामक तीन ग्रंथ प्रकाशित किए। एतदर्थ प्रदत्त उक्त निधि और उपर्युक्त ग्रंथों की बिक्री से हुई सारी आय उक्त पुस्तकों में लग गई। फिर महार्घता उत्तरोत्तर बढ़ती गई और ऐसी स्थिति नहीं हुई कि इस ग्रंथावली में एकत्र द्रव्य से कोई नवीन ग्रंथ प्रकाशित हो। प्राय २१ वर्षों के अंतराल के उपरांत इस ग्रंथावली की यह चौथी पुस्तक हिंदी जगत् के समक्ष उपस्थित करते हुए सभा को विशेष प्रसन्नता हो रही है।

पुस्तक के विद्वान् लेखक श्री बासप्पा दानप्पा जत्ती महोदय भारतीय गण-राज्य के उपराष्ट्रपति पद पर आसीन हैं। इसके पूर्व, राज्यों के पुनर्गठन के भी पहले, उन्होंने जमखंडी राज्य में मंत्री और मुख्य मंत्री जैसे दायित्वपूर्ण पदों पर कुशलतापूर्वक कार्य किया। राजनीतिक क्षेत्र में आने पर भी अपनी सुयोग्यता के कारण जत्ती महोदय नित्य आगे बढ़ते गए। पर इस क्षेत्र में भी उनमें विद्यानुराग और स्वतंत्र चिंतन मनन की प्रवृत्ति उत्तरोत्तर विकसित और परिपुष्ट होती गई। उनके सदृश स्वाध्यायशील और राष्ट्रप्रेमी व्यक्ति के लिये यह सर्वथा स्वाभाविक था।

भारतीय जनगण के प्रति जत्ती महोदय के हृदय में स्वाभाविक अनुराग है। जनगण के कल्याणकार्य के लिये किया गया कोई भी आह्वान उन्होंने कभी अनसुना नहीं किया। समय समय पर हुए ऐसे ही आयोजनों में उन्होंने जो वक्तृताएँ दीं उन्हीं में से कुछ चुनी हुई उपादेय वक्तृताओं का संकलन इस पुस्तक में किया गया है। पुस्तक के सुयोग्य संपादकों ने उनका विषयानुसार वर्गीकरण करके सारी सामग्री को आठ खंडों में विभाजित कर दिया है। वे हमारे धन्यवादार्ह हैं। मुझे विश्वास है, पुस्तक रूप में प्रकाशित इन रचनाओं का हिंदी जगत् यथोचित समादर करेगा और भारतीय जनगण का इनसे पर्याप्त कल्याण होगा।

ना० प्र० सभा, काशी
वासंतिक नवरात्रारंभ
सं० २०३५ वि०

(करुणापति त्रिपाठी)
प्रकाशन मंत्री

बासप्पा दानप्पा जत्ती

जन्म तिथि–१० सितंबर, १९१२।

जन्म स्थान–सवलजी, जि० बीजापुर (मैसूर)

शिक्षा–राजाराम कालेज, बीजापुर से बी.ए. और साइक्स लॉ कालेज कोल्हापुर से एल-एल बी.।

कार्यक्षेत्र–जमखंडी मे वकालत की। तदुपरात जमखडी राज्य मे मत्री हुए और फिर वहो मुख्य मंत्री हुए।

बबई विधान सभा के विधायक नामाकित हुए, जहाँ इन्होंने मैसूर (वर्तमान कर्नाटक) राज्य का प्रतिनिधित्व किया।

बबई के मुख्य मत्री श्री बी. जी खेर के पार्लामेटरी सचिव हुए और फिर स्वास्थ्य और श्रम विभाग के उपमत्री का पद ग्रहण किया। राज्यो के पुनर्गठन के अनतर श्री जत्ती मैसूर विधान सभा के विधायक चुने गए। फिर वहाँ की भूमि-सुधार-समिति के अध्यक्ष हुए। सन् १९५८ से १९६२ तक ये मैसूर राज्य के मंत्री रहे। जमखडी निर्वाचन क्षेत्र से ये पुन मैसूर विधान सभा के सन् १९६२ से १९६७ तक के लिये विधायक चुने गए। तदनतर १९६२ से १९६५ तक वित्त मंत्री और १९६५ से १९६७ तक खाद्य मत्री नियुक्त हुए।

अक्टूबर १४, सन् १९६८ को पाडिचेरी के लेफ्टिनेंट गवर्नर का कार्यभार ग्रहण किया।

८ नववर, १९७२ को उडीसा के गवर्नर हुए। २० अगस्त, १९७४ को उस पद से इस्तीफा दे दिया।

२७–८–१९७४ को उपराष्ट्रपति निर्वाचित हुए और ३१–८–१९७४ को शपथ ग्रहण किया।

एल-एल. डी. की मानद उपाधियाँ–७–११–१९७४ को कर्नाटक विश्वविद्यालय ने एल-एल.डी. की उपाधि से समानित किया।

२०–२–१९७६ को गुरुनानकदेव विश्वविद्यालय, अमृतसर से एल-एल. डी. उपाधि से विभूषित हुए।

बरहामपुर विश्वविद्यालय ने १२–१–१९७७ को एल-एल.डी की मानद उपाधि से अलकृत किया।



श्री बासप्पा दानप्पा जत्ती
उपराष्ट्रपति भारत गणराज्य

विषयसूची

१. देश और समाज

२. देश और भाषा

३. देश और धर्म

४. भाषा और साहित्य

५. अभिवदन और अभिनंदन

६· शिक्षण और समाज

७· स्वास्थ्य और समाज

८· कृतज्ञता

१. देश और समाज

लोकमत की जिम्मेदारी

ववई के इस महानगर मे अपने पुराने मित्रो, साथियो तथा पत्रकार वधुओ के मध्य अपने आपको पाकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता है। मेरे जीवन का एक वडा और महत्वपूर्ण भाग कई एक कार्यक्षेत्रो मे यहाँ बीता है। हिंदुस्तान समाचार जैसी वहुभाषी एव एक मुख्य समाचार सस्था की ओर से मुझे यह अवसर प्रदान किया गया, उसके लिये मैं आभारी हूँ।

मै समझता हूँ कि ववई नगर ने सदा से भारत की गरिमा को चित्रित किया है। वास्तव मे सैद्धातिक और व्यावहारिक दृष्टि से भी ववई एक "लघु भारत" का प्रतीक माना जा सकता है। इसलिये यह स्वाभाविक और उचित ही है कि "हिंदुस्तान समाचार" ने एक छोटे पैमाने पर, खासकर राष्ट्रभाषा वृत्त-पत्रो की सेवा के उद्देश्य से, इस ऐतिहासिक नगर मे अपनी स्थापना की। लोकमत लोकतत्रीय जीवन की आत्मा है। सूचना इसका आधार है। सूचनाओ के तेजी से प्रसारण से लाखो लोगो के विचारो और व्यवहारो पर प्रभाव पडता है। यह सत्य ही कहा गया है कि लोकमत के एक वार जग जाने से पहाड़ो तक को हिलाया जा सकता है। हमारे देश मे लोकमत तैयार करने की जिम्मेदारी अधिकतर राष्ट्रभाषा के वृत्तपत्रो पर है।

आप जानते हैं कि हमारा देश एक प्रगतिशील और धर्मनिरपेक्ष देश है। ऐसे समाज मे जहाँ आधुनिकीकरण और विकास के प्रयत्न किए जा रहे हो, जिस समाज का आदर्श धर्मनिरपेक्ष लोकतत्र हो, ऐसे समाज की रचना मे लोकमत महत्वपूर्ण काम करता है। इस लोक-मत का सवध उस वदलते हुए लोकजीवन से है, जो उन्नति, सुदृढता और समृद्धि के लिये ज्ञान, विज्ञान और तकनीकी की समन्वित शक्तियो से पूरा लाभ उठाने की अपने अदर क्षमता पैदा करना चाहता है। इसके लिये हमारे सामने वलिष्ठ साधन ऐसे समाचार पत्र ही हो सकते है, जो जन-साधारण तक उसकी प्रातीय भाषा मे उसे उपलब्ध हो सके। समाचार-पत्रो का क्षेत्र कुछ गिनेचुने लोगो तक ही सीमित हो, या यह समझा जाए कि इनकी जरूरत तो केवल शहरी लोगो को ही है, यह अपने को धोखा देने जैसी वात है। विकास क्रम मे शहरो पर ही ध्यान केंद्रित किया जाना उन प्रयासो को अर्थहीन वना देता है, जिनका सवध राष्ट्र के साथ है।

असली भारत देहात मे बसता है। देहात की उन्नति और विकास पर ही राष्ट्र की सच्ची प्रगति अवलवित है। किसी कीमत पर भी इनकी उपेक्षा नही की जा सकती। देश की खुशहाली के लिये हमने जिन योजनाओ की रूपरेखा बनाई है और भविष्य के लिये हमारा जो कार्यक्रम है, उनकी सफलता देशवासियो की सजगता और सक्रियता पर सदैव निर्भर करती है। इस चेतना के विस्तार मे समाचारपत्रो का पूरा सहयोग मिलना चाहिए। मुझे प्रसन्नता है कि हमारे देश मे राष्ट्रभाषा के समाचारपत्रो की इस नाते एक श्रेष्ठ परपरा रही है, क्योंकि इनमें बहुत से समाचारपत्रों ने "समाचार जगत्" मे जनशिक्षण के लिये उपयुक्त स्थान बनाया है। वास्तव मे देखा जाए, तो लोकमत तैयार करने का अर्थ ही यही है कि जनता को इस माध्यम से ऐसी शिक्षा मिले, ताकि एक नए समाज की रचना में वह बराबर की भागीदार बन सके। जनमत तैयार करना लोकशिक्षण का अग है और मैं मानता हूँ कि इस दिशा मे प्रादेशिक भाषाओं मे निकलनेवाले पत्रो के अतिरिक्त दूसरा और कोई अन्य साधन नही हो सकता।

हिंदुस्तान समाचार वृत्त संस्था का जन्म इस बात को महसूस करके हुआ था कि देशवासियो को स्वतत्रता सग्राम की गतिविधियो की जानकारी मिलती रहे। देश में जो दो वृत्त सस्थाएँ थी उनका झुकाव ब्रिटिश शासको की ओर होने के कारण, हमारे राष्ट्रीय सग्राम की कुछ हद तक उपेक्षा होती थी और इस बडे आदोलन का चित्र प्राय लोगो के सामने रखा नही जाता था। जब वीर सावरकर ने इस सस्था के सस्थापक श्री आप्टे के समक्ष यह बात रखी तब एक स्वतत्र राष्ट्रीय वृत्त संस्था की स्थापना के लिये पहला पग उठाया गया जो इस कमी को पूरा कर सके।

यद्यपि राष्ट्रीय समाचार सस्था की स्थापना का विचार १६४२ में रखा गया था, तथापि इसकी स्थापना श्री आप्टे के सत्प्रयासो से १६४८ मे हो सकी और इस प्रकार इस सहकारी बहुभाषी समाचार सस्था का जन्म हुआ, जो हर प्रांत की सेवा उसी प्रात की भाषा मे करती है।

कहते हैं, आवश्यकता आविष्कार की जननी है। श्री आप्टे इग्लिश रोमन के टेलीप्रिंटरो के पक्ष मे नहीं थे और यही वह सकोच था, जिसने टेलीप्रिंटर में नागरी लिपि के प्रयोग का आविष्कार किया। वास्तव मे यह एक अपूर्व उपलब्धि है। मुझे प्रसन्नता है कि इस उद्देश्य को लेकर ही "हिंदुस्तान समाचार" की स्थापना हुई। यह तो स्पष्ट है कि आजादी पाने के बाद देश मेंऐसी वृत्त सस्था का होना एक ऐतिहासिक आवश्यकता थी, जो हमारे

क्षेत्रीय समाचारपत्रों की सेवा कर सके। इन २५ सालों में "हिंदुस्तान समाचार" के कार्यकर्ताओं ने बड़े विनम्र और विनीत भाव से इस ऐतिहासिक आवश्यकता को पूरा करने की निष्ठापूर्वक कोशिश की है। इसे सहकारी संस्था के रूप में चलाने के लिये आपके सम्मुख कई कठिनाइयाँ और बाधाएँ भी प्रस्तुत हुईं, परंतु आपके लगातार परिश्रम के फलस्वरूप आपकी यह संस्था आगे बढ़ी, और बड़े संस्थान का स्वरूप इसने धारण किया। अपने उत्कृष्ट मनोरथ में आपने जो सफलता पाई है, उसके लिये मैं आप सबको बधाई देता हूँ। मिलकर काम करने का जो आदर्श है उसके लिये सहकारिता की भावना बहुत आवश्यक है, जिसमें से उसका संस्था रूपी शरीर जीवन प्राप्त करता है। वृत्त संस्था की सफलता उसके सदस्यों से मिलकर काम करने की भावना पर अवलंबित है। इस अवसर पर मैं इस संस्था के संस्थापक एवं संपादक, श्री एस० एस० आप्टे को भी बधाई देना चाहूँगा, जिनके त्याग और समर्पण के जीवन ने प्रायः सभी कार्यकर्ताओं को इस सहकारी प्रयास के निमित्त अनुकूल वातावरण तैयार करने के लिये प्रेरित किया।

मुझे बताया गया है कि प्रांतीय समाचारों का उस प्रांत की भाषा में दिया जाना, अखिल भारतीय आकाशवाणी के प्रसारण के लिये बड़ा उपयोगी है। इस संबंध में मैं "हिंदुस्तान समाचार" के पत्रकारों को यही सलाह दूँगा कि वे उन विकास कार्यों के बारे में दिए जानेवाले समाचारों पर अधिक ध्यान केंद्रित करें, जहाँ पिछले कुछ वर्षों से देश के विभिन्न क्षेत्रों में तेजी से काम हो रहा है। यह नितांत आवश्यक है, क्योंकि कई बार पत्रकार केवल राजनैतिक समाचारों पर ही अपना ध्यान केंद्रित कर लेता है। वास्तव में "राजनैतिक" समाचार हमारे समन्वित जीवन का एक अंश मात्र है। इसलिये पत्रकार की लेखनी आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन को भी प्रतिबिंबित करने में समर्थ होनी चाहिए।

मुझे विश्वास है कि हमारे पत्रकार हमारे देश के विभिन्न भागों में जो विकास कार्य हो रहा है, उसके निरीक्षण, पर्यवेक्षण तथा उसके बारे में समाचार देने के लिये अधिक उत्सुक होंगे और इससे प्रचुर और विविध अनुभव का लाभ प्राप्त करेंगे। इसके लिये उन्हें भी कई कठिनाइयाँ झेलनी पड़ेंगी, जिनका जन साधारण सामना कर रहा है। इस तरह पत्रकार हमारे समाज में हो रही प्रगति और विकास का मूल्यांकन कर सकेंगे।

पत्रकार का काम बड़ी जिम्मेदारी का काम है। उसकी पैनी दृष्टि न केवल राष्ट्रीय समस्याओं, सामाजिक अवस्थाओं तथा ग्रामीण अंचलों में नव

चेतना की जागृति पर रहनी चाहिए, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्थिति पर भी ध्यान रहना जरूरी है। एक पत्रकार की हैसियत से आपका समाज के प्रति बड़ा उत्तरदायित्व है और इससे भी अधिक उत्तरदायित्व वृत्त संस्थाओं का है, जहाँ से सूचनाएँ दूसरे क्षेत्रीय केंद्रों में भेजी जाती हैं।

"हिंदुस्तान समाचार" बंबई की रजत जयंती समारोह के उद्घाटन के लिये यहाँ उपस्थित हो पाना मैं अपने लिये सौभाग्य की बात मानता हूँ। आपको इस संस्था के प्रयासों की सफलता के लिये मैं अपनी हार्दिक शुभ कामनाएँ देता हूँ और आशा करता हूँ कि हिंदुस्तान समाचार संस्था जनमत को तैयार करने, उसके स्वरूप को निखारने, लोगों में एकत्व एवं सच्ची राष्ट्रीयता की भावना को जगाने में इसी प्रकार कार्य करती रहेगी। यहाँ बुलाने के लिये मैं आप सबका आभारी हूँ और मैं इन शब्दों के साथ इस समारोह का उद्घाटन करता हूँ।

पंचायतों का दायित्व

यह आपके प्रेम और स्नेह की उदारता है कि आपने मुझे आज के इस जिला पचायत समेलन मे उपस्थित होने तथा आप सबसे मिलने का मौका दिया। इसके लिये मैं आपका आभार प्रकट करता हूँ।

हमारे देश मे पचायतो का इतिहास बहुत पुराना है। ऋग्वेद मे, हमारे स्मृति ग्रथो मे तथा हमारे अन्य प्राचीन शास्त्रो मे ग्राम सभाओ का वर्णन मिलता है। लेकिन अग्रेजो के शासन मे इस व्यवस्था को समूल उखाड फेंकने की चेष्टा हुई। आजादी के पश्चात इस व्यवस्था को पुन स्थापित किया गया, ताकि देश के ग्रामीण क्षेत्र देश की प्रगति के साथ साथ आगे बढे, उन्नत हो, क्योंकि भारत जैसे देश मे, जहा सर्वाधिक जनसख्या गाँव मे रहती हैं, उनकी उन्नति के बिना देश सही मानो मे तरक्की नही कर सकता। इसलिये पचायतो को यह काम सौंपा गया कि वे अपने ग्राम क्षेत्रो के विकास, व्यवस्था और स्वास्थ्य का भार स्वय उठाएँ, तथा सरकार द्वारा जो राष्ट्रीय नीति निर्धारित की जाती है, उसे लागू करे। आज पचायत के कार्य और दिनो दिन विस्तृत हो रहे हैं उनपर जिम्मेदारी बढ रही है। प्रगति की रफ्तार के साथ उन्हे भी चलना है और अपने गांव को ऐसा रूप देना है कि वे न केवल आत्मनिर्भर ही हो जाएँ, बल्कि अन्न, फल, सब्जी, घी, दूध इत्यादि मे देश की आवश्यकताएँ भी पूरी कर सकें। आज हमे पूरी तरह से अनुशासित रहकर, पूरी निष्ठा से, देश का उत्पादन बढाने मे जुट जाना है, तदर्थ कडी मेहनत करनी है। अपने क्षेत्रीय ससाधनो का पूरी तरह से उपयोग करना होगा। उत्पादन की वृद्धि और उसका समुचित वितरण, यही राज है खुशहाली का, यही उपाय है समृद्धि का। देश समृद्ध होगा तो निश्चित है कि देशवासियो का जीवन स्तर भी ऊँचा उठेगा। केवल शहरो के विकास से काम नही चलता। यह विकास हमारे गाँव गाँव मे जब तक नही होता, हम आगे नहीं बढ सकते। आज जरूरत इस बात की है कि एक जागरूकता की लहर गाँव गाँव मे दौड जाए और सभी इस कार्य के लिये कमर कस लें कि हमे अपने गाँव की दशा को बेहतर बनाना है, इसे सुदर और स्वस्थ रूप देना है और यह सकल्प लेना है कि हमारे रास्ते मे जो बाधाएँ हैं, वे आर्थिक हो या सामाजिक, हमे उन्हे दूर करना है। वे सामाजिक कुरीतियाँ हो, अध-

विश्वास हो, अज्ञान हो, भ्रष्टाचार हो या शोषण की बुराई हो, हमे गाँव को इन सबसे मुक्त करना है। लोगो मे प्रेम और सद्भावना जागृत कर, उनमे सामुदायिक उत्थान की चेतना को उभारना होगा।

आज देश मे एक नया उत्साह जगा है, एक नया वातावरण तैयार हुआ है, चारो ओर निर्माण सबधी कार्य हो रहा है। इसमे सबका सहयोग अपेक्षित है। हम एक महान् प्रयास कर रहे हैं। वह प्रयास है देश को आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से उन्नत करने का। हमारे लिये अनुशासन पर्व है। इसकी घोषणा हुई लोगो मे दायित्व और जिम्मेदारी का अहसास कराने के लिये, विघटनकारी प्रवृत्तियो को रोकने के लिये और लोकतत्रीय प्रणाली की रक्षा के लिये। अनुशासन की भावना ने सपूर्ण राष्ट्रीय जीवन के उत्थान और विकास के लिये जनमानस को प्रेरित किया ताकि समानता के आधार पर एक प्रगतिशील समाज की रचना हो, सभी को बिना भेद भाव के समुचित लाभ मिल सके। और अनुशासन मे रहता हुआ देशवासी अपना दायित्व पूरा कर सके। इस थोडे से समय मे देश की स्थिति मे कितना सुधार हुआ और किस कदर कामकाज मे तेजी आई, यह सभी जानते है। कितने ही काम हुए, कीमतो मे गिरावट से मँहगाई पर काबू पाया जा सका, चोर बाजारी, काले धधो के विरुद्ध कडे कदम उठाए गए, छोटे किसानो और भूमिहीनो को नई सुविधाएँ दी जा रही हैं, बँधुआ मजदूरी को खत्म कर दिया गया है। इसके अतर्गत कृषि, लघु उद्योगो, दस्तकारियो की सहायता के प्रबध जुटाने की व्यवस्था हुई, पिछडे वर्गों और आदिवासियो के विकास पर ध्यान दिया गया। वास्तव मे इस कार्यक्रम ने राष्ट्रीय जीवन के हरेक आवश्यक अग को स्पर्श किया है जिसके लिये त्वरित कदम उठाए जाने चाहिए थे। आज यह नया कार्यक्रम आपके समुख है, जिसे समझने की कठिनाई नही, जो स्वय स्पष्ट और प्रभावकारी है। इसे सफल बनाने मे ग्राम पचायतें एक उपयोगी भूमिका निभा सकती है। यह कार्यक्रम देखा जाए तो किसानो और कर्मकारो के लिये है। उनके हितों की रक्षा के लिये है, हमारा यह कर्तव्य है कि हम इसे सफल बनाएँ और देश की आशाओ और आकाक्षाओ को साकार करें।

पचायतो को आज एक बडा दायित्व निभाना है और हर सभव प्रयत्न करना है कि गाँव की स्थिति अच्छी हो, उत्पादन को बढाने के लिये परपरागत साधनो का भी उपयोग हो और विज्ञान द्वारा जो नए साधन उत्पादन

बढाने मे सुलभ हो रहे हैं, उनसे भी पूरा लाभ उठाया जाए । पर्याप्त श्रम और सहयोग ही वह कुंजी है जिससे आगे बढा जा सकता है । हमारा यह प्रयत्न होना चाहिए कि सामूहिक चेतना का विस्तार हो, और हर व्यक्ति यह सोचे कि उसे जहां दूसरो के सहयोग की जरूरत है, उसे अपना भी सहयोग देना है । एक राष्ट्रीय भावना से अपने गांव की सेवा करनी है ।

इन्हीं शब्दो के साथ साथ मै पुनः आपको धन्यवाद देता हूँ कि मुझे आपने आपसे मिलने का मौका दिया ।

भूदान की रजत जयंती

दिल्ली भूदान रजत जयती समिति के तत्वावधान मे भूदान की रजत जयती के उपलक्ष म पदयात्रा सप्ताह का आयोजन, वास्तव मे एक ऐतिहासिक घटना है। हम सबके लिये यह एक सुखद सदेश लेकर प्रस्तुत हुआ है। इससे राष्ट्रीय कार्यक्रमो को एक नई दिशा मिलेगी। भूदान की रजत जयती के अवसर पर सर्वप्रथम मैं आप सबको बधाई देता हूं और पूज्य विनोबा जी के दीर्घ जीवन की कामना करता हूं ताकि हमे उनका मार्गदर्शन प्राप्त होता रहे और देश के विकास और कल्याण के कार्यों मे उनका आशीर्वाद मिलता रहे।

विनोबा जी आधुनिक युग के महान् चितकों मे है। राष्ट्रपिता महात्मा गाधी के आध्यात्मिक उत्तराधिकारी के रूप मे उन्होने जो कुछ सजोया, उसे अपनी साधना का अग बनाकर, उसे राष्ट्र के समक्ष भूदान, श्रमदान, बुद्धि-दान, ग्रामदान, जीवनदान के रूप मे प्रस्तुत किया। आर्थिक और सामाजिक असमानताओ को दूर करने के लिये, ट्रस्टीशिप का जो मूल मत्र गाधी जी ने देशवासियो के समुख रखा था, उस भावना को उजागर करने तथा नए परिवर्तनो के निमित्त अपेक्षित वातावरण तैयार करने के लिये विनोबा जी ने आज से २५ वर्ष पूर्व भूदान यज्ञ का उद्घाटन किया था और गांव गांव मे पैदल जाकर सहकारिता का कल्याणकारी संदेश पहुंचाया। यह विचार करने की बात है कि आज के इस युग मे, जब कि यातायात के अनेक साधन उपलब्ध हैं, विनोबा जी ने हृदय परिवर्तन के लिये पदयात्रा को ही प्रभावी साधन माना, क्योकि यही एक कारगर तरीका है जिससे हम गांव गांव मे जाकर लोगो तक पहुंच सकते हैं, और अपने आत्मीय सपर्क द्वारा सह अस्तित्व, समता और सहानुभूति के विचारो का व्यापक विस्तार कर सकते है, उन्हें अपने रचनात्मक कार्यो से प्रभावित कर ग्राम निर्माण के लिये प्रेरित कर सकते हैं।

हमारे कृषिप्रधान देश मे गांव ही हमारे राष्ट्र निर्माण का केंद्र बिंदु है, यह गाधी जी का दृढ विश्वास था। विनोबा जी ने भी गांव और ग्रामवासियों को ही अपने कार्यक्रम का आधार बनाया। महात्मा जी आर्थिक और सामाजिक समता के मत्रदाता थे। इसके लिये वैधानिक स्तर पर लोकतत्रीय समाजवाद

का आधार प्रस्तुत किया पंडित जवाहरलाल नेहरू ने। विनोबा जी ने पंडित जवाहरलाल नेहरू जी के लोकतन्त्रीय समाजवाद का समर्थन किया था और कहा था कि पंडित नेहरू लोकतन्त्रीय समाजवाद की हमें बहुमूल्य निधि दे गए हैं। आज देश के समक्ष कार्यक्रम प्रस्तुत है वास्तव में वह महात्मा गांधी और पंडित नेहरू के सपनों के भारत को आधुनिक परिवेश में साकार रूप प्रदान करने का एक महान् प्रयास है। हमारे लिये यह बड़ी प्रसन्नता की बात है कि इसके लिये विनोबा जी ने अपना आशीर्वाद प्रदान किया है।

आज देश में दायित्व और अनुशासन बोध का युग आरम्भ हुआ है और फिर से देश समृद्धि के लक्ष्य की ओर अग्रसर हो रहा है। इस कार्यक्रम को हमें गांव गांव तक पहुंचना है, क्योंकि ग्राम कल्याण इसका मुख्य उद्देश्य है और हमारा यह पूर्ण विश्वास है कि ग्रामीण जनता को इस कार्यक्रम में भागीदार बनाने से हम देश को एक नया रूप दे सकेंगे। हमें गांव गांव में पहुंचना है, उनपर बोझ बनने के लिये नहीं, बल्कि गांव के निर्माण में अपना सक्रिय सहयोग देने के लिये, उन्हें अपनी उत्पादन क्षमता को बढ़ाने में मदद देने, पिछड़ापन, अंधविश्वासों, कुरीतियों तथा शोषण से उन्हें मुक्त करने के लिये। शासन की ओर से जो सुविधाएं आज जुटाई जा रही हैं, हमें यह देखना है कि उनका लाभ ग्रामवासियों, पिछड़े वर्गों, साधनहीन लोगों तक उचित रूप से पहुंचे।

हम एक महान् आदर्श से प्रेरित होकर देश के सामाजिक क्षेत्र में मिल कर काम करेंगे, तो देश की शक्ति अवश्य बढ़ेगी और तीव्र गति से प्रगति भी होगी। इन्हीं शब्दों के साथ मैं पदयात्रा सप्ताह का उद्घाटन करता हूँ और धन्यवाद देता हूँ कि आपने इस पदयात्रा में भाग लेने का मुझे सुयोग प्रदान किया।

———

ऐच्छिक संस्थाओं के सहयोग का महत्व

आपका अनुरोध था कि मैं मथुरा जाते समय थोड़ी देर कोसीकलां में आप सबसे मिलूं और यहाँ जो विकास कार्य यहाँ हो रहा है, उसे देखूं। अपने देशवासियों से मिलने का जब जब अवसर मुझे मिला है, मैंने उसे अपने लिये मूल्यवान् माना है। मुझे यह जानकर अतीव प्रसन्नता हुई कि इस नगर के वासियों में काफी जागरूकता है, और देश के अन्य भागों की तरह आप भी आगे बढ़ना चाहते हैं।

यह सभी जानते हैं कि समाज का विकास उसके हर छोटे बड़े सदस्य पर निर्भर करता है, जिसके मन में उसे सँवारने की लगन और उत्साह है। आज हम सभी अपना अपना काम ईमानदारी और जी जान से करें, राष्ट्रीय हितों को सर्वाधिक महत्व दें, तो कल्याणकारी राष्ट्र की कल्पना के सार्थक होने में समय नहीं लगेगा। जिस ढग से देश के विकास कार्यों के लिये हमने एक योजनाबद्ध कार्यक्रम बनाया, उसमें यही प्रावधान रहा कि हमारे सारे देशवासी उसमें भागीदार बनें, मिल जुलकर हम राष्ट्र निर्माण का काम करें और हमारी उपलब्धियों का लाभ देश के कोने कोने में रहनेवाले नागरिक को प्राप्त हो। यह काम बड़ा जरूर है, परन्तु हम सब मिलकर अपना अपना दायित्व निभाने की चेष्टा करें, तो कोई ऐसा काम नहीं जो हो न सके। आज यदि हर व्यक्ति राष्ट्र निर्माण के इस काम में हाथ बटाए तो हमारे सुदूर के ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों में भी बड़ा काम हो सकता है। वैभवशाली तथा प्रतिभाशाली वर्ग को चाहिए कि वह इस दिशा में मार्ग प्रशस्त करे, और उन बुजर्गों से प्रेरणा ग्रहण करे जो सदा के लिये अपने त्याग और अपने कामों द्वारा कुछ आदर्श स्थापित कर गए हैं, ताकि भावी पीढ़ियाँ भी उस रास्ते पर चलकर, इस देश के लिये काम करें।

इस संदर्भ में लाला गयालाल जी की सेवाओं से आप भली भाँति परिचित हैं। उनका जीवन इस नगरी के हित चिन्तन में ही बीता है। वे सदैव दूसरों की सहायता के लिये तत्पर रहे। उनके हृदय में देश सेवा का जो अकुर था वह उन्हें जीवन भर कल्याण कार्यों के लिये प्रेरित करता रहा। जिस प्रकार उन्होंने अपने नगरवासियों में अपना स्नेह बाँटा, वैसे ही उन्हें नागरिकों का आदर और सहयोग भी मिला। उनकी स्मृति को बनाए रखने

के लिये यहाँ के विशिष्ट तथा उदार नागरिको की सद्भावना से लाला गयालाल ट्रस्ट की स्थापना होना, आपकी श्रद्धापूर्ण भावना का प्रतीक ही माना जाएगा। मुझे प्रसन्नता है कि ट्रस्ट का प्रथम भवन आज बनकर तैयार हो गया है, वास्तव मे यह शुभ कार्य का शुभारभ ही कहा जा सकता है। आप सबको इसके लिये बधाई देता हूँ।

मुझे बताया गया है कि आपके इस ट्रस्ट के समक्ष एक बडी योजना है और शनैः शनै आप समाज सेवा के कई कार्य हाथ मे लेगे। अभी आपके इस भवन मे शिक्षा तथा चिकित्सा की व्यवस्था की जा रही है। ये दोनो चीजें प्राथमिक महत्व की हैं। मुझे आशा है कि कस्बे की बढती हुई जरूरतो को पूरा करने मे आपके इस विद्यालय से तथा चिकित्सालय से बडी सहायता मिलेगी।

आज ऐच्छिक सस्थाओ से अधिक सहयोग अपेक्षित है। सार्वजनिक कामो मे हम जितनी लगन और उत्साह से दिलचस्पी लेगे, समस्याओ के समाधान मे हमे उतनी ही सफलता मिलेगी। आज जरूरत इस बात की है कि हम बदलती हुई परिस्थितियो मे राष्ट्रीय गौरव के अनुरूप अपने कृत्यो का निर्धारण करें, अपनी सामूहिक शक्ति को सामुदायिक कल्याण तथा सामूहिक हित के कामो मे लगाएँ। परस्पर सदभाव, सहायता और सहयोग की भावना से ही एक सुदृढ सामाजिक और आर्थिक आधार तैयार होगा। अभी तक जो आर्थिक और सामाजिक विषमताएँ अनुभव की जाती हैं, उन्हें हमे जल्दी से जल्दी दूर करना होगा। परतु यह निर्भर करता है देशवासियो की न्यायप्रियता पर, सहिष्णुता तथा समदृष्टि के व्यवहार पर। जैसा कि मैंने पहले ही कहा कि समाज के हर प्रभावशाली व्यक्ति का इस माने मे बडा दायित्व है, समय की यही माँग है कि देश का हर नागरिक पूरी निष्ठा से देश को मजबूत बनाने मे अपनी रचनात्मक प्रतिभा और अपने वैभव को देश के हित मे यथाशक्ति अर्पित करे।

लाला गयालाल जी का जीवन आज के व्यापारी वर्ग तथा समाज के वरिष्ठ लोगो को देश लिये कुछ कल्याणकारी और रचनात्मक कार्य करने के लिये उत्साहित करता है। मुझे प्रसन्नता है कि जो काम लाला जी ने आरभ किया था, उनके उत्तराधिकारियो तथा नगरवासियो ने उसे आगे बढाने मे अपने कर्तव्य का प्रमाण दिया है। मै यही चाहता हूँ कि आपमे समाजसेवा का यह उत्साह बना रहे और आप इन्ही मानवीय भावनाओ से प्रेरित होकर अपने नगर और समाज के लिये कार्य करते रहें।

मुझे लाला गयालाल चैरिटेबुल ट्रस्ट द्वारा निर्मित भवन का उद्घाटन करने मे बडी खुशी है। आप सबको मेरी शुभ कामनाएँ।

आर्य समाज और सामाजिक न्याय

आज शिवरात्रि है । हमारी आध्यात्मिक परपरा का यह एक परम पावन पर्व है । परम पिता परमात्मा की उपासना के लिये जो नाम इस पर्व के साथ जुड़ा हुआ है, वह जितना सुदर और सुखद है, उतना ही कल्याणमय भी है । वैदिक साहित्य मे "शिव" शब्द मे जो प्रेरणा शक्ति है, जिस भावना और अनुभूति की प्रतिष्ठा हुई है, वह ससार के अन्य किसी साहित्य मे दुर्लभ है । प्राणिमात्र के कल्याण एव सुख के लिये जो उपास्य शक्ति है, वही "शिव" है । शिव सतोष, परमानद, मगल, उत्कर्ष एव अभ्युत्थान का रूप है ।

वेद मे इस प्रकार प्रार्थना की गई है—

यो व शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह न । उशतीरिव मातर. ।

अर्थात् हे देवो ! जिस प्रकार ममतावश माताएँ अपने शिशुओ को दूध पिलाती हैं और माताओ का वह दूध शिशुओ के लिये सजीवन रस के रूप मे परिणत होता है, इसी प्रकार तुम्हारा शिवतम रस हम सब प्राणियो को समान भाग मे प्राप्त हो, किसी को कम या अधिक न मिले ।

महिमामयी शिवरात्रि को ही आर्य समाज के सस्थापक महर्षि दयानद सरस्वती के मन मे शिव के सत्य स्वरूप का साक्षात्कार करने की जिज्ञासा पैदा हुई थी । यही उस जागरण की रात्रि थी, जिसने वालक मूलशकर को दयानद वनने के लिये प्रेरित किया । अपनी साधना और तप के फलस्वरूप वे शिव-रस का पान कर सच्चे अर्थों मे दयानद वन गए । यह सत्य है कि स्वामी दयानद ने सन् १८७५ ई० मे वबई मे आर्य समाज की स्थापना की थी, परतु वास्तव मे देखा जाए तो दयानद की जननी शिवरात्रि ही आर्य समाज की भी जन्मदात्री कही जा सकती है ।

मैं इस पवित्र अवसर पर महान् विभूति स्वामी दयानद को अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करता हूँ । मानवोपकारक उदात्त भावो और मतव्यो की पूर्ति के लिये उन्होंने आर्य समाज की स्थापना की थी जो देश के प्रति अपना कर्तव्य पूरा कर सके, समाज की भीतरी दुर्वलताओ को दूर करने तथा उसे एक सुदर और स्वस्थ रूप प्रदान करने मे अपना योगदान दे सके । आर्य-समाज का इस दिशा मे सराहनीय कार्य रहा है और यह प्रसन्नता की वात है कि आज भी वह अपने उस उत्कृष्ट प्रयत्न मे सक्रिय है ।

स्वामी दयानद की धार्मिक क्षेत्र मे एक विशेष देन बुद्धिवादी दृष्टिकोण है। उन्होने धर्म के दार्शनिक रूप को निखारा, गीता के कर्मवाद को उजागर किया तथा अधविश्वास, स्वार्थप्रियता और मानसिक आलस्य के आवरण मे पडी हुई जाति को जगाकर उसमे दीनता और हीनता के स्थान पर आत्म-प्रतिष्ठा और राष्ट्रीय गौरव की स्थापना की।

यह सभी जानते हैं कि कर्म के सामाजिक या सामूहिक रूप को किसी कारण भी उपेक्षित नही किया जा सकता। यही कारण है कि महापुरुषो ने अपने वैयक्तिक मोक्ष से बढकर किसी चीज को महत्व दिया तो वह मानव-कल्याण है, नर नारायण की सेवा है। मानव मात्र के बीच परस्पर प्रेम, सहानुभूति तथा एक दूसरे के लिये त्याग की भावना सुदृढ करके मानवोचित जीवन के उत्कर्ष मे सहायक होना ही उनकी साधना को सार्थक बना गया। महात्मा बुद्ध के समान स्वामी दयानद ने अपने को साहित्य की परिधि मे सकुचित नही रखा, उसे देशवासियो के अभ्युत्थान के साथ जोड दिया। एक बार स्वामी दयानद जी से किसी साधु ने पूछा था कि आप इतने त्यागी परम-हस होकर प्रवृत्ति के जटिल जाल मे क्यो उलझ रहे हो, प्रजा प्रेम का बखेडा क्यो डालते हो, निर्लेप होकर विचारो, आत्मा से प्रेम करो, जो श्रुतिवाक्य है। इसपर स्वामी जी ने कहा था, "महात्मन्, आप आत्मा से प्रेम करते है और वह आत्मा तो सबमे रमा हुआ है फिर आपको केवल अपना ही विचार क्यो है? क्या आपने कभी उन बधुओ का भी चितन किया है, जो आपके देश मे लाखो की सख्या मे हैं, जिन्हें उदर भर कर खाने को अन्न नहीं मिलता, तन ढकने के लिये कपडा नही मिलता, सडे गले झोपडो मे जीवन काटना पडता है। उनको खोज खबर कोई भूले भटके भी नही लेता। हमे यदि आत्मा से और विराट् आत्मा से प्रेम करना है तो हमे अपने अगो की भाँति सबको अपनाना होगा। अपनी क्षुधा निवृत्ति की तरह उनकी भी चिता करनी होगी। सच्चा परमात्मा प्रेमी किसी से घृणा नही करता, वह ऊँच नीच की भेद भावना को नही पाल सकता। उतने ही पुरुषार्थ से दूसरो के दुख निवारण करता, कष्ट क्लेश सहन करता है, जितना वह अपने लिये करता है। ऐसे लोग ही वास्तव मे आत्मा-प्रेमी कहलाने के अधिकारी हैं।" स्वामी जी सत्य के उपासक थे। परतु सत्य के उपयोगी अशो को ही अपनाने के लिये कहते थे। इसलिये उन्होने कहा था कि "मेरी कोई नवीन कल्पना या मतमतातर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नही है। किंतु जो सत्य है, उसको मानना मनवाना और जो असत्य है, उसको छोडना

छुड़वाना मुझको अभीष्ट है। यदि मैं पक्षपात करता तो आर्यावर्त में प्रचलित मतों में से किसी एक मत का आग्रही होता। किंतु जो आर्यावर्त व अन्य देशों में अधर्मयुक्त चाल चलन है, उसका स्वीकार और जो धर्मयुक्त बातें हैं उनका त्याग नहीं करता, न करना चाहता हूँ।" उन्होंने इसीलिये यह कई बार कहा था कि उनके इन विचारों में भी जो सत्य प्रतीत हो उसे ग्रहण करें। वे विद्या और विज्ञान का आदर करते थे। परंतु उन्हें लोकहित का साधन मात्र रखना चाहते थे। इसीलिये, आर्य समाज को उन्होंने धर्म प्रचार का ही माध्यम नहीं बनाया, उसे जनजीवन एवं समाजसेवा की ओर लक्षित किया, जो लोगों में परस्पर उपकार के भाव पैदा करे और हर व्यक्ति को अपने दायित्व के पालन के लिये प्रेरित करने का भरसक प्रयत्न करे। आर्य समाज की इस संदर्भ में एक उपयोगी भूमिका रही है। अपनी बहुमुखी प्रवृत्तियों द्वारा उसने शिक्षा, समाज सुधार तथा राष्ट्रीय चेतना के विस्तार में अपना जो योगदान दिया है, उसकी हम कद्र करते हैं। आर्य समाज ने आधुनिक और प्राचीन शिक्षा पद्धतियों में समन्वय स्थापित करके शिक्षा के विस्तार में काफी सहयोग दिया है। उनके स्कूल और कालेजों में युवक आधुनिक ज्ञान विज्ञान के साथ भारतीय विचारधारा में भी दीक्षित होते रहे हैं। प्राचीन गुरुकुल पद्धति की संस्थाओं ने संस्कृत और हिंदी के प्रचार की दिशा में प्रशंसनीय कार्य किया है। ऊंच नीच तथा जाति पांति के भेद भाव से रहित, ये संस्थाएँ समानता का वह आधार प्रस्तुत कर सकी हैं, जिससे हमारी सामाजिकता दृढ़ हो।

सामाजिक न्याय के लिये आर्य समाज सदैव प्रयत्नशील रहा है। महिला-शिक्षा के विस्तार में अग्रणी रहते हुए, इसने सामाजिक कुप्रथाओं और कुरीतियों को दूर करने के लिये साहसिक कदम उठाए हैं। आजादी से बहुत पहले, रूढ़िग्रस्त समाज में बालिकाओं की शिक्षा दीक्षा के लिये वातावरण तैयार करना कठिन कार्य था। परंतु आर्य समाज ने इसे ही अपने कार्यक्रम का मुख्य अंग चुना। पददलितों के उद्धार में आर्य समाज की एक अनुकरणीय भूमिका रही है।

यह प्रसन्नता की बात है कि आर्य समाज ने अपने एक सौ वर्ष के जीवन में उक्त सभी क्षेत्रों में सुंदर कार्य किया है और एक बुद्धिवादी प्रगतिशील संस्था के रूप में उसने समाज में एक विशिष्ट स्थान प्राप्त किया है। स्वामी दयानंद की दूरदर्शिता, सूझ बूझ का ही यह परिणाम है कि आर्य समाज का जो स्वरूप उन्होंने निश्चित किया, वह,जनतंत्रीय व्यवस्था के भी उतना

ही अनुकूल है जितना हमारे पुरातन गौरव के साथ संवद्ध है। इसी चीज-ने इसे एक जन आंदोलन का आधार प्रदान किया।

आर्य समाज के लिये यह स्वाभाविक ही है कि वह अपनी गत सौ वर्षो की उपलब्धियो पर गर्व करे। परतु इसके साथ उसे आगामी कार्यक्रम और रीति नीति का भी पर्यवलोकन करना चाहिए। यह सर्वविदित है कि आज का युग परिवर्तनो का युग है। विज्ञान और टेक्नोलोजी विश्व एव मानव समाज को नित्य नया रूप देने मे लगे है। इसलिये हमे अपने अनुभव के आधार पर चिंतन करना चाहिए कि बदलती हुई परिस्थितियो मे हमारी ये सस्थाएँ किस प्रकार अधिक उपयोगी और प्रभावी बन सकती हैं। आर्य समाज जैसी सस्थाओ को विश्व के मानव के कल्याण के लिये कार्य करना चाहिए। धर्म के जो सनातन तत्व है, उनके प्रसार द्वारा मानवता का उत्थान करके विश्व-शांति को सुदृढ बनाया जा सकता है।

आज हमारा देश एक नए दौर से गुजर रहा है। यह दौर सामाजिक नवचेतना का एक नया सदेश लेकर प्रस्तुत हुआ है। वह सदेश है अनुशासन का, राष्ट्रीय एकता को दृढ बनाने का, कर्तव्यपरायणता का, असमानताओ, भेद भावो को दूर करने तथा आर्थिक और सामाजिक उत्थान का। हमारी राष्ट्रीय सरकार ने देश के सम्मुख जो कार्यक्रम रखा है, वह उसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिये है, जिसके लिये स्वामी दयानद ने सक्रिय जीवन मे मुक्ति का श्रेय देखा था। आज हम समाज को एक नया रूप देने के लिये कृतसकल्प हैं, देश मे जितनी भी सामाजिक और सास्कृतिक सस्थाएँ हैं, उन्हें समाज सुधार सबधी सूत्रो मे बढ चढकर भाग लेना चाहिए। सरकार की ओर से मद्यनिषेध तथा अन्य कुरीतियो को दूर करने के लिये जो नीति निर्धारित की गई है, उसके लिये उपयुक्त वातावरण तैयार करने के लिये, आप जैसी सस्थाएँ आगे आवें, ऐसी अपेक्षा युग सदर्भ मे स्वाभाविक है। यदि ऐसा वातावरण सारे देश मे तैयार किया जाए तो सरकार के लिये पूर्ण मद्यनिषेध सुगम हो जाएगा। मैं समझता हूँ कि आर्य समाज जैसी सस्थाएँ ऐसा वातावरण तैयार करने मे उपयोगी कार्य कर सकती हैं। स्पष्ट है कि आर्य समाज इससे पृथक् नही रह सकता। उसे अपना पूर्ण सहयोग इस राष्ट्रीय कार्य मे देना है। दुर्व्यसनो, दहेज आदि कुप्रथाओ के उन्मूलन तथा जन जीवन मे सयम, स्वच्छता, सहयोग, समत्व आदि के तत्व ऐसे हैं, जिनपर हमारे महानुभावो की दृष्टि रही है। इसके लिये पहले

काम भी होता रहा है, किंतु आज उसके लिये देशव्यापी अभियान आरम्भ हुआ है। इस सत्प्रयास मे हाथ बटाकर उसे सफल बनाना हर देशवासी का कर्तव्य है। मैं समझता हूँ कि इस अवसर पर आर्य समाज को इस निमित्त ठोस कार्यक्रम की रूपरेखा बनानी चाहिए क्योकि आर्थिक और सामाजिक विकास एक दूसरे से गहरा सबध रखते हैं। आर्थिक विकास के लिये सामाजिक परिवर्तन आवश्यक है। हम यदि प्रगति चाहते है तो हमे समाज को वैसा रूप देना होगा, जहाँ वैज्ञानिक सजगता के साथ नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यो की भी रक्षा हो। हमे यह देखना है कि जिस प्रकार समाज मे अनुशासन और कर्तव्य के प्रति जागरूकता उत्पन्न हुई है, यह भावना सदा के लिये सामाजिक जीवन का अग बन जाये। यह स्थायी आधार आत्मसयम की प्रतिष्ठा से होगा जैसा कि एक कन्नड सुभाषित मे कहा गया है—

सत्य वचन ही स्वर्ग है,
असत्य वचन नरक है,
अनुशासन स्वर्ग है,
अनुशासनहीनता नरक है,
वास्तव मे इनके अतिरिक्त न ही कोई स्वर्ग है, न ही कोई नरक।

वैज्ञानिक आविष्कारो, टेक्नोलोजिकल उपलब्धियो तथा उदार विचारो का हम स्वागत करें। परतु इसके साथ यह भी ध्यान रखें कि भोगवादी प्रवृत्तियो के कीटाणु हमारे समाज मे न पनप सकें। त्यागमूलक वैदिक सस्कृति के मूल तत्वो को नए परिप्रेक्ष्य मे प्रस्तुत करके ही ऐसा किया जा सकता है, स्वामी दयानद इस सस्कृति के सदेष्टा थे। अत आर्य समाज को इस प्रकार के उच्चस्तरीय साहित्य के निर्माण की ओर ध्यान देना चाहिए, जो बौद्धिक जगत् के लिये हृदयगम हो सके। विश्व मे बढ रहे सास्कृतिक एव नैतिक सकट मे आर्य समाज अपनी पृष्ठभूमि के आधार पर एक सुदर भूमिका प्रस्तुत कर सकता है। आशा है कि उसका भविष्य भी उसके अतीत की भाँति समुज्वल और प्रभावपूर्ण सिद्ध होगा, मेरी यही शुभकामना है।

इन्ही शब्दो के साथ अब मैं आज के इस आर्य समेलन का उद्घाटन करता हूँ तथा आप सभी को धन्यवाद देता हूँ कि आपने मुझे यहाँ आने का सुयोग प्रदान किया।

औद्योगिक प्रगति के प्रतीक

यह प्रसन्नता का विषय है कि श्री जगजीवनराम आश्रम ट्रस्ट तथा छत्रपति शिवाजी तृतीय शताब्दी समारोह के सयुक्त प्रयास से यहाँ इडिया—७६ भारतीय औद्योगिक मेले का आयोजन किया गया है। आपने मुझे इसके उद्घाटन के लिये अवसर प्रदान किया, उसके लिये मैं आपको धन्यवाद देता हूँ।

आपने इस मेले के लिये बडा उपयुक्त स्थान चुना है। यह वही ऐतिहासिक स्थल है, जहाँ से समय समय पर देश के महान् नेताओं ने देश के भविष्य के बारे मे अपनी कल्पनाएं और अपने विचार जनता के सामने रखे थे, राष्ट्र के उत्थान और समृद्धि के लिये दिशा निर्देशन किया था। हम उनके सपनो को कितना साकार कर पाए हैं, उनका अनुमान हमे ऐसे औद्योगिक मेलो मे प्रदर्शित उन उपकरणो और चीजो से स्वत ही हो सकता है जो आज हमारे देश मे बन रहे हैं। आजादी के पश्चात् उद्योग के क्षेत्र मे हमारी क्या क्या उपलब्धियाँ रही है, उनकी झलक हमें ऐसे ही मौके पर मिलती है। आपका यह प्रयास इस दृष्टि से बडा ही सराहनीय है। मैं आपको इसके लिये बधाई देता हूँ।

भारत जैसे प्रगतिशील देश के लिये इस प्रकार के मेले और प्रदर्शनियाँ जनजीवन मे एक नया उत्साह पैदा करती है। यह सभी जानते हैं कि औद्योगिक और वाणिज्य विकास के लिये उत्पादक, व्यापारी और उपभोक्ता इन तीनो का एक दूसरे के समीप आना आवश्यक है, क्योंकि इस माध्यम से आदान प्रदान की क्रिया को एक नई दिशा मिलती है और नए विचारो और अनुभवो के हस्तातरण मे सहायक उद्योगो के विस्तार और विकास को गति प्राप्त होती है, विशेषकर नए उद्यमियो को उद्योग स्थापित करने के लिये उपयोगी जानकारी का लाभ होता है। यह सत्य है कि इस प्रकार के आयोजन आर्थिक प्रगति मे एक मील के पत्थर का काम करते हैं, क्योंकि सभी, चाहे वे उत्पादक हो या व्यवस्थापक, इजीनियर हो या टेक्नीशियन, व्यापारी हो अथवा उपभोक्ता, कुछ न कुछ नई और उपयोगी बातें एक दूसरे से सीखते हैं और इस तरह निर्यात और विदेशो से व्यापार के लिये नई सभावनाएँ प्रस्तुत होती हैं तथा हम यह जान सकते हैं कि हम

अपने लक्ष्य की ओर किस गति से आगे बढ रहे हैं और आगे की मंजिलें हमें कितनी तेजी से और कैसे तय करनी हैं, जिससे कि जीवन के हर क्षेत्र में हमारा देश आत्मनिर्भर बन सके।

इसमे सदेह नहीं कि आजादी के बाद औद्योगिक प्रगति के लिये प्रशसनीय प्रयास हुए और इन २६ सालो मे हमारी उपलब्धियाँ सतोषजनक ही रही हैं, विशेषतः पिछले दशक मे आर्थिक और औद्योगिक प्रगति अधिक उल्लेखनीय रही है। हमारी प्रगति मे, इसमे सदेह नहीं कि अड़चनें कम नहीं आई, कई प्रकार की रुकावटें सामने आती रही हैं और हम जानते हैं कि यदि इस प्रकार के गतिरोध उपस्थित न होते तो हम प्रगति के पथ पर इससे भी आगे होते। गत वर्ष जून से पूर्व कुछ गभीर परिस्थितियाँ उत्पन्न हो गई थी। आर्थिक अस्थिरता और अनिश्चय की स्थिति ने देश के वैभव को तेजहीन करना चाहा। फलस्वरूप मुद्रास्फीति ने एक विकराल रूप धारण कर जन जन के कष्टो और कठिनाइयो मे वृद्धि की। अराजकता, अनुशासनहीनता और प्रमाद की मादकता ने देश की उत्पादकता को क्षति पहुँचाई। और यह सब अच्छी प्रकार जानते हैं कि मुद्रा स्फीति और औद्योगिक अस्थिरता मे कैसे मुक्ति मिली और इस थोडे समय मे उत्पादन के नए रिकार्ड कायम किए जा सके है। आज जिस नए युग का सूत्रपात हुआ है और देशवासियो मे जो नया उत्साह जगा है, उसमे हमारे देश की गरिमा बढ़ी है। हमारी आर्थिक आय मे वृद्धि हुई है। आज हर चीज आपको आसानी से उचित दामो पर मिल सकती है। आज दूसरे देशो के लोग चकित हैं कि भारत ने कैसे मुद्रास्फीति को रोकने मे सफलता प्राप्त की, जबकि उन्नत देश भी इतनी सफलता नहीं पा सके। हमारा एक ही उत्तर होता है कि इसका श्रेय हमारे देशवासियो को है जो हमेशा श्रेय मार्ग को अधिक महत्व देते हैं। आज हमने राष्ट्र उत्थान के लिये जो आर्थिक कार्यक्रम अपनाया है उससे प्रगति के नए आयाम प्रस्तुत हुए हैं और हमारे कार्यक्रम देश के प्रत्येक वर्ग के समुचित विकास और कल्याण का मर्म लिए हैं। इसे युग परिवर्तनकारी कार्यक्रम कहना चाहिए, क्योकि इसने आज समूचे देश मे जिस सामाजिक क्राति को जन्म दिया है उससे न केवल समस्याएँ ही हल होगी बल्कि राष्ट्र की शक्ति भी बढेगी।

औद्योगिक प्रगति के इस नए दौर मे बडे और छोटे उद्योगो ने आशातीत सफलता प्राप्त की है। उत्पादन के साथ साथ विदेशो के लिये भी निर्यात बढ़ा है। यह प्रसन्नता की बात है कि यूरोप और अमेरिका जैसे उन्नत

देशो मे हमारे माल की मांग बढ रही है। हमारे देश मे बनी मशीनें और अन्य उपकरण पश्चिमी देशो मे अपनी गुणविशेषता के कारण अधिक पसद किए जा रहे हैं और प्रतियोगिता के क्षेत्र मे यहाँ का बना हुआ सामान खरा उतर रहा है। इसके लिये देश के उद्योगो से सबधित सभी लोगो को मैं बधाई देता हूँ कि जिस तदेही से उद्योग सस्थानो मे आज कार्य हो रहा है, उनके मालिक और कार्यकर्ता, उत्पादन की दिशा मे इसी तन्मयता से कार्यरत रहेंगे और मूल्यो की स्थिरता मे अपना सहयोग देकर देश के आर्थिक तन्त्र को मजबूत करने मे अपना कर्तव्य निभाएँगे।

आज के इस औद्योगिक मेले को आकर्षण का केंद्र बनाने मे जिन कर्मठ व्यक्तियो का योगदान रहा है तथा अपने साथियो सहित इसके लिये जो उन्होंने काम किया है उसकी मैं प्रशसा करता हूँ और आशा करता हूँ कि वे इसी प्रकार के रचनात्मक कार्यो मे रुचि लेते रहेगे। इन शब्दो के साथ मैं इस मेले का उद्घाटन करता हूँ। मुझे विश्वास है कि अधिक से अधिक लोग इस प्रदर्शनी से लाभ उठाएँगे।

मूल्यों के प्रति श्रद्धा

आल इडिया दिगबर भगवान् महावीर २५वी शताब्दी निर्वाण महोत्सव सोसायटी के तत्वावधान मे आयोजित आज के इस समारोह मे उपस्थित होने और आप सबसे मिलने का जो अवसर आपने मुझे दिया, इसके लिये मैं आपको धन्यवाद देता हूँ।

पिछले वर्ष मे देश भर मे भगवान् महावीर की पच्चीसवी निर्वाण शताब्दी समारोहो का एक व्यापक पैमाने पर आयोजन हुआ तथा भगवान् महावीर के जीवनादर्श और तत्वदर्शन सबधी साहित्य के प्रकाशन से जन जन को लाभान्वित करने का सराहनीय कार्य हुआ। मै इसके लिये जैन समाज को बधाई देता हूँ।

यह सभी जानते है कि भारतीय सस्कृति जितनी प्राचीन है, उतनी ही व्यापक भी है। विभिन्न चितनधाराओ के सगम से इसने सागर की गहराई और आकाश की ऊँचाई को अपने भीतर मानो समो लिया है। इसकी सार्वभौमिकता तथा युगातरकारी सामर्थ्य ने इसे सदा सजीव रखा है। मानवता के विकास और मानव कल्याण के लिये अनेक महापुरुषो, ऋषि मुनियो ने इस देश मे जन्म लिया और पथ से भ्रात मानव को ज्ञानज्योति का प्रकाश प्रदान कर उसे सत्य मार्ग की प्रेरणा दी। उन महान् विभूतियो मे भगवान् महावीर का विशिष्ट स्थान है। वे तत्वदर्शी थे, जितेंद्रिय थे और एक महान् युग-प्रवर्तक थे। अपने वर्षो के तप और साधना से उन्होने जो आत्मबोध अर्जित किया, उस सपदा को मानव कल्याण के लिये समर्पित किया। इस ससार मे ये नाना प्रकार के दु ख क्यो है? बहुत से प्राणी यह कष्ट क्यो भोगते हैं? ये क्यो दरिद्र और दलित हैं? मानव कैसे इन दु खो से मुक्त हो सकता है? ये ही जिज्ञासा भरे प्रश्न थे जिनके समाधान के लिये तथा लोकहित की कामना ने महावीर स्वामी को भौतिक सुखो का त्याग करके तपसाध्य जीवन के लिये प्रेरित किया। मानव जीवन को सुव्यवस्थित करने, मनुष्य कृत्यो को अनुशासित करने और 'स्व' से ऊपर उठकर समाज के प्रति अपना दायित्व निभाने तथा सार्वजनिक हितो की रक्षा के लिये त्यागमय और परोपकारी भावनाओ को प्रतिष्ठित करने की उन्होने सीख दी। अहिसा, अपरिग्रह और आत्मसयम के मूल्यो की स्थापना के द्वारा समाज मे व्याप्त आर्थिक और सामाजिक भेद विभेद की

कुरीतियो को दूर कर एक सुदर, स्वस्थ और सुसस्कृत समाज की रचना के लिये इन्होंने दिशानिर्देशन किया। यह विचारने योग्य बात है कि मानव समाज को ऐसा रूप देने मे कहाँ तक सफल हो पाया है। इन जीवनमूल्यो को मनुष्य कितनी निष्ठा से व्यवहार मे उतार सका। यह आत्मनिरीक्षण आवश्यक है और यह जानने मे कठिनाई नही होगी कि आज का विचारक यह अनुभव करता है कि यदि हम विश्व मे शाति चाहते है, मानव के सद्विकास के इच्छुक है तो हमे निवृत्ति और प्रवृत्ति के बीच का रास्ता अपनाना होगा, क्योंकि जिस सुख और समृद्धि की मानव आकाक्षा करता रहा है, वह न तो उसे अकेले निवृत्ति के पथ से ही प्राप्त हो सकी है और जैसा कि हम आज देखते है, न वह प्रवृत्ति के एकागी मार्ग से ही उपलब्ध है। एक ओर हमारे पास ज्ञान का अतुल भडार है, दूसरी ओर विज्ञान ने भौतिक सुखो के कई साधन मनुष्य को दिए है। लेकिन आज भी विश्व मे एक बडी जनसख्या इन साधनो से वचित है। इतना ही नही, विज्ञान ने ऐसे अस्त्र शस्त्र भी मानव को दिए है, जिनके प्रयोग से मानव समाज मात्र का ही विनाश हो सकता है। विज्ञान मे दोनो ही शक्तियां है, वह उपयोगी निर्माण के लिये हो अथवा विनाश के लिये। यह तो मानव की सूझ बूझ पर निर्भर करता है कि वह इस शक्ति का क्या उपयोग करे। इसके लिये जरूरी है कि मानवीय मूल्यो को हम कभी न भूले, विज्ञान के साथ ज्ञान जुडा रहे। भगवान् महावीर, महात्मा बुद्ध तथा दूसरे धर्माचार्यों ने मानव के समक्ष समय समय पर अहिंसा का उपकारक मत्र प्रस्तुत किया, नैतिक मूल्यो की उपयोगिता पर बल दिया।

हम जानते हैं कि निजी स्वार्थों की पृष्ठभूमि मे 'स्व' का पृथक्तावादी भाव ही कार्यरत रहता है। यदि हम दया, विश्वास, सयम, प्रीति जैसे अच्छे शब्दो के साथ 'स्व' शब्द जोड दे तो वे अपने उचित अर्थ को खो बैठेंगे। प्रीति, विश्वास, अनुकपा और सयम तभी फलित होते हैं, जब हम इन्हें बाहर की ओर अर्थात् दूसरो के प्रति व्यवहार मे लाएं। यह सभी जानते है कि जहाँ निकृष्ट और उत्कृष्ट का विचार उपस्थित है, वहाँ नैतिकता सदैव विद्यमान है। लेकिन यह एक स्थिर उपलब्धि नही, यह एक सतत प्रक्रिया है, जिसका अर्थ है, आचरण की उद्देश्यात्मक वृद्धि। यह निर्विवाद सत्य है कि आचरण का उद्देश्यात्मक लक्ष्य उस विस्तार से सबधित है जो परहित साधन मे ही अपने हितो को सुरक्षित अनुभव करता है। विगत के अनुभव आधुनिक समस्याओ से निपटने मे तभी सहायक होते हैं, जब हम उन्हे वर्तमान परिवेश मे समझने का यत्न करें, तभी वे हमे इस योग्य बना सकते है कि हम उन समस्याओ को युग सदर्भ मे समझ सकें और उनके समाधान के लिये क्रिया का सकेत पा

सकें। भगवान् महावीर ने स्वय समाजसुधार की आवश्यकता अनुभव की थी और ऊँच नीच, भेद विभेद की रीति का विरोध किया था तथा शुद्ध आचरण, सह अस्तित्व, सहानुभूति तथा सहिष्णुता से मूल्यो के विस्तार के लिये स्वय देश के कोने कोने मे भ्रमण किया था। आज भी उनके वताए हुए उपदेश उतने ही उपयोगी और गुणसपन्न हैं, जितने उनके अपने युग मे थे। वास्तव मे आज के ससार को इन मूल्यो की सर्वाधिक आवश्यकता है। ये चीजें अव विश्व भर मे समझी जाने लगी हैं। विश्वशाति के लिये अहिंसा एक श्रेष्ठ विचार है और समानता के लिये अपरिग्रह एक मौलिक सिद्धात है। भावना यही है कि जो चीजें हम अपने लिये नही चाहते हैं, उन्हे दूसरो के लिये भी न चाहें। जैसा व्यवहार हम दूसरो से चाहते हैं, वैसा उनके साथ भी करें, जो सुख अपने लिये चाहते हैं, उसकी कामना सवके लिये करें और दूसरो के हित के लिये जहाँ तक भी हम सहायक हो सकें, हम अपना योगदान दें। लेकिन यह हम जानते है कि केवल सिद्धातो की दुहाई देने से समाज नही वदलता, नए परिवर्तन नही होते। यदि सिद्धात मानव व्यवहार को नियोजित करते है तो वह तभी होता है जव वह मानव कार्यकलापो में घुल मिल जाते हैं।

आज हम राष्ट्र के पुर्ननिर्माण मे कार्यरत है। आर्थिक और सामाजिक विकास के लिये हमने जिन राष्ट्रीय कार्यों को हाथ मे लिया है उनका यही आशय है कि देश के करोडो लोगो का आर्थिक और सामाजिक स्तर ऊंचा उठाया जाए और राष्ट्रनिर्माण मे उन्हें भागीदार वनाया जाए। इसके साथ समाज से उन कुरीतियो, अधविश्वासो एव प्रवृत्तियो को हटाया जा सके, जिसने हमारे विकास मे वाधाएँ पैदा की हैं। आज हमारे सामने एक ही लक्ष्य होना चाहिए कि हम किस प्रकार देश के लिये उपयोगी वन सकते हैं, किस प्रकार अपने देश को ऊँचा उठा सकते हैं। पिछले एक वर्ष से जवसे आर्थिक कार्यक्रमो को हाथ मे लिया गया है, जनजीवन मे एक व्यापक परिवतन दृष्टिगोचर होता है। आज देश एक रचनात्मक दिशा की ओर वढ रहा है और सामने जो आतरिक और वाहरी कठिनाइयाँ आईं थी उनको हम वडी मात्रा मे दूर करने मे सफल हुए हैं। अपनी उदार नीतियो के कारण, भारत आज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। यह हर देशवासी का कर्तव्य है कि वह प्रगति के क्रम को जारी रखने मे अपना पूरा सहयोग दे। हमारी प्रगति हमारे सामूहिक श्रम, अनुशासन और देशभक्ति से जुडी हुई है और मुझे पूरा विश्वास है कि भारत के हर नागरिक मे इन मूल्यो के प्रति पूर्ण श्रद्धा है।

इन्ही शब्दों के साथ मैं पुन आपको धन्यवाद देता हूँ कि आपने मुझे कुछ कहने और जानने का अवसर प्रदान किया।

भावात्मक एकता के साधन

दिल्ली शिशु कल्याण परिषद् के तत्वावधान में आज यहां जो वसत मेला आयोजित किया गया है उसमें उपस्थित होने का जो अवसर आपने मुझे दिया उसके लिये आपको धन्यवाद देता हूं।

भारत में जितने मेले और त्योहार मनाए जाते हैं, ससार में शायद ही किसी देश में मनाए जाते हों। हमारे यहां इनका एक विशेष महत्व रहा है। देखा जाय तो इस प्रकार के मेले हमारी सांस्कृतिक परपरा के अनुरूप हमारी भावात्मक एकता के साधन रहे हैं। वसत मेले का ऋतुपरिवर्तन के साथ सबध है। यह प्रतीक है भारतीय किसान के उल्लास का, जो अपने परिश्रम द्वारा सजोए गए फल को खेतों में लहराती हुई फसलों के रूप में देखकर खुशी से झूम उठता है। वसत उसके लिये ऐसा सुखद सदेश लेकर आता है, जिसमें नई ताजगी है, नया उत्साह और एक नए जीवन का सृजन है। वृक्षों में नए अकुर फूटते हैं, नए पत्ते लगते है, फूल खिलते हैं और वातावरण को खुशबू से भर देते हैं, प्रकृति का सौंदर्य निखर उठता है।

वास्तव में वसत मानव के लिये स्वय एक प्रेरणा है। जैसे मानव से कह रही हो, मुझे देखो, मेरी तरह नया परिधान धारण करो, नयापन लाओ, नई शक्ति और स्फूर्ति लेकर बदल डालो अपने समाज के स्वरूप को, जैसे मैंने धरती को हरियाली दी है, पुष्पों से इसे सजाया और सुगधित किया है, तुम भी अपने समाज को सुदर और स्वस्थ बना डालो, जहां कोई ऊंच नीच न हो, कोई भेदभाव न हो, जिसमे अपना दायित्व निभाते हुए सब नागरिक अच्छा और उद्देश्यपूर्ण जीवन बिता सकें, उन्नति के मार्ग पर अग्रसर हो सकें, जिसमें अपना दायित्व निभाते हुए सब नागरिक अच्छा और उद्देश्यपूर्ण जीवन बिता सके, उन्नति के मार्ग पर अग्रसर हो सके और अपने पराक्रम तथा परिश्रम से देश का नाम ऊँचा कर सके। हम भी यही चाहते है। परतु यह इच्छा तभी पूर्ण होगी, जब हम सब मिलकर जी जान से जुट जायेंगे इसे साकार करने के लिये। आत्मविश्वास, लगन और राष्ट्रीय भावना के साथ बढ़नेवालो के लिये मजिल कभी दूर नही हो सकती और जो कधे से कधा मिलाकर चलते हैं, कदम से कदम मिलाकर चलते है, ससार की कोई शक्ति उन्हे आगे बढने से नही रोक सकती।

आज हमारे देश मे जिस नवचेतना का उदय हुआ है, हमे राष्ट्र निर्माण की इस चेतना को जन जन तक, देश के बच्चे बच्चे तक पहुंचाना है। यह कौन नही जानता कि हमारी आशाएँ और सुविधाएँ सब देश की समृद्धि और सुदृढता से जुडी हैं। इसलिये राष्ट्र के लिये समर्पण की भावना प्रबल से प्रबलतर होती रहे, ऐसी हमारी चेष्टा होनी चाहिए। हम देश के किसी कोने मे रहें, किसी धर्म को मानें, कोई भी वेशभूषा पहनें, कोई बोली बोले, हमे यह गर्व होना चाहिये कि हम भारतीय है, हमारी जननी जन्मभूमि एक है। इसकी खातिर हमे जो भी त्याग करना पडे, जो भी जोखिम उठानी पडे, हम इसके लिये कोई कसर उठा नही रखेंगे। हमारे हृदय का देश-प्रेम हमे उन कार्यों के लिये प्रेरित करता रहे, जिनसे राष्ट्र के गौरव मे, इसकी शक्ति और सामर्थ्य मे वृद्धि हो तथा देशवासियो की हित-साधना हो। यह सब निर्भर करता है हमारी सृजनात्मक क्षमता पर, हमारी गतिशीलता पर। आज हमे जीवन के हर क्षेत्र मे आगे बढना है--वह विज्ञान का क्षेत्र हो या तकनीकी का, उद्योग का हो चाहे वाणिज्य का, कृषि का हो अथवा कला का। इसके साथ अपनी सस्कृति को भी हमे बनाए रखना है। अपनी भारतीय विशेषताओ की, आध्यात्मिक और नैतिक आदर्शो की हमे प्रतिष्ठा करनी होगी।

यह सत्य है कि किसी काम को आगे बढाने की जिम्मेदारी हमेशा भावी पीढी को सँभालनी होती है, वे ही लोग भविष्य के नागरिक होते है। हम जो आज बोते है, यह आवश्यक नही, उसको फलते हुए भी हमीं देखें। लेकिन आनेवाली पीढी उसे जरूर देख सकेगी। वे जो महान् कार्य अपने जीवनकाल मे करेंगे वे उससे आगे वाली पीढियो को परपरा के रूप मे हस्तातरित होगें, और उन्हें आगे बढाने का काम वे ही सँभालेंगे। जीवन का यही क्रम है। इसलिये हर सभ्य समाज बालको के सर्वांगीण विकास को प्रमुखता देता है और यही चाहता है कि वर्तमान पीढी से भी सबल, सशक्त, तेजस्वी, साहसी, सहृदय तथा मेधावी हो भावी पीढी। हमारे राष्ट्रनायको ने शिशुकल्याण को देश के लिये सबसे महत्वपूर्ण माना। पडित जवाहरलाल नेहरू ने अपना भरपूर प्यार बच्चो मे बांटा और यही चाहा कि हमारे देश के बच्चो की ऐसी तरबीयत हो, लालन पालन और देख रेख हो कि उनका नए भारत के अनुरूप व्यक्तित्व सुगठित हो सके।

भारत जैसे देश मे, जहाँ एक बडी जनसख्या निवास करती है, कई प्रकार की सामाजिक और आर्थिक रुकावटे है। शिशुकल्याण के कार्य को तेजी

से पूरा किए बिना काम नहीं चलेगा। हमें उस ओर विशेष ध्यान देना है। जो साधनहीन अथवा पिछड़े वर्गों के बच्चे हैं, उन तक यह सहायता पहुँचे, वे बच्चे राष्ट्रीय जीवन में आगे आ सकें, उन्हें आनेवाले समय के अनुरूप हम बना सकें, आज यही हमारी चेष्टा होनी चाहिए। कुछ थोड़े से लोगों की प्रगति से, उनकी समृद्धि से देश उन्नत नहीं होता, उस प्रगति में सब शामिल हों, तभी यह होगा। आज हमारा हर प्रयास अपने से पीछेवालों को विकास की ओर प्रवृत्त करने का होना चाहिए। दिल्ली शिशुकल्याण परिषद् इस दिशा में जो उपयोगी कार्य कर रही है, उसके लिये मैं उसे बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि भविष्य में भी आप इसी उत्साह और लगन से कार्यरत रहेंगे। इन्हीं शब्दों के साथ मैं इस मेले का सहर्ष उद्घाटन करता हूँ।

ग्रामोद्योगों का महत्व

मुझे यहाँ आने और आप सब रचनात्मक कार्यकर्ताओ से मिलने में बडी प्रसन्नता है। खादी ग्रामोद्योग समिति द्वारा खादी व ग्रामोद्योगो की प्रगति व प्रचार के लिये जो काम किया जा रहा है, वह सचमुच सराहनीय है। इसके लिये सबसे पहले मैं आप सबको--कामगारो, कार्यकर्ताओ और सचालको को--बधाई देता हूँ।

खादी स्वावलंबन और स्वदेशी की पहली सीढी है। पूज्य महात्मा गाधी जी ने खादी और ग्रामोद्योग के प्रचार और प्रसार को केवल आर्थिक दृष्टि से ही नही, अपितु सामाजिक और राष्ट्रीय दृष्टि से प्रोत्साहन और बल दिया है। खादी के पीछे देशभक्ति की भावना है, सामाजिक न्याय और राष्ट्रीय एकता की कल्पना है।

महात्मा जी ने स्वदेशी को एक व्रत का स्थान दिया है। यह केवल एक आर्थिक कार्यक्रम या कोई सामाजिक आदोलन नही है, यह जीवन की एक साधना है, एक शैली है। इसका सबध व्यक्ति की वेशभूषा, रहन सहन और आचार व्यवहार, इन सबसे है। किसी पदार्थ का उपयोग सही तरीके से करना ही संपत्ति है और पदार्थ का उपयोग न करना अथवा गलत ढग से करना उस सपत्ति का ह्रास करना है।

गरीबी और अभाव का मुख्य कारण यह है कि हम प्रकृतिसुलभ साधनो और अपार मनुष्य शक्ति का पूर्ण रूप से उपयोग नही कर पा रहे हैं और इन साधनो का उचित रूप से वितरण नही हो पा रहा है। हमारा देश इतना विशाल है और सौभाग्य से हमारी प्राकृतिक सपदा भी महान् है। हमारे यहाँ अपार मनुष्य शक्ति है। इन सबका यदि हम पूर्ण रूप से और सही ढग से उपयोग करें तो मैं समझता हूँ कि गरीबी की समस्या का बहुत हद तक समाधान कर सकेंगे। खादी और ग्रामोद्योगो के प्रचार व प्रसार के पीछे जो बुनियादी कल्पना है, वह यही है। खादी व ग्रामोद्योग की उन्नति व प्रचार के काम मे जो लोग लगे हुए हैं, वे देश की आर्थिक प्रगति मे ही सहायक नही हो रहे हैं, अपितु राष्ट्रीयता के प्रचार मे भी अपना योगदान दे रहे हैं। इसलिये मैं जानता हूँ कि आप एक महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं जो देश और समाज के हित मे है।

इसमें कोई संदेह नहीं कि आधुनिक युग विज्ञान और टेक्नोलाजी का युग है। भारी यंत्रों और भारी उद्योगों का देश विदेश में बोलबाला है। लेकिन फिर भी, मैं समझता हूँ कि प्रत्येक देश को अपनी परिस्थितियों और आवश्यकताओं के अनुरूप अपनी आर्थिक योजनाओं और सामाजिक नीतियों को निर्धारित करना है। हमारे देश में खादी और कुटीर व ग्रामोद्योगों के विकास के लिये बहुत गुंजाइश है। सरकार भी खादी व ग्राम उद्योगों को प्रोत्साहन दे रही है।

ग्रामीणों और ग्रामीण क्षेत्रों के विकास में ग्रामोद्योगों का बड़ा हाथ है। देश की बढ़ती हुई विशाल जनसंख्या को रोजगार देने हेतु इन उद्योगों की स्थापना की आवश्यकता और बढ़ गई है। इन उद्योगों के निर्बाध रूप से पनपने के लिये आवश्यक है कि भारी उद्योगों और ग्रामीण उद्योगों के कार्यक्षेत्र को निश्चित किया जाय ताकि दोनों में प्रतिस्पर्धा न हो और दोनों अपने अपने क्षेत्र में काम करते हुए देश की उन्नति और विकास में योगदान दें। आज के युग में कोई भी उद्योग सामाजिक न्याय और पारस्परिक सहयोग की भावना पर ही पनप सकता है। खादी और ग्रामोद्योगों का आधार इसी बात पर है और इसलिये मेरा विश्वास है कि इन दोनों का भविष्य उज्ज्वल है।

आप सब कार्यकर्ताओं को मैं बधाई देता हूँ। आप एक महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं। आपका कार्य दिनों दिन बढ़े और आप सब सुखी व आनंदमय जीवन व्यतीत करें, यही मेरी प्रार्थना और कामना है। आप सबका फिर से बहुत बहुत धन्यवाद।

किसानों का किस्सा

आपने मुझे आज की इस अखिल भारतीय किसान गोष्ठी का उद्घाटन करने का निमंत्रण दिया, उसके लिये मैं आप सबका, विशेष करके अपने मित्र श्री विकल जी का बड़ा आभार मानता हूँ। मैं स्वयं एक गाँव में रहा हूँ। किसानों के साथ रहकर, उनकी समस्याओं को समझने और अपनी सामर्थ्य के अनुरूप उनके समाधान के लिये कुछ प्रयत्न करने का भी मौका मुझे मिला है। इसीलिये कुछ विचार प्रकट करने का साहस कर रहा हूँ।

इसमें कोई संदेह नहीं कि आजादी के बाद, हमारे देश ने विभिन्न क्षेत्रों में, विशेषकर उद्योग और कृषि के क्षेत्र में काफी प्रगति की है। लेकिन कल कारखानों की वृद्धि और शहरों के विस्तार के होते हुए भी, भारत गाँवों का ही देश है, एक कृषिप्रधान देश है। हमारी अर्थव्यवस्था आज भी मुख्यतः कृषि उत्पादन पर निर्भर करती है। यह एक निर्विवाद सत्य है कि कृषि और किसान हमारे देश की आर्थिक संपन्नता की रीढ़ हैं। यह बात उस समय भी हमारे सामने थी, जब हम आजादी के लिये संघर्ष कर रहे थे। यही कारण है कि किसान आंदोलन, आजादी के आंदोलन का अभिन्न अंग बन गया था। यह हमारे लिये बड़े गर्व की बात है कि हमारे भारतीय किसान देश के हर मोर्चे पर आगे रहे हैं, आजादी के आंदोलन के समय भी उन्होंने सक्रिय भाग लिया, अपना सर्वस्व तक देश के लिये अर्पित किया था। आजादी के बाद जब भी देश के समुख कोई प्रश्न आया, हमारे किसान भाइयों ने अपना पूरा सहयोग दिया है। इसके लिये वे बधाई के पात्र हैं।

आजादी के पहले और आजादी के बाद, किसानों की हालत को बेहतर बनाने के लिये जो कदम उठाए गए, उन सबका विवरण देने की अब कोई आवश्यकता नहीं है। लेकिन उस समय एक नारा देश भर में गूंज उठता था, 'जोतनेवालों को जमीन मिले'। यह आज भी महत्वपूर्ण है और किसान की समस्याओं के हल की यह एक बुनियाद है। भूमि सीमा संबंधी कानून की माँग आज जो प्रतिध्वनित हो रही है, वह इसी सिलसिले की एक कड़ी है।

वर्तमान काल में भी किसान और किसानों की समस्याएँ सबसे पहले हैं। इसके फलस्वरूप देश भर में जागृति की लहर उठी और एक नई हवा चल

नहीं है, जो देश के लिये लाभदायक है। इसलिये इस परिस्थिति से लाभ उठाकर, हमें इस कार्यक्रम के विभिन्न पहलुओं को जल्दी से जल्दी अमल मे लाना चाहिए। कृषि के क्षेत्र में, इस कार्यक्रम के जो अनिवार्य अग है, उनका उल्लेख किए बिना मैं नहीं रह सकता।

कृषि भूमि की हदबन्दी को तेजी से लागू करके, अतिरिक्त भूमि को तेजी से भूमिहीनो के बीच बाँटना जरूरी है। भूमिहीनो के लिये आवास के लिये भूमि के आवटन को तेजी से अमल मे लाना है। यह प्रसन्नता की बात है कि बधक मजदूरी गैरकानूनी करार दी गई। अतिरिक्त और भूमि आवास के आवटन से ही न तो किसान की समस्याएँ सुलझती, न कृषि की आशातीत उन्नति होती। आज कृषि और किसान की समस्याएँ अनेक सामाजिक और आर्थिक समस्याओ के साथ जुडी है। एक समग्र और व्यापक दृष्टिकोण से ही हम कृषि और किसान की उन्नति की बात सोच सकते है। किसान के पास भूमि हो, पर उसे जोतने के लिये उसके पास बैल न हो, अच्छे बीज और खाद खरीदने के लिये उसके पास धन न हो और सिचाई की व्यवस्था न हो तो वह क्या कर सकता है? इन सबका बदोबस्त भी हम कर दें, फिर भी यदि वह कर्ज मे डूबा हुआ हो और खेती के नए तरीको को वह नही जानता हो, तो पैदावार कैसे बढा सकता है? कृषि के उत्पादन और उत्पादकता को बढाने की आज सबसे बडी आवश्यकता है। यह एक ऐसा मसला है जिसपर हमारा भविष्य निर्भर करता है। जहाँ जहाँ जमीन हो और जहाँ जहाँ किसान अन्न अधिक से अधिक पैदा कर सकते हो, उनको अधिक पैदा करना चाहिए। हमे नए तरीके अनुसधान करके निकालने है, नए किस्म की खाद, नए औजार जो हमारे किसान भाई आसानी से काम मे ला सकते है, और नए आवपाशी का इतजाम करना है। छोटे किसान के पास इतनी सपत्ति नही कि वह इन सब चीजो को खरीद सके, समझ सके। इसलिये आवश्यकता है कि नए अनुसधानो के जो नतीजे निकलते है, उन नतीजो को उन तक पहुँचाया जाए। मैं समझता हूँ कि इस गोष्ठी मे इन सभी समस्याओ के बारे मे विचार किया जाएगा। एक दूसरी चीज की ओर मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। हमारे देश मे जंगल अभी बहुत है, मगर बहुत जोरो से घटता भी जा रहा है। उसका नतीजा यह देखने मे आ रहा है कि या तो बरसात कम हो रही है या मौसम मे बहुत फर्क पड रहा है या इस तरह की और बाते हो रही है। अगर जगल को काटकर खेती के लिये

जमीन बनानी है तो ऐसा इतजाम करना चाहिए कि जिसमे वही जगल कटे, जिससे नुकसान नही पहुँचे या कम से कम नुकसान पहुँचे ।

हमारे देश मे आज तक खेती का काम हमेशा बैलो के द्वारा चलता आया है और आज भी चल रहा है । बडे बडे ट्रैक्टर वगैरह हैं, लेकिन उनका इस्तेमाल बहुत लोग नही कर सकेंगे, क्योकि उनके पास न तो उतना धन है और न ही उतनी जमीन है । तो हमारे लिये यह जरूरी होता है कि हम बैलो की नस्ल ठीक रखें, क्योंकि हमारी सारी खेती उसी पर निर्भर करती है । जब हम गायो की रक्षा करेंगे तो हमको दूध भी मिलेगा और खेती के लिये बैल भी मिलेगे ।

सबसे बडी बात यह है कि आज देश को अधिक खाद्यान्न पैदा करने की आवश्यकता है । जिस तेज गति से आबादी बढ रही है, उसको देखते हुए यह और भी आवश्यक हो जाता है । इसलिये हम उन करोडो किसानो के हृदय मे यह भावना पैदा करें कि उनको अधिक से अधिक अन्न सिर्फ अपनी जरूरत के लिये नही, सारे देश की जरूरत के लिये पैदा करना है जिससे उनको भी लाभ हो और सारे देश को भी लाभ हो ।

मैं आशा करता हूँ कि इस गोष्ठी मे आप किसान की आर्थिक और सामाजिक समस्याओ के बारे मे ही विचार नही करेगे, बल्कि कृषि के उत्पादन और उत्पादकता को बढाने की दिशा मे भी चर्चा करेंगे । इस गोष्ठी के आयोजको और इसमे भाग लेनेवालो को मैं बधाई देता हूँ और कामना करता हूँ कि आपकी यह गोष्ठी सफल हो । इन शब्दो के साथ अब मैं सहर्ष इस गोष्ठी का उद्घाटन करता हूँ और फिर एक बार आपको धन्यवाद देता हूं कि आपने मुझे यह मौका दिया है।

मानव कल्याण का एक ठोस कार्य

अखिल भारतीय नशाबंदी परिषद् के तत्वावधान मे आयोजित कार्यकर्ता-प्रशिक्षण-शिविर के उद्घाटन समरोह मे उपस्थित होने का जो अवसर मुझे प्राप्त हुआ, उसके लिये मै आपका आभारी हूं।

हर वह कार्य जो मानव कल्याण की उदात्त भावना मे प्रेरित होकर किया जाय, सामाजिक महत्व का होता है। मुझे प्रसन्नता है कि इस शिविर की व्यवस्था के पीछे भी यही उद्देश्य है। आप यहां आए हैं कि कुछ नई बाते सीखें, समाज में जाकर प्रभावशाली ढंग से कार्य करने के लिये आधुनिक तरीको की जानकारी प्राप्त करें।

आपका कार्य बडा लचीला और कठिन है। आपका कार्य सेवा, सहायता तक ही सीमित नही है, आपका काम है, एक नया मोड देने का। नशीले पेय गम गलत करने की दवा नही है। वस्तुत नशीली चीजें व्यक्ति के गर्मी मे वृद्धि करने के सिवा कोई लाभ नही पहुंचाती। इसीलिये इस मद्यनिषेध, नशाबंदी का सवाल उठा, नशीली चीजों के सेवन को रोकने की बात सामने आई। कही कानून का आश्रय लेकर इसकी रोक थाम का प्रयत्न हुआ, कही सामाजिक प्रतिबंधो ने काम किया। परतु नशा पीनेवालो की तादाद क्या कम हुई ? शायद नहीं। लेकिन क्यो ? स्पष्ट है कि यह कार्य जोर जबरदस्ती का नहीं, उन मूल कारणों की ओर ध्यान देने का है, जिनके फलस्वरूप मनुष्य नशीली वस्तु का सहारा लेता है। यह मनुष्य का अज्ञान है जो इस भ्रामक विश्वास का मूल कारण है। समाजसेवक का यही काम है कि वह इस अज्ञान को दूर करने का प्रयास करे।

नशा अच्छी चीज नही है, भले ही वह नशा किसी चीज का हो। नशा उन्माद का पर्यायवाची माना जाता है, सभवत इसलिये कि सेवन करने से मस्तिष्क पर सबसे पहले उसका प्रभाव पडता है। दूसरा प्रहार इसका उसके परिवार पर पडता है। अत मे प्रभाव पडता है व्यक्ति के उस शरीर पर, जिस-पर मनुष्य की उत्पादक क्षमता निर्भर करती है। इस प्रकार समाज अपनी उस उत्पादक इकाई से वचित हो जाता है जो उसके लिये पहले बहुत उपयोगी

थी। इस आर्थिक सकट के लिये, नैतिक पतन के लिये, शारीरिक दुर्बलताओ के लिये, पारिवारिक और सामाजिक समस्याओ के लिये, जो प्राय नशेबाजी के कारण जन्म लेती हैं, बहुत हद तक व्यक्ति स्वय जिम्मेदार है। परतु इस शोचनीय अवस्था मे कुछ हाथ उस वातावरण का भी है जो मासूम लोगो को भी इस दलदल मे ढकेलने के लिये उद्यत रहता है। इसलिये एक निश्चित मत तैयार होना चाहिए, जिससे नशे के बारे मे एक सुदृढ धारणा बने कि यह नशीला पेय व्यक्ति और समाज की प्रगति, उसके सुखी और स्वस्थ जीवन के लिये एक बडी बाधा है।

आज नशीली चीजो के बढते हुए प्रयोग को देखकर कोई भी विचारशील चिंतित हुए बिना नही रह सकता। जो चीज फैशन बनकर लोगो मे फैल रही है, नई पीढी को इस दु खात पथ की ओर अग्रसर होने से बचाना होगा।

यह हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य है कि हम इन बुराइयो को समाज से दूर करने के लिये ठढे दिल से सोचें, कुछ उपाय ढूंढें और निष्ठापूर्वक इनकी रोक थाम के लिये काम करें, समाज के अदर जीवन की एक चेतना जागृत करें, उन लोगो मे आत्मविश्वास और जीने की एक उमग पैदा करे, जिसकी कमी के कारण शायद मनुष्य नशे का सहारा लेता है।

मुझे आशा है कि आपको यहाँ बहुत सी बातें जानने का मौका मिलेगा। इस जानकारी और अनुभव से आप, लोगो की हित कामना से कार्य करें, लेकिन एक प्रचारक या सुधारक बनकर नही, बल्कि लोगो के मित्र बनकर, सहानुभूति और प्रेम से, उनका दिल जीतकर, उनमे आत्मविश्वास पैदा करें ताकि अपनी भूल को स्वय सुधारने के लिये वे तैयार हो। इस शिविर तथा आपके प्रयत्नो की सफलता के लिये मेरी हार्दिक शुभ कामनाएँ।

देश की उन्नति में महिलाओं का योगदान

इस समारोह में शरीक होने के लिये आपने मुझे जो निमंत्रण दिया है उसके लिये मैं आप सबको, विशेषकर प्रो० नूरुल हसन साहब को धन्यवाद देता हूँ। मुझे यह जानकर बड़ी खुशी हुई कि यह उत्सव अंतरराष्ट्रीय महिला वर्ष के उपलक्ष में कायम की गई राष्ट्रीय समिति की सिफारिश पर आयोजित किया जा रहा है। मुझे यह जानकर और भी प्रसन्नता हुई कि इस उत्सव के लिये जो चलचित्र चुने गए हैं वे भावात्मक और कलात्मक, दोनों दृष्टियों से, सर्वोत्तम हैं और वे एक भाषा के नहीं, अनेक भाषाओं के हैं। मेरा यह विश्वास है कि ये चित्र ऐसे हैं जो केवल भारतीय महिला की सामाजिक स्थिति, उसके सुख दुख का ही चित्रण नहीं करते, अपितु उसकी सांस्कृतिक परंपराओं, नैतिक मूल्यों और आदर्शों को भी प्रतिबिंबित करनेवाले हैं, यानी उनके संपूर्ण व्यक्तित्व और चित्रण को उजागर करनेवाले हैं।

भारत की महिलाओं ने, प्राचीन काल की बात छोड़ दीजिए, आधुनिक काल में, स्वराज्य संग्राम के दिनों में पूज्य महात्मा जी के प्रेरणादायक नेतृत्व में जो महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है, वह अविस्मरणीय है। वे परदे से बाहर आईं, उन्होंने जेल की सजाएं भुगती और कइयों ने स्वतंत्रता की वेदी पर अपनी जान न्योछावर कर दी। यह एक ऐसी महान् विरासत है जिससे आज की भारतीय महिला प्रेरणा ग्रहण कर सकती है और अपनी बुद्धि और बल से समाज की प्रगति और देश की उन्नति में योगदान कर सकती है। यह बड़ी प्रसन्नता की बात है, गर्व की बात है, कि हमारे देश की महिलाओं ने विभिन्न क्षेत्रों में—सामाजिक, राजनीतिक, कला और संस्कृति के क्षेत्रों में—महत्वपूर्ण सेवा के द्वारा ख्याति प्राप्त की है। ऐसी महिलाओं में चलचित्र के क्षेत्र में नरगिस का नाम लिया जाय तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी। वे काफी मशहूर हैं और उन्होंने भी जो सफलताएं प्राप्त की हैं, उनके लिये मैं उन्हें बधाई देता हूँ।

यह भी बड़ी खुशी की बात है कि आजादी के बाद फिल्मों के बनने और बनाने में रोज-ब-रोज उन्नति होती जा रही है और सभी भाषाओं में तरह तरह की नई फिल्में तैयार होती जा रही हैं। फिल्म ही एक ऐसी

चीज है जो सारे देश मे वहुत लोकप्रिय है और उसके द्वारा लोगो को वहुत कुछ जानने और सीखने का तथा दिलवहलाव करने का मौका मिलता है। इसलिये इनमें जितनी नई चीजें लाई जा सकें, जो मानवोपयोगी हो, उतना ही उनका क्षेत्र और वढेगा और उनकी लोकप्रियता अधिक होगी।

आज के सदर्भ मे हम देश मे नए समाज का निर्माण करना चाहते हैं, एक ऐसे समाज का जिससे सभी को उन्नति के लिये समान अवसर प्राप्त हो। फिल्म जैसा एक सशक्त माध्यम इसमे सहायक सिद्ध हो सकता है। ऐसी फिल्मे तैयार होनी चाहिए, जिससे देश मे नई चेतना और जागृति उत्पन्न हो और राष्ट्रीय एकता को वल मिले। मैं आशा करता हूँ कि सरकार इस तरह के चलचित्रो के निर्माण के लिये अधिक प्रोत्साहन देगी और इस उद्योग से सवधित सभी लोग—निर्माता, अभिनेता, अभिनेत्री, निर्देशक और कलाकार—इस भावना से प्रेरित होकर नई स्फूर्ति और निष्ठा से इस दिशा में अपना योगदान देंगे। फिल्म शिक्षा के प्रचार और प्रसार का भी उत्तम साधन है। वच्चो के लिये भी कुछ प्रेरणादायी चित्र वनाए जा सकते हैं जिससे भारत के भविष्य के नागरिक ऊँचे आदर्श से प्रेरित होकर देश के गौरव को और उज्ज्वल कर सकें।

जव से सरकार की ओर से पुरस्कार देने का तरीका निकाला गया है, फिल्मो को अच्छा प्रोत्साहन मिल रहा है। मैं आशा करता हूँ कि इस प्रोत्साहन से वल पाकर ऐसी फिल्मे तैयार होगी जो गाँव के लिये, शहर के लिये, अनपढ़ के लिये और शिक्षित वर्ग के लिये—अर्थात् सव लोगो के लिये, जैसी जरूरत होगी वैसी फिल्मे वनेंगी। मैं समझता हूँ कि अव तक कुछ वड़े वड़े गाँवों तक ही फिल्मे पहुँची हुई हैं। लेकिन हिंदुस्तान का वहुत वडा हिस्सा ऐसा वाकी है जहाँ फिल्मे नही पहुँची हैं। निर्माताओ का यह काम है कि ऐसी फिल्मे उनके लिये भी तैयार करें जो उनके लिये लाभप्रद हो और जिनसे उनके ऊपर कोई वुरा असर न पडे।

इस चलचित्र उत्सव मे जो फिल्मे दिखाई जा रही हैं, उनके निर्माताओ, कलाकारों और इसके आयोजको को मैं वधाई देता हूँ और उत्सव की सफलता के लिये अपनी शुभ कामनाएँ देता हूँ।

सामूहिक अनुभूति का विस्तार

भारत विकास परिषद् के तत्त्वावधान मे आयोजित राष्ट्रीय समूहगान प्रतियोगिता समारोह मे उपस्थित होने का जो सुयोग आपने मुझे दिया, उसके लिये मैं आपको धन्यवाद देता हूँ। आपकी संस्था पिछले कई वर्षों से जनोपयोगी कार्यक्रमो द्वारा लोगों मे नवचेतना के विस्तार एव भारतीय संस्कृति के अनुरूप आत्मानुशासन, राष्ट्रीयता, पारस्परिक सहयोग, एकता एव मेल जोल की भावना सबल बनाने के लिये सक्रिय है। इसके लिये आपकी संस्था प्रशसा की पात्र है। आज जरूरत इस बात की है कि प्रबुद्ध और चिन्तनशील व्यक्ति जन मानस को नई दिशा की ओर प्रेरित करे।

कलाकार अपनी कला के द्वारा सारे समाज का चित्रण करता है। वह युग की वास्तविकता को ग्रहण करने से ही उत्कृष्ट कला का निर्माण करता है। अपने युग का प्रतिनिधि कहलाता है, क्योकि वह अपनी कला कृतियो द्वारा समाज को प्रभावित ही नही करता उसे बदलने की शक्ति भी रखता है।

वास्तव मे, सगीत और कला, हमारे भाव जगत् की अभिव्यक्ति के मुख्य साधन माने जाते है। संगीत का जीवन मे विशेष स्थान है। मनोरजन का उसमे अपना ही गुण है। परतु इस छोटी सीमा मे बांधना सगीत को एक छोटे स्तर पर लाकर खडा करने जैसा है। यह तो साधन रहा है, उस व्यापक विचारक क्राति का, जिसमे आध्यात्मिकता, भक्ति, शौर्य, नैतिकता और देशभक्ति के स्वर गूंजते है। आजादी के आदोलन के समय राष्ट्रीयता के गीतो ने देशवासियो को क्या उस गहरी निद्रा से झँझोडा नही था ? प्रभात फेरियों मे पुरुषो और महिलाओ की टोलियो ने देशवासियो मे नया उत्साह और जोश पैदा नही किया था ? यह सभी जानते है कि उसमे हमारे साहित्यकारो और कलाकारो ने एक बडी भूमिका निभाई थी।

आज देश स्वतत्र है। देश की हर जिम्मेदारी हम पर है। इसे बनाना, सँवारना हमारे हाथ मे है। हमारे देश मे सगीत, नृत्य तथा नाट्य कला की एक बहुत पुरानी परपरा है। साहित्य तथा अन्य ललित कलाओं की भांति वह हमारी सस्कृति का अग है। हमे अपनी ललित कलाओ को कायम ही नही रखना है, हमे उन्हें और उन्नत करना है। यह आवश्यक है कि नव

चेतना के स्वर लोगो तक पहुँचें और उस नई भावना को जागृत कर दे, जिसे पाकर कौम तरक्की की ओर बढती है ।

सगीत का उद्देश्य है कि वह भावना मे एकत्व स्थापित करे और इस प्रकार पारस्परिक सहयोग और सगठन को दृढ़ करने मे सहायक बने । सामूहिक अनुभूति के विस्तार मे सामूहिक गान का महत्व है । इसमे वह शक्ति है, जो मानव हृदय को स्पर्श कर सकती है और उसे केंद्रित स्वार्थ की परिधि से ऊपर उठाकर उसमे, 'बहुजन हिताय' और 'बहुजन सुखाय' की भावना जागृत कर सकती है । आज हमारी सारी शक्ति अज्ञान, दरिद्रता, वैपम्य, शोषण जैसी बुराइयो को समाज से दूर करने की ओर होना चाहिए । इसके लिये आज ऐसी रचनाएँ होनी चाहिए जो जनमन मे सामाजिकता के आदर्श सस्कारो को स्थापित कर सके और उन्हें एक नई दृष्टि दे सके । नए भारत के निर्माण के लिये यह समवेत स्वर देशवासियो के रोम रोम को जगा दें, एक नया उत्साह भर दें उनके जीवन मे और यह उचित उक्ति सत्य हो जाय :

कदम चूम लेती है खुद आके मजिल,
मुसाफिर अगर आप हिम्मत न हारे ।

राष्ट्र को मजबूत और खुशहाल बनाने के लिये हमे दत्तचित होकर कार्य करना होगा, यही समय की माँग है । देश के साहित्यकार और कलाकार इस राष्ट्रीय दायित्व को पूरा करेंगे, ऐसी आशा ही नही की जाती, ऐसा विश्वास है ।

आज जिन कलाकारो ने पुरस्कार प्राप्त किए, उन्हें मैं हार्दिक बधाई देता हूँ और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ ।

———

नैतिकता के संरक्षक

यह मेरे लिए प्रसन्नता की बात है कि मैं अखिल भारतीय जैन युवक संघ की ओर से आयोजित आज के समारोह में उपस्थित हो सका।

हमारे देश की एक महान सांस्कृतिक परंपरा है। उसने जीवन का ध्येय धर्म, अर्थ, काम मोक्ष के इन चार तत्वों में स्थापित किया है। यहां संसार के अर्थ, भोग की उपेक्षा नहीं है, लेकिन उसकी आवश्यकता को वहीं तक स्वीकारा गया है, जहां वह लोकसेवा, न्याय और समानता के लिये, व्यक्ति और समाज दोनों के यथेष्ट हित साधना में प्रयोग हो। इसलिये हमारे महापुरुषों ने संयम, त्याग, तप और कर्तव्य पालन को मुख्य बना कर जीवन यापन करने की विधियों का निर्माण किया और बताया कि यह मानव शरीर बड़े महत्व का है, अनेक कामनाओं की सिद्धि का केंद्र है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, उसे अपने हितों की साधना में सदैव सामाजिक और मानवीय हितों की रक्षा करनी चाहिए। यहाँ महत्वपूर्ण है वह सर्वोच्च उद्देश्य, जिसकी ओर मनुष्य आकांक्षाओं और मनोभावों को लक्षित करते हैं और उसके लिये अच्छे साधनों का प्रयोग करते हैं। इसी लिये, इच्छाओं को सुनियंत्रित करने का आदेश दिया गया है, उन्हें रचनात्मक कार्यों की ओर, अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध तथा लोकसेवा और लोक मंगल के लिये कहा गया है।

चरित्र का समग्र जीवन से संबंध है। सही मानों में यही मानव जीवन के निर्माण का आधार है। इसकी कमी अतृप्ति, असंतोष, असंतुलन को जन्म देकर समाज में एक गंभीर शिथिलता उत्पन्न कर देती है। नियम और न्याय से विमुक्त जीवन व्यक्ति को मानवता से नीचे गिरा देता है। प्रगति के लिये किए गए प्रयत्नों द्वारा मनुष्य ने सभ्यता और संस्कृति के नाम पर आज तक जो कमाया है, वह सब खो बैठेगा, यदि मनुष्य से चरित्र की यह मूल्यवान निधि छिन जाय। यह नैतिकता मानव का सच्चा आभूषण है, इसे खोकर मनुष्य के पास शेष रहता ही क्या है।

अनुशासन और आत्मसंयम की सामाजिक जीवन में सर्वत्र प्रतिष्ठा होनी चाहिए। यदि हम बलवान् आत्माएँ, बलवान् मानस और शक्तिशाली भुजाएँ देश के लिये चाहते हैं, तो हमें आनेवाली पीढ़ियों के लिये नैतिक शिक्षा का

सुचारु रूप से प्रबंध करना होगा, उन्हें व्यक्तिगत तथा सामाजिक स्वस्थता के लाभ बताने होंगे, उनको शील और शिष्टाचार का प्रशिक्षण देना होगा, उनमे समता, सहिष्णुता, सदाचार और सद्भावना का सद्विवेक विकसित करना होगा।

मैं चाहूँगा कि हमारे नवयुवक नैतिकता के संरक्षक बनकर समाज सुधार के अगुवा बनें, जो कुछ अच्छा है उसे बनाए रखने तथा समाज मे नाना प्रकार की जो नई और पुरानी बुराइयां प्रविष्ट हो गई हैं, उन्हे दूर करने मे सहायक हो। मैं समझता हूँ कि राष्ट्र के सामाजिक और आर्थिक मामलो मे उन्हें दिलचस्पी लेनी चाहिए। पढे लिखे नवयुवको और नवयुवतियो को अपने सद्-व्यवहार, अपने जीवन आदर्शों, सेवा और सद्भावना के गुणो से सुसज्जित होकर दूसरे लोगो पर अपनी छाप छोड़नी चाहिए। असमानताओ और भेद भावनाओ को मिटाने मे अपनी उपयोगी भूमिका निभानी चाहिए। आज समाज के अदर कितने ही काम हैं, जिन्हे युवा शक्ति सपादित करके राष्ट्र निर्माण मे अपना हाथ बटा सकती है।

आज का समारोह हमारे वरिष्ठ ससद् सदस्य श्री अचलसिंह जी की ८२वीं वर्षगांठ के उपलक्ष मे आपने आयोजित किया, वे स्वतत्रता सग्राम के पुराने साथियो मे से हैं। हमेशा देश सेवा से सत्प्रेरित रहे है और आज तक इसके लिये सक्रिय हैं। इस वयोवृद्ध अवस्था मे भी जिस प्रकार वह काम कर रहे हैं, उसे मैं नौजवानो के लिये अनुकरणीय समझता हूँ। मैं इनके दीर्घ जीवन की कामना करता हूँ और आशा करता हूँ कि वह समाज की इसी लगन से सेवा करते रहेंगे।

———

कर्मवीरों की जन्मभूमि

मेरे लिये यह बडी प्रसन्नता की बात है कि मैं दिल्ली मे स्थापित राजस्थान संस्था सघ के तत्वावधान मे आयोजित आज के इस समारोह मे उपस्थित हो सका। आप सबसे मिलने का जो अवसर मुझे दिया गया, उसके लिये मै आपको धन्यवाद देता हूँ।

यह जानकर मुझे प्रसन्नता हुई कि पिछले कई वर्षों से आपकी यह सस्था राजस्थान के साहित्यिक, सामाजिक एव कलात्मक बिब को उभारने तथा उनके सवर्धन के लिए कार्य कर रही है। अतर प्रातीय मेल मिलाप बढाने और इस प्रकार राष्ट्रीय एकता की सुदृढता के लिये आपने जो विविध कार्यक्रम हाथ मे लिए है उनके लिये आपकी सस्था बधाई की पात्र है।

राजस्थान की एक गौरवपूर्ण परपरा रही है। एक ओर यदि इसका इतिहास शौर्य और साहस के कारनामो से भरा पडा है, तो दूसरी ओर साहित्य, सस्कृति और कला के क्षेत्र मे भी इसका विशिष्ट स्थान रहा है। हमारी सस्कृति के महान् गुणो की प्रतिष्ठा मे राजस्थान सदैव आगे रहा है। सबसे बडी बात तो यह है कि राजस्थान मे रहनेवाले हमारे देशवासी परिश्रमी हैं, कठिनाइयो से जूझनेवाले है। आज कितने ही राजस्थान के रहनेवाले, दूसरे प्रदेशो मे हैं। वे जहाँ भी गए, उन्होने अपने उद्यमी और मिलनसार स्वभाव का परिचय दिया है। उद्योग के क्षेत्र मे राजस्थान के लोगों का एक बडा हाथ है। अन्य जीवन क्षेत्रो मे भी आपका सदैव सहयोग प्राप्त होता रहा है।

स्वतत्रता सग्राम के इतिहास मे राजस्थान के कर्मवीरो के नाम सदैव समादर से स्मरण रहेंगे जो आनेवाली पीढियो के लिये त्याग, देश भक्ति और देश की खातिर सर्वस्व न्योछावर करने का अमर सदेश दे गए हैं।

स्वतत्रता प्राप्ति के पश्चात् राजस्थान के नव निर्माण के लिये राजस्थान की जनता को जो अवसर मिला, उसमे उसकी भूमिका सराहनीय रही है। शिक्षा के क्षेत्र मे काफी कार्य हुआ है। सिचाई के साधनो मे वृद्धि हुई है, नए उद्योगो की स्थापना मे यथेष्ट प्रयत्न हुए हैं परतु अभी बहुत कुछ काम होना है। आज हमने देश के नव निर्माण का जो बीडा उठाया है, जो नए कार्यक्रम हाथ मे लिए है, उनके लिये हमे ठोस काम करना है। हम यह

सुचारु रूप से प्रबंध करना होगा, उन्हें व्यक्तिगत तथा सामाजिक स्वस्थता के लाभ बताने होंगे, उनको शील और शिष्टाचार का प्रशिक्षण देना होगा, उनमे समता, सहिष्णुता, सदाचार और सद्भावना का सद्विवेक विकसित करना होगा।

मैं चाहूँगा कि हमारे नवयुवक नैतिकता के सरक्षक बनकर समाज सुधार के अगुवा बनें, जो कुछ अच्छा है उसे बनाए रखने तथा समाज मे नाना प्रकार की जो नई और पुरानी बुराइयाँ प्रविष्ट हो गई है, उन्हे दूर करने मे सहायक हो। मैं समझता हूँ कि राष्ट्र के सामाजिक और आर्थिक मामलो मे उन्हें दिलचस्पी लेनी चाहिए। पढे लिखे नवयुवको और नवयुवतियो को अपने सद्व्यवहार, अपने जीवन आदर्शों, सेवा और सद्भावना के गुणो से सुसज्जित होकर दूसरे लोगो पर अपनी छाप छोडनी चाहिए। असमानताओ और भेद भावनाओ को मिटाने में अपनी उपयोगी भूमिका निभानी चाहिए। आज समाज के अदर कितने ही काम हैं, जिन्हे युवा शक्ति सपादित करके राष्ट्र निर्माण मे अपना हाथ बटा सकती है।

आज का समारोह हमारे वरिष्ठ ससद् सदस्य श्री अचलसिह जी की ८२वी वर्षगाँठ के उपलक्ष मे आपने आयोजित किया, वे स्वतत्रता सग्राम के पुराने साथियो मे से हैं। हमेशा देश सेवा से सत्प्रेरित रहे हैं और आज तक इसके लिये सक्रिय है। इस वयोवृद्ध अवस्था मे भी जिस प्रकार वह काम कर रहे हैं, उसे मैं नौजवानो के लिये अनुकरणीय समझता हूँ। मै इनके दीर्घ जीवन की कामना करता हूँ और आशा करता हूँ कि वह समाज की इसी लगन से सेवा करते रहेंगे।

कर्मवीरों की जन्मभूमि

मेरे लिये यह बड़ी प्रसन्नता की बात है कि मैं दिल्ली मे स्थापित राजस्थान संस्था संघ के तत्वावधान मे आयोजित आज के इस समारोह मे उपस्थित हो सका। आप सबसे मिलने का जो अवसर मुझे दिया गया, उसके लिये मैं आपको धन्यवाद देता हूँ।

यह जानकर मुझे प्रसन्नता हुई कि पिछले कई वर्षों से आपकी यह संस्था राजस्थान के साहित्यिक, सामाजिक एवं कलात्मक बिंब को उभारने तथा उनके संवर्धन के लिये कार्य कर रही है। अंतर प्रांतीय मेल मिलाप बढाने और इस प्रकार राष्ट्रीय एकता की सुदृढता के लिये आपने जो विविध कार्यक्रम हाथ मे लिए हैं उनके लिये आपकी संस्था बधाई की पात्र है।

राजस्थान की एक गौरवपूर्ण परंपरा रही है। एक ओर यदि इसका इतिहास शौर्य और साहस के कारनामों से भरा पडा है, तो दूसरी ओर साहित्य, संस्कृति और कला के क्षेत्र मे भी इसका विशिष्ट स्थान रहा है। हमारी संस्कृति के महान् गुणों की प्रतिष्ठा मे राजस्थान सदैव आगे रहा है। सबसे बडी बात तो यह है कि राजस्थान मे रहनेवाले हमारे देशवासी परिश्रमी हैं, कठिनाइयों मे जूझनेवाले हैं। आज कितने ही राजस्थान के रहनेवाले, दूसरे प्रदेशो मे हैं। वे जहाँ भी गए, उन्होंने अपने उद्यमी और मिलनसार स्वभाव का परिचय दिया है। उद्योग के क्षेत्र मे राजस्थान के लोगों का एक बडा हाथ है। अन्य जीवन क्षेत्रो मे भी आपका सदैव सहयोग प्राप्त होता रहा है।

स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास मे राजस्थान के कर्मवीरो के नाम सदैव समादर से स्मरण रहेंगे जो आनेवाली पीढियो के लिये त्याग, देश भक्ति और देश की खातिर सर्वस्व न्योछावर करने का अमर संदेश दे गए हैं।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् राजस्थान के नव निर्माण के लिये राजस्थान की जनता को जो अवसर मिला, उसमे उसकी भूमिका सराहनीय रही है। शिक्षा के क्षेत्र मे काफी कार्य हुआ है। सिंचाई के साधनो मे वृद्धि हुई है, नए उद्योगो की स्थापना मे यथेष्ट प्रयत्न हुए है परंतु अभी बहुत कुछ काम होना है। आज हमने देश के नव निर्माण का जो बीडा उठाया है, जो नए कार्यक्रम हाथ मे लिए हैं, उनके लिये हमे ठोस काम करना है। हम यह

चाहते हैं कि हमारे देश के हर प्रात मे तेजी से प्रगति हो, आर्थिक और सामाजिक विपमताएँ दूर हो। इसके लिये हमे दो दिशाओ से कार्य करना है। एक ओर तो हमे अपनी कार्य क्षमता को बढाना है, और दूसरी ओर समाज से उन रूढियो, अंधविश्वासों तथा कुरीतियो को हटाना है जो शताब्दियो से एक बोझ बनकर, हमारे विकास मे बाधक रही हैं। आर्थिक उन्नति के लिये नए साधनो का प्रयोग और कठिन परिश्रम आवश्यक है। लेकिन यह भी जरूरी है कि समाज मे व्यापक अपव्यय, आडबर, नशीली वस्तुओ के प्रयोग और दहेज जैसी कुप्रथाएँ दूर हो और लोगो को राष्ट्रीय बचतो मे भाग लेने के लिये प्रोत्साहित किया जाय। इन बचतो का लाभ व्यक्ति को भी होगी और राष्ट्र निर्माण के कार्यो मे, तथा सामूहिक हित साधना मे, हम अपना सहयोग भी दे सकेंगे।

राजस्थान मे भी देश के अन्य प्रदेशो के समान, पिछडापन और कुरीतियो से समाज मुक्त नही हो पाया। आपकी जैसी स्वायत्त सस्थाओ को समाज मे एक स्वस्थ दृष्टिकोण पैदा करने मे आज सहयोग देना चाहिए। अपने विभिन्न कार्यक्रमो द्वारा हमे चाहिए कि लोगो मे नई चेतना जागृत करने का प्रयत्न करे।

आपात कालीन स्थिति की घोपणा से हमारे देश मे नए युग का सूत्रपात हुआ है। आज समाज के हर क्षेत्र मे एक नया उत्साह उत्पन्न हुआ है। अनुशासन, समय की पाबदी और अपने कर्तव्य के प्रति जो जागरूकता आज दिखाई दे रही है, इन थोडे दिनो मे जितना कार्य हुआ है, उसके आँकडे काफी सतोपप्रद हैं। समय की आवश्यकताओ की पूर्ति के लिये हमे चाहिए कि हम सामाजिक ढाँचे को नया रूप दें, उसमे उपयोगी परिवर्तनो के लिये उपयुक्त वातावरण तैयार करें। मैं समझता हूँ कि आपकी जैसी सस्थाएँ नव चेतना के लिये भी काम करें तो हमारे आर्थिक और सामाजिक कार्यक्रमो के कार्यान्वयन मे बडी सहायता मिलेगी।

आज हमारा हर प्रयत्न समाज से पिछडापन, कुरीतियो और अंधविश्वासो को दूर करने की ओर होना चाहिए। क्योकि हम जानते हैं कि जीवनस्तर को ऊँचा उठाने के लिये आर्थिक विकास जितना आवश्यक है, सामाजिक परिवर्तन भी उतने ही अपेक्षित हैं।

आज हमारे सास्कृतिक कार्यक्रमो के समक्ष भारतीय सस्कृति के महान् मूल्यो की प्रतिष्ठा के साथ सामाजिक उत्थान का लक्ष्य रहना चाहिए।

हमारा यही प्रयत्न होना चाहिए कि हम लोगों के दिलों में समादर, सहयोग, सहकारिता और सद्भावना पैदा कर सकें और राष्ट्रीय दायित्वों के लिये उन्हें प्रेरित करते रहें।

राजस्थान दिनों दिन प्रगति करता रहे और देश के विकास कार्यों में सदैव की भाँति अपना योगदान देता रहे, यही मेरी कामना है।

सीमा के संरक्षक

आपके बीच आने और आप सबसे मिलने का जो अवसर मुझे मिला उसकी मुझे बड़ी प्रसन्नता है। आपने मेरे यहाँ आने पर मेरा जो हार्दिक और प्रेमपूर्ण स्वागत किया उसके लिये, मैं आप सबको धन्यवाद देता हूँ। मैं यह विश्वास से कह सकता हूँ कि कई बातो मे मेरा यहाँ आना स्मरणीय रहेगा, और जो लाभदायक अनुभव मैंने पाए हैं, उन्हें मैं सदा याद रखूंगा।

आप सबके सकल्प एवं समर्पण की भावना को देखकर मन बड़ा प्रभावित हुआ। आपका यह सुरक्षा दल, देखा जाए तो हमारे देश की सीमाओं को बाहरी घुसपैठ से सुरक्षित रखने का जो कार्य कर रहा है, वह बड़ा महत्वपूर्ण काम है। मुझे बताया गया है कि हाल ही में आपके जवानो की एक छोटी सी टुकडी ने उत्तर प्रदेश एव लद्दाख के अचलो मे चीनियो के विरुद्ध सफलताएँ प्राप्त की। यह खुशी की बात है, हमारी सरकार ने हमारे इन जवान भाइयो को उचित मान्यता और समान प्रदान किया है, जिनके कारण हमे ये सफलताएँ मिली। इस बात से हमारे इस विश्वास को बल मिलता है कि हमारी सीमाओं की रक्षा सुयोग्य हाथो मे है। यह भारत तिब्बत सीमा पुलिस दल, भले ही एक छोटा सा दल है, लेकिन नि.सदेह एक ऐसा दल है, जिसके अधिकारी और जवानो मे साहस, योग्यता और देश भक्ति का सुदर योग कहा जा सकता है। मुझे यह बताया गया है कि आपके इस दल की पुन रचना तथा सगठन का कार्य विचाराधीन है और मुझे विश्वास है कि जब यह पूरा हो जाएगा, उससे यह दल राष्ट्रसेवा के इस महान कार्य मे अपनी उपयोगिता को और बढ़ा सकेगा।

मुझे मालूम है कि भारत तिब्बत सीमा पुलिस की स्थापना चौदह वर्ष पूर्व हुई थी और अब इसके जवानो की सख्या लगभग चौदह हजार है। कहा जाए तो हमारी तिब्बत से लगनेवाली सीमा का भी एक विशाल क्षेत्र है। पश्चिम नेपाल से लेकर कराकोरम दर्रे तक यह सीमा फैली हुई है। इनका क्षेत्र हमारे देश के तीन प्रातो से जुडा हुआ है, जिनमे उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश और जम्मू काश्मीर के क्षेत्र आते हैं। इस सारी सीमा पर आप लोग हैं।

ऊपर आकाश से मैंने इस क्षेत्र को देखा, इन विकट स्थानों तथा कठिन परिस्थितियों में एक महान् कर्तव्य का पालन करते हुए आपको देखा, यह सब देखकर मुझे बेहद प्रसन्नता हुई। शत्रु की घुसपैठ तथा हमले से इन सीमाओं को सुरक्षित रखना देश सेवा का काम है। मुझे बताया गया है कि आपके इस नए दल में अधिकतर जवान गढ़वाल, लद्दाख, कुमायूं, हिमाचल प्रदेश आदि के पर्वतीय क्षेत्रों के रहनेवाले हैं। आप लोग अपने परिवारों से एक लम्बे समय तक दूर रहकर तथा नाना प्रकार के जोखिम उठाकर, यहां जो काम कर रहे हैं, उन्हें मैं विश्वास दिलाना चाहता हूं कि यद्यपि वे इन दूर और दुर्गम क्षेत्रों में हमसे मीलों दूर हैं, उनकी भलाई और उन्नति का हमें पूरा ध्यान है। आप लोग अपने कर्तव्य का जिस निष्ठा से पालन कर रहे हैं उसके लिये आप प्रशंसा के पात्र हैं। आपके कार्य की जितनी सराहना की जाय, कम है।

इस बात से मैं बड़ा प्रभावित हुआ हूं, जब मुझे बताया गया कि आपके दल के जवान अपने निर्धारित कार्य को जितनी अच्छी प्रकार निभाने के लिये तत्पर रहते हैं, उसी प्रकार दूसरे सहायता कार्यों में भी भाग लेते रहते हैं। इन ग्रामीण क्षेत्रों में रहनेवाले हमारे ग्रामवासियों पर किसी तरह का सकट बन जाए, कोई प्राकृतिक विपत्ति पड जाए, मुझे खुशी है उसके लिये सहायता कार्य में भी आप हमेशा आगे रहते हैं। पिछले महीनों में हिमाचल प्रदेश के कुछ क्षेत्रों में भूचाल आते रहे, उनमें आप के दल का शानदार सेवा कार्य रहा है।

मुझे मालूम हुआ है कि आप ने अपने तीन पाठ—विचार, अभ्यास तथा स्वाभिमान—सफलतापूर्वक पूरे कर लिए हैं। अब आप में कठिन से कठिन परिस्थितियों का सामना करने की क्षमता है, उनसे जूझने की शक्ति है। मैं समझता हूं कि इन अभ्यासों द्वारा आपने जो अनुभव प्राप्त किए, वे इस दल के लिये बहुमूल्य हैं। मुझे विश्वास है कि उपर्युक्त प्रशिक्षण के फलस्वरूप आप कठिनाइयों से लोहा लेने की सामर्थ्य ही नहीं रखते, बल्कि अपने कार्यों को प्रभावी बनाने के लिये तरीके सोच सकते हैं, अपनी कार्य कुशलता को बढा सकते हैं।

एक बार पुन आपको धन्यवाद देता हूँ तथा आप के अच्छे कार्यों की सफलता की कामना करता हूँ।

भविष्य का मार्ग

नेशनल चेंबर आफ इडस्ट्रीज एड कामर्स, उत्तर प्रदेश, आगरा की रजत जयती समारोह के अवसर पर आगरा के विभिन्न उद्योग व्यापार प्रतिष्ठानो के प्रतिनिधियो से मिलने तथा चेंबर की गतिविधियो की जानकारी पाने का जो सुयोग मुझे प्राप्त हुआ उसके लिये मैं आपका आभारी हूँ।

आगरा अपने कई उद्योगों के लिये देश भर मे प्रसिद्ध रहा है। देश की स्वतत्रता के पश्चात् देश भर मे औद्योगिक विकास एव विस्तार के लिये जो उत्साह पैदा हुआ उसमे आगरा का औद्योगिक समुदाय किसी से पीछे नही रहा। बल्कि जिस प्रकार विविध उद्योगो की यहाँ स्थापना हुई है और जिस प्रकार विदेशी मुद्रा अर्जित करने मे आगरा नगर का योगदान रहा है, वह नि सदेह प्रशसनीय कार्य है। यह संतोष की बात है कि यहाँ भी देश के दूसरे भागो के समान समुचित होने तथा उत्पादन मे वृद्धि करने के लिये जोखिम उठाने की इच्छा शक्ति भी है।

उत्तर प्रदेश भारत का सबसे बडा प्रात है। इतने बड़े क्षेत्र मे कई उद्योग, कल कारखाने हैं। परतु औद्योगिक विकास मे कई को दूसरे प्रदेशो की तुलना मे अभी पीछे समझा जाता है। केंद्रीय तथा राज्य सरकार इस क्षेत्र के औद्योगिक विकास के लिये चेष्टावद्ध है और जहाँ तक सभव हो सकता है कई योजनाएँ उसके विचाराधीन हैं और उन्हे कार्यान्वित करने के लिये वह उत्सुक है। औद्योगिक विकास के लिये सरकार की ओर से जितनी सुविधाएँ सभव हो सकती हैं, दी जा रही हैं। हम चाहते है कि देश भर मे उद्योग बढे, उद्यमकर्ताओ, व्यवस्थापको, प्रवधको, इजीनियरो तथा अन्य शिक्षित बेरोजगारो के लिये काम के अवसर पैदा हो। राष्ट्रीय उत्पादन के साथ राष्ट्रीय आय मे वृद्धि हो, जिससे कि देशवासियो का जीवन स्तर सुधारने मे सुविधा हो। मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि नेशनल चेंबर आफ इडस्ट्रीज एड कामर्स गत २५ वर्षो मे आगरा क्षेत्र मे उद्योग व्यापार के विकास, विस्तार मे, उद्यम कर्ताओ की हित साधना तथा उनके सरक्षण के लिये सचेष्ट रहा है और इनकी कठिनाइयो के शमन के लिये उसने राज्य तथा केंद्रीय सरकार की यथेष्ट सहायता प्राप्त की है। मै

चैंबर की रजत जयती पर आप सबको बधाई देता हूँ कि देश के आर्थिक विकास मे आप इसी लगन से कार्य करते रहेगे।

व्यक्तिगत जीवन के समान ही राष्ट्रीय एव अतर्राष्ट्रीय परिस्थितियो मे भी परिवर्तन आते रहते है। एक दो वर्षो मे जिस तेजी से परिवर्तन हुए है, उनसे कोई अनभिज्ञ नही है। आर्थिक अस्थिरता एव मुद्रा स्फीति के कारण विकासशील देशो की प्रगति पर बुरा असर तो पडा ही है परतु सामान्य जीवन भी इसके कुप्रभाव से नही बच सका है। एक समय था जब किसी देश की सामरिक शक्ति दूसरे देशो पर छाई रहती थी। परतु आज आर्थिक शक्ति निर्णायक बनती जा रही है। उसके प्रभाव क्षेत्र से मुक्त हो पाना इतना सरल नही रहा। इसीलिये अब यह अनुभव किया जाता है कि आर्थिक प्रतियोगिता से सावधान हुए बिना, विकासशील देश आगे नही बढ सकते। आज यह आवश्यक है कि पूरे विश्व की आर्थिक गतिविधियो पर हमारी नजर रहे, उनके दूरगामी प्रभावो एव निकट भविष्य की सभावनाओ का अनुमान लगाकर तदनुरूप अपेक्षित परिवर्तन हो और बाहरी प्रभावो से बचने के भरसक प्रयत्न किए जायें और यह तभी सभव हो सकता है जब हम अपने साधनो का उचित ढग तथा उचित मात्रा मे उपयोग करके उत्पादन बढाएँ। यह ठीक है कि आज विश्व मे कोई भी देश पूर्णतया आत्मनिर्भर नही है। किसी न किसी वस्तु के लिये प्रायः सभी राष्ट्रो को एक दूसरे पर निर्भर रहना पडता है।

इसमे सदेह नही कि आजादी के बाद देश के औद्योगिक क्षेत्र मे काफी विकास हुआ है। परतु समाज की वास्तविक आवश्यकताओ को पूरा करने मे अभी तक आशापूर्ण परिणाम प्राप्त नही हो सके है। आवश्यक वस्तुओ की कमी के कारण, भावो मे वृद्धि के कारण, सामान्य व्यक्ति को काफी कठिनाइयाँ झेलनी पड रही है, कारण स्पष्ट है। कुछ लोगो के हित साधन तथा लाभो पर राष्ट्र की सुदृढता एव समृद्धि का आधार तैयार नही होता। यह इस बात पर निर्भर करता है कि हमारी परियोजनाओ का लाभ देश की सपूर्ण जनता को प्राप्त हो, और वह उदासीन, असतुष्ट एव शकित न रहे। लोकतत्र की शक्ति सामान्य जनता पर निर्भर करती है उसकी सुख, समृद्धि और प्रगति मे ही देश का उत्थान निहित है। इसी लिये राष्ट्र के निर्माण मे हर छोटे बडे, मालिक, मजदूर, किसान, करमकार

इत्यादि सभी का सहयोग अनिवार्य एव अपेक्षित है। बाहरी सहायता पर कोई ठोस आधार कायम नही किया जा सकता। वह आधार देश की आतरिक शक्ति पर ही तैयार होगा और इसके लिये-जरूरी है कि हम सब मिलकर पूरी निष्ठा एव तन्मयता से काम करें। वह काम मिलो मे हो, कारखानो मे हो, खेतो मे हो, कार्यालयो मे हो अर्थात् जो भी दायित्व देश ने हमे सौंपा है, उसे हम पूरा करने की चेष्टा करें।

यह कहना अनुचित न होगा कि समाज के समृद्ध तथा सपन्न वर्ग का दायित्व अधिक माना जाता है। जितना उनका कार्य क्षेत्र बडा है, उसके अनुसार समाज उनसे सहयोग और सेवा की आशा करता है। साधारण जनता सदैव यह अपेक्षा करती है कि उनके हितो की अवहेलना न हो।

आज के इस वैज्ञानिक युग मे बहुत सी वशगत परपराएँ टूटी है और उनके स्थान पर नई धारणाओ ने जन्म लिया है। किसी उद्योग के लिये आज मालिक और मजदूर से काम नही चलता। आज सफल उद्योग स्थापित करने के लिये बहुत सी चीजो की जरूरत है। आज जरूरत है, प्रशिक्षित प्रबंधको एव कार्यपालको की। किसी ने कहा है कि उद्यम के स्वामित्व मे कही अधिक महत्व प्रबध की योग्यता पर निर्भर करता है।

देश एक कठिन समय से गुजर रहा है। सघर्ष किए बिना मुश्किलो से कौन उभरा है? आज चारो तरफ यह अनुभव किया जाता है कि उत्पादन बढे। हमारे देश मे पूंजी की कमी है परतु इस कमी को दूर करने के लिये जब तक छोटी और बडी बचतो को आर्थिक विकास और उत्पादन के लिये निवेश नही किया जाता, पूंजी कैसे बढेगी। इसी लिये अर्थशास्त्री बचतो के निवेश की बात करते हैं। अब यही चाहिए कि उद्योगो मे विनियोजित पूंजी का अधिक से अधिक उपयोग हो, उत्पादन को ज्यादा से ज्यादा बढाया जाय। औद्योगिक क्षेत्र मे कुछ कठिनाइयाँ हैं। कच्चे माल, बिजली, यातायात इत्यादि सुविधाओ की कमी से उत्पादन नही बढाया जा सका अथवा उत्पादन क्षमता को स्थिर नही रखा जा सका। परतु उन कठिनाइयो को दूर करने की चेष्टाएँ हो रही हैं। सरकार उद्यमो की स्थापना, विस्तार एव विकास के लिये काफी सुविधाएं दे रही है और उत्पादन बढाए जाने की दिशा मे किए जाने-वाले प्रयासो मे हर प्रकार की सहायता करने का प्रयत्न कर रही है। लेकिन इतने सबके बावजूद ऐसा मान लेना भ्रम मे रहने के समान है कि केवल उद्यमकर्ता एव सरकार के प्रयासों से उत्पादन बढेगा। आज यह अनुभव

किया जाता है कि प्रबंधक प्रतिभा से पूरे लाभ तभी प्राप्त हो सकते हैं जब तकनीकी एव प्रशासनिक सतर्कता के साथ मालिक और मजदूर मे सहानुभूति पूर्वक सबध स्थापित हो। लेकिन हम अनुभव कर सकते हैं कि औद्योगिक विकास के लिये देश मे एक दृढ़ आधार बनाया जा चुका है और मेरा विश्वास है कि उत्पादनकर्ता, श्रमिक, प्रबंधक, तकनीशियन के सामूहिक प्रयासो से आशाजनक परिणाम प्राप्त किए जा सकते है। आपसी सहयोग तथा ताल-मेल से अधिक लाभ उठाया जा सकता है। अपने प्राकृतिक तथा मानवीय ससाधनो का उचित रूप से उपयोग करके देश द्रुत गति से औद्योगिक क्षेत्र मे पर्याप्त उन्नति करे। सुयोग्य एव दूरदर्शी, व्यवस्थापको, उद्यमकर्ताओ, प्रबधको की सूझ बूझ से अवश्यमेव ही औद्योगिक क्षेत्र मे एक नई स्फूर्ति पैदा होगी और कल्याणकारी राज्य की आशाओं और आकांक्षाओ को पूरा करने मे आप सब पूरे उतरेंगे, यह मुझे पूरी आशा है।

मनुष्य के सामने भविष्य का मार्ग सदैव खुला रहता है यदि उसके निर्माण मे वह वर्तमान के मूल्यवान समय का पूरा उपयोग करे। कोई भी कौम आगे बढ़ती है जब वह समस्याओं से जूझना जानती है। कुछ लोग यदि आगे बढ़ जायें और समाज की एक बड़ी सख्या पीछे रह जाय, उससे कोई बड़ा लाभ नही होगा। इसलिये जो लोग दूसरों से आगे हैं, वह जनता से अपना सबध कायम रखें, उन्हें अपने साथ लेकर आगे बढ़ें। देश मे कुछ नई प्रतिभाएं उद्यम के क्षेत्र मे प्रवेश पावें, उन्हें बड़े प्रतिष्ठानो का सहयोग और मार्गदर्शन मिलता रहे तो उन्हे उभरने मे आसानी होगी।

वर्तमान आर्थिक कठिनाइयो के निराकरण मे उद्योगपति एवं व्यापारी वर्ग बड़ी सहायता कर सकता है। आज जरूरत है कि हम अपने निजी लाभों की अपेक्षा राष्ट्रीय लाभो पर ज्यादा ध्यान दें। अनावश्यक खर्चो को कम करें तथा रोजगार के अधिक अवसर औद्योगिक प्रतिष्ठानो, व्यापारिक सस्थाओ मे पैदा करके बढ़ते हुए असतोष को एक रचनात्मक दिशा प्रदान की जाय इसी मे सभी का हित निहित है।

मुझे प्रसन्नता है कि चेंबर, न केवल उद्योग व्यापार की हित रक्षा मे ही कार्यरत है, बल्कि राष्ट्र के व्यापक हितों को भी इसने सदैव अपने समक्ष रखा है और प्रातीय एव केंद्रीय सरकार द्वारा स्थापित बहुत सी समितियो मे आपके सदस्यो को प्रतिनिधित्व प्राप्त है और आप लोग एक सद्भावनापूर्ण

वातावरण मे आर्थिक विकास एव सुदृढता के लिये सराहनीय कार्य कर रहे हैं। मैं आशा करता हूँ कि भविष्य मे भी चेंपर राष्ट्रीय हितो को दृष्टि मे रखते हुए उद्यमकर्ताओ तथा व्यापारियो को उचित सुविधाएँ दिलाने तथा उनको राष्ट्रीय दायित्व के लिये प्रेरित करने मे प्रयत्नशील रहेगा। मैं आपकी उपलब्धियो के लिये आप सबको बधाई देता हूँ और यही चाहता हूँ कि समाज की सेवा मे आप इसी भावना और लगन से कार्यरत रहें।

---

२. देश और भाषा

देश और भाषा

दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास के अड़तीसवें दीक्षांत समारोह में उपस्थित होने का जो अवसर आपने मुझे दिया उसके लिये मैं आप सबका आभारी हूँ। आपका अनुरोध था कि मैं सभा के कार्यों को स्वयं आकर देखूं और इस वर्ष के स्नातकों को उनके भावी सफल जीवन के लिये अपनी शुभकामनाएँ दूँ।

मैं दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा से बहुत समय से परिचित हूँ और जानता हूं कि यह संस्था बड़े सुचारु रूप से हिंदी के प्रचार प्रसार का काम कर रही है। यह जानकर अतीव प्रसन्नता है कि अपने स्थापना काल से लेकर आज तक सभा द्वारा एक राष्ट्रीय महत्व का कार्य संपादित हो रहा है।

महात्मा गांधी जी की प्रेरणा से सन् १९१८ मे जिन महान् उद्देश्यों की पूर्ति के लिये इस सभा की स्थापना हुई, उसे कौन नही जानता? वह उद्देश्य था राष्ट्रीय भावना को उद्दीप्त करने का, देशवासियो को एकता के सूत्र मे बांधने का और उस सगठित शक्ति से उस विदेशी सरकार से लोहा लेने के लिये, जिसने हमें गुलामी की शृंखलाओं से जकड़ रखा था। हमें मन और काया से भी दास बनाने की चेष्टा की गई, और जबरदस्ती अंग्रेजी थोपी गई, ताकि भारतवासी अंग्रेजियत की चकाचौंध मे अपने अस्तित्व को भूल जाएँ, उनके रग मे रँगकर अपनी सस्कृति, सभ्यता से मुँह मोड़ लें। परतु वह सफल नही हो सके।

हमारी उस सस्कृति को अक्षुण्ण बनाए रखने का श्रेय हमारी भारतीय भाषाओं को है। जिनके माध्यम से इसने अभिव्यक्ति की वाणी ग्रहण की, जिनकी कोख मे चिरतन काल से यह पल्लवित हुई। आघात और प्रत्याघात के बावजूद यह बनी रही, क्योंकि समन्वय इसकी विशेषता है। गुण ग्रहण करने की इसमे अतुल क्षमता है। आज विश्व के इतिहास पर हम दृष्टि डाले तो हमें मालूम होगा कि जिस सस्कृति और सभ्यता मे इस समन्वय शक्ति की कमी आई वह समय के आघातो का सामना नही कर सकी। आज उनका नाम निशान तक शेष नही है। रोम की सभ्यता और सस्कृति कभी अपने उत्कर्ष पर थी, परतु आज वह कहाँ है?

भाषा मानव विचारो, कृत्यो, अनुभवो तथा उपलब्धियो को अभिव्यक्ति अपने अतराल मे संजोए रखती है। इसी के द्वारा ज्ञान, विज्ञान, दर्शन, साहित्य, कला, शास्त्र, इतिहास आदि प्राचीन काल से आनेवाली पीढियो को हस्तातरित होते रहे है। लेकिन ग्रहण करने की शक्ति के विना, भाषाएँ भी समुन्नत और समृद्ध नही हो सकती। आदान-प्रदान के विना वे आगे नही वढती। अपने कोश को वढाए विना समय की आवश्यकताओ को पूरा करने की सामर्थ्य कहाँ से आएगी। इन्हें गति चाहिए, अवरोध नही। नई प्रतिभाएँ इसे संवारती और सजाती हैं।

उपनिवेशवादी राज्य मे अंग्रेजी को अनिवार्य वनाने का जो षड्यन्त्र रचा गया, उसके पीछे भारतीय भाषाओ को अपदस्थ करने के सिवा और कोई ध्येय नही हो सकता। हमारे राष्ट्रनायको ने इस वात को समझा, और मिलकर राष्ट्रभाषा का चयन किया। सयोग से वह गौरव प्राप्त हुआ हिंदी भाषा को, क्योकि इसका प्रभाव क्षेत्र अधिक था। अग्रेजी की वढती हुई वाढ को रोकने के लिये यह जरूरी था, क्योकि उस समय अग्रेजी की स्थिति कुछ दूसरी थी। समय परिवर्तनशील है, उसके साथ ही हमारी धारणाओ मे भी परिवर्तन आता है। आज अग्रेजी राजाज्ञा से नही सीखी जाती, वह स्वेच्छा से पढी जाती है। आज अतर्राष्ट्रीय सदर्भ मे इसकी स्थिति दूसरी है और इसे अव वनाए रखने की आवश्यकता को अनुभव किया जाता है। परतु इसका यह अर्थ नहीं कि उसको वही स्थान प्राप्त हो जो उसे हमारी स्वाधीनता से पहले था। एक गौरवशाली राष्ट्र के नाते हमारी अपनी भाषाओ का स्थान इसे कभी प्राप्त नही हो सकता। सपर्क भाषा के रूप मे हिंदी को हम सवने स्वेच्छा से चुना है, राष्ट्रीय हित को दृष्टि मे रखते हुए वही हमारे जन साधारण को आकृष्ट कर सकती है क्योकि वह हमारी सभ्यता और सस्कृति को, हमारी प्रातीय भाषाओ के समान अभिव्यक्त करने मे समर्थ है। हिंदी को यदि राष्ट्रभाषा के रूप मे अपनाया गया तो वह इसलिये नही कि यह अन्य भाषाओ का स्थान ग्रहण करे, या उनकी प्रगति मे अवरोध उत्पन्न करे। ऐसा विचारना ही अनुचित होगा। वह तो एक सहचरी के रूप मे अन्य भाषाओ की हितचितक वनकर उनके विकास मे जहाँ सहायक होगी, उनके ससर्ग मे स्वय भी परिष्कृत होगी, आदान प्रदान का एक सवल साधन वनकर। और इस प्रकार प्रेम और मैत्री, सहयोग और सद्भावना की सदेशवाहक वनकर हरेक देशवासी के हृदय मे स्थान ग्रहण

करेगी। भाषाओं का एक दूसरे के समीप आने का अर्थ है—देशवासियो का एक दूसरे के निकट आना।

आज के युग में अपने प्रदेश में ही रहकर गुजर नही हो सकती। रोजगार या कारोबार के सिलसिले में हमें दूर दूर तक जाना पड़ता है। सपर्क भाषा की उपयोगिता का अनुभव तभी होता है। आज तो कोई भी अकेले निर्वाह नही कर सकता। व्यक्ति को पग पग पर दूसरे लोगो के सहयोग की आवश्यकता रहती है। इसके लिये हमे समीपवर्ती तथा सुदूर के प्रदेशो और प्रातो से सबध स्थापित करने पड़ते है। आदान प्रदान के इस कार्य मे सपर्क भाषा जो महत्त्व रखती है, वह सचमुच ही बहुत बड़ा है। मैं स्वय अपने अनुभव से कहता हूँ कि इन सबकी भाषा दूसरो को अपना बनाने और उन्हे अपनी ओर आकृष्ट करने मे सदैव सहायक सिद्ध हुई है।

मातृभाषा हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है, उससे हमे कोई वचित नही कर सकता। परन्तु इसका यह तात्पर्य नही कि हम इसी मे सतोष मान ले। अपनी मातृभाषा को समृद्ध बनाने की चेष्टा हम मे निरतर रहनी चाहिए। इसके लिये हम अन्य भाषाएँ यदि सीखें और उस साहित्य से अपने साहित्य की श्रीवृद्धि करें तो इससे अच्छी बात क्या होगी। हिंदी भाषा के सीखने मे हमे तनिक भी सकोच नही होना चाहिए। राष्ट्रभाषा के नाते उसका राष्ट्रीय महत्व तो है ही, परन्तु प्रातीय आदान प्रदान मे इसकी उपयोगिता को नकारा नही जा सकता। इसके लिये हमे कोई बाध्य नही करता, इसे हमने स्वेच्छा से अपनाया है। दूरदर्शिता यही है कि हम भावी भारत का सोच सके। राष्ट्रीय धारा के साथ साथ हमे आगे बढना है। कूपमडूक की नीति प्रगति के पथ मे हमेशा एक बड़ी रुकावट बनती है। आज ससार मे यातायात और सचार की सुविधाओ से धरती की दूरियाँ कम होती जा रही है। आदान प्रदान की क्रिया मे एक खास तेजी आई है। कई शकाओ से मनुष्य ने राहत पाई है, कई नई आशाएँ बँधी है। बाधाएँ भी आई है। परन्तु जहाँ उत्साह और हिम्मत है, जहाँ मित्रता और बधुत्व के लिये तत्परता है, जहाँ हृदय की विशालता और सहअस्तित्व का उत्तरदायित्व है, वह कौम हमेशा आगे बढती है। आज हम यह जानते है कि हमारे आदान प्रदान का क्षेत्र जितना व्यापक और विशाल होगा, उतनी हम प्रगति करेंगे। एक दूसरे के समीप आने से न केवल भाषा, साहित्य, ज्ञान, विज्ञान समुन्नत होते है। बल्कि व्यापार, तकनीकी तथा ललित कलाओ के विकास मे भी सहायता मिलती है।

आज विश्व के बडे बडे देशो मे कितनी ही भाषाएँ सिखाई जाती हैं। आज इनका सीखा जाना अतर्राष्ट्रीय सबधो के लिये आवश्यक माना जाता है। हमारे विश्वविद्यालयो मे भी विदेशी भाषाएँ सिखाई जाती हैं। मैं देखता हूँ कि हमारे नवयुवको मे यह उत्साह बढता जा रहा है। उत्तर भारत मे दक्षिण भारत की भाषाएँ सीखने का चाव बढ रहा है, यह बहुत अच्छी बात है। हमे अपने राष्ट्र का निर्माण करना है, उसके हितो की रक्षा करनी है, यह काम सबके सहयोग से होगा। राष्ट्र का गौरव हमारा गौरव है। उसकी उपलब्धियाँ हमारी अपनी हैं। देश की समृद्धि के माने है, देशवासियो की खुशहाली।

मैं यह बात विश्वास से कह सकता हूँ कि दक्षिण भारत के देशवासी देश के किसी कार्य मे पीछे नही रहे। वे हमेशा हर कार्य मे अपना पूरा सहयोग देते रहे है। समय समय पर उन्होने अपनी योग्यताओ, कार्यकुशलता एव उत्साह का परिचय दिया है। हिंदी के अध्ययन अध्यापन मे उनके उत्साह की मैं प्रशसा करूँगा, और मुझे पूरी आशा है कि इस विषय मे थोडे समय मे ही वह एक रिकार्ड कायम करने मे सफल होंगे। यह काम स्वेच्छा से ही होना चाहिए। स्वेच्छा से होनेवाले कार्य का प्रभाव सदैव स्वस्थ और स्थायी होता है। इसकी सुविधा जुटाने के लिये, हिंदी प्रचार सभा की सेवाएँ राष्ट्रीय दृष्टि से बडी मूल्यवान् कही जायेंगी।

आज जिन स्नातको ने उपाधियाँ प्राप्त की, उन्हें मैं बधाई देता हूँ। हिंदी को लोकप्रिय बनाना, अब आपका काम है। अपनी कृतियो द्वारा वह सामजस्य आपको स्थापित करना है, जिससे दोनो--तमिल और हिंदी—को एक नई शैली और व्यापकता प्राप्त हो और दूसरे नवयुवक और नवयुवतियो को एक नई प्रेरणा मिले। दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास, इसी उत्साह और लगन से अपने इस कार्य को सफलता से सपादित करती रहे, यही मेरी हार्दिक कामना है।

सद्भावना और प्रेम का नया युग

माननीय शर्मा जी, श्री नेवटे जी, श्री श्याम जी तथा देवियो और सज्जनो, मैं आप सभी लोगों का आभारी हूँ कि आपने हिंदी पत्रिका 'आलोक-भारती' के 'विश्व हिंदी सम्मेलन उपलब्धि अंक' के प्रकाशनोद्घाटन हेतु मुझे यहाँ आमन्त्रित किया तथा आप सभी सज्जनों से मिलने का अवसर प्रदान किया। यह सर्वविदित है कि गत जनवरी मास में नागपुर में आयोजित विश्व हिंदी सम्मेलन एक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना थी जिसने भाषा के क्षेत्र में सद्भावना और प्रेम के नए युग का सूत्रपात किया। साथ ही सम्मेलन ने राष्ट्रभाषा हिंदी के द्वारा राष्ट्रीय एकता के तत्व और उसके विश्वव्यापी स्वरूप को भी प्रकट किया। आज भारतीय जन मानस के लिये हिंदी राष्ट्रभाषा ही नहीं, अपितु हमारी सामाजिक संस्कृति की प्रतीक बन गयी है। भाषा को सशक्त बनाना एक महत्वपूर्ण तथा श्रमसाध्य कार्य है और इस दृष्टि से इसके साहित्यकारों, पत्रकारों तथा अन्य रचनाकारों का दायित्व विशेष रूप से बढ़ जाता है। उन्हें अपने दायित्व को गुरुता और गंभीरता से निभाना है जिससे एक ओर तो हिंदी का साहित्य-भंडार भर सके और दूसरी ओर हिंदी अन्य भारतीय भाषाओं के सहयोग से, भारत की सामाजिक संस्कृति की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बन सके, जैसी कि संविधान में उससे आशा की जाती है।

यह सराहनीय बात है कि अन्य भारतीय भाषाओं के साथ साथ हिंदी की पत्रकारिता प्रारंभ से ही राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत रही है। इसने सर्व-साधारण की भावनाओं को व्यक्त करने में स्वाधीनता आंदोलन में विशेष भूमिका निभाई है। परंतु मैं ऐसा सोचता हूँ कि इस भूमिका की स्वतंत्रता के बाद और अधिक आवश्यकता अनुभव होती है। आज जब कि हमें अपने मौलिक और विशिष्ट व्यक्तित्व के निर्माण की आवश्यकता है जिसका सीधा संबंध राष्ट्र की इस धरती और इसके मानव कल्याणकारी संस्कारों और परंपराओं से है।

इसीलिये उद्देश्यपूर्ण और सार्थक पत्रकारिता को मैं देश के लिये बहुत आवश्यक मानता हूँ। जब विज्ञान युग के वर्तमान मानव के समक्ष अपने

मूल्यो और आदर्शो का सघर्ष हो, उस समय यह आवश्यकता और वढ जाती है। पत्र-पत्रिकाओ पर जन-रुचि वनाने और समाज को स्वस्थ चिंतन प्रदान करने की वडी जिम्मेदारी होती है। भावी एकता और प्रेम वढानेवाली ऐसी घटना की विस्तृत चर्चा हिंदी जगत् के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए 'आलोक भारती' वधाई का पात्र है। इस दृष्टि से मैं 'आलोक भारती' के प्रयत्नो का स्वागत करता हूँ। मेरी शुभकामना है कि यह पत्रिका अपने लक्ष्य की प्राप्ति मे सफल हो।

हिंदी की उपलब्धियाँ

यह हमारा परम सौभाग्य है कि हमारे देश मे विश्व के सुदूर देशो के रहने वाले भाईयो को हिंदी का प्रेम उन्हें यहाँ खींच लाया है। सद्भावना एव सहयोग के इस मंगलमय वातावरण मे आपको एक परिवार के सदस्यो की भाँति मिलकर बैठने, एक दूसरे के विचारो एव उपलब्धियो से प्रेरणा पाने का जो सुयोग प्राप्त हुआ है, वह निश्चय ही विश्व के इतिहास मे एक महान घटना है। भारत के राष्ट्रीय जीवन में यह समागम बहुत महत्व रखता है क्योंकि यह अवसर न केवल एक पूर्व कल्पित मनोकामना की पूर्ति मात्र है वरन् यह तो मानव हृदय के एकत्व के लिये किए जाने वाले एक विराट् प्रयत्न का प्रतीक भी है। मुझे आज देश विदेश के पारंगत विद्वानो, साहित्यकारो, शिक्षाविदो, कवियो, लेखको एवं भाषा पंडितो से भेंट पाने का जो अवसर प्राप्त हुआ, उससे मुझे हार्दिक प्रसन्नता है। हिंदी भाषा की आप जो सेवा कर रहे है उसके लिये आपको जितना भी सम्मान दिया जाये, आपके कार्य की तुलना मे कम ही पड़ेगा।

पिछले तीन दिनो से भारत के इस भूभाग मे आयोजित विश्व हिंदी समेलन मे देश विदेश के वरिष्ठ हिंदीसेवी साहित्यकारो एव विद्वानो ने राष्ट्रीय एव अन्तर्राष्ट्रीय सदर्भ मे हिंदी की उपलब्धियो तथा सभावनाओ पर अपने विचार प्रस्तुत करके न केवल हिंदी को, वल्कि समग्र मानव जाति को परिष्कृत किया है। हम आपके विचारो को अपने लिये बड़ा मूल्यवान समझते है। भारत से बाहर भी हिंदी के प्रचार प्रचार का स्तुत्य कार्य हो रहा है, यह बड़े सतोष की बात है। भारत की ज्ञान गरिमा को अपनी साधना और सतत् प्रयासो से आपने भारत के गौरव मे वृद्धि तो की ही है, हिंदी को जागतिक प्रतिष्ठा भी प्रदान की है। यह आपके प्रेम का प्रतीक है और हम इस भावना का हृदय से आदर करते है। आप आज सबको एक मच पर खींच लाया है, मेरे विचार मे यह हिन्दी का गुरुत्वाकर्षण है जिसने सारे विश्व को प्रेरित किया है, बन्धुत्व के सूत्र मे एक हो जाने के लिये। आपके आगमन से हमारे देशवासियो को अतीव प्रसन्नता हुई है। आप सबकी उपस्थिति से हमारी आशाएँ एक विश्वास मे परिणत हो रही है और हम अनुभव करते हैं कि जिन उत्कृष्ट आकाक्षाओ एव अभिलाषाओ को सँजोकर

इस महा समेलन का आयोजन हुआ है और जो लक्ष्य निर्धारित किया गया है, उसे पाने मे हमे आपका पूरा और निरतर सहयोग और सद्भाव प्राप्त होगा और हिंदी अपने उचित स्थान पर प्रतिष्ठित होगी।

यह तो आप जानते ही हैं कि भारत एक बहुभाषी देश है। हमारे सविधान द्वारा यहाँ की १५ भाषाओ को मान्यता प्राप्त है। हिंदी को राष्ट्र-भाषा का गौरव प्राप्त हुआ है, वह इस कारण से ही नही कि यह देश की बहु-सख्या की भाषा है। बल्कि इसलिये भी कि हमारे देश की भाषाओ की जननी सस्कृत के यह अधिक समीप है और हमारी पुरातन परपराओ की अभिव्यक्ति तथा आधुनिक आवश्यकताओ को पूरा करने मे सक्षम है। हमारी कुछ भाषाएँ सस्कृत जन्य हैं। कुछ पच द्रविड भाषायें कहलाती हैं—जैसे तेलुगू, कन्नड, तमिल, मलयालम, तुलू। इन दोनो परिवारो का साहित्य समृद्ध और प्राचीन है। परतु जब हम इन भाषाओ का बडी सूक्ष्म दृष्टि से अध्ययन करते हैं तो यह स्पष्ट हो जाता है कि सस्कृत से न्यूनाधिक मात्रा मे ये भी प्रभावित हुई है। इस नाते से, उनमे भिन्नता होने पर भी एक सामीप्य स्थापित हो जाता है। इसके अतरग मे उसी सलिल सरिता की शीतल एव निर्मल धारा प्रवाहित है जिसमे हमारी सभी भाषाएँ फली फूली है। इस बात से कौन इकार कर सकता है कि सहस्रो वर्षो की अर्जित आध्यात्मिक संपदा इन भाषाओ ने सँजोकर रखी है और इन्ही के माध्यम से भारतीय जन मानस को लाभान्वित करती रही है। हिंदी का चयन एक राष्ट्रीय भावना से किया गया था और यह कल्पना की गई थी कि इसके प्रतिनिधित्व मे भारत की प्रान्तीय भाषाएँ समृद्ध और उन्नत होगी। आज हम अनुभव करते हैं कि वह स्वप्न साकार होता जा रहा है। मुझे वह समय स्मरण है, जब हिंदी को राजभाषा और राष्ट्रभाषा के रूप मे प्रतिष्ठित करने की बातें जोरो पर थी। इस उच्च शासन पर सुशोभित करने का श्रेय हिंदी भाषियो मे कही अधिक देश की अन्य भाषाओ के नेताओ की सूझ-बूझ और दूरदर्शिता को प्राप्त है। वह जानते थे कि हिंदी राष्ट्र की सास्कृतिक और भावात्मक एकता को अक्षुण्ण बनाए रख सकती है और आनेवाले युग मे विश्व भर मे एक उपयोगी भूमिका निभाने मे समर्थ होगी। हमने हिंदी के जिस व्यापक स्वरूप की कल्पना की थी। वह प्रत्यक्षत स्पष्ट होता जा रहा है। आज भारत मे ही नहीं, विश्व भर मे इसकी महत्ता को समझा जा रहा है।

समय और समाज के साथ चलकर ही हम आगे बढ सकते हैं। एकाकी दृष्टिकोण प्रगति के पथ मे जितना बाधक होता है, उससे कही अधिक वह

उसके अस्तित्व के लिये भी घातक माना जाता है। जिस प्रकार समन्वय की शक्ति मे सभ्यता का विकास एव उन्नति निहित है उसी प्रकार भाषाओ के आदान प्रदान से भाषाएँ भी समृद्ध होती हैं। भारतीय जीवन का यही आदर्श रहा है कि इसने हर दिशा से आनेवाले प्रकाश के लिए अपने द्वार सदैव खुले रखे हैं और हर अच्छी चीज का स्वागत किया है जो हमारे पास है। उसे दूसरो मे बांटा है। हमारे राष्ट्र नायको ने यह माना है कि हिंदी को देश की अन्य भाषाओ के साथ साथ ही विकसित किया जाय। जब दूसरी भाषाएँ अपना उचित स्थान ग्रहण कर लेंगी तो हिंदी की शक्ति मे भी वृद्धि होगी।

भाषा के विकास के लिये यह आवश्यक है कि उसमे अच्छे से अच्छे ललित साहित्य का प्रवेश हो तथा उसमे ज्ञान, विज्ञान, राजनीति, कानून, अर्थशास्त्र, भूगोल, गणित, ज्योतिष इत्यादि विषयो पर भी ऊँचे से ऊँचा साहित्य उपलब्ध हो। आज वैज्ञानिक एव तकनीकी शब्दो की एक वृहद् शब्दावली तैयार की जा चुकी है, जिसको सभी भारतीय भाषाओ मे प्रयोग मे लाया जाएगा। विश्वविद्यालयो मे प्रयोग के लिए लगभग २ हजार पुस्तको का वैज्ञानिक तथा तकनीकी आयोग द्वारा हिंदी तथा अन्य क्षेत्रीय भाषाओ के लिये अनुमोदन किया गया है। जिनमे अनुवाद तथा मूल लेखन के लिये पांच सौ ग्रथो का कार्य हाथ मे लिया गया है। विधि-सबधी कार्यों मे भी आशाजनक प्रगति हुई है। विधि के स्नातको के लिये हिंदी की मानक पुस्तकें लिखी जा रही हैं। कई हिंदी शिक्षा योजनाओ के अतर्गत सरकारी कार्यालयो, केंद्रीय सरकार के अधीन कपनियो, निगमो, औद्योगिक सस्थाओ मे हिंदी का उपयोग बढाने के लिये प्रयत्न किए जा रहे है। अन्य भाषाभाषी राज्यो मे हिंदी के प्रसार के लिये कई योजनाएँ चलाई गई हैं। प्रोत्साहन के लिये नि शुल्क पुस्तके देने की व्यवस्था तथा छात्र-वृत्तियाँ देने का प्रावधान किया गया है। शिक्षण और प्रशिक्षण की सुविधाएँ उपलब्ध की गई हैं। इसी प्रकार पत्राचार पाठ्यक्रम की योजना से बहुत से अन्य भाषाभाषी देशवासियो और विदेशियो को हिंदी सीखने के अवसर उपलब्ध किए जा रहे है। हिंदी के प्रसार के लिये अलग अलग विषयो पर हिंदी की ३ हजार से भी अधिक पुस्तकें आज उपलब्ध है। इससे यह अनुमान सहज मे हो सकता है कि हिंदी को समृद्ध एव उन्नत बनाने के लिये अच्छा काम हो रहा है।

पिछले कई वर्षों से हमारे देश मे सार्वजनिक एव ऐच्छिक सस्थाओं द्वारा हिंदी के लिये सराहनीय कार्य हुआ है। आज तक उसके प्रसार के

लिये जो प्रयत्न हुए हैं उनसे भले ही हमे सतोष न हो, परंतु यह कहना अतिशयोक्ति न होगा कि भारत जैसे बडे राष्ट्र मे इस दिशा मे जितना कार्य हुआ है, उससे हिंदी के लिये वह आधार बनाया जा चुका है जिससे हिंदी उत्तरोत्तर प्रगति और समृद्धि की ओर अग्रसर होती जाएगी। आज भारतीय जनमानस के लिये हिंदी राष्ट्र-भाषा ही नही, अपितु हमारी सामाजिक सस्कृति की प्रतीक बन गई है।

भाषा को सशक्त एव समृद्ध बनाना, इसमे कोई सदेह नही कि एक श्रमसाध्य कार्य है। इसलिये देशवासियो के निष्ठापूर्ण प्रयासो एव निरतर त्याग भावना से किए जानेवाले श्रम तथा प्रायोगिक व्यवहार पर ही भाषा की सच्ची प्रगति निर्भर करती है और चूंकि यह कार्य समय साध्य होते हैं और यदि निरतर प्रयत्न होते रहे तभी इच्छित फल प्राप्त होगा। शब्दो का निर्माण साधन मात्र है, इनका जितना प्रयोग किया जाएगा, उतनी ही भाषा समृद्ध होगी। मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि हमारे भाषाविदो ने प्रचलित शब्दो को, जो भाषा मे रच पच गए हैं, बाहर निकालने का प्रयत्न नहीं किया बल्कि उनको यथोचित स्थान दिया है। यह सभी जानते हैं कि समय के साथ साथ भाषा मे भी न्यूनाधिक परिवर्तन आते रहते है। कुछ शब्द समय की विडबना से निर्जीव होकर रह जाते हैं, नए शब्दो के प्रवेश तथा मृतप्राय शब्दो के निकास की क्रिया, समाज के समान ही, भाषाओ की प्रगतिशीलता की द्योतक हैं। भाषाएँ बढती है, आदान प्रदान की प्रक्रिया के साथ। और जितना यह सहयोग बढेगा, उतना ही उनमे सामजस्य स्थापित होगा। वह अलग अलग होने पर भी एकरूप दृष्टिगोचर होगी। भाषाओ का इतिहास उठाकर देखे तो स्पष्ट होगा कि ससार की कोई भाषा न तो एक दिन मे गढ़ी गई थी, न समृद्ध ही हुई है। वर्षो की तपस्या और साधना के फलस्वरूप ही वह उनत हो पाई है।

भाषा का सबध उसके शब्दो के भडार, अभिव्यक्ति से भी अधिक उस राष्ट्र की सास्कृतिक परपराओ, उसके जीवन मूल्यो तथा उसके विकास के इतिहास पर अवलबित रहता है। आज हम कह सकते हैं कि हिंदी एक ऐसी सशक्त भाषा बन चुकी है जिसमे हमारे जनमानस की सामूहिक चेतना को व्यक्त करने की सामर्थ्य है। यह सामर्थ्य उसे प्रदान किया सर्व सग्रहकर्ता की भावना ने। आज हम विश्व की अन्य उन्नत भाषाओ के शब्दो को यथोचित स्थान देकर उसके भावी रूप को निखारने की कोशिश कर रहे हैं। यह हम

सबका कर्तव्य है कि हम हिंदी को समृद्ध एव शक्तिशाली बनावे। हिंदी का विकास इसके वर्तमान शब्द भडार के उपयोग और प्रयोग पर निर्भर करता है। उचित तो यही है कि युग सदर्भ मे आधुनिक साहित्य की मौलिक रचनाओ की ओर विशेष ध्यान दिया जाए। हम एक दूसरे की भाषाएँ सीखे और अन्य भापाओ की विशेषताओ को हिंदी मे स्थान दे। मैं समझता हूँ कि यह कार्य प्रतिभाशाली, युवा लेखको के प्रयासो से होगा। यह सतोप की बात है कि नए साहित्य की रचना का कार्य आरभ हो गया है। आज यहाँ देश की अन्य भाषाओ के विद्वान और साहित्यकार भी पधारे हैं। उनको समानित करके हमने अपना एक दायित्व पूरा किया है, अन्य भाषाओ के प्रति प्रेम और आदर की भावना से उनके दिल मे जो जगह बनाई है और हमे विश्वास है कि यह परस्पर सहयोग निरतर बढता रहेगा। सभी विद्वानो एव साहित्यकारो के समक्ष मैं यही कहना चाहूँगा कि हिंदी अब हिंदी भाषियो से कही अधिक आपकी है। आपने इसे सँवारना और आगे बढाना है, इसको प्रतिष्ठित करना है। हिंदी का भावी रूप हिंदी तथा अन्य भाषाभापी विद्वानो, साहित्यकारो, कवियों, लेखको, प्रचारको के सक्रिय सहयोग पर निर्भर करता है। हम सबका यही कर्तव्य है कि हम हिंदी को एक वैभवशाली भापा बनावे ताकि विश्व के सदर्भ मे भावात्मक एकता एव आध्यात्मिक उत्थान के लिये हिंदी एक स्वस्थ वातावरण तैयार करने मे सक्षम हो सके। आज जबकि मनुष्य की बौद्धिकता विकास क्षितिज की चरम सीमा छू रही है, उसकी समस्त मानसिक तथा शारीरिक शक्तियाँ केवल भौतिक विकास की ओर आकृष्ट हैं। विज्ञान के क्षेत्र मे प्रतियोगिता तथा प्रतिस्पर्धा इतनी आगे बढ गई है कि आज मनुष्य जीवन के शाश्वत मूल्यो के प्रति हतप्रभ एव उदासी ही दिखाई नही देता, वह उससे दूर भी होता जा रहा है। ऐसी स्थिति मे हिंदी को उस अमर सदेशवाहिनी बनकर पूरे विश्व को विश्वबधुत्व के एक पुनीत रिश्ते मे बाँधकर उसे नई दिशा को ओर प्रशस्त करने का भार वहन करना है और इस महायज्ञ मे सफलता का यशस्वी कलश हमारी आहुतियो के द्वारा ही प्राप्त होगा।

हमे यह जानकर असीम प्रसन्नता है कि भारत के बाहर ६३ विश्वविद्यालयो मे हिंदी की शिक्षा दीक्षा की सुविधा उपलब्ध है। अमेरिका और सोवियत संघ मे हिंदी पर एक बडे पैमाने पर काम किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त दूसरे देशो मे भी सराहनीय कार्य हो रहा है।

भारतीय वश के जो लोग त्रिनिडाड-सुरीनाम, फिजी द्वीप समूह तथा मौरिशस जैसे देशो मे हैं, उनके हिंदी प्रेम को देखकर हमारे दिल मे उनके

प्रति आदर के भाव हैं। जिस प्रकार दूसरे देशो मे हिंदी सीखी जाती है, उसी उत्साह से हमारे देश के विश्वविद्यालयो मे भी विश्व की अन्य भाषाओ का अध्ययन और अध्यापन किया जाता है। हमारे मन मे विश्व की समस्त भाषाओ के प्रति स्नेह के भाव है। उनमे जो गुण हैं, उन्हें ग्रहण करने से हम कभी विमुख नही हुए और इनको सीखने मे हम मे बडी अभिरुचि है। हम तो यह मानते हैं कि भौगोलिक दूरियाँ यदि विज्ञान की प्रगति से कम हैं तो हृदयो को समीप लाने मे हमारी भाषाएँ कारगर होगी। एक दूसरे की भाषा के प्रति सहिष्णुता के दृष्टिकोण से, आपसी सहयोग और सद्भाव से, यह महान कार्य पूरा होगा। एक दूसरे के करीब आने, मिलकर विचार करने से बहुत सी शकाओ का समाधान होता है और भविष्य मे स्वेच्छा से विश्व-कल्याण के लिये प्रेरणा मिलती है।

राष्ट्रीय एव अतराष्ट्रीय सदर्भ मे हिंदी की उपलब्धियो एवं सभावनाओ पर आज बडे विस्तार से विचार हुआ, बहुत से मूल्यवान सुझाव रखे गए, कुछ प्रस्ताव पारित हुए तथा घोषणाएँ की गई। मुझे पूरी आशा है कि हिंदी को उसका परिष्कृत स्थान प्रदान करने के लिये आप सबके सतत् प्रयत्न और निष्ठापूर्ण प्रयास तथा सद्भावना सार्थक होगी। भारत मे सरकारी क्षेत्र में इस दिशा मे जो कार्य किया जा रहा है, उसको एक व्यापक रूप तो आपके सहयोग के बिना नही दिया जा सकता। इसी मतव्य से हमारे देश मे यह कार्य-भार ऐच्छिक सस्थाओ ने भी वहन किया है। इस विश्व हिंदी समेलन के आयोजन का श्रेय गाधी जी की प्रेरणा तथा आशीर्वाद से स्थापित राष्ट्र-भाषा प्रचार समिति वर्धा को प्राप्त है। यूनेस्को, पी० ई० एन०, विश्व तमिल काग्रेस, विश्व तेलुगु परिषद्, सोवियत सघ, सयुक्त राज्य अमेरिका, इगलैंड, इटली, स्वीडन, पोलैंड, चेकोस्लाविया, पूर्व एव पश्चिम जर्मनी, जापान, थाई-लैंड, बगला देश, मोरिशस, त्रिनिडाड, फिजी इत्यादि देशो के सहयोग से यह विशाल समारोह एक आत्मीयता के वातावरण मे सपन्न हुआ है। हम आपके भावनापूर्ण योगदान के लिये आप सबको धन्यवाद देते हैं।

मुझे पूरी आशा है कि पूरे विश्व मे एकात्मकता की भावना दृढ होगी और भारत की सामाजिक सस्कृति की अभिव्यक्ति मे हिंदी एक मूल्यवान साधन बनेगी। मैं पुन आप सबको धन्यवाद देता हूँ कि आपने यहाँ आकर अपने मूल्यवान विचारो से हमे लाभान्वित किया। आप सभी जब अपने देश लौटें तो हमारे देशवासियो की शुभ कामनाएँ आपके साथ हो। यह मैत्रीपूर्ण सद्भाव सदा बना रहे, यही हमारी कामना है।

हिंदी के लिये एक समन्वित स्वरूप

कर्नाटक महिला हिंदी सेवा समिति के दीक्षान्त समारोह मे उपस्थित हो पाना, मैं अपने लिये गौरव की बात समझता हूँ। आपने मुझे यह सुअवसर प्रदान किया, उसके लिये मैं समिति को धन्यवाद देता हूँ। आपकी सस्था से मैं पहिले से ही परिचित हूँ और जानता हूँ कि पिछले कई वर्षों से हिंदी के विकास और विस्तार मे यहाँ काफी लगन और उत्साह से काम हो रहा है। आज स्वय देखने का भी मौका मिला, आपकी व्यवस्था और कार्य प्रणाली को देखकर प्रसन्नता हुई। महिलाओ द्वारा महिलाओ के लिये इस प्रकार की शिक्षा सस्था चलाना वास्तव मे एक महत्वपूर्ण एव प्रशसनीय प्रयोग है।

स्वतन्त्रता के साथ एक नए युग का सूत्रपात हुआ, एक ऐसे प्रगतिशील समाज की कल्पना की गई, जिसके द्वारा सामाजिक समता और सामाजिक न्याय स्थापित हो सके और इस आदर्श के साथ देश का पुन निर्माण हो। राष्ट्र के सुख, समृद्धि और सुरक्षा के लिये सब देशवासी मिलकर विकास कार्यो मे भाग लें। इसलिये देश के प्रत्येक नागरिक को, वह महिला हो या पुरुष, बिना किसी भेद भाव के प्रगति करने और राष्ट्र के विकास कार्यो मे भागीदार बनने का संवैधानिक अधिकार प्राप्त हुआ। अपनी योग्यता और क्षमता के आधार पर उन्नति करने और जीवन स्तर को ऊँचा उठाने के प्रयास मे हर भारतीय को अवसर सुलभ हैं और यह बडे सतोष की बात है कि भारतीय महिलाएँ आज राष्ट्रीय जीवन के हर क्षेत्र मे भाग ले रही हैं। हमारी सामाजिक व्यवस्था से महिलाओ को आगे आना है, चाहे वह शिक्षा का कार्य हो या ज्ञान, विज्ञान, तकनीकी, कला इत्यादि का विषय हो। महिलाएँ भी पुरुषो के समान देश की शक्ति हैं, प्रगति करने वाला या प्रगति के पथ पर अग्रसर कोई भी देश उनकी उपेक्षा नही कर सकता। एक बात स्पष्ट है, राष्ट्रीय चेतना का विकास सही मानो मे महिलाओ के सहयोग के बिना कदापि सम्भव नही है। एक महिला यदि शिक्षित होती है तो आगे आने वाली पीढी के शिक्षित होने की सभावनाएँ अधिक प्रबल होती है। इससे व्यक्ति विशेष तक ही वह लाभ सीमित नही रहता, पूरा कुटुब प्रभावित होता है।

भारतीय नारी ने जिस प्रकार हमारी सास्कृति के परम्परा को सजोए रखा है, उसी उत्साह से वह नए युग के सदेश के अनुशीलन मे भी तत्पर है। प्राचीन

काल मे जिस प्रकार विद्वत्ता, शौर्य, साहस, त्याग और निष्ठा के उदाहरण भारतीय महिलाओ ने स्थापित किए, उसी प्रकार आज वे नई सरचना मे अपनी योग्यता और सामर्थ्य का अद्भुत प्रमाण दे सकने मे सक्षम होती जा रही हैं। हिंदी के विकास और विस्तार मे महिलाओ का योगदान एक व्यापक आयाम मे बडा महत्त्व रखता है। महिलाओ के प्रयत्नो से इस काम को एक नई गति मिलेगी। हिन्दी राष्ट्रीय सदर्भ मे एक कडी है, परस्पर सबधो की, इस बडे देश की एकता और सुदृढता की।

यह सतोष की बात है कि कर्नाटक की महिलाएँ अपने दायित्व के प्रति जागरूक है। राष्ट्र के कार्यों मे वह बराबर भाग ले रही हैं, यह स्पष्ट है कि हिंदी सीखने मे वह पीछे नही रह सकती, फिर हिंदी का कार्य तो राष्ट्रीय कार्य है। उसे स्वेच्छा से सीखा जाना चाहिए। दूरदर्शी लोग भविष्य की सभावनाओ के प्रति जागरूक रहते हैं और जीवन की यथार्थताओ को स्वीकार करने मे सकोच नही करते। हिंदी का चयन भी हमारी दूरदर्शिता का प्रतीक है, जिसने भविष्य की सुदर सभावनाओ की कल्पना की थी, भारत को एक समृद्ध और उन्नत राष्ट्र के रूप मे देखने की और उसके लिये हम सब सकल्पबद्ध हैं। इसमे कोई सदेह नही कि मातृ भाषा का स्थान सर्वोपरि है, और उसके लिये विशेष मोह होना भी स्वाभाविक है, होना भी चाहिए। क्योकि इस माध्यम से विद्या सहज और सरल ही नही, अधिक प्रभावक भी है। परतु जिस देश मे अनेको भाषाएँ हो, वहाँ एक अन्य सपर्क भाषा जो सभी से सम्पर्क साध सके, का होना जरूरी है। सहयोग हमारे जीवन का आधार है, आदान प्रदान हमारी प्रगति का सूचक है। आज मनुष्य का कार्य क्षेत्र विस्तृत होता जा रहा है उसे सीमाबद्ध करना उसकी प्रगति को रोक देगा, हमे आगे बढना है—मिलकर, और एक दूसरे के समीप आने के लिये। आप जानते है कि हिंदी को ही यह कार्य पूरा करना है। इसलिये जो इसके विकास और विस्तार से सबधित है, वे प्रशसा के ही पात्र हैं।

कन्नड स्वय एक समृद्ध भाषा है और मैं समझता हूँ कि हिंदी और कन्नड भाषा के परस्पर सहयोग से दोनो के साहित्य भडार और ज्यादा समुन्नत तथा समृद्ध होगे। भाषाओ मे ग्रहण करने का गुण इनकी विशेषता है। इसलिए त्रिभाषी-सूत्र को देश भर मे कार्यान्वित किया गया, ताकि हमारा लालन-पालन मातृभाषा की गोद मे हो, राष्ट्रभाषा हमे अपने देशवासियो से सपर्क साधने के लिये अतिरिक्त वाणी प्रदान करे और

ज्ञान-विज्ञान की दुनिया से सबध बनाए रखने के लिये, अंग्रेजी का एक सहयोगी भाषा के रूप मे उपयोग हो।

आज हिंदी को एक समन्वित स्वरूप चाहिए। जिसमे समूचे भारत की गरिमा को प्रतिबिंबित कर सकें। भारत की विभिन्न भाषाओ को अपनी शैलियो, अभिव्यक्तियो, शब्दो और मुहावरो से इसके कोष को समृद्ध बनाना है, वही हिंदी का राष्ट्रीय स्वरूप है। यह काम हिंदी भाषा भाषियो का नही हो सकता, यह तो अन्य देशवासियो का काम है, यह एक महत्वपूर्ण काम है। आज अपनी मातृभाषा की साहित्य सपदा, यहाँ के संत और महापुरुषो के कृतित्व और उपदेशो को अपने अनेको देशवासियो तक हिंदी के माध्यम से पहुँचा सकते है। यह भावात्मक एकता का एक ऐसा सेतु है, जो राष्ट्रीय जीवन मे तादात्म्य स्थापित करता है।

आज राष्ट्र की शक्ति उसकी जनता है, उसकी समृद्धि देशवासियो के सु-प्रयासो और सु-प्रयत्नो पर निर्भर करती है। देश उन्नति करेगा तो वह उन्नति हमारी होगी, उसका गौरव बढता है तो उस यश के हम सभी भागीदार है। आज भारत ने विज्ञान और तकनीकी मे जिस तेजी से प्रगति की उससे अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में हमारा समान बढा है तो यह गौरव भारतवासियो का है, अभी हमे बहुत आगे बढना है इसलिये हमे पूरी निष्ठा से अपनी शक्तियो को राष्ट्रहित मे समर्पित करते रहना है। अक्षय गति से हम आगे बढते रहे, हर नई मजिल के लिये एक नए उत्साह के साथ, तो वह दिन दूर नही, जब हम विश्व के राष्ट्रो मे एक प्रतिष्ठित स्थान बना लेंगे। आज जरूरत है मिलकर काम करने की, सकुचित स्वार्थो तथा निजी लाभो की लालसा को त्याग कर देश के प्रति अपना उत्तरदायित्व पूरा करने की। इस महत् आयोजन मे देश की महिलाओ का योगदान सदैव अपेक्षित है।

आपने हिंदी की स्नातकीय उपाधि प्राप्ति की, उसके लिये मैं आपको बधाई देता हूँ। मुझे आशा है कि जिस प्रेम से आपनें हिंदी का अध्ययन किया, आप इसका अपने जीवन मे उपयोग करे और संभव हो सके तो इसे और बढाएँ तथा हिंदी और कन्नड साहित्य की सेवा करे। मौलिक रचनाओ और प्रामाणिक अनुवादो द्वारा इन्हे समुन्नत बनाएँ। मुझे प्रसन्नता है कि इस दिशा मे यहाँ काफी उत्साह है। अत मे मै आप सबको जिन्होने पदवी-पत्र ग्रहण किए, उनके सफल भविष्य की कामना करता हूँ।

साहित्यिक आदान प्रदान की आवश्यकता

मैं आप सबका अत्यंत आभारी हूँ कि आपने मुझे श्री हिंदी साहित्य समिति भरतपुर के हीरक जयती समारोह मे भाग लेने का सुअवसर दिया है।

इस समीति की स्थापना, इसकी गतिविधियो और विकास के बारे मे अभी अभी जो विवरण दिया गया है, उससे मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आपकी समिति का एक गौरवमय इतिहास है और उसने हिंदी भाषा और उसके विकास की दिशा मे महत्वपूर्ण कार्य किया है। आज वह अपनी हीरक जयती मना रही है, यह स्वयमेव उसकी उपादेयता और लोकप्रियता का एक अच्छा सबूत है। इस सुखद अवसर पर, सबसे पहले मैं इस समिति को और इससे सबधित सभी साहित्यिको और कार्यकर्ताओ को हार्दिक बधाई देता हूँ और कामना करता हूँ कि यह संस्था दिनोदिन उन्नति करती रहे और इसका भविष्य उज्ज्वल से उज्ज्वलतर हो।

मैं कोई बहुत बडा साहित्यिक नही हूँ कि आप जैसे साहित्यिको के बीच, साहित्य की विभिन्न प्रवृत्तियो के बारे मे चर्चा कर सकूँ या आपको कुछ उपदेश या सदेश दे सकूँ। पर सभी भाषाओ से मेरा अनुराग और प्रेम है और साहित्य मे मेरी दिलचस्पी है। यही कारण है कि मैंने आपके निमत्रण को सहर्ष स्वीकार किया है। सच पूछा जाए तो मैं आपसे कुछ सीखने और प्रेरणा पाने के लिये आया हूँ क्योकि साहित्यिक द्रष्टा और स्रष्टा दोनो है। वह न केवल अतीत के गौरव का गुणगान करता, न केवल वर्तमान वस्तुस्थिति का यथार्थ चित्रण करता, अपितु अपनी कल्पना के पखो को पसार कर, उस भविष्य की ओर, जो रहस्यमय है, जो अविदित है, सकेत करता है। उसकी सृष्टि और उसकी भविष्यवाणी सच निकली है कि नही, यह दूसरी बात है। लेकिन एक ऐसा सुदर सृष्टिकर्ता है जिसको देखकर हम चकित होते है, आनदित और आत्म-विभोर होते है, तभी तो कहा जाता है कि जहाँ रवि नही पहुँचते वहाँ कवि पहुँचते हैं।

इसमें कोई सदेह नही कि देश, काल और परिस्थितियो का साहित्य पर बड़ा प्रभाव पडता है। यही कारण है कि साहित्य के इतिहास मे विभिन्न

युगो मे भिन्न भिन्न साहित्य का सृजन हुआ है। कभी धर्म का बोलबाला था तो कभी भक्ति का, कभी रीति का तो कभी नीति का। साहित्य वह दर्पण है जिसमे हमे देश के इतिहास, सस्कृति व समाज की परछाई दिखाई देती है। सौभाग्य से इस देश मे, प्राचीन काल से, ऐसे महान् और प्रतिभाशाली साहित्यिक उत्पन्न हुए- जिन्होने न केवल हमारे साहित्य को समृद्ध किया, बल्कि साहित्य के क्षेत्र मे ऐसी सुदर और स्वस्थ परपराएँ स्थापित की, ऐसे ऊँचे मूल्यो और उच्च आदर्शो की प्रतिष्ठा की जो हमारी अमूल्य थाती है। आज के साहित्यिको का यह दायित्व है कि उन परंपराओ, मूल्यो आदर्शो को अक्षुण्ण रखें और उनसे प्रेरणा ग्रहण कर, साहित्य की श्रीवृद्धि करे। आजकल जब कि नवीन प्रवृत्तियाँ उभरती दिखाई दे रही हैं, तो अनुभवी साहित्यिको और विद्वानो का यह कर्तव्य है कि स्थिति के ठीक विश्लेषण द्वारा और आधुनिककाल की आवश्यकताओ के अनुरूप साहित्य को एक नया मोड दे और समाज का मार्ग दर्शन करे।

हिंदी भाषा और उसका साहित्य भी अत्यत प्राचीन नही, तो कम से कम यह डेढ हजार वर्ष पुराना अवश्य है। अतीत मे, हिंदी के दो महान कवि, तुलसी और सूर ने राम भक्ति और कृष्ण भक्ति की पावन धाराओ से इस भाषा को सीचकर इसे जिस तरह से पल्लवित और पुष्पित किया, उस पर प्रत्येक हिंदी भाषाभाषी ही नही, अपितु प्रत्येक भारतवासी गर्व कर सकता है। किंतु अतीत और वर्तमान की आवश्यकताएँ, स्वरूप और लक्षण भिन्न भिन्न हैं। अतीत मे जो भाषा अपने माधुर्य और लोच के बल पर काव्य की भाषा बन सकी, वह प्रसिद्ध हुई और उसको मान्यता मिली। लेकिन आज का युग बहुत कुछ बदला हुआ है। काव्य की परिधि से निकलकर आज मानव की रुचि भिन्न भिन्न दिशाओ की ओर व्याप्त हुई है। वह भाषा जो केवल काव्य के ही उपयुक्त हो, आज के युग मे लोक-प्रिय या जनसाधारण की भाषा नही बन सकती। अपनी क्षमता और उपयोगिता सिद्ध करने के लिये आज प्रत्येक भाषा को सामाजिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रो मे जन साधारण की सेवा का व्रत लेना है। काव्य और कला, इसमे कोई सदेह नही, सौदर्य और माधुर्य की दृष्टि से, मनमोहक और चित्ताकर्षक है। किंतु मैं यह कहना चाहूँगा कि आधुनिक विज्ञान और टेकनोलाजी के युग में, साहित्य का एक और पक्ष भी है। उसे जीवन के दूसरे अगो को स्पर्श करना है और समाज की प्रगति और सपन्नता के लिये प्रेरणा स्रोत बनना है। यह हर्ष का विषय है

कि इस ओर हिंदी साहित्यिकों का ध्यान गया है और आज हिंदी एक समुन्नत और सुविकसित भाषा है, जिसमे किसी भी विषय की अभिव्यक्ति हो सकती है, चाहे वह राजनीतिक हो या दार्शनिक, वैज्ञानिक हो या मनो-वैज्ञानिक।

भारत एक विशाल देश है, बहुभाषी देश है। इस देश की सबसे बहुमूल्य सपत्ति, यहाँ की परपरागत विचारधारा है, यहाँ का साहित्य है, यहाँ की सस्कृति है। इसके रूप अनेक है, इसमे अनेक रग भरे हैं और प्रत्येक रग एक भाषा का, एक प्रदेश का प्रतिनिधित्व करता है। भाषाओं के ये विविध स्वर, और विभिन्न रग हमारे साहित्य और सस्कृति के पोषक तत्व हैं, और शोभा को बढाने वाले हैं। 'विभिन्नता मे एकता' भारतीय सस्कृति और साहित्य का मूल तत्व है।

मुझे खुशी है कि श्री हिंदी साहित्य समिति की जब से स्थापना हुई, उसने साहित्यिकों का प्रोत्साहन देकर हिंदी भाषा और साहित्य की अमूल्य सेवा की है। खोजपूर्ण विषयो पर, जिन पर शोध अथवा अन्वेषण की आवश्यकता होती है, ग्रथ प्रकाशन करना आसान काम नही है। इस कार्य को अपनाकर शोधपूर्ण ग्रथो के प्रकाशन की व्यवस्था कर आपकी समिति प्रशसनीय कार्य कर रही है। इस सबध मे मैं आपके सामने एक सुझाव रखना चाहता हूँ। सविधान मे हिंदी को राष्ट्र भाषा घोषित किया गया है और मुझे यह कहने मे तनिक भी सकोच नही कि आज नही तो कल वह अपना उचित स्थान प्राप्त कर लेगी। मेरी राय मे आपको इस ओर अधिक चिंतित नही होना चाहिए, बल्कि हिंदी साहित्य के विकास मे, और उसके भडार को अधिकाधिक भरने के लिये ही प्रयास करते रहना चाहिए। अन्य भाषाओं की शब्दावली, मुहावरे इत्यादि अपनाने मे आपको सकोच नही होना चाहिए। हिंदी भाषा और साहित्य के विकास के प्रयास मे आपको उदार दृष्टिकोण अपनाना चाहिए।

भारत की सभी भाषाओं मे ऊँचे से ऊँचे साहित्य ग्रथ है। उनका एक से दूसरी भाषा मे और जहाँ तक हो सके सभी भाषाओ मे अनुवाद किया जाए और उसका सारे देश के अदर प्रचार किया जाए। ऐसा करने से सभी भाषाओं की उन्नति होगी। सभी भाषाओ मे उच्चकोटि के साहित्य का निर्माण होगा। हिंदी की उन्नति और विकास भारत की अन्य भाषाओ की उन्नति और विकास के साथ जुटा हुआ है। एक के बगैर दूसरी भाषा की उन्नति नही होगी। हिंदी राष्ट्रभाषा और राजभाषा का रूप ले रही है तो वह केवल हिंदीभाषियों की भाषा नहीं है, इस पर अन्य भाषाभाषियो का उतना ही अधिकार है

जितना हिंदीभाषियों का हो सकता है। इसलिये मैं चाहता हूँ कि श्री हिंदी-साहित्य समिति, भाषाओं के आदान प्रदान के कार्य में प्रयत्नशील रहे। और नागरी लिपि को दूसरी भाषाओं में एक अतिरिक्त लिपि के रूप में प्रतिष्ठित करने के कार्य में भी अपना योगदान दे। ऐसा करने से न केवल हिंदी साहित्य की श्रीवृद्धि होगी, अपितु भावात्मक एकता की स्थापना में आपकी समिति अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकेगी। यही हमारा प्रयत्न होना चाहिए और यही हमारा ध्येय। इसी की पूर्ति में हिंदी का, अन्य भारतीय भाषाओं का और इस देश के जनगण का कल्याण निहित है।

हिंदी में भारत की सामूहिक चेतना का प्रवाह हो और हिंदी साहित्य में हमारे देश की सामासिक संस्कृति परिलक्षित हो, यही मेरी कामना है। मैं आशा करता हूँ कि आप इस ओर निरंतर प्रयत्नशील रह कर, जनता की आशाओं और आकांक्षाओं को साकार रूप देने का अनवरत प्रयास करते रहेंगे। इस दिशा में समिति के प्रयास सफल हों, समिति का भविष्य उज्ज्वल हो, यही मेरी प्रार्थना है। इन शब्दों के साथ मैं इस हीरक जयंती समारोह का सहर्ष उद्घाटन करता हूँ।

राष्ट्रभाषा : सही परिप्रेक्ष्य

मैं आप सब का हृदय से आभारी हूँ कि आपने मुझे भारतीय हिंदी परिषद् के २७ वे अधिवेशन के समापन के अवसर पर यहाँ उपस्थित होने तथा आप सब से मिलने का अवसर प्रदान किया।

भारतीय हिंदी परिषद् की स्थापना, इस के कार्यो और विकास के विषय मे जानकर मुझे बडी प्रसन्नता हुई कि परिषद् का अपना एक गौरवपूर्ण इतिहास रहा है। १६४२ मे इलाहाबाद विश्वविद्यालय मे इसकी स्थापना हिंदी के विकास, साहित्य समृद्धि, इसके आलोचनात्मक मूल्याकन तथा हिंदी के पठन-पाठन, शोध एव इसके रूप और स्तर को ऊँचा उठाने के उद्देश्य से की गई थी। इस दिशा मे इस सस्था द्वारा गत ३३ वर्षो से जोकार्य सपादित हो रहा है, उससे हिंदी की एक महान् सेवा हुई है। यह भी एक महत्व की बात है कि भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयो मे हिंदी की उच्च शिक्षा के क्षेत्र म यह एक सपर्क सस्था के रूप मे कार्य करती आ रही है। इससे साथ वार्षिक समलनो का आयोजन, इस नाते बडा लाभदायक है कि ऐसे अवसरो पर साहित्यिको, आचार्यो तथा शिक्षको को एक स्थान पर मिल कर बैठने, एक दूसरे के समीप आने का जहाँ मौका मिलता है, वहाँ हिंदी के अध्ययन, एव साहित्य साधना मे उपस्थित होने वाली कठिनाइयो को दूर करने के लिये विचार-विनिमय द्वारा उपाय ढूंढे जा सकते हैं। इस रचनात्मक चेष्टा की जितनी सराहना की जाएँ, कम है। आप एक राष्ट्रीय सेवा का काम कर रहे हैं और इसके लिये मैं परिषद् को तथा इससे सबधित आप सभी को बधाई देता हूँ और कामना करता हूँ कि आप अपने उच्च मनोरथो मे सफल हो।

यह सर्वविदित है कि हमारी महान् सस्कृति के समान ही हमारी राष्ट्र-भाषा एक ऐसी कडी है, जो हमे एक दूसरे के समीप लाती है। हमे एकता के सूत्र म बाँधती है। हमारा देश एक विशाल देश है, यहाँ कई प्रदेश हैं और प्राय: सभी की अपनी अपनी भाषा है। ये सभी महान् भाषाएँ हैं, हमारे देश की भाषाएँ है। हमारा यह कर्तव्य है कि हम उनका खूब विकास करें, उन्हें उन्नत बनाएँ जिससे कि वे हमारी आधुनिक आवश्यकताओं को पूरा करने मे सक्षम हो सकें। इसके साथ हमारे लिये यह भी आवश्यक है कि हम हिंदी को जो हमारे सविधान मे राष्ट्र-भाषा घोषित की गई है उसके सार्वदेशिक स्वरूप को

निखारने तथा उसे अधिक समृद्ध बनाने मे अपना सहयोग दें। हिंदी के जिस अखिल भारतीय स्वरूप की हमारे राष्ट्रनायको ने कल्पना की थी उसके पीछे यही भावना थी कि हम हिंदी को इस तरह से विकसित करे कि वह हमारे राष्ट्रीय जीवन के प्रत्येक अग और अनुभव की, उपलब्धि और आवश्यकता की पूर्ति कर सके और एक प्रभावशाली सपर्क भाषा बनकर समूचे राष्ट्र की भावना, जीवन और सस्कृति का प्रतिपादन कर सके। इस दिशा मे हम कहाँ तक पहुँच पाए हैं, इस पर हमे विचार करना चाहिए।

यह सत्य है कि हिंदी की उन्नति और विकास भारत की अन्य भाषाओ की उन्नति और विकास के साथ जुडी हुई है। राष्ट्र-भाषा के नाते वह केवल हिंदीभाषियो का ही भाषा नही, वह हमारी सबकी है। इस पर अन्य भाषा-भाषियो का भी उतना ही अधिकार है जितना कि हिंदी भाषियो का। इसलिये उन्हे भी इसकी उन्नति और विकास के कार्य मे आगे आना है। हमारे देश मे प्रतिभा और योग्यता की कमी नही है। आज हमारा यह प्रयास होना चाहिए कि हम हिंदी तथा अन्य भाषाओ के साहित्य को एक दूसरे के सहयोग से समृद्ध बनाने की चेष्टा करें। यह तभी होगा, जब हम अपनी भाषा के साथ हिंदी मे भी प्रवीणता प्राप्त करें, अपने विचारो एव भावनाओ को अच्छे तरीके से अभिव्यक्त कर सकें। मै तो समझता हूँ कि कोई भी ऐसा काम नही है जो हो न सके। हाँ, इसके लिये निष्ठा, त्याग तथा कठिन परिश्रम अवश्य चाहिए और मैं यह देखता हूँ कि इसकी हमारे देश मे कमी नही है। यह प्रसन्नता का विषय है कि हिंदी के प्रति एक नया उत्साह जग रहा है और हमारे विभिन्न भाषा-भाषी प्रदेशो से हिंदी के लेखक, शिक्षक और वक्ता सामने आ रहे है।

यह कौन नही जानता कि सास्कृतिक और बौद्धिक क्षेत्र मे केरल प्रात का योगदान किसी से कम नही रहा। स्वतत्रता प्राप्ति के बहुत पहले से हिंदी भाषा और उसके साहित्य के प्रति यहाँ काफी स्नेह भाव रहा है और आज यह कहा जा सकता है कि यह भावना दृढ से दृढतर होती जा रही है। हिंदी के अध्ययन, अध्यापन मे जो प्रगति हुई, उसकी हमे सराहना करनी चाहिए। जहाँ तक हिंदी साहित्य मे योगदान का सबध है उस दिशा मे भी काफी उत्साह दिखाई देता है। मैं समझता हूँ कि अभी ऐसे लेखको की सख्या अधिक नही है, फिर भी हम उसे एक बडी उपलब्धि ही मानते है क्योकि उनको देखकर, उनसे प्रेरणा लेकर अनेको नए साहित्यिक सामने आएँगे। यह बहुत ही अच्छी बात होगी, यदि हम आदान प्रदान की क्रिया को गति प्रदान करने मे अपना सहयोग प्रदान करें

और इस प्रकार अपने देश की भाषाओं के साहित्य भंडार को बढ़ाएँ। क्योंकि भारत की सभी भाषाओं में ऊँचे से ऊँचे साहित्य ग्रंथ हैं और यदि उनका एक से दूसरी भाषा में बल्कि हो सके तो देश की सभी भाषाओं में अनुवाद हो तो सभी भाषाओं को बहुत लाभ होगा। यहाँ मलयालम में कितने ही ऐसे उत्कृष्ट साहित्य ग्रंथ हैं जो यदि हिंदी में अनूदित हों तो इसकी शोभा को और बढ़ा सकते हैं और इस प्रकार इसके सार्वदेशिक रूप को भी निखार सकते हैं। यह तो ठीक है परंतु भाषा के विकास में एक और महत्वपूर्ण चीज है, नई और मौलिक रचनाएँ। आज हिंदी का जितना हम विकास कर पाए हैं उसमें उसकी शक्ति बढ़ी है और किसी भी विषय की अभिव्यक्ति इसके द्वारा हो सकती है। यहाँ एक बात हमें याद रखनी चाहिए कि भाषा के विकास के समय हम उसे सरल और बोधगम्य रखने का भरसक प्रयत्न करें। भाषा जनमानस की वस्तु है और यदि वह कठिन और पेचीदा बना दी जाए तो वह जनसाधारण की भाषा नहीं रहती। हम इसे ऐसी बनाएँ कि भारत की अन्य भाषाओं का भी इसमें प्रतिबिंब दिखाई दे।

आज राष्ट्रभाषा और इसके साहित्य की अभिवृद्धि में सारे देश के साहित्यकारों को सम्मिलित होना है। इसके लिये यदि हिंदी साहित्यसेवी मनीषियों द्वारा संगठित और सहयोगपूर्ण प्रयत्न होंगे तो मैं समझता हूँ कि हिंदी की महान् सेवा हो सकेगी। इस प्रकार नई उभरती हुई प्रतिभाओं का उत्साह बढ़ेगा और उदीयमान लेखकों को स्फूर्ति प्राप्त होगी। जो लोग इस दिशा में प्रयत्न कर रहे हैं, हमें उनके कार्य की दाद देनी होगी। इससे निश्चय ही उत्साहवर्धक परिणाम सामने आएँगे और प्रांतीय स्तर पर जो कठिनाई हमारे सामने आती है, उसका समाधान ढूँढ़ने में हमें सहायता मिलेगी।

हिंदी की प्रतिष्ठा के लिये देश भर में एक व्यापक पैमाने पर काम हो रहा है। आज यह सभी अनुभव करते हैं कि हिंदी के प्रचार की अपेक्षा हमें इसके प्रयोग और व्यवहार की ओर अधिक ध्यान देना चाहिए। भाषा की उन्नति के लिये पारिभाषिक शब्दों की जरूरत तो सदा रहेगी, लेकिन जब तक वह हमारे कार्य-व्यवहार में प्रयुक्त नहीं होते, भाषा सच्चे मानों में समृद्ध नहीं होती। इसीलिये मैं साहित्य सृजन को अधिक महत्वपूर्ण मानता हूँ। ऐसा साहित्य जो हमारी प्राचीन परंपराओं, मूल्यों और आदर्शों को भी अक्षुण्ण रखे और राष्ट्रीय आवश्यकताओं की भी पूर्ति कर सके। समाज की प्रगति और संपन्नता के लिये प्रेरणा का स्रोत बन सके। आज हमें मिलकर चलना है, देश के लिये मिलकर काम करना है। उसे ऊँचा उठाना है। हमारा यही प्रयत्न होना चाहिए कि हम

राष्ट्रीय सजगता का विस्तार हो और हम राष्ट्रीय जीवन धारा के साथ आगे बढे ।

इस दिशा मे मैं आज के इस अधिवेशन को बडा उपयोगी समझता हूँ और आशा करता हूँ कि इसमे जो मूल्यवान विचार रखे गए है और भाषा भाषी प्रातो मे साहित्यिको, शिक्षको तथा विद्यार्थियो के समुख हिंदी अध्ययन अध्यापन, शिक्षण प्रशिक्षण, लेखन इत्यादि मे जो कठिनाइयाँ प्रस्तुत होती है, उनके समाधान के लिये उचित सुझाव दिए गए है, उनसे लाभ उठाया जाएगा । मैं यही चाहूँगा कि आप इसी प्रकार यह सेवा कार्य करते रहे । आपके सत्प्रयासो की सफलता के लिये मैं अपनी शुभ कामनाएँ देता हूँ तथा परिषद् के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ ।

राजभाषा

अखिल भारतीय हिंदी सस्था सघ तथा हिंदी विद्यापीठ, देवघर के तत्वावधान मे आयोजित द्वितीय राजभाषा समेलन के उद्घाटन के लिये आपने मुझे निमन्त्रित किया, उसके लिये मैं आप सबको धन्यवाद देता हूँ।

भारत सरकार के शिक्षा मन्त्रालय के प्रयत्न तथा हिंदी प्रचार करनेवाली परीक्षा-मान्यता-प्राप्त सस्थाओ के सहयोग से दिल्ली मे अखिल भारतीय हिंदी सस्था सघ की आज से १२ वर्ष पूर्व स्थापना एक राष्ट्रीय मच के रूप मे की गई थी जो देश भर मे पिछले पचास वर्षों से राजभाषा के प्रचार प्रसार मे कार्यरत सस्थाओ मे आपसी सहयोग बढाने, उन्हें एक सूत्र मे पिरोने उनमे एकरूपता लाने के लिये प्रयत्न करे। राज भाषा के प्रसार मे आपकी सस्थाएँ मूल्यवान कार्य कर रही हैं। इसके लिये मैं आप सभी को बधाई देता हूँ।

१९७२ मे प्रथम राजभाषा समेलन का आयोजन किया गया था और हिंदी तथा अन्य प्रातीय भाषाओ की स्थिति पर विचार हुआ और कई उपयोगी विचार भी प्रस्तुत हुए। यह आवश्यक है कि इस अवधि मे राजभाषा के लिये जो कुछ काम हुआ, उसका मूल्याकन हो और साथ मे भविष्य की सभावनाओ पर भी विचार विनिमय हो, इस दृष्टि से आज का समेलन महत्वपूर्ण है।

आप सभी जानते है कि सविधान के अनुच्छेद ३४३ (१) के अनुसार देवनागरी लिपि मे लिखित हिंदी को भारत की राजभाषा के रूप मे स्वीकार किया गया है। लेकिन कालातर मे हिंदी के बारे मे जो व्यवस्था दी गई थी उसमे काफी परिवर्तन हुए। सविधान के अनुसार इसे १९६५ तक सरकारी काम काज मे आ जाना चाहिए था परतु राजभाषा आयोग तथा ससदीय समिति ने यह राय दी कि अभी हिंदी के लिये यह कठिन होगा कि वह अग्रेजी का स्थान ले सके। इसलिये उनकी सिफारिश को ध्यान मे रखते हुए, राजभाषा अधिनियम १९६३ मे पारित हुआ और उसे १९६७ मे सशोधित किया गया और अग्रेजी को सह राजभाषा का स्थान दिया गया। केंद्रीय उपक्रमो तथा राज्यों के साथ पत्राचार के लिये यह प्रावधान किया गया कि जब तक विभागो के कर्मचारियों तथा अधिकारियो को हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान नही हो जाता, हिंदी तथा अग्रेजी दोनो ही भाषाओ का उपयोग होता रहेगा। अहिंदी भाषी राज्यो को केंद्र के साथ पत्र व्यवहार के लिये तब तक अग्रेजी का प्रयोग करने की छूट दी गई और यह स्पष्ट किया गया कि हिंदी के अतिरिक्त

अंग्रेजी भी सघ के कार्यों मे प्रयुक्त होती रहेगी जब तक राज्यो के विधान मडल तथा ससद के दोनो सदन हिंदी के पक्ष में अपनी सहमति प्रदान न करें।

हिंदी के प्रचार प्रसार, शिक्षण प्रशिक्षण, शब्दावली, नियमो तथा अन्य कार्य, विधि सबधी साहित्य का निर्माण, यात्रिक तथा अन्य वैज्ञानिक सामग्री के विकास की दिशा मे जितना काम हो पाया है वह निःसदेह प्रशसनीय है। परतु प्रयोग स्तर पर भाषा के व्यवहार की भूमिका सुदृढ होनी भी आवश्यक है। वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग ने एक सपूर्ण प्रशासनिक शब्दावली तैयार कर ली है। शिक्षा के क्षेत्र मे प्रयुक्त होनेवाले तीन लाख से भी अधिक शब्दो का निर्माण हो चुका है। टकन और आशुलिपि के प्रशिक्षण की सुविधाएँ जुटाई गई है। हिंदी के व्यावहारिक ज्ञान के लिये सहायता उपलब्ध है। इसके बावजूद हम यह जानते है कि अभी बहुत काम करना शेष है।

आज भारतवर्ष मे प्रशासन का कार्य परपरागत नही रहा। उसका काम आज बडा व्यापक है और जनता के साथ उसका गहरा सबध है, वह जनता के प्रति उत्तरदायी है। उसे हर पग पर जनता का सहयोग चाहिए। राष्ट्रीय योजनाओ का जनता को लाभ पहुँचे इसके लिये भाषा ही एक सबल माध्यम है। राष्ट्रभाषा और लोकभाषाओ से ही जन सपर्क बढाया जा सकता है। आर्थिक और सामाजिक विकास और परिवर्तनो के लिये हिंदी और प्रातीय भाषाओ को ही दायित्व वहन करना है। हिंदी अपने प्रतिष्ठित पद पर आसीन हो, इनके लिये प्रातीय भाषाओ को अपने प्रातो मे यथेष्ट स्थान मिले, यह विचार सगत है। जैसा कि इस बारे में प्रथम राजभाषा समेलन मे विचार प्रस्तुत हुए थे, हमे अतर्मुख होकर सोचना चाहिए कि इस दिशा मे हम क्या कर पाए हैं और आगे क्या करना है। इसके लिये मैं समझता हूँ कि हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओ मे आदान प्रदान को बढाया जाना चाहिए, इससे न केवल भाषाएँ ही समृद्ध होगी, बल्कि भाषा-ज्ञान-वृद्धि के लिये सद् उत्साह भी जागृत होगा और सौहार्द की भावना भी दृढ होगी।

हिंदी आज भारत की सपर्क भाषा है। हिंदी का विकास आवश्यक है—और अन्य भाषाओ की समृद्धि इसमे विशेष सहायक होगी। हिंदी के माध्यम मे इस विशाल देश के लोग एक दूसरे को समझ सकेंगे और मिलकर काम कर सकेंगे। हिंदी को न केवल सब क्षेत्रो के बीच, बल्कि सब वर्गों के बीच एक जीवत भाषा बनाना है। हम एक ऐसे भारत की कल्पना नही करते जहाँ

केवल एक भाषा बोली जाती हो, न ऐसे भारत की जहाँ एक ही धर्म का बोल-वाला हो । लेकिन मुझे आशा है कि भारत के लोग अधिक से अधिक हिंदी सीखेंगे । हम चाहते है कि हमारे बच्चे अपनी मातृभाषा सीखे, राष्ट्रीय संपर्क भाषा के रूप मे हिंदी सीखें और अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप मे अंग्रेजी सीखे । सरकार सतत् प्रयत्नशील है कि हिंदी राजभाषा और अंतरप्रांतीय भाषा के रूप मे प्रभावकारी हो, पर हिंदी किसी पर लादी नही जाएगी।

इसमे कोई संदेह नहीं होना चाहिए कि हिंदी का भविष्य उज्ज्वल है । प्रशासन के क्षेत्र मे भी उसका उपयोग बढेगा और वाणिज्य, व्यापार, उद्योग आदि क्षेत्रो भी उसे अपनाया जाएगा । लेकिन इसके लिये हमे उचित वातावरण तैयार करना है और दूर दृष्टि से काम लेना चाहिए । राष्ट्रभाषा के नाते इसके लिये हर देशवासी के हृदय मे प्रेम और आदर की भावना होनी चाहिए । राष्ट्रीय एकता, सुदृढता, प्रगति यह सब हमारी राष्ट्रभाषा से जुड़े हुए हैं । यह हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य है कि हम हिंदी की प्रतिष्ठा मे अपना पूर्ण सहयोग दें उसके दैनिक प्रयोग मे गौरव अनुभव करें । मुझे आशा है कि इस त्रिदिवसीय राजभाषा सम्मेलन मे उपयोगी विचार प्रस्तुत होगे। इन्ही शब्दो के साथ मैं सहर्ष इस सम्मेलन उद्घाटन करता हूँ ।

———

३. देश और धर्म

उद्बोधक सतवर श्री विवेकानंद जी

ग्राज बड़े हर्ष की बात है कि ग्राप सब तेजस्वी स्वामी विवेकानद जी की जयती मना रहे हैं। मातृभूमि की वदना मे ग्रनेक साधक ने ग्रपनी ग्रपनी देशप्रेमी स्वर साधनाएँ प्रस्तुत की, लेकिन सबसे उत्तम स्वर स्वामी विवेकानद जी का था। यह हम लोगो के लिये तथा हमारे देश के लिये सौभाग्य की बात है कि प्राय प्रत्येक समय पर ऐसे महान् पुरुपो का ग्रागमन हुग्रा, जिन्होने ग्रपने जन कल्याणकारी सदेशो के द्वारा तथा ग्रपनी भक्ति एव सेवाग्रो के द्वारा न केवल भारतवासिवो का तथा भारत के उत्थान का पथ प्रदर्शित किया, बल्कि सपूर्ण मानव समाज का पुनरुत्थान किया। स्वामी विवेकानद उनमे मे एक थे। ऐसी महान् ग्रात्माएँ समय की गति को समझती हैं तथा उसी के ग्रनुरूप ग्रपना कार्य करती है।

स्वामी विवेकानद जी ने कहा था—"इम भारत को फिर से उठाना होगा, वास्तव मे ग्राज समय ग्रा गया है कि भारतवासियो के मन मे ग्रात्मविश्वास पैदा करना होगा, ग्रपनी सस्कृति पर उनकी श्रद्धा लौटानी होगी, शिक्षा का विस्तार करना होगा।' सपूर्ण देशवासियो को स्वामी जी के ग्रोजस्वी विचारो को ग्रपने हृदय मे धारण करके समाज के ग्रौर देश के सच्चे उत्थान के लिये गीता के श्लोक—'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन' का ध्यान रखते हुए ग्रपने लक्ष्य की ग्रोर तीव्रगति से बढना होगा। उन्होने निरुत्साहित जाति के हृदय मे ग्रात्म-विश्वास ग्रौर ग्रतीत के प्रति प्रेम की भावना उत्पन्न की थी। स्वामी जी ने उस समय देखा कि भारत की दशा दिन प्रतिदिन बिगडती जा रही है, वह राष्ट्र को मजबूत बनाना चाहते थे। इसलिये ग्रकर्मण्यता जैसी बुराई को दूर करने पर उन्होने जोर दिया तथा सक्रिय बनकर पूर्ण ग्रात्मविश्वास के साथ देश को सबल बनाने पर बल दिया।

स्वामी विवेकानद जी बार-बार ग्रनेक प्रकार से कहते थे—'हमे सबसे पहले इस तामसिकता ग्रौर दुर्बलता से ऊपर उठना होगा, तेज ग्रौर वीर्यवान होना होगा। हमारे देश के लिये प्रयोजन है, लोहे के समान दृढ मास-पेशी ग्रौर स्नायु युक्त होना—ऐसे इच्छाशक्ति सपन्न होना कि कोई उसका

प्रतिरोध करने मे समर्थ न हो। समुद्र मे जाना पडे या मृत्यु का सामना करना हो तो भी वह द्रवित न हो जाए। मै तुम लोगो से कहता हूँ इस समय हमे बल चाहिए, शक्ति चाहिए, केवल अन्न, वस्त्र के सग्रह या अन्याय उत्पीडन के प्रतिकार आदि के लिये ही हमे तेजवीर्य की आवश्यकता है, ऐसा नही। धर्म लाभ करने के लिये भी शक्ति का उद्बोधन अनिवार्य है।' 'नायमात्मा बलहीनेन लभ्य 'आप लोगो को पहले सबल होना होगा, धर्म बाद मे आएगा। हे मेरे मित्रो, तुम लोग सबल हो जाओ, यही तुम्हारे प्रति मेरा उपदेश है। गीतापाठ की अपेक्षा खेलने से तुम स्वर्ग के अधिक निकटवर्ती हो सकोगे। शरीर पुष्ट होने से तुम लोग गीता का अर्थ भी उत्तम रूप से समझ सकोगे। तुम्हारा खून कुछ ताजा होने पर तुम लोग श्रीकृष्ण की महत्ता, प्रतिभा और शक्ति को अच्छी तरह समझ सकोगे'। इसलिये शारीरिक और मानसिक सबलता प्राप्त करना ही हमारे लिये अधिक आवश्वक है।

स्वतन्त्रता की प्राप्ति के पहले भारत परतन्त्र था। इस देश मे अनेक कुरीतियाँ विद्यमान थी। जात पाँत, गरीबी, शोषण एव अध विश्वास का जमाना था, डर एव अज्ञान सर्वत्र विद्यमान था। इस प्रकार भारतीय जैसी निद्रा मे लीन थे, उस समय स्वामी जी ने कहा—'जागो और राष्ट्र उत्थान के कार्य मे अपना योगदान दो, जैसे कि तुम इस ससार मे आए हो कुछ अपना चिह्न छोडते जाओ, वरना तुम मे और पेडो तथा पत्थरो मे कोई भेद नही रहेगा, और आज भारत का जो नवीन स्वरूप दिखाई पड रहा है, यह उन्ही की देन है और इस प्रकार की राष्ट्रीय चेतना की धारा प्रवाहित की जिसके प्रवाह से उन्नति की राह सुलभ हो गई।

स्वामी विवेकानद जी ने जन कल्याण की भावना मे कहा और लिखा कि जब तक भारत के लाखो आदमी भूखे हैं, तब तक जो बडे आदमी हैं, उन्हें पीसकर पैदा करके शान से घूमते फिरते हैं और उनकी भलाई के लिये कुछ भी नही करते। मैं उन्हे हतभाग्य कहता हूँ। वराह नगर मठ के गुरु भाइयो को एक साथ जन सेवा के काम मे उतारने के लिये उन्होने लिखा था—यदि कुशल चाहते हो तो साक्षात् भगवान् नर-नारायण मानव देहधारी हर प्रकार के मनुष्यो की पूजा करो। उनकी पूजा-यानी उनकी सेवा इसी का नाम कर्म है।'

स्वामी जी के लेखो एव भाषणो मे समन्वय की भावना विद्यमान है। उसमे आध्यात्मिकता एव भौतिकता का मेल है। अपने समाज की रचना अपनी जरूरतो

के अनुरूप ही होनी चाहिए। स्वामी जी ने इसीलिये कहा था कि' अतीत की ओर देखो और उसके बाद सामने देखो और भारत को उज्ज्वलतर महत्तर और पहले से और भी ऊँचा उठाओ, ग्रामो मे जाओ, घर घर जाकर लोकहित, जगत् कल्याण का काम करो। ऐसे अमूल्य उपदेश स्वामी जी ने स्थान स्थान पर दिए थे। भारत की महिमा के प्रसग मे स्वामी जी ने कहा था, "यदि पृथ्वी मे ऐसा कोई देश है जिसे पुण्य भूमि कहा जा सकता है, यदि कोई ऐसा देश है जहाँ मनुष्य जाति के भीतर सबसे अधिक क्षमा, दया, धैर्य आदि सद्गुणो का विकास है तो निश्चय ही मैं बता सकता हूँ कि वह हमारी मातृभूमि यह भारतवर्ष है। सपूर्ण मानव जाति की उन्नति के लिये प्रत्येक जाति को ही कुछ देना पडता है। इस विषय मे भारत का अपना अशदान है आध्यात्मिकता।

स्वामी जी के विचार आज भी अजर एव अमर हैं। हमे उनसे शिक्षा तथा ज्ञान लेना चाहिए। यदि हम सफलता चाहते है तो अपनी पूरी शक्ति के साथ अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिये एकदम जुटना चाहिए। किसी भी अवरोध की परवाह किए बिना आगे बढना चाहिए। आप ऐसे व्यक्तियो के बीच मे रहें जो उन्नति के लिये सघर्षरत हैं, इसी मे आपका कल्याण है, समाज का कल्याण है और देश का कल्याण है।

आचार्य केशव देव के विचारो मे तथा उनके प्रयोजनो मे हमे स्वामी जी के आदर्श, शिक्षा और विचारो का समावेश मिलता है तथा इनकी सस्था का भी यही लक्ष्य है कि दीन दुखियो की सेवा की जाय, लोक कल्याण हो। ऐसे जन सेवा के कार्य स्थान स्थान पर होने चाहिए। परतु इसके साथ साथ यह भी देखना चाहिए कि जो यह सब हो रहा है वह वास्तव मे सही आदमी तक पहुँच रहा है कि नही। अगर सही आदमी तक पहुँच रहा है तो इसका तात्पर्य है कि ऐसी सस्थाओ के उद्देश्य की पूर्ति हो रही है।

इन शब्दो के साथ भारत के परम तेजस्वी तरुण सन्यासी स्वामी विवेकानद जी को मैं अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करता हूँ तथा आशा करता हूँ कि स्वामी जी के उपदेशो को हमारे देशवासी अपने जीवन मे उतारेंगे।

त्यागमय जीवन की शिक्षा संत ज्ञानेश्वर जी

यह मेरे लिए अत्यंत हर्ष की बात है कि श्री तनपुरे महाराज द्वारा सत ज्ञानेश्वर की स्मृति मे आयोजित इस समारोह मे उपस्थित हो सका। श्री तनपुरे जी, संत गाडगे महाराज के शिष्य है। बहुजन हित के लिये गाडगे महाराज ने जो काम किया, उससे कौन परिचित नही।

भारत ऋषि मुनियो तथा सत महात्माओ की भूमि रही है। समय समय पर ऐसी महान् आत्माओं का अवतरण यहाँ होता रहा है जिन्होंने अपने ज्ञान और भक्ति की सरिता प्रवाहित करके मानव मात्र को जीवन के उच्चतम आदर्शो की ओर प्रेरित किया है। सत ज्ञानेश्वर इसी महान् परपरा की देन हैं। सत ज्ञानेश्वर जी के समय की ओर जब हम दृष्टि डालते है तो हमे यह मालूम होता है कि उस समय, समाज भोगप्रधानता के कारण नाना प्रकार की सकुचितताओ मे फँसा हुआ था। समाज मे उदात्त भावनाओं का लोप होता जा रहा था। परस्पर सहयोग और सद्भावना शिथिल दिखाई देती थी। जात पाँत, ऊँच नीच के तत्व समाज की शक्ति को कमजोर करते जा रहे थे। कोई ऐसा नहीं था जो समाज की दशा की ओर देखे, उसकी शक्ति को सगठित करे तथा परंपरागत ज्ञान को जन मानस तक उनकी लोक भाषा मे पहुँचाए।

इसमें कोई सदेह नही कि हमारे धर्मग्रथ, तत्व ज्ञान, दर्शन और नीति के भंडार हैं। लेकिन बहुजन समाज को इनके पढने सुनने का उस समय अधिकार नही था। समाज को आध्यात्मिक तथा नैतिक सस्कारो से सपन्न करने का जिन पर दायित्व था वह अपने आसन और पीठ मे ही बँध गए थे, सारे भारत की यह स्थिति थी। ज्ञानेश्वर महाराज की दृष्टि से यह सब ओझल नही रहा। इसके लिये आवश्यक था कि समाज को ज्ञान अभिमुख किया जाय, उन्हे आध्यात्मिकता के गुणो से सपन्न किया जाय जिसमे कि किंकर्तव्यविमूढ मानव लाभ उठाकर अपने जीवन को उपयोगी बना सके। इसीलिये उन्होंने इस काम के लिये क्षेत्रीय भाषा को चुना। क्योकि वह मानते थे कि हमारे पास परपरा से प्राप्त, जितना ज्ञान है उससे लाभ उठाने का अधिकार हर छोटे बडे को समान रूप से है। केवल थोडे से लोगो के ज्ञानसपन्न होने से समाज ऊँचा नहीं हो सकता। इस ज्ञान को सर्व साधारण का बनाने के लिये उन्होने कहा है—"सस्कृत का

प्रवाह अत्यत गहरा है, उसमे निर्मल नीर बहता है लेकिन लोग उस जल को पी नही सकते, क्योकि वह उनकी पहुँच से बाहर है। इसलिये मैंने देशी भाषा का घाट बाँधा है, इसमे जो चाहे स्नान करे" । उनके बोल है —

एक मैं ऐसा सर्व मूक, बोल करके देशी भाषा,
आखो से ही ले सके लोक, ऐसा करता हूँ ।

जाति पाँति और गाँवो की सकुचित सीमा मे ही लिपटे हुए मन का सकुचित अभिमान निवारण कर उन्होने इन सबके परे की, समग्र देश की, याने राष्ट्र की एक सास्कृतिक अस्मिता प्रदान की ।

आप सभी जानते हैं कि इस ज्ञान ज्योति के प्रसार के लिये उन्होंने श्रीमद्-भगवद्गीता को चुना । उनका विचार था कि भगवान् कृष्ण ने जो उपदेश वीर अर्जुन को दिया था उसकी आज बडी आवश्यकता है। गीता, वेद, उपनिषदों का सारसग्रह है, उसमे सभी प्रकार के आध्यात्मिक और नैतिक विचार भरे हैं और मनुष्य को किस तरह जीना चाहिए, दूसरो से कैसे व्यवहार करना चाहिए, यह सब बताया है। सत ज्ञानेश्वर के समान, समाज का अवलोकन किया था, कर्नाटक के सत बस्वेश्वर महाराज ने, तुलसी, कबीर और गुरु नानक ने और इन सबने मानवता के इस दिव्य सदेश को लोक भाषा मे प्रतिपादित करके कोटि कोटि जन मानस को आलोकित किया था। सत ज्ञानेश्वर ने जगत् के उद्धार के लिये ज्ञानेश्वरी तथा अनुभावामृत जैसे दो महान् ग्रथ प्रदान कर मानव मात्र को कृतार्थ कर दिया ।

गीता के इस तत्व ज्ञान को उन्होने सरस और सरल भाषा मे प्रस्तुत करके भक्ति भाव की प्रतिष्ठा की । दान, परोपकार, लोक सेवा ही सच्ची भक्ति होती है यह उन्होने हमे सिखाया। आध्यात्मिक और लौकिक जीवन के दो पक्षो का इसमे समावेश किया । सभी को समदृष्टि, समभाव तथा समवेदना का दर्शन दिया, अद्वैत का उपदेश देकर मानव को विश्वबधुत्व की ओर प्रेरित किया और कहा—केवल ब्रह्म ही सत्य है, यह जगत् उसका ठीक उसी प्रकार स्फूर्ण है जैसे बीज से वृक्ष प्रकट होता है । यह जो कुछ भी हम देखते हैं, एक ही आत्मा का विस्तार है और इस विश्व मे जो विविधता दिखाई देती है वह आत्मा का ऐश्वर्य योग है । इसका बोध ही आत्मबोध है । सभी प्राणियो मे वही आत्मा निवास करती है, तो फिर हम किसे श्रेष्ठ और किसे छोटा समझें । उनका सुभाषित है —

यहाँ भाव व्यथा जो ग्रस्त, स्त्री, शूद्र आदि प्राणी हैं व्यस्त,
उन्हे अवसर न दें स्वस्थ, पीछे यह व्यग देखकर,
उसको करने अब दूर, प्रकाश मे आया है वेद सार,
करते है जो गीता तत्व सेवन, उनमे उत्तम अधम न मान,
सबको कैवल्यदान देकर, विश्व को देती शाति ।

वेदो मे सभी को प्रेम व सद्भावना का पात्र माना गया है । वेद मे कहा है –

प्रिय मा कृणु देवेषु प्रिय राजसु माकृणु ।
प्रिय सर्वस्य पश्यत उत शूद्र उत्तार्ये ।।

अर्थात् सबके साथ प्रेम का व्यवहार होना चाहिए, सभी सहानुभूति के पात्र हैं । केवल उच्च वर्ग के लोग ही उचित समान के अधिकारी नही, सभी यथोचित व्यवहार के पात्र हैं ।

अज्येष्ठासो अकनिष्ठास, एते सभ्रातरो वावृध सौभगाय ।

अर्थात् सब मनुष्य भाई है, इस भावना को लेकर आचरण करने से सबके सौभाग्य मे वृद्धि होती है ।

मानव समाज सत ज्ञानेश्वर महाराज के प्रति सदा श्रद्धा के सुमन अर्पित करता रहेगा और उनके दिए हुए उपदेशो से लाभ उठाता रहेगा । इस महापुरुष को मै अब अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करता हूँ । हमे चाहिए कि हम गीता ज्ञान से जन मानस मे कर्तव्य भाव विकसित करें और उनमे आत्मसयम की प्रतिष्ठा करें । मानवीय एकता को सुदृढ करे । भोगप्रधान जीवन दृष्टि के स्थान पर त्यागमय जीवन की शिक्षा दें । आज समय की यही माँग है । बदलता हुआ समय ज्ञान और विज्ञान का समन्वय चाहता है ताकि विज्ञान लोक कल्याण का ही हेतु बने । इसके लिये हमारी सास्कृतिक सस्थाएँ उपयोगी कार्य कर सकती है । धर्म केवल सिद्धात ही नही है वह एक जीवन पद्धति है और उसे मानव जीवन के उत्कर्ष मे सहायक होना ही चाहिए । मेरे विचार से ज्ञानेश्वरी का आशय जन साधारण को अपना व्यावहारिक जीवन उन्नयन करने के लिये प्रवृत्त करने का ही है । तत्व चिंतन, भाव शुद्धि व नीतिमत्ता इनका आग्रह करने का यह आशय है ।

आज हम समाज की एक सुदर और स्वस्थ रचना के महान् प्रयास मे जुटे हुए है और यह निश्चित है कि इस प्रयास के पीछे मानव उत्थान की भावना ही इस कार्यक्रम का केंद्र बिंदु है । हमे चाहिए कि हम सब मिलकर इनमें

अपना सक्रिय सहयोग दे ताकि समाज से अंधविश्वासो, कुरीतियो तथा भेद-भावनाओ को दूर किया जा सके जिससे कि सभी अच्छा और उपयोगी जीवन बिता सके ।

मैं आप सबको धन्यवाद देता हूँ कि आपने मुझे यहाँ आने और आप सब से मिलने का मौका दिया ।

सत्य के आराधक गुरु तेग बहादुर

मैं आपका आभारी हूँ कि आपने गुरु तेग बहादुर के तीन सौवें शहीदी दिवस समारोह मे उपस्थित होने का अवसर दिया ।

हमारे शास्त्रों मे कहा गया है—"अधकार निरोधक गुरु," जो मानव हृदय का अधकार दूर करके उसे प्रकाश की ओर ले जाए, वह गुरु है । गुरु हमे असत् से सत्य की ओर प्रेरित करता है । हमारे ऋषि, मुनि, सत, फकीर, सूफी तथा महात्मा सभी ने इसी परपरा को गरिमा प्रदान की है । ऐसे महापुरुष सभी धर्मों मे पैदा हुए है जिन्होने सर्वोच्च आध्यात्मिक अनुभूतियो द्वारा समय समय पर मानव कल्याण का पथ प्रदर्शित किया है । सिख धर्म मे प्रथम प्रवर्तक रहे गुरु नानकदेव । गुरु नानक भक्तिकाल की उन महान् विभूतियो मे से थे, जिन्होने आध्यात्मिक मूल्यो की पुन. प्रतिष्ठा करके जन-मानस को जीवन के उत्कर्ष लक्ष्य की ओर प्रेरित किया । उन्होंने हमे बताया कि ससार मे रहते हुए, स्वकर्मो को पूरा करते हुए, हम यदि उस महान रचनाकार को स्मरण करते रहें, उसे न भूलें, तो हम उसकी कृपा के पात्र बन सकते हैं । उन्होंने बताया कि भगवान् की दृष्टि मे सब समान हैं । कोई बडा नही, कोई छोटा नही, न कोई सवर्ण है, न कोई अछूत । वह उपासक थे, मानव एकता, समानता, श्रद्धा और प्रेम के । उन्होने बताया कि सभी धर्म हमे एक ही लक्ष्य की ओर ले जाते है । उन्होने हिंदू और मुसलमान को प्रेमसूत्र मे पिरोने का भरसक प्रयत्न किया । वह सभी को बताते रहे कि भाई क्यो झगडते हो—इन रीति रिवाजो के ऊपर, अपने धार्मिक स्थानो तथा सिद्धातों को लेकर हम सभी एक ही गतव्य स्थान के यात्री हैं । सब प्रेम मे रहो, एक दूसरे के स्नेह के भाजन बनो । यही था उनका विश्व-बधुत्व का सदेश । सभी गुरुओ ने हमे इसी सत्य और स्नेह का उपदेश दिया । सभी ने मानव हृदय मे सहानुभूति, अभय और समादर की भावना को जागृत करने की चेष्टा की । गुरु तेग बहादुर नवें गुरु थे । उन्होने इस महान् परपरा को न केवल बनाए रखा, बल्कि मानवता को पुन प्रतिष्ठित करने के लिये अपना सर्वस्व त्याग दिया, जिसके लिये सुकरात ने जहर का प्याला पिया था, हजरत ईसा ने सूली की सेज सजाई थी और महात्मा गाधी ने अपने सीने मे गोली खाई थी ।

धर्म का प्रतिफल है, सहिष्णुता, चरित्र और पुरुषार्थ । आध्यात्मिकता धर्म का सार तत्व है । धर्म के मर्मज्ञ तो जानते है कि धर्म क्या है । परंतु जो ऊपर की सतह पर रहनेवाले हैं, वह धर्म को अपने अहम् का साधन मान लेते हैं । ऐसा धर्म भेदों की सीमा रेखाओ के अतराल को मिटाने के बजाय स्वय सीमाओ में बँध जाता है । तब मानव प्रेम सकुचित हो जाता है और सहिष्णुता का भाव सिमिट जाता है । यही चीज सघर्ष को जन्म देती है, जो धर्म के नाम पर होते रहे हैं । गुरु तेग बहादुर जी से जब किसी ने पूछा कि सबसे अच्छा धर्म कौन है, तो उन्होने कहा था "बुराई से बचना ही सबसे अच्छा धर्म है" ।

वैशेषिक दर्शन मे धर्म के बारे मे लिखा है :–

"यतोऽभ्युदयनि श्रेयससिद्धि स धर्म"

जिस आचरण से सासारिक कल्याण और ईश्वरीय परमानद की प्राप्ति हो, वही धर्म है । अत धर्म ऐसा साधन है जिसके द्वारा मनुष्य सर्वांगीण उन्नति कर सकता है । वह वैयक्तिक, सामाजिक और आध्यात्मिक जीवन मे प्रकट होना चाहिए । लेकिन यह रहता कहाँ है, इसके लिये कहा है "धर्मस्य तत्व निहित गुहाया" अर्थात् धर्म मनुष्य के अत करण मे निहित है । यह न तर्क की वस्तु है न बलपूर्वक किसी पर थोपी जानेवाली पद्धति । वह तो केवल साधन है, जिसके द्वारा हम ईश्वर तक पहुँच सकते हैं । यह अनुभूति कि भगवान् मेरे चारो ओर इस चराचर जगत् मे व्याप्त है । उसी ज्योति से सभी मानव प्रकाशित हैं । यही ज्ञान है, यही भक्ति की अतिम साधना है । इसी लिये जिन्हें यह अनुभूति हुई है, उन्होने समस्त विश्व को एक ही दृष्टि से देखा है, जिसमे सबके लिये प्रेम है, सबके कल्याण की उत्सुकता है । मानो मानव सेवा मे ही उनकी ईश्वर भक्ति सार्थक हो गई ।

गुरु तेग बहादुर सत्य के आराधक और त्याग के साधक थे । वह सहनशीलता को जीवन का सबसे ऊँचा आदर्श मानते थे । क्षमा को सबसे बडा दान और क्रोध को पाप का कारण । इसीलिये क्रोध से बचने के लिये कहते थे । उन्होंने अपने से बुरा व्यवहार करनेवालो का भी बुरा नही चाहा । पीडित जन का उद्धार ही उनके जीवन का आदर्श रहा । वह देश भर मे घूमे, जहाँ भी वह गए, उन्होंने ईश्वर नाम स्मरण का ही उपदेश दिया । उन्हें अभय दान दिया और यह भी कहा कि तुम किसी के लिये भय का कारण न बनना । सही बात अथर्ववेद मे इस प्रकार कही गई है :–

"अभय सर्वभूतेभ्यो मत्त' स्वाहा"

अर्थात् मुझसे सब प्राणियो को अभय प्राप्त हो। लेकिन सभी मनुष्य ऐसा आचरण नही करते। यदि मानव ने अभय दान करना सीखा होता, तो समाज का स्वरूप कुछ दूसरा होता। बढती हुई तृष्णा मनुष्य को चैन नही लेने देती। गुरु तेग बहादुर से किसी ने जब दुख का कारण पूछा था उन्होने कहा था तो"दुख का कारण है असतोष, और असतोष का कारण है लोभ, उचित पुरस्कार से अधिक पाने, दूसरो के अधिकारो को छीनने की इच्छा।"

इसी सदर्भ मे स्वामी रामकृष्ण परमहस ने एक बार कहा था—"मानव" तुम सभी अपने नित्य कर्म करो, परतु अपना मन भगवान् मे स्थिर रखो, उसे न भूलो, सबसे मिलकर रहो, अपने परिवार, अपने समाज, सभी के प्रति अपना दायित्व पूरा करो। उनसे ऐसे रहो जैसे वह तुम्हारे परम स्नेही हो परतु मन से यह न भूलो कि वह तुम्हारे नही हैं"। यही है अह और मोह का त्याग। गुरु तेग बहादुर ने अपने उपदेश मे यही बताया था कि मनुष्य यदि "मैं और मेरा" का त्याग कर दे और अपने आपको पूर्णतः ईश्वर को समर्पित कर दे तो वह मोक्ष प्राप्त कर सकता है।

जैसा कि मैंने कहा, धर्म के लक्षणो मे सहिष्णुता उसका पहला लक्षण है। धर्म के दस लक्षण बताए गए है, उनमे सभी का महत्व है। एक भी गुण कम पड जाए तो शेष गुण भी सार्थक नही रहते। धर्म के गुणो मे परिवर्तन नही आता। अतर आता है उस पर चलने वालो मे, जो तत्वो को छोडकर उसकी क्रिया पद्धति मे ही उलझ जाते है। यही चीज धार्मिक सहिष्णुता को कमजोर बनाती है। इसी धार्मिक सहिष्णुता के लिये गुरु तेग बहादुर ने तत्कालीन शासक को बताया था कि दिल्ली पहुंचने के लिये कई कई मार्ग हो सकते है, इसके लिये एक ही रास्ता नही है। इसी सत्य की रक्षा के लिये, कि सभी धर्म मनुष्य को एक ही मजिल पर ले जा रहे है, उन्होने शहादत कबूल की थी ताकि आनेवाली पीढियाँ इस सकीर्णता से मुक्त हो सकें। सभी को जैसा कि पुरी जी ने कहा, आध्यात्मिक स्वतत्रता मिल सके।

आज धार्मिक सहिष्णुता हमारे देश के लोक-तत्र का मुख्य अग है। सभी धर्मो के मानने वालो को उपासना विधि की स्वतत्रता है। सभी को समान

दृष्टि से देखा जाता है। युग सदर्भ मे मानव के लिये यह जरूरी है कि आध्यात्मिकता हमारे सामाजिक व्यवहार मे प्रकट हो। आध्यात्मिक मूल्यो को हम सच्चे दिल से अपने जीवन मे प्रतिष्ठित करे। जिससे कि हमारा समाज ऐसा बन सके जिसमे न कोई भेद रहे, न विषमता, न हिंसा, न द्वेष। हम सब मिलकर उन्नति करें, स्वय सुखी हो औरो को भी सुखी बनाएँ। मानव सेवा के लिये तत्पर रहे। मानव सेवा की प्रेरणा हमे उन महापुरुषो से मिलती है जो भूखो को खाना खिलाते हुए तथा रोगियो की सेवा करते हुए देखे गए हैं। सेवा, सयम और समर्पण, यह आदर्श मनुष्य के व्यवहार के हैं, इन्हे हमे अपनाना चाहिए। हमे गुरु तेग बहादुर के जीवन से शिक्षा लेनी चाहिए और मानव प्रेम और एकता के लिये प्रयत्नशील रहना चाहिए।

गीता का संदेश

मैं आपका आभारी हूँ कि आपने मुझे गीता जयंती के समापन -समारोह मे समिलित होने का अवसर दिया।

समस्त वेदार्थ सारसग्रहभूतम्।
समस्त पुरुषार्थसिद्धम् ॥

जगद्‌गुरु शंकराचार्य के शब्दो मे श्रीमद्‌भगवद्‌गीता सपूर्ण वैदिक शिक्षाओ के तत्वार्थ का सार सग्रह है और इन शिक्षाओ के ज्ञान से मानवीय महत्वाकाक्षाओ की सिद्धि होती है।

गीता एक शाश्वत महत्व का ग्रथ है। स्पष्ट रूप से गीता मानव मन को उन विभिन्न दशाओ की ओर ले जाती है, परम सत्य की खोज मे जिनसे होकर गुजरना पडता है। यह ब्रह्म विद्या, नीतिशास्त्र, योगशास्त्र और कर्म विपाक की सगमस्थली है जिसमे सर्वत्र कर्म की ही प्रतिष्ठा की गई है, एक मानवीय समस्या को लेकर यह प्रस्तुत होती है। वह समस्या अर्जुन की ओर से उपस्थित हुई थी। अर्जुन युद्ध भूमि मे खडा है। यह युद्ध अच्छाई और बुराई, सत्य और असत्य के वीच सदा से चले आए सघर्ष का प्रतीक है। कर्मवीर अर्जुन इस युद्धस्थली पर पहुँच कर अपने कर्तव्य से विमुख होने की चेष्टा करता है। शातिवादी रुख अपना कर सत्य और न्याय के लिये होनेवाले युद्ध मे भाग लेना नही चाहता। वह एक भ्राति का शिकार हो गया था। वह जो विरोध कर रहा था वह ज्ञान का सूचक नही और नही वह किसी आध्यात्मिक विकास के कारण कहा जा सकता है। उसकी यह प्रतीति केवल उनके लिए हो रही है, जिन्हें वह अपने स्वजन मानता है। वहाँ योगेश्वर भगवान् कृष्ण, अर्जुन के मन पर छाए अधकार को दूर करने के लिये उनके हृदय मे ज्ञान का प्रकाश करते हैं। देखना यह है कि यदि अर्जुन की दृष्टि निरपेक्ष होती तो वह केवल अपने सबधियो की ही कैसे सोच सकता था। उसकी दृष्टि उस समाज की ओर नही गई जो आततायियो के अत्याचारो से नाना प्रकार के कष्ट झेल रहे थे. यहाँ अर्जुन उन व्यक्तिगत कर्मों के समष्टिगत प्रभावो को समझने मे असमर्थ हो रहा था। वह यह भूल रहा था कि सामूहिक कर्मो का लाभ यदि समाप्त होता है तो व्यक्ति या वर्ग के दुष्कृत्यो की हानियाँ भी समाज को ही उठानी पडती है और

जहाँ यह भ्रांति रहे कि समाज मे बुराई है तो उससे उसका क्या वास्ता, वह स्वय तो कोई बुराई नही कर रहा, न्याय के पक्ष की बात नही कही जा सकती। योगशास्त्र मे हिंसा के विभिन्न पहलुओ पर प्रकाश डालते हुए इस प्रकार कहा गया है—'कृतकारितानुमोदित' अर्थात् हिंसा करना यदि बुरा है तो हिंसा का कारण बनना, तथा उसका अनुमोदन करना भी पापमय है। अनुमोदन मे हिंसा का सहन करना या उपेक्षा करना दोनो शामिल है। कोई यदि यह सोचे कि समाज मे बुराई फैल रही है, भ्रष्टाचार बढ रहा है तो हमे क्या लेना देना, यह कर्तव्य की उपेक्षा का भाव है। यही उपेक्षा का भाव अर्जुन पर हावी हुआ था और वह बुराई का अनुमोदन करने के लिये तैयार हो गया था। वह युद्ध उसके लिये एक चुनौती बनकर उपस्थित हुआ था, ऐसी परिस्थिति उत्पन्न हो गई थी, जिससे विमुख होना नीतिसगत नही। गीता तो सर्वत्र अहिंसा और सयम की ही प्रतिष्ठा करती है। अन्याय के विरुद्ध तो मनुष्य को लडना ही पडता है। यह ठीक ही कहा गया है कि गीता का सदेश अर्जुन को युद्ध करने का परामर्श देकर युद्ध की वैधता का समर्थन नही करता अपितु एक आवश्यकता के अनुकूल अपने कर्तव्य पालन का आदेश देता है।

कर्म की प्रतिष्ठा करते हुए गीता मे कहा गया है कि कोई प्राणी एक क्षण भर भी कर्म किए विना नही रह सकता। प्रकृति मे उत्पन्न हुए गुणो के वश मे होकर प्रत्येक प्राणी कर्म करता है। मनुष्य के शरीर का व्यवहार भी कर्म के विना नही चल सकता। इसलिए कर्म के संन्यास अर्थात् त्याग का आदर्श व्यावहारिक नही माना जा सकता। निष्क्रियता अथवा अकर्मण्यता मानव हितो के उतनी ही प्रतिकूल है जितना कि दुष्कृत्य। अतः कर्तव्यपरायणता की भावना व्यक्ति और समाज के विकास और समृद्धि की आधार शक्ति है। परतु हर प्रकार का किया जानेवाला कर्म, कर्म नही कहलाता। इसको स्पष्ट करने के लिये कि कौनसा कर्म उचित है—गीता मे कहा है कि अनासक्त होकर किया गया कर्म ही सत्कर्म है। क्योकि वह स्वार्थ की भावना के विना किया जाता है। वहाँ साधक केवल एक निमित्त मात्र ही रहता है और अपना कर्म लोक-सग्रह की भावना से प्रेरित होकर ही करता है। जहाँ स्वावलवन है, तृप्ति है, कर्म के फल की त्याग भावना है, जहाँ अभिमान नही, वहाँ कर्मरत रहता हुआ भी मनुष्य कुछ नही करता। इसलिये गीता मनुष्य को कर्म का अधिकार देती है, कर्मफल का नही। वह यही बताती

है, मनुष्य निष्काम भाव से लोक सग्रह के लिये कर्म करता हुआ भी पूर्णता प्राप्त कर सकता है।

यहाँ कर्म का जो विचार हुआ, उसका यही अर्थ लिया जाता है कि कर्म के बधन का गुण के त्याग मे नही, बल्कि उसके पीछे जो प्रयोजन है, उससे है। सन्यास का अर्थ मानसिक ढाँचे को बदल देने से है, जिसके फलस्वरूप कर्म को मानवी पृष्ठभूमि पर आधारित किया जा सके। कर्तव्य के प्रति अश्रद्धा स्वय एक अराष्ट्रीय एव अमानवीय प्रवृत्ति है, इसलिये गीता मे मे कहा है कि जो लोग ज्ञानवान् हैं वे स्वय भी निष्काम भाव से कर्म करते रहें, तथा दूसरो को भी सत्कर्मो के लिये प्रेरित करें।

यह सत्य है कि व्यक्ति, समाज, राष्ट्र की उन्नति या अवनति बडी मात्रा मे उसके अपने प्रयत्नो पर निर्भर करती है। परतु एक बात ध्यान देने योग्य है कि श्रम साधन के जिन नियमो का विधान किया गया, उनका निष्ठा से पालन किया जाना भी उतना ही आवश्यक है जितना कि श्रम करना। हम भौतिक या आध्यात्मिक जो भी उन्नति करना चाहे, दोनो स्थितियो मे सयमित साधन ही अपेक्षित है। यह मेरा है, यह तेरा है, यह भावना ही सब प्रकार के विवादो का मूल बीज है। इसके स्थान पर गीता मानव को एक व्यापक दृष्टि प्रदान करती है। जहाँ मैं और मेरा के स्थान पर यह सब ईश्वर का है, यह सब प्राणि जगत् उसी मे समाया हुआ है और वह ही अनेकानेक रूपो मे सब मे विद्यमान है। इस सत्य के माध्यम से आत्मवत्भाव की प्रेरणा दी गई है। हम यह जानते हैं कि इतने समय से यह उपदेश मानव सुनता आ रहा है। परतु अभी तक निष्काम कर्म के लिये वह तैयार नही हो सका। इसके विपरीत वह और भी अधिक अधिकार आक्षित हो गया है। वस्तुत गीता अधिकारो के मोह मे न पडने का ही सदेश देती है। जब तक मनुष्य सामूहिक हितो के लिये अपने हितो का त्याग नही करेगा, समाज उन्नत नही हो सकता है।

यह सभी जानते हैं कि मानव जीवन अनेक समस्याओ और चुनौतियो मे घिरा रहता है। लेकिन यदि वह हतोत्साहित होकर, इनका सामना करने के बजाय पराजय अनुभव करके बैठ जाय, तो जीवन की यह नाव पार नही हो सकती। ऐसी हालत मे तो उसकी कठिनाइयाँ और अधिक होती हैं। ऐसे समय मे गीता मनुष्य का सारथी बनकर उसका मार्ग दर्शन करती है। उसमे स्फूर्ति और आत्मविश्वास जागृत कर, कठिनाइयो मे जूझने की शक्ति पैदा करती है। कठिनाइयो के दूर करने की चेष्टा को छोडा नहीं जा

सकता । कर्म करना मनुष्य का धर्म है, जहाँ इसकी सच्ची साधना होगी, वहाँ दु ख, दरिद्रता और अनेक कष्टो से मुक्त होना असभव नही हो सकता ।

आज हमारे लिये जरूरी है कि हम गीता के उपदेशो को अच्छी तरह समझे और उन्हें अपने आचरण मे उतारें । यदि हम इसमे गहरे पैठने का यत्न करेंग तो हर निराशा मे भी हमे उगती हुई एक आशा की किरण ही दिखाई पडेगी और हमे वह असीम शाति प्राप्त होगी जिसकी हमे सदैव आवश्यकता रहती है । इसलिये मैं समझता हूँ कि यदि श्रीमद्भगवद्गीता के सदेश को युग आवश्यकताओ को अनुकूल हम जन जन तक पहुँचा सकें, तो आज समाज को जो नया रूप दिया जा रहा है, उसमे बडी सहायता मिलेगी, क्योकि गीता सासारिक समस्याओ के समाधान के लिये भी उतनी ही सचेष्ट है जितनी नि श्रेयस की प्राप्ति के लिये । हमे चाहिए कि हम इन शिक्षाओ से लाभ उठाएँ और तदनुसार अपनी जीवन पद्धति को बदलें ।

मैं आप सबको पुन धन्यवाद देता हूँ कि आपने मुझे यहाँ उपस्थित होने का अवसर दिया ।

भगवान महावीर

अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन विद्वत्परिषद् के तत्वावधान मे आयोजित आज के इस समारोह मे उपस्थित होने का जो अवसर मुझे प्राप्त हुआ, उसके लिए मैं आप सबका हृदय से आभारी हूँ।

एक महान् तत्ववेत्ता एवं अलौकिक पुरुष थे भगवान् महावीर। अपने वर्षों के तप, साधना, चिंतन और आत्म अनुभूति द्वारा जो ज्ञान उन्होने अर्जित किया, उसकी विपुल संपदा मानव कल्याण के लिये दे गए। यह संसार दुखो और पीडाओ मे भरा पडा है। इससे कैसे मुक्त हो सकते हैं, यही वह जिज्ञासा भरा प्रश्न है, जो एक राजकुमार को महलो से निर्जन जगलो मे ले गया था। ज्ञान की ज्योति जब प्रज्वलित हुई, तो उन्होने भी यही पाया कि कर्म ही भोक्ता है। सुख और दुख के लिये हमारा यह कर्म ही कारण है। इस कर्म को नियमबद्ध और मर्यादा मे यदि बांधा जाय और अनुशासित जीवन व्यतीत किया जाए, तो मनुष्य अपनी बहुत सी कठिनाइयाँ कम कर सकता है। इसीलिये उन्होंने मनुष्य को राग, द्वेष और मोह को छोडने और सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, तप, त्याग और सहिष्णुता जैसे गुणो को धारण करने का उपदेश दिया था। ताकि मनुष्य का जीवन अधिक सुखी और सार्थक बने। मनुष्य एक अच्छा और श्रेष्ठ समाज का निर्माण कर सके, जहाँ न भेद भाव हो, न ऊँच नीच हो, न हिंसा हो, न जहाँ सग्रह की प्रवृत्ति हो, न स्वार्थ हो, और न किसी की उपेक्षा हो। जहाँ मनुष्य मात्र के लिये प्रेम और वात्सल्य की भावना हो और यदि कोई इच्छा हो तो वह केवल परमार्थ और सेवा की इच्छा हो।

सारे देश मे भगवान् महावीर का २५वाँ निर्वाण शताब्दी उत्सव बडे उत्साह के साथ मनाया जा रहा है। इसी उपलक्ष मे बहुत सा जैन साहित्य जन-सुलभ बनाने का प्रशसनीय कार्य हो रहा है। यह तो सभी जानते हैं कि तीर्थंकर महावीर स्वामी के पश्चात् कितने ही जैन मुनि और आचार्य हुए, जिनकी मनन् साधना से जैन साहित्य समृद्ध होता रहा। शास्त्रो मे आचार्य को देव-तुल्य बताया गया है। क्योकि उनके माध्यम से ज्ञान हम तक पहुँचता है। ज्ञान से ही मनुष्य के संशय नष्ट होते हैं। इसे उचित और अनुचित का बोध होता है। इसलिये यह आचार्य हमारे लिए पूज्य हुए। उनके जीवन आदर्शों से साधारण मनुष्य को प्रेरणा मिलती है और वह उनके जीवन मे महानता,

पवित्रता, शालीनता तथा उदारता के गुणो को ग्रहण करने लगता है। स्वर्गीय डा० नेमिचंद शास्त्री के परिश्रम, डा० कोठिया के सत्प्रयास तथा मुनि श्री विद्यानद जी के सान्निध्य से "तीर्थंकर महावीर और उनकी आचार्य परपरा" नामक बृहद् ग्रथ का जो प्रकाशन तथा सपादन सपन्न हुआ, उसके लिये मैं विद्वत्परिषद् को बधाई देता हूँ। जिस आनुसधानिक प्रतिभा एव भावपूर्ण साहित्य शैली मे यह ग्रथ लिखा गया है उससे इतिहास और हिंदी साहित्य दोनो की सेवा हुई है।

श्री गणेशप्रसाद वर्णी की जन्म शताब्दी के उपलक्ष मे स्मृति ग्रथ प्रकाशित करके जैन समाज ने वर्णी जी की सेवाओ के लिये अपना दायित्व निभाया है। उनके जीवन तथा कार्यो से एक बडी सीख मिलती है, सभी को उससे लाभ उठाना चाहिए।

भगवान महावीर ने अहिंसा और अपरिग्रह की जो शिक्षा दी, आज के विश्व को उसकी सबसे ज्यादा जरूरत है। अपरिग्रह की भावना के विकास पर आर्थिक और सामाजिक न्याय प्राप्त होगा। अहिंसा के द्वारा ही मनुष्य का कल्याण होगा। विश्वशाति स्थापित होकर पूरी मानवता बधुत्व के सूत्र मे एक हो सकती है। परतु सिद्धातो पर अमल किए बिना, इन मानवीय मूल्यो को अपने व्यवहार मे लाए बिना, कितना लाभ हो सकता है, शायद यह बताना मुश्किल न हो। उचित तो यही है कि हम महावीर स्वामी के उपदेशो को पूरी निष्ठा से अपने व्यवहार मे लाएँ और एक सुखी ससार की उस प्राचीनतम कल्पना को साकार बनाने के लिये प्रयत्नशील रहें।

अखिल भारतवर्षीय दिगबर जैन विद्वत्परिषद् को मैं इन ग्रथो के प्रकाशन के लिये पुन. बधाई देता हूँ। मुझे इन ग्रथो का विमोचन करने मे बडी प्रसन्नता हुई है।

धर्म का सही रूप

पाँचवें विश्व धर्म समेलन के उद्घाटन का निमंत्रण पाना मैं अपने लिये सौभाग्य की वात समझता हूँ और इस निमंत्रण को स्वीकार करने मे मुझे वडी प्रसन्नता है। धर्म के वास्तविक तत्व को समझनेवाले और इसके प्रभाव एव शक्ति को मानव मात्र के कल्याण एव भलाई के लिये सदुपयोग करनेवाले महान् व्यक्तियो मे मिलने और उनके विचारो को सुनने का जो अवसर मुझे प्राप्त हुआ, उसे मैं वडा मूल्यवान समझता हूँ। सभी धर्मों की एकता के सिद्धात के प्रचार एव प्रसार के ध्येय से विश्व के मुख्य धर्मों के प्रतिनिधियो को एक दूसरे को करीव लाकर, मुनि सुशील कुमार महाराज इस दिशा मे सचमुच महत्वपूर्ण सेवा कर रहे हैं। मुनि जी की यह आस्था ठीक ही है कि धर्म ही उन वुराइयो को, जिनसे आज का विश्व पीडित है, दूर करने मे समर्थ है। प्रेम और भ्रातृत्व, सहिष्णुता और करुणा, त्याग और सेवा, कुछ ऐसे आदर्श है जो सभी वडे धर्मों मे समान रूप से विद्यमान हैं और यदि बडे पैमाने पर प्रयोग मे लाए जायें तो मानव जाति के लिये यह ससार और अधिक सुखी वनाया जा सकता है।

आज विज्ञान और तकनीकी ज्ञान इतनी तेजी से आगे वढ रहा है कि धर्म के शाश्वत मूल्यो को कुछ खतरा पैदा होने का डर है। वह अणु से लेकर ब्रह्माड तक के भेद खोज रहा है और उसकी दृष्टि वहुत दूर वाहर और उससे भी आगे विश्व के विशाल अतरिक्ष और ग्रहो की ओर लगी हुई है। मनुष्य की वुद्धि इस अद्भुत विचित्र ससार की जानकारी से वहुत वडी है। परतु ाय स्वीकार किया जा रहा है कि इन उपलब्धियो से मनुष्य को थोडी मात्रा मे भी सच्चा सुख प्राप्त नही हुआ। अव यह अनुभव किया जाता है कि वहुत समय से हम वाहर की ओर ही देखते रहे हैं और अव समय आ गया है कि हम अपनी दृष्टि अपने अदर की ओर मोडें और आत्मा की वास्तविकता को समझें। यह ज्ञान हमे धर्म से ही मिल सकता है। डा० राधाकृष्णन् के शब्दो मे धर्म मुख्यतया व्यक्तित्व का ही परिवर्तन है—'एक ऐसा परिवर्तन जो एक वौद्धिक व्यक्तित्व को आध्यात्मिकता प्रदान करें'। तनाव तया आशका के इस युग मे हमारी आशा इस वात पर निर्भर करती है कि हम अपनी कमियो को समझते हैं और उन्हें दूर करने की हम मे उत्कठा है। धर्म की पवित्र,

कल्याणकारी तथा एकत्व की भावना से आज के इस संसार को, तकनीकी की निरकुश प्रगति के खतरो तथा राजनैतिक, जातीय तथा अन्य मतभेदो से उत्पन्न फूट और घृणा के कारण दु'खो से बचाना होगा।

धर्म क्या है? वह कोई सिद्धात या पथ नही है बल्कि वह एक जीवन-पद्धति है। वह एक ऐसी जीवन कला है जो सिद्धातो और रीतियो को प्रतीक मात्र समझती है। वह धार्मिक नेताओ से यह अनुरोध करता है कि वह इस बात का प्रयास करें कि धर्मो को सामाजिक और धार्मिक कट्टरता के साँचो मे ढलने से बचाया जा सके। एक सर्वोच्च शक्ति मे विश्वास तथा मानव की व्यक्तिगत स्वतत्रता, विभिन्न धर्मों के बुनियादी आधार है। आध्यात्मिकता धर्म के इन मौलिक सत्यो की पुन पुष्टि करती है। इसे हम सनातन अथवा शाश्वत धर्म कह सकते हैं, किसी विशेष धर्म के साथ इसको सबद्ध नही कर सकते। क्योंकि यह धर्म जाति और मत मतातरो को लाँघते हुए भी सभी जातियो और मतो को प्रेरित करता है। हम अपने धर्म का स्वरूप कुछ ऐसा बना लें जो आध्यात्मिक धर्म से मिलता जुलता हो, सच्चा धर्म आध्यात्मिक धर्म है जो आध्यात्मिकता पर बल दे। बुद्धि, सौदर्य अनुभव तथा नैतिक और व्यावहारिक व्यक्तित्व से परे रहकर मानव को आध्यात्मिक ज्योति से रास्ता दिखाए। आध्यात्मिकता ही एक ऐसी आवश्यक वस्तु है, जिसके समक्ष अन्य वस्तुओ को कम महत्व देना है।

विभिन्न धर्मो के अध्ययन से प्रतीत होता है कि सभी तात्विक गहराई, आध्यात्मिक सघनता, वैचारिक शक्ति तथा मानवीय सहानुभूति विद्यमान है। महानता, पवित्रता, शालीनता तथा उदारता के मूल्य ससार के किसी एक ही धर्म के विशेप गुण नही हैं। प्रत्येक धर्म मे आज कुछ ही लोग ऐसे है, जो अपने धर्म की सीमाओ से भी आगे देखने मे समर्थ है। जिनका विश्वास है कि विभिन्न धर्मों के माननेवालो मे धार्मिक मैत्री सभव है, जब हम यह जान लें कि हम सब सत्य को खोज रहे हैं, हम सभी वही नैतिक तथा आध्यात्मिक आदर्श स्थापित करना चाहते है, हमारे भविष्य की आशाएँ ऐसे महान् द्रष्टाओ पर ही आधारित हैं।

कुछ लोगो मे दूसरे धर्मो के प्रति जो उपेक्षा का भाव है, वह अज्ञान और नासमझी के कारण है। यदि हम दूसरे धर्मों का आदरपूर्वक अध्ययन करें, तो हमे अनुभव होगा कि सहानुभूति का दृष्टिकोण उनमे भी समान रूप से है। एक मध्ययुगीन रहस्यवादी ने लिखा था "तरह तरह के दीपक हो, तरह तरह का उनमे तेल हो, अलग अलग उनमे वत्तियाँ हो, परतु उनकी

ज्योति और प्रकाश एक समान ही है" । आगे चलकर आर० जी० कोलिंगवुड इसी एकता की व्याख्या करते हुए कहते हैं कि "विचार यन्त्रो की इस झनझनाहट और चरचराहट से ऊपर आध्यात्मिकता के जो मधुर और समवेत स्वर हैं, वे ही हमारे तत्ववेत्ता हैं । यह मधुर स्वर कोई अतिम स्वर नही है, परतु एक सजीव विचार है, जिसका सार कभी पहली ही बार प्रकट नही किया गया और जिसे हर सच्चे विचारक ने उत्तरोत्तर निश्चित और स्पष्ट किया है" ।

यदि ईश्वर सभी प्राणियो का हो, तो भी वह लोग जो दूसरे वर्गों के हैं, दूसरी बोली बोलते हैं, उसी मूल प्रश्न को सुलझाने का यत्न कर रहे हैं । सभी धर्मों को एक दूसरे को प्रभावित करके मानवीय मैत्री के उत्कृष्ट दृष्टिकोण को प्राप्त करने के लिये दूसरे का सहायक होना चाहिए । डा० अलबर्ट शिवजर कहते हैं "पाश्चात्य और भारतीय दार्शनिको को एक दूसरे की बात का खडन करके अपनी ही बात को सत्य सिद्ध करने की भावना से ही सतोष नही होना चाहिए । इन दोनो के सोचने का ढग ऐसा होना चाहिए, अततः जिसमे पूरी मानव जाति भागीदार हो सके" । आध्यात्मिक जीवन की खोज मे वह एक दूसरे के मित्र एव सहयोगी है । शाति, न्याय तथा स्वतत्रता को स्थापित करने की दिशा मे सभी धर्म एक पवित्र सूत्र मे बँधे हुए हैं । ज्यो ज्यो सद्भाव बढता जाएगा, हमारा जो अपने भाइयो से प्यार है, वह आगे बढ़कर हमारे पड़ोसियो और क्रमश सारी मानव जाति को अपने मे समेट लेगा ।

सभी धर्म मनुष्य को एक ही लक्ष्य की ओर प्रेरित करते है । यदि उनमे एक दूसरे से भेद दिखाई देता है, वह केवल इसलिये कि इनका प्रचार इतिहास के भिन्न भिन्न युगो और परिस्थितियो मे किया गया था । परतु ससार के सभी मुख्य धर्मों मे एक मौलिक एकता दिखाई देती है । इन विभिन्न धर्मों में आध्यात्मिक आकाक्षा तथा प्रयत्न मे एकत्व प्रकट होता है । ज्यो ज्यो हम आध्यात्मिक विकास की सीढियाँ पार करते जाते हैं, आध्यात्मिक सत्यों की विभिन्नताएँ दूर होने लगती हैं । ऊपर जानेवाले सभी मार्ग पर्वत की चोटी की ओर जाते हैं । चोटी पर पहुँचनेवालो मे एकमत होने तथा अद्भुत सहमति, धार्मिक वास्तविकता का सबसे प्रबल प्रमाण है । इस विश्व मे व्यवस्था और शाति स्थापित करने के लिये धर्मों की इस मौलिक एकता पर बल देना आवश्यक है जिसे प्राप्त करने मे अकेले राजनैतिक तथा आर्थिक

योजनाएँ विफल रही हैं। विश्व की आध्यात्मिकता एकता की अवहेलना करना और धार्मिक विभिन्नता को रेखाकित करना, दार्शनिक विचार से न तो न्यायसगत होगा और न ही नैतिक समर्थन के योग्य और सामाजिक दृष्टि से भी असगत होगा। जहाँ आध्यात्मिक भावना है वही एकता है।

यद्यपि ससार के सभी विचारक सभी धर्मो मे विद्यमान समान एकता को स्वीकार करते है, तथापि धार्मिक ससार मे दृढ निरतर द्वेष और असहिष्णुता के कारण अभी भी कुछ मात्रा मे अव्यवस्था एव भेद है। इसके निवारण के लिये हमे विलियम ला के इन विचारो को अपनाना होगा "एक सार्वभौमिक भावना, ईश्वर प्रेम और सभी के कल्याण के लिये सतों, महात्माओ के मिलन, जिसे विशेष कर धार्मिक सस्थाओ से सीखा नही जा सकता, वल्कि सासारिक विचारधाराओ को मिटा देने से, ईश्वर के सच्चे प्रेम से, प्राप्त कर सकते हैं। ईश्वरीय अनुग्रह मन को सभी प्रकार के स्वार्थों से मुक्त करता है। सत्य और अच्छाई को चाहने लगता है और हर व्यक्ति, चाहे वह ईसाई हो, यहूदी या काफिर हो, को अपना स्नेह बराबर मे बाँटने के लिये उद्यत रहता है।

श्री अरविंद के अनुसार हर धर्म ने मानव जाति की सहायता की है। मूर्ति पूजा ने मनुष्य मे सौंदर्य की भावना, जीवन मे बडप्पन और गौरव पैदा करके, सभी दिशाओ से पूर्णता मे वृद्धि की है। ईसाई धर्म ने मानव को ईश्वरीय प्रेम और परोपकार की भावना प्रदान की है। वुद्ध मत ने अधिक विवेकी, अधिक पवित्र और अधिक नम्र बनने का मार्ग दिखाया है। जुडामत तथा इस्लाम ने बताया है कि व्यवहार मे कैसे धार्मिक निष्ठा एव श्रद्धापूर्ण ईश्वर भक्ति प्राप्त की जा सकती है। हिंदू धर्म ने व्यापक और महत्वपूर्ण आध्यात्मिक सभावनाएँ प्रस्तुत की हैं। यदि सभी धार्मिक दृष्टिकोण आपस मे मिल जायँ और एक दूसरे मे समा जायँ तो एक महान् कार्य सपन्न हो सकेगा। परतु बौद्धिक सिद्धात तथा मत अहकार इसके रास्ते मे रुकावटें हैं।

डा० राधाकृष्णन् ने कहा है कि हर सच्चे धर्म में एक क्रातिकारी चुनौती का अश मौजूद है। मार्क्सवाद मे भी धार्मिक विशेषताएँ हैं। यद्यपि यह पूर्णतया धर्म निरपेक्ष एव मानववादी विचारधारा है। मनुष्य और प्रकृति की नितात सच्ची और स्पष्ट दार्शनिकता की शिक्षा इससे मिलती है। सामान्य जन कल्याण स्वयमेव प्राप्त होगा, यदि हम एक

विशेष प्रकार की राजनैतिक एव आर्थिक क्रांति करें । इससे एक निश्चय की पुष्टि होती है एव रूढिवादिता थोप दी जाती है। यह केवल विश्व की विवेकपूर्ण व्याख्या ही नही है, वल्कि न्याय के अनुरोध के कारण इसमे धर्म का सपूर्ण गुण मौजूद है । धार्मिक विश्वास के समान यह भी एक प्रवल धारणा से प्रभावित है । इस वात पर वल दिजा जाता है कि इस आदर्श को पाने के लिये कोई भी वलिदान वडा नही है ।

भारतीय परंपरा मे धार्मिक सहिष्णुता तथा परस्पर आदर है । महान् वौद्ध सम्राट् अशोक ने अपनी १२वी घोषणा मे कहा था—'महाराज सभी सप्रदाय के लोगो का आदर करते है, चाहे वह गृहस्थ हो या संन्यासी । महाराज उपहारो अथवा वाहरी मान प्रतिष्ठा की चिंता नही करते, जितनी कि सभी संप्रदायो मे आध्यात्मिक विकास की, जो अपने संप्रदाय का गौरव वढाने की उत्सुकता से अपने ही सप्रदाय से लगाव के कारण दूसरो की उपेक्षा करके अपने ही संप्रदाय का आदर करता है, वास्तव मे, इस प्रकार के व्यवहार से अपने ही सप्रदाय को सवसे अधिक हानि पहुँचाता है । इसलिये मैत्री, वुद्ध की वात को ध्यान से सुनना, दूसरो की धार्मिक आस्था की वातो को सुनना, प्रशसनीय है । इस प्रकार हम सारे विश्व मे सार्वजनिक अथवा सामूहिक जीवन का विकास कर सकते है । तभी धर्म उन मानववादियो, अपनी जाति मे ही निष्ठा रखनेवालो ऐसे लोगो को जो विना अपने वौद्धिक एव नैतिक अत करण के त्याग के किसी धर्म के स्वीकार करने मे असमर्थ हैं ।

विचारो की स्वतन्त्रता पर सत्य की हित रक्षा निर्भर करती है । दूसरो के विचारो की कद्र करने से हम सत्य को और अच्छी तरह से पहचान सकते हैं । दूसरो के विचारो मे यदि कोई कमी भी जान पडे, सचाई के लिये उचित है कि भूल सुधारने की चेष्टा करें । इस भूल को हिंसा द्वारा दवा देना सत्य के लिये कही अधिक घातक है । यदि हम विचारो की स्वतन्त्रता को कुचल दें, किसी के विचारो की धर्मपरायण अभिव्यक्ति के लिये जांच या मूल्याकन की विधि व्यवहार मे लाएँ, निरकुश राज्य-वल का प्रयोग करें, अनुचित आर्थिक अथवा सामाजिक दवाव डालें, तो इस प्रकार हम धार्मिक सत्यता तथा लोकतान्त्रिक आदर्शों से विचलित हो जाते हैं । "अपने साथ मिलने के लिये उन्हें विवश करो" के सिद्धात का धर्म अथवा राजनीति मे कोई माने नही है । धर्म एक मनोवृत्ति है

जिससे जीवन को एक अर्थ और एकता का बल मिलता है। धर्म कोई सिद्धातो का समूह नही जिसे सब लोग मानें। यह सिद्धात और धार्मिक विधियाँ, यहाँ तक कि स्वय धर्म भी कोई अंतिम लक्ष्य नहीं है। यह तो मानव जाति के लिये भगवान् के प्रयोजन को आगे वढाने मे केवल साधन मात्र है।

धर्म को किसी वर्ग या सस्कृति, जाति, राष्ट्र का दास नही वनना चाहिए। हजारो वर्षो की अर्जित परपरा जिसने जितनी ही पीढियो को आध्यात्मिक बल प्रदान किया है और बडे बडे सत, महात्मा प्रदान किए हैं, लोगो को उसे छोडने के लिये कहना उचित नही है। विचारो मे अपनी जीवन शक्ति है, जिस प्रकार एक पौधे का अपना जीवन होता है जव तक उसकी जडें धरती मे रहे।

आज धर्म पहले से कही अधिक एक दूसरे से सीख सकते है। परतु एक दूसरे के समीप आने से सशोधित होने पर भी मानव के लिये आध्यात्मिक एकता को कार्य आधार प्रस्तुत नही कर सकते, यदि हम आधारभूत आध्यात्मिक तथ्यो तथा नैतिकता की जो वह शिक्षा देते हैं उसपर दृष्टि डालें तो मालूम होगा कि सभी धर्म एकही विदु की ओर लक्षित हैं। सभी धर्मों से हम प्रेरणा ग्रहण कर सकते हैं। हम कोई नया धर्म नही चाहते। परतु वर्तमान धर्मों मे आध्यात्मिक को एक नए विस्तृत रूप मे समझने की आवश्यकता है।

विश्व-धर्म-सगम के उद्देश्यो से सभी परिचित हैं। यह जानकर वडा सतोप हुआ है कि यह समेलन एक सर्व धर्म आदोलन चलाने के लिये कुछ ऐसे ठोस कदम उठाएगा, जिससे हर प्रकार की एव हर स्तर पर हिंसा के विरुद्ध एक अभियान चलाया जाएगा। भगवान् महावीर की २५वी निर्वाण शताव्दी के वर्ष इस आदोलन का आरभ होना एक विशेष महत्व रखता है। मुनि जी ने विश्व के विभिन्न धार्मिक नेताओ से पहले ही सपर्क स्थापित किया है और नि सदेह यह उस प्रतिभा का परिचय है जो उन्हें ईश्वरीय प्रेरणा से प्राप्त हुई है। हिंसा से सघर्ष करने के लिये उन्होने जो पाँच सूत्री कार्यक्रम तैयार किया है वह वडा सुनियोजित है। जिस किसी के हृदय मे विश्व शाति की इच्छा है, वह अवश्यमेव मुनि जी के कार्यक्रम की सफलता की कामना करेगा।

अव मुझे पाँचवे विश्व धर्म समेलन का उद्घाटन करने मे वडी प्रसन्नता है। समेलन की सफलता के लिये मेरी शुभ कामनाएँ।

एक समाज सुधारक संगठन

मैं आप सभी का हृदय से आभारी हूँ कि आपने मुझे आमन्त्रित करके अंतर्राष्ट्रीय आर्य समाज शताब्दी समारोह मे समिलित होने का अवसर प्रदान किया।

१९वी शताब्दी मे जब मानव एव मानवता दुःख तथा घृणा के बोझ से कराह रही थी, सपूर्ण विश्व अहकार, द्रोह, असत्यता, व्यभिचार एवं शोषण की प्रचड अग्नि मे जल रहा था, मानवता इसके निवारण के लिये पथ की तलाश मे थी। ऐसी परिस्थिति मे जिस महान् पुरुष ने जन्म लेकर मानवता को आश्रय प्रदान किया वह और कोई नही था—वह युग पुरुष महर्षि दयानद सरस्वती जी थे, जिन्होंने आर्य समाज की स्थापना करके सपूर्ण विश्व को जन्म-जन्मातर अपना ऋणी बना दिया।

आर्य समाज की स्थापना के विषय मे अनेक विचार हैं। कुछ लोगो का मत है कि आर्य समाज एक समाज सुधारक सगठन है, कुछ का मत है कि यह भारतीय सस्कृति को बचाने के लिये पैदा हुआ और कुछ का मत है कि यह वह सस्था है जो कि देश के सास्कृतिक क्रिया कलापो को सँवारने के लिये बनी है। परतु यदि हम इनकी गहराई मे जायें तो पता चलता है कि स्वामी जी के विचार इससे भी महान् थे। उनकी यह इच्छा थी कि सपूर्ण मानव जाति जो इस विश्व मे विराजमान है, चाहे वह जिस देश की हो, जाति की हो या किसी भी रग की हो दुखी न रहे और वह इस जीवन के रहस्य एव उद्देश्य को समझे, जिससे स्थायी शाति प्राप्त हो सके।

जिस समय आर्य समाज का प्रादुर्भाव हुआ, उस समय हम स्वतत्र नही थे, बल्कि सदियो पुरानी परतत्रता को लिए हुए चले आ रहे थे। स्थापना के कुछ समय पहले देश मे स्वतत्र होने के लिये क्राति हो चुकी थी परतु अग्रेजो ने बड़ी सावधानी से क्राति को दबा दिया था जिसकी वजह से हमारा समाज काफी दब गया था और अब उसमे उठने की सामर्थ्य नही रह गई थी। ऐसी विषम परिस्थिति मे ७ अप्रैल, १८७५ मे बबई नगर मे आर्य समाज की स्थापना हुई जिसकी वजह से सपूर्ण समाज मे एक नई रोशनी पैदा हुई, एक जागरण आया, जिसने समाज को मजबूत किया कि हम अब नए सिरे से सोचें और

बुराइयो को उठाकर दूर फेंक दे। इसने समाज के लिये अमृत का काम किया और मानव को मानव से प्रेम करना सिखाया।

आर्य समाज की स्थापना के लगभग दस साल बाद कांग्रेस का भी जन्म हुआ। सत्यार्थ प्रकाश मे स्वामी जी ने स्वतन्त्रता के विषय मे लिखा है कि "अपना बुरा शासन भी अच्छा है, पराया अच्छा शासन भी बुरा है।" वे स्वतन्त्रता के मूल्यो को भली भाँति समझते थे, उनका उद्देश्य था कि जनता सभी तरह से सुखी रहे और इसी उद्देश्य से प्रेरित होकर समाज मे प्रचलित अनेक बुराईयो को दूर करने मे आर्य समाज ने भरसक प्रयत्न किया। उस समय समाज मे जात पाँत, छुआछूत, घृणा, बाल विवाह, वृद्ध विवाह एव नारियो को अशिक्षित रखना इत्यादि बुराइयाँ अपनी चरम सीमा को पार कर गई थी।

जात पाँत एवं छुआछूत ने समाज को झकझोर दिया था। हरिजनो की दशा बडी दयनीय थी, लोग उनको घृणा की दृष्टि से देखते थे। यह सवर्णों के साथ किसी प्रकार का व्यवहार नही कर सकते थे, जिससे दु खी होकर हरिजन धर्म परिवर्तन करने लग गए। हिंदू समाज का एक बडा भाग इससे अलग होने लगा। आर्य समाज ने खुलकर जात पाँत का विरोध किया तथा इसके विरुद्ध अपना प्रचार जोरदार कर दिया। काफी सीमा तक आर्य समाज इसमे सफल रहा परतु जो भावना बहुत समय से चली आ रही हो, उसका एकदम समाप्त होना असभव है। जबकि प्रत्येक व्यक्ति ने अपने नाम के आगे अपनी उपजाति लिखना एक फैशन समझ लिया है। परतु यह देखने मे आया है कि आर्य समाज द्वारा सचालित शिक्षण सस्थाओ मे और छात्रावासो मे जात पाँत का भेद भाव प्राय. एकदम समाप्त हो गया है। आर्य समाज बताता है कि इसका मूल कारण है आर्थिक विषमता तथा ज्ञान की कमी। जिस व्यक्ति मे ज्ञान का अभाव होगा, वही व्यक्ति मनुष्य मनुष्य मे भेद एव घृणा करेगा। जब ऐसी भावनाएँ मनुष्य के हृदय मे अपना स्थान लेती हैं तो वह व्यक्ति दूसरो को खुशी देखकर आनदित नही होता, बल्कि दूसरो को दुःखी देखकर प्रफुल्लित होता है।

आर्य समाज ने विधवा विवाह एव अतरजातीय विवाहो को भी प्रोतसाहन दिया। राजा राममोहन राय भी ठीक उसी समय विधवा विवाह के पक्ष मे आदोलन कर रहे थे। नारी की शिक्षा के लिये भी आर्य समाज प्रयत्नशील था और इसके प्रयत्नो मे समय ने भी साथ दिया। भारतेंदु हरिश्चद्र भी नारी शिक्षा के लिये प्रचार कर रहे थे इन कारणो से इन बुराइयो को दूर करने मे काफी सहायता मिली। इस प्रकार से आर्य समाज को लोगो ने बडी जल्दी अपनाया।

स्वामी जी के आर्य समाज एव उसके सिद्धातो का मूल आधार बुद्धिवादी था जो कि तर्क एव व्यवहार की कसौटी पर कस कर देख लिया था।

आर्य समाज ने केवल समाज के सुधार मे ही नही कार्य किया बल्कि स्वतत्रता सग्राम मे भी अपना सक्रिय सहयोग दिया। काग्रेस के हर दल मे आर्य समाजी स्वतत्रता प्राप्ति के लिये दिलोजान से लगे हुए थे जिसकी वजह से अग्रेज सरकार ने आर्यसमाज के हर काय पर अपनी सख्त निगाह रखना प्रारभ कर दिया था, सत्सगो मे गुप्तचर भेजने शुरु कर दिए थे तथा उसपर अपना अकुश लगाने का प्रयत्न करती रही। आर्य समाज ने भारत एव भारत के वाहर के देशो मे अनेक परोपकार के कार्य किए हैं। आज लगभग उन्नीस देशो मे आर्य समाज की शाखाएँ काम कर रही है वे देश, मारिशस, फीजी, सुरीनाम, ट्रिनिडाड और ब्रिटिश गायना इत्यादि हैं।

लाला लाजपतराय ने कहा है—"स्वामी दयानद मेरे गुरु हैं, आर्य समाज मेरी माता है। इन दोनो ने मुझे स्वतत्रतापूर्वक विचार करना सिखाया है। आर्य समाज ने मुझे कुर्बानी का मार्ग दिखाया है"। आर्य समाज सपूर्ण विश्व को एक कुटुव के समान समझता है तथा विश्ववधुत्व का समर्थक है।

आज सपूर्ण विश्व कई भागो मे वँटा हुआ है। प्रत्येक भाग अपने आप को मजबूत करने मे लगा हुआ है, प्रत्येक व्यक्ति यह सोचता है कि हम अच्छे हैं और दूसरे सारे खराव है। ऐसी परिस्थिति मे आर्य समाज ही ऐसा सगठन है जो इन भेदो मे न पड कर कि, 'यह मेरा है, यह मेरा नही हैं' सभी को अच्छा कार्य करने की प्रेरणा प्रदान करता है। इस अवसर पर मैं पूर्ण विश्वास के साथ कहता हूँ कि सौ वर्षो मे जितना काम आर्य समाज ने किया है वह वास्तव मे सराहनीय है।

आज जव हम आर्य समाज की स्थापना की शताव्दी मना रहे हैं, यह उचित होगा, यदि हम उस काम का सिहावलोकन करें जो इन सौ वर्षो मे हुआ है, विचार करे जिस ध्येय से प्रेरित होकर यह काम आरभ हुआ, कहाँ तक हम उसमें सफल हुए। केवल अनुयायियो की सख्या वृद्धि से ही किसी सस्था की प्रगति का मूल्याकन नही किया जा सकता और केवल यही इसका मानदड भी नही होना चाहिए। कम से कम आर्य समाज जैसी सस्थाओ की तुलना तो इस युग मे की जानी ही चाहिए। मैं जानता हूँ कि आर्य समाज का काम इतना महान व विशाल है कि उसे एक सस्था के रूप मे मर्यादित रखना उसका अवमूल्यन करना है। वल्कि हमे यह देखना है कि स्वामी जी के

दिखाए हुए रास्ते पर चलनेवाले अपने सपूर्ण जीवन व व्यवहार मे सिद्धातो का पालन करनेवाले लोग कितने हैं, उनकी सख्या मे वृद्धि हुई या नही।

जहाँ तक मैं आर्य समाज के उद्देश्यो को समझ पाया हूँ, मैं समझता हूँ कि स्वामी जी चाहते थे कि मनुष्य मनुष्य बने, कायरता को छोडे, अपने अदर स्वाभिमान पैदा करे, सामाजिक विषमता के विरुद्ध आवाज उठाए और अपने जीवन मे सबके प्रति समभाव का आचरण रखे, ढोगबाजी, वाह्य दिखावा को त्याग कर, ससार का, मानव का, सत्य स्वरूप समझे, इसके अनुसार व्यवहार करे। तो हमे यह देखना है कि सद्य परिस्थिति मे इन उद्देश्यो के अनुरूप हम क्या कर सकते हैं व हमे क्या करना होगा।

आर्य का अर्थ है ईश्वर पुत्र अर्थात् श्रेष्ठ, सदाचारी, धर्मात्मा, सत्यवादी सुसस्कारी तथा प्रगतिशील मनुष्य। यह कोई सकुचित कल्पना नही है। आर्य यानी ईश्वर का पितृत्व माननेवाला। समस्त मानव जाति का आपस मे भ्रातृत्व तथा एक मानव परिवार का रूप इसमे गृहीत है। वेदो मे आर्य शब्द गुण वाचक है। यह शब्द देश, काल और सीमा की परिधि से वाहर है। जिस व्यक्ति के आचरण मे आर्यत्व एव श्रेष्ठता होगी वह विश्व के किसी भाग मे जन्मा हो, उसका कोई भी मजहव या भाषा हो, वह कही भी निवास करता हो, वह आर्य है।

"कृण्वन्तो विश्वम् आर्यम्"—इसका अर्थ यही है कि सारे जगत् को आर्य एव श्रेष्ठ मानव वनाओ।

आर्यसमाज का काम यानी हर मानव को अपूर्णता से पूर्णता तक पहुँचाने का काम, हमे सातत्य से अखड चालू रखना होगा। हमारे समाज की, राष्ट्र की उन्नति उसीपर निर्भर है। इस काम के लिये अव परिस्थिति भी अनुकूल है। हमारा अव एक स्वतत्र राष्ट्र है और हमारी सरकार भी इस दिशा मे प्रयत्नशील है। काम इतना विशाल है कि केवल कुछ व्यक्तियो या सस्थाओ के करने से ही हम अपने लक्ष्य तक नही पहुँच सकते। इस दिशा मे सरकार की ओर से जो प्रयत्न, विशेषत समभाव और समानता के लिये किए जा रहे हैं, उसमें अगर हम सव सहयोग दे तो निकट भविष्य मे हम अपन उद्देश्य की पूर्ति कर सकेंगे।

अंतर्मुख होकर हमे यह सोचना होगा कि जिन वुराइयो और कुरीतियो हम चाहते हैं कि हमारे समाज से दूर हो, इन नए सौ वर्षो मे किस हद तक हम उन्हें दूर कर पाए हैं। क्या स्वेच्छा से मानव इन्हें दूर कर सकता है। मानवीय मन पर यद्यपि नियन्त्रण न हो तो वह-

स्वेच्छाचारी बनेगा और हो सकता है वह सत पथ से दूर भटकता रहे। विदेशी सरकार जब थी तो हमारे लिये आवश्यक था कि यह भार हम स्वयं सहन करे, किंतु अब परिस्थिति बदल गई है और हमार समाज मे सुधार नही हुआ तो उसका दोष भी हमारे ही ऊपर आएगा। आवश्यकता है ऐसे कार्यकर्ताओ की जो अपना सर्वस्व ऐसे महान् कार्य के लिये त्याग करने को तैयार हो। अगर इस समारोह मे इन चीजो के ऊपर मिलकर विचार हो और तदनुरूप भविष्य के लिये कार्य सुनिश्चित किया जा सके कि आर्य समाज को वर्तमान परिस्थितियो मे किस प्रकार काम करना है। आज हमारी सरकार की ओर ये बीस सूत्री आर्थिक कार्यक्रम के अतर्गत जो काम हाथ मे लिया गया है वह वस्तुत आर्य समाज के मूलभूत उद्देश्यो की ही पूर्ति करता है। इस नए परिवेश मे यह उचित होगा कि हम सब मिलकर इस काम को आगे बढाएँ। मेरे विचार मे आज हमारे गाँवो मे सुधार की जितनी आवश्यकता है, उसको देखते हुए यदि आर्य समाज अपनी दृष्टि शहरी क्षेत्रो के अतिरिक्त गाँवो की ओर भी रखे तो नए भारत की जो हम रचना करना चाहते हैं, वह साकार होगी।

इन्ही शब्दो के साथ मैं अब अतर्राष्ट्रीय आर्य समाज स्थापना शताब्दी समारोह का सहर्ष उद्घाटन करता हूँ।

भूखे भजन न होय

मुझे आज इस परिषद् के उद्घाटन के अवसर पर अपने को आपके बीच पाकर अत्यत प्रसन्नता है। आपने इस परिषद् का नाम विश्व-कल्याण आध्यात्मिक परिषद् रखा है। आप शायद चाहते हैं कि मानव-कल्याण के लिये आध्यात्मिकता के माध्यम को अपनाया जाए। इस प्रकार का विचार अवश्य ही सराहनीय है, यह एक उत्कृष्ट ध्येय है, किंतु इसकी पूर्ति के लिये आपने अपने सामने क्या कार्यक्रम रखा है, किस प्रकार आध्यात्मिकता का प्रकाश दिशा दिशा मे फैले, यह विचारना आवश्यक है। आज तक इस दिशा मे जितने प्रयत्न हुए, वे कितना प्रभाव डाल सके और यदि लोगो को आकर्षित नही कर सके हैं, तो इसका कारण क्या है ? हम यह मानते हैं कि विश्व कल्याण का पथ सही अर्थ मे आध्यात्मिकता के माध्यम से ही प्रशस्त होगा। इसके लिये सैंकडो सालो से प्रयत्न जारी है। परतु आज भी हम जब विश्व पर दृष्टि डालते है, तो इसका स्वरूप इतना सुखद नही दिखाई देता, आज भी मानव अधकार मे भटक रहा है, ऐसे मे जरा सा भी सतुलन खो बैठे, तो हजारो सालो की यह अर्जित सभ्यता और सस्कृति कही अदृश्य न हो जाए, ऐसा विचारक सोचते हैं। विज्ञान ने जितनी प्रगति की, यत्रो से शारीरिक सुख सुविधाओ मे जितनी वृद्धि हुई तब भी मानव मानसिक पीडा से मुक्त नही हो पाया, वह भयभीत है और सोचता है कि इन भयकर हथियारो के निरंतर बढते हुए बोझ तले वह कही कुचला न जाए। ऐसी स्थिति मे मानव को यद्यपि कोई आशा की किरण दिखाई देती है तो वह केवल आध्यात्मिकता ही है।

हम आध्यात्मिकता को केवल आत्मा तक ही जब सीमित कर देते हैं, तो फलत इस जगत् के क्रिया कलापो से अलगाव की सज्ञा दे बैठते हैं, जब कि आध्यात्मिकता का क्षेत्र केवल आत्मा की उन्नति की परिधि मे ही बाँधा नही जा सकता। उसका संबध पूर्ण मानव के विकास से है, उसकी शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक प्रगति से है। क्या यह सत्य नही कहा गया—

भूखे भजन न होय गोपाला।

जब चारो ओर दरिद्रता, भूख, असमानता, अज्ञान, पिछडापन, रोग इत्यादि से मानव पीडा के दलदल मे उलझा हो, कैसे आत्मा की बात समझी जाएगी ? क्या हमारी दृष्टि उन मूल कारणो की ओर नही जानी चाहिए, जो आध्यात्मिकता के मार्ग मे बाधक है । स्वस्थ आत्मा तो स्वस्थ शरीर मे ही निवास करती है । दुर्बल और सूखे हुए शरीर से क्या सिद्धि होगी । मैं तो समझता हूँ कि आज हमे मानव कल्याण की बात इस व्यापक दृष्टि से ही सोचनी होगी, तभी आध्यात्मिकता की बात सार्थक मानी जाएगी ।

इन्ही शब्दो के साथ मैं आज के संमेलन का उद्घाटन करता हूँ और आशा करता हूँ कि कुछ नए विचार विद्वानो द्वारा प्रस्तुत होगे जो हमारी चिंतन धारा को नई दिशा दे सकेंगे ।

मानव धर्म

इस ऐतिहासिक नगर मे आने और आप सबसे मिलने का आपने जो अवसर मुझे दिया, उसके लिये मैं आप सबका और विशेषकर नंदा जी का आभारी हूँ। धर्म ग्रंथो मे कुरुक्षेत्र का प्राचीन काल से वर्णन मिलता है और इस स्थान का सबध हमारे एक ऐसे युग की याद दिलाता है, जब भगवान् कृष्ण ने श्री अर्जुन को धर्म का अमर सदेश दिया था और उसे निष्काम कर्म और कर्तव्य के लिये प्रेरित किया था। भगवद्गीता का दिव्य प्रकाश आज भी हजारो, लाखो लोगो को आलोकित कर रहा है।

मानव धर्म मिशन की स्थापना, मुझे बताया गया है, उन्नीस सौ अडसठ (१९६८) मे इस हेतु से हुई थी कि समाज मे धर्म और सास्कृतिक मूल्यो के प्रति जो उदासीनता दिखाई दे रही है, उसको दूर करने के लिये कोई सुचारु कार्यक्रम तैयार किया जाए। मुझे प्रसन्नता है कि जिन सिद्धातो का इस सस्था ने प्रतिपादन किया, उसके लिये निष्ठापूर्वक कार्य हो रहा है, आज का यह विशाल समेलन उसी सदर्भ मे है। वास्तव मे अखिल भारतीय स्तर पर नैतिक तथा आध्यात्मिक मूल्यो की पुन प्रतिष्ठा एक ऐसा सामूहिक प्रयत्न है जिसमे सभी धार्मिक और सामाजिक सस्थाएँ सक्रिय भाग ले सकेंगी।

आज का विश्व एक विचित्र चित्र प्रस्तुत करता है, वह मोहक भी है और भयानक भी। भौतिक क्षेत्र मे इसकी उपलब्धियाँ सराहनीय हैं। परतु यह अनुभव किया जाता है कि पूर्णरूपेण यह वरदान सिद्ध नही हुई। बाहरी प्रगति अवश्य हुई परतु मनुष्य का आतरिक सुख चैन, ऐसा लगता है, उससे किनारा कर गया हो। उसका सबसे बडा कारण है आध्यात्मिक तथा नैतिक मूल्यो के प्रति बढती हुई उदासीनता।

विज्ञान और तकनीकी बडी तेजी से आगे बढ रही है। पहले से आज मनुष्य के पास भौतिक प्रगति के अधिक साधन हैं, शक्ति है। वह दूर क्षितिज की खोज मे व्यस्त है। उसकी दृष्टि बाहर की ओर, अतरिक्ष और सुदूर के ग्रहो की ओर लगी हुई है। इसमे सदेह नही कि मनुष्य ने खूब बौद्धिक विकास किया है परतु फिर भी मनुष्य एक अधूरापन महसूस करता है, सच्चा सुख उसे प्राप्त नही हो सका। प्रकृति पर विजय उसकी अपनी विजय नही। वह

विजय तो तभी होगी जब वह अदर की शक्तियो पर विजयी होगा। यह कार्य धर्म का है। धर्म की प्रतिष्ठा से ही हम ज्ञान को सामाजिक, नैतिक, आध्यात्मिक दायित्व के साथ जोड सकेंगे। हमारे चितको और महात्माओ का यही मत है कि आज का विश्व जिन कठिनाइयो से पीडित है, उसका केवल मात्र और प्रभावशाली उपाय धर्म मे है। धर्म की पवित्र, कल्याणकारी तथा एकत्व की भावना से आज के इस ससार को तकनीकी के निरकुश खतरो तथा राजनैतिक, जातीय तथा अन्य मतभेदो से उत्पन्न फूट तथा वैमनस्य से बचाया जा सकता है। प्रेम और वधुत्व, सहिष्णुता तथा सहानुभूति, परमार्थ और सेवा, सभी ससार के धर्मों के यह समान आदर्श हैं। इन्हें स्वीकार करके मनुष्य यदि इन्हें अपने जीवन व्यवहार मे ला सके, तो यह धरती उसके लिये सुख का स्थान वन सकती है।

धर्म जीने का एक तरीका है। इसे किसी औपचारिक सिद्धात या प्रणाली मे वाँधा नही जा सकता। शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक उन्नति का साधन ही धर्म है। वैशेषिक दर्शन मे "यतोभ्युदयनिश्रेयससिद्धि स धर्म" धर्म की व्याख्या इस प्रकार की गई है। यह सभी जानते है कि सभी धर्मों का एक ही लक्ष्य है। आध्यात्मिकता का अश सब मे विद्यमान है। सबने मानव कल्याण का मार्ग वताया है। सभी ने सत्य की खोज की है। इसमे एकता के तत्व को पहचानने के लिये, हमे इनमे विद्यमान गुणो को समझना जरूरी है। ससार के वडे वडे धर्मों मे आधारभूत आध्यात्मिक सत्यो के वारे मे काफी समानता है। उपनिपदो मे धर्मों की इस प्रकार उपमा दी गई है —

'गवामनेकवर्णाना क्षीरस्याप्येककर्णता।
क्षीरवत् पश्यते ज्ञानं लिङ्गिनस्तु गवायथा॥"

प्राचीन काल मे वहुत से धर्मगुरु और महापुरुप हुए हैं। गहराई से देखें तो मालूम होगा कि उनके उपदेशो और आध्यात्मिक ज्ञान मे समानता है। ठीक वैसे ही जैसे कई रगो की गौवें हो, परतु उनके दूध का तो एक ही रग होगा। किसी धर्म ने घृणा, सघर्ष अथवा किसी को हानि पहुँचाने की आज्ञा नही दी, वल्कि सभी धर्म प्यार और भाईचारे, पारस्परिक स्नेह और सहायता, शाति और समन्वय की वात करते हैं।

भारत की परपरा धार्मिक सहिष्णुता तथा पारस्परिक समान की रही है। इसकी सस्कृति को देश की उन महान् देवियो और पुरुषो ने गढा है जिनके मन निर्मल, मस्तिष्क और आत्मा उज्ज्वल रहे हैं। यह ठीक है कि सभ्यता और सस्कृति का भवन ईंट और पत्थर से तैयार नही होता। उसको देश के आदर्श

पुरुष ही निर्मित एवं सुरक्षित रखते है। जियो और जीने दो के अधिकार से इस संस्कृति ने किसी को वचित नही किया।

प्राचीन समय से हमारे महापुरुषो ने हमारा ध्यान जीवन के मूल प्रश्नों की ओर आकर्षित किया था। उन सबने कहा था कि मनुष्य का चरम लक्ष्य है अपने आपको पहचानना। उस आत्मा का साक्षात्कार करना जो सभी के भीतर समान रूप से विद्यमान है। आज जो परिस्थितियाँ हैं, जो कठिनाइयाँ हमारे सामने हैं, वे कठिनाइयाँ गिरते हुए जीवन मूल्यो के कारण हैं। आज की कठिनाइयो का इलाज सासारिक द्रव्यो मे नही, बल्कि आत्मा के अधिकार मे है। आज हमे जरूरत है, हृदय परिवर्तन की, निष्ठापूर्वक कर्तव्य पालन की, प्रेम और सहानुभूति की, त्याग और परमार्थ की, एक ऐसे बलिष्ठ मन की जो भेदो की कोठरियो का बदी न बन सके। हमारे देश की यह परपरा रही है कि मनुष्यता का मानक उसकी धन दौलत से नही किया गया। बल्कि उसकी मानसिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक गुणशीलता पर अकित किया जाता रहा है।

आज से आठ सौ साल (८०० साल) पहले, शायद आप मे बहुत से लोग जानते होगे, कर्नाटक मे सत बसवेश्वर हुए थे। दरअसल वे एक ऐसे महापुरुष थे जिन्होने घोर जाति भेद, छुआछूत के जमाने मे धर्म और मोक्ष का अधिकार हर छोटे बडे को दिया था। इसी सदर्भ मे उन्होने कहा था, "पृथ्वी पर धर्म का क्या काम, यदि वह धर्म करुणा तथा सभी जीवधारियो के लिये प्रेम नही रखता'। उन्होने आध्यात्मिक तथा नैतिक मूल्यो के लिये सभी को प्रेरित किया। धर्म और नैतिकता को मनुष्य के आचरण और व्यवहार से सबधित किया। उन्होने कहा है—"सद्व्यवहार ही स्वर्ग है और दुर्व्यवहार ही नरक है।"।

किसी ने ठीक ही कहा है कि सदाचार, सद्व्यवहार, सद्विवेक के अभाव मे ही सामाजिक व्यवस्था मे दोष उत्पन्न होते हैं। इसीलिये धर्म का मुख्य अग मानकर मनुष्य के आतरिक और बाहरी विकास के लिये नैतिकता की सदैव आवश्यकता रहती है। सस्कृति का आधार नैतिकता है और नैतिकता अनुशासन और सयम माँगती है। इसमे स्वार्थ और सकीर्णता का कोई स्थान नही हो सकता। यह मन की चीज है, जिसने आत्मा के प्रकाश मे मन को मना लिया, उसने अपने जीवन की सभी कठिनाइयो को दूर कर लिया।

डा० राधाकृष्णन ने कहा था, "यदि हम मानव जीवन की दशा को अच्छा भी बना दें, हम मनुष्य के आतरिक जीवन की अपेक्षा नही कर सकते। स्वयं मानव को बदलना है। उसका सबसे बडा शत्रु उसकी अपनी प्रकृति है जो आसानी मे उसके वश मे नही आती। हम इच्छाएँ बढाते जा रहे हैं परतु जीवन के उद्देश्य को भूल रहे हैं।"

आज जरूरत इसी बात की है कि हम जिस भी धार्मिक चितन के माननेवाले हो, यदि सभी अपने अपने धर्मों का निष्ठापूर्वक पालन करे तो धर्म और नैतिक मूल्यो की पुन प्रतिष्ठा हो जाएगी। हमारे जीवन और आचरण में निरूपित होने पर ही धर्म अभ्युदय का कारण बनेगा।

यह प्रसन्नता की बात है कि इस समेलन में वर्तमान कठिनाइयो और उनका समाधान ढूंढने के लिये विचार विमर्श होगा। मुझे आशा है कि इस समेलन मे ऐसे उपयोगी सुझाव प्रस्तुत होगे जो भारतीय जन मानस को प्रभावित करने मे समर्थ होगे। आपके इस समेलन की सफलता के लिये मेरी हार्दिक शुभ कामनाएँ। इन्ही शब्दो के साथ मैं इस समेलन का उद्घाटन करता हूँ और आप सबको, मुझे यहाँ आमंत्रित करने के लिये, धन्यवाद देता हूँ।



आध्यात्मिक मूल्यों का पुनरुत्थान

मैं आपका हृदय से आभारी हूँ कि आपने मुझे ज्ञानबोध सभा के तत्वावधान मे आयोजित आज के समारोह मे उपस्थित होने का अवसर दिया। आज के युग मे आध्यात्मिक मूल्यो की प्रतिष्ठा की जितनी आवश्यकता है, उसे देखते हुए इस दिशा मे किया जानेवाला हर प्रयास मूल्यवान् ही कहा जाएगा।

धर्म एक साधन है, जिसके माध्यम से मनुष्य अपने सर्वोच्च लक्ष्य की ओर अग्रसर होता है। यह आवश्यक नही कि वह साधन एक ही हो, पर्वत की चोटी पर पहुँचने के कई रास्ते हो सकते है और जब सभी दिशाओ से उस तक जानेवाले आरोही, उस चोटी पर पहुँच जाते है, तो सभी को एकही दृश्य दिखाई देता है। उन्हें एक ही अनुभूति होती है। हमारे देश मे प्राचीन काल से कई विचारधाराएँ रही हैं, कई उपासना और आत्मोद्धार की पद्धतियाँ रही हैं, लेकिन जब हम उनको समझने का प्रयत्न करते हैं तो हम जान सकते हैं कि सब एक ही उद्देश्य से प्रेरित है। वे हमे एक ही गतव्य की ओर ले जाती हैं, चाहे वह कर्म मार्ग हो, भक्ति मार्ग हो अथवा ज्ञान-मार्ग। इन सबका ध्येय आत्मा की उन्नति है। आत्मा की उन्नति एक बडी चीज है। क्योकि इसी से मनुष्य की वास्तविक उन्नति होती है। प्रत्येक व्यक्ति के साथ आत्मीयता का भाव ही एकात्मकता है, यही आत्मविजय है।

यह ससार विविधरूप है। इसकी विचित्रता ही इसका सौंदर्य है। इसकी अनेकताओ मे जो समरसता है, वह इसका आत्मतत्व है और जब तक मनुष्य इस चीज को नही पहचानता, वह एक दूसरे के समीप होने पर भी दूर रहता है। इस कारण ही सामूहिक हितो की अवहेलना होती हैं। आध्यात्मिकता की सच्चे अर्थों मे प्रतिष्ठा हो तो बाहरी भेद मिट जाते हैं। हमारी आध्यात्मिक परपरा हमे आत्मविजयी होने की ही शिक्षा देती है। यह ठीक ही कहा गया है कि इन शिक्षाओ को सुननेवाले कान, ग्रहण करने-वाला हृदय तथा विचार करनेवाला मस्तिष्क जब तक नही होगे, पूर्णता तक पहुँचना कैसे सभव होगा? आज जो हम सामाजिक वैषम्य देखते है, उसे हम सहयोग, सद्भाव और समदृष्टि की भावना से ही दूर कर सकते हैं। इसीलिये आज यह अनुभव किया जाता है कि आध्यात्मिक मूल्यो का

व्यापक रूप से प्रसार हो, हम ईश्वरीय अनुग्रह की कामना करें तथा जीवन में उन गुणो को विकसित करे जिनसे हम उसके अधिकारी बनते हैं।

आज जरूरत इसी बात की है कि मानव मन एक हो, सबकी उन्नति के लिये एक साथ मिलकर काम करने की सत्चेष्टा हो, प्रत्येक व्यक्ति के साथ हमारे अदर आत्मवत् व्यवहार की क्षमता पैदा हो, यह काम आत्मोत्कर्ष से ही होगा। इसके लिये सत्सग तथा सत्पुरुषो के आत्मानुभव से लाभ उठा सकते हैं।

मुझे प्रसन्नता है कि ज्ञानबोध सभा आध्यात्मिक मूल्यो के लिये अच्छा कर रही है। मेरी यही कामना है कि आप मानव कल्याण और एकता के कार्य के लिये इसी भावना से सदैव कार्यरत रहें।

विश्वकल्याण

मुझे आज इस परिषद् के उद्घाटन के अवसर पर अपने को आपके बीच पाकर अत्यत प्रसन्नता है। आपने इस परिषद् का नाम विश्व कल्याण-आध्यात्मिक परिषद् रखा है। आप शायद चाहते हैं कि मानव कल्याण के लिये आध्यात्मिकता के माध्यम को अपनाया जाए। इस प्रकार का विचार अवश्य ही सराहनीय है, यह एक उत्कृष्ट ध्येय है, किंतु इसकी पूर्ति के लिये आपने अपने सामने क्या कार्यक्रम रखा है, किस प्रकार आध्यात्मिकता का प्रकाश दिशा दिशा मे फैले, यह विचारना आवश्यक है। आज तक इस दिशा मे जितने प्रयत्न हुए, वे कितना प्रभाव डाल सके और यदि लोगो को आकर्षित नही कर सके हैं तो इसका कारण क्या है ? हम यह मानते है कि विश्व कल्याण का पथ सही अर्थ मे आध्यात्मिकता के माध्यम से ही प्रशस्त होगा। इसके लिये सैकडो सालो से प्रयत्न जारी है। परतु आज भी हम जब विश्व पर दृष्टि डालते हैं, तो इसका स्वरूप उतना सुखद नही दिखाई देता, आज भी मानव अधकार मे भटक रहा है, ऐसे मे जरा सा भी सतुलन खो बैठे, तो हजारों सालो की यह अर्जित सभ्यता और सस्कृति कही अदृश्य न हो जाए, ऐसा विचारक सोचते हैं। विज्ञान ने जितनी प्रगति की, यंत्रो से शारीरिक सुख-सुविधाओ मे इतनी वृद्धि हुई तब भी मानव मानसिक पीडा से मुक्त नही हो पाया, वह भयभीत है और सोचता है कि इन भयकर हथियारो के निरतर बढते हुए बोझ तले वह कही कुचला न जाए। ऐसी स्थिति मे मानव को यदि कोई आशा की किरण दिखाई देती है तो वह केवल आध्यात्मिकता ही है।

हम आध्यात्मिकता को केवल आत्मा तक ही जब सीमित कर देते हैं, तो फलतः इस जगत् के क्रिया कलापो से अलगाव की सज्ञा दे बैठते हैं। जबकि आध्यात्मिकता का क्षेत्र केवल आत्मा की उन्नति की परिधि मे ही बाँधा नही जा सकता। उसका सबध पूर्ण मानव के विकास से हैं, उसकी शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक प्रगति से है। क्या यह सत्य नही कहा गया :—

भूखे भजन न होय गोपाला।

जब चारो और दरिद्रता, भूख, असमानता, अज्ञान, पिछड़ापन, रोग इत्यादि से मानव पीडा के दलदल मे उलझा हो, कैसे आत्मा की बात समझी जाएगी ? क्या हमारी दृष्टि उन मूल कारणो की ओर नही जानी चाहिए, जो

आध्यात्मिकता के मार्ग मे बाधक हैं। स्वस्थ आत्मा तो स्वस्थ शरीर मे ही निवास करती है। दुर्बल और सूखे हुए शरीर से क्या सिद्धि होगी। मैं तो समझता हूँ कि आज हमे मानव कल्याण की बात इस व्यापक दृष्टि से ही सोचनी होगी, तभी आध्यात्मिकता की बात सार्थक मानी जाएगी।

इन्ही शब्दो के साथ आज के समेलन का उद्घाटन करता हूँ और आशा करता हूँ कि कुछ नए विचार विद्वानो द्वारा प्रस्तुत होगे जो हमारी चितन-धारा को नई दिशा दे सकेगे।

विश्वशांति

यह मेरा परम सौभाग्य है कि जिस सर्वधर्म समभाव विश्वशाति महायज्ञ का आयोजन यहाँ किया गया है उसमे मैं भी उपस्थित हो सका हूँ। मेरा अध्यात्म की ओर छोटी अवस्था से ही झुकाव रहा है और ऐसे समागमो मे समिलित होकर भागवत विद्वानो के दर्शनो तथा उपदेशो का लाभ पाने की इच्छा स्वभावगत ही समझें।

मैं आया तो था इस इच्छा से कि आपके शब्दो का ही रसास्वादन करूँ। परतु मालूम हुआ कि मुझे भी कुछ इस अवसर पर बोलना होगा। सच पूछा जाए तो ऐसे आयोजनो पर तत्त्ववेत्ताओ तथा ज्ञानी महात्मा पुरुषो के वचनो का ही श्रवण लाभ हो तो ज्यादा श्रेयस्कर हो।

मुझे प्रसन्नता है कि आज जिस महायज्ञ का यहाँ शुभारभ हो रहा है उसके पीछे एक मानव कल्याण की सर्वोत्तम भावना है। आप तो जानते ही है कि ऐसे अनुष्ठानो से भारतीय परपरा का एक पुरातन सबध है। वैदिक काल से लेकर वह हमारे साथ है। हमारे धर्म के मुख्य अग के रूप मे ये हिंदुओ के दैनिक कर्मकाडो मे आज भी महत्वपूर्ण माने जाते हैं। हमारा देश अध्यात्म प्रधान है। ईश्वर की परमसत्ता, सर्वज्ञता तथा सर्वव्यापकता को कौन नही स्वीकार करता। पूरे विश्व मे अधिकाश लोग उस सर्व शक्तिमान् को अपने अपने ढग से आराधना करते है। भौतिक एव आध्यात्मिक उपलब्धियो के लिये शक्ति प्राप्त करते हैं। भगवद्गीता मे कहा है —

यत प्रवृत्तिर्भूताना येन सर्वमिद ततम्।
स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धि विन्दति मानव ।।

जिस परमात्मा से समस्त भूतो की उत्पत्ति हुई, जिससे यह सारा जगत् व्याप्त है, उस सर्वशक्तिमान् को अपने स्वाभाविक कर्म द्वारा पूज कर सिद्धि प्राप्त करे।

हम अध्यात्म की बात करते है परतु कुछ लोग इसके व्यापक अर्थ को न समझकर, यह कहते हैं कि इसके लिये तो ससार को छोडना आवश्यक है। परतु अध्यात्म तो एक नित्य वस्तु है। जिसके साथ मनुष्य के सर्वागीण कल्याण का सबध है। संसार के अर्थ-भोग की इसमे उपेक्षा नही, बल्कि इसके सयत और आवश्यक उपभोग को जीवन धर्म से अलग नही किया गया।

परतु जीवन धर्म का अतिम लक्ष्य मुक्ति, निर्वाण, मोक्ष अथवा भगवत् प्राप्ति ही माना गया है ताकि अर्थप्रधान दृष्टिकोण के स्थान पर एक कर्तव्य प्रधान जीवन दृष्टिकोण पोषित हो। मानव केवल अपने लिये ही न जिए, इसलिये यह माना गया है कि मतवाद धर्म नही। गोस्वामी तुलसीदास के शब्दो मे धर्म एक कर्तव्य है, जो हम दूसरे जीवो के प्रति पूरा करते हैं—

परहित सरिस धरम नहिं भाई।
पर पीडा सम नहि अधमाई॥

यही वह मूल भावना है जिससे प्रभावित होकर भारतीय लोग यज्ञो द्वारा देवो का आह्वान करके विश्व कल्याण का वरदान मांगा करते थे। 'सर्वे भवन्तु सुखिन" की कामना किया करते थे।

आज का युग विज्ञान का युग है। मनुष्य हर चीज को तर्क और बुद्धि के तराजू मे ही तौलता है। इसकी तर्कवादिता से कुछ अध-विश्वासो मे कमी तो हुई हैं। परन्तु इसके साथ वह इतना अर्थप्रधान बन गया है कि अध्यात्म से उसका लगाव कम होता जा रहा हैं। हमारी सारी शक्ति भौतिक प्रगति की ओर अग्रसर है। अर्थ, काम, मोक्ष इन तीनो का कुछ महत्व हैं, हमारे अर्थ और काम लक्ष्य नही। लक्ष्य तो मोक्ष है, जो अध्यात्म के विना प्राप्त नही हो सकता। अर्थ और काम का सबध हमारे भौतिक जीवन तक है। विज्ञान के चमत्कारपूर्ण विकास ने भौतिक ससाधनो मे वृद्धि तो कर दी, परतु इस बौद्धिक प्रगति से मनुष्य के भीतरी गुणो मे कितनी उन्नति हुई? ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध, स्वार्थ जैसी हीन भावनाओ से क्या मुक्ति मिली है? यह प्रश्न सभी के सामने प्रस्तुत हैं। क्या मनुष्य इन भौतिक समाधनो के होते हुए भी विक्षिप्त, अशात, भयभीत, शकित तथा दुखी नही दीखता? पर ऐसा क्यो है, स्पष्ट हैं कि मनुष्य के सुख का साधन केवल उसकी शारीरिक सुविधाएँ नही। जीवन की जटिलताओ ने उसका मानसिक सुख छीन लिया है। इसका मुख्य कारण है कि हमारे ज्ञान मे संतुलन न रहना। इस ओर सभी विचारशील लोगो का ध्यान जाना जरूरी है। विज्ञान को दृष्टि चाहिए जो इसके विना पूरी मानवता को विनाश की ओर ले जा सकता है। विश्व-शाति खतरे मे पड सकती है। ज्ञान की दृष्टि यदि मिल जाए, तो विज्ञान विनाश की अपेक्षा कल्याणोन्मुख होगा। समष्टि के हितो की रक्षा हो, तभी मनुष्य सच्चा सुख प्राप्त कर सकेगा। आज तक हम बाहर की ओर ही देखने की चेष्टा मे लगे रहे। अब समय आ गया है कि हम अपने भीतर

भी झांक कर देखें। उस शक्ति का अनुभव करे जो सभी जीवो की पालक, पोषक और रक्षक हैं। हृदयो को जोडने, मानवीय एकता को सुदृढ बनाने मे अध्यात्म एक आवश्यक कडी है। विश्व भर मे जितने भी विचारशील लोग हैं, चिंतक हैं, वे अनुभव करते है कि मानव मे सद्भाव बढे, इसके लिये सभी धर्मों को एक दूसरे के करीब जाना चाहिए।

इच्छित फल के लिये हर धर्मपरायण व्यक्ति ईश्वरीय अनुग्रह की कामना करता है। मैं समझता हूँ कि इस महायज्ञ के पीछे भी यही भावना है। दैवीय शक्ति पूरी मानवता को सुख और शांति प्रदान करे, यही हमारी कामना है।

आत्मोन्नति के उन्नायक

मेरे लिए यह परम हर्ष का विषय है कि मुझे आज के इस समारोह मे समिलित होने तथा भगवान् बाहुबली जी की प्रतिमा के दर्शन करने का, साथ ही आप सभी साथियो से मिलने का अवसर प्राप्त हुआ। इसके लिये मैं आप सभी महानुभावो का आभारी हूँ।

ऐसे सुअवसर पर बहुत ही पुरानी स्मृतियाँ जाग उठती हैं और विशेषकर रचनात्मक काम के विषय मे बहुत विचार उठते हैं। धार्मिक सस्कारो का हमारे देश मे एक विशेष महत्व रहा है। महान् विभूतियो के जीवन आदर्शो एवं बहुमूल्य उपदेशो से हमे चिरकाल से प्रेरणा मिलती आ रही है। भगवान् बाहुबली का जीवन भी तपस्या, बलिदान, त्याग और आदर्शो का उदाहरण है। भगवान् बाहुबली एक राज घराने मे उत्पन्न हुए थे। उन्हे राज्य प्राप्त करने के लिये अपने भाई से युद्ध भी करना पडा। परतु शीघ्र ही उन्होने उस राज्य को स्वेच्छा से अपने भाई को ही सौंप दिया और स्वय सत्य की खोज मे निकल पडे। उनका जीवन तप और योग का एक अनूठा उदाहरण है। वह एक अलौकिक पुरुष थे। वह वास्तव मे एक महान् विचारक, उच्चकोटि के साधक और मानवता के सच्चे हित चिंतक थे। उन्होने जीवन मे सत्यता और जीवन मूल्यो को सुचारु रूप से स्पष्ट किया और इसीलिये उनके उपदेशो मे जितना प्रभावोत्पादन उनके काल मे था उतना ही आत्मोन्नति की सामर्थ्य उनमे आज भी है। उनके जीवन के आलोक से हमे आज भी जब कि हम विभिन्न प्रकार की समस्याओ के अधकार से गुजर रहे हैं, प्रकाशवान् मार्गदर्शन उज्ज्वल आध्यात्मिक आकाक्षा की लक्ष्य प्राप्ति के साधनो का सुलभ मार्ग दृष्टिगोचर होता है।

यह एक वास्तविक सत्य है कि आज मनुष्य बौद्धिक विकास मे पीछे नही है, पर फिर भी उसे एक अधूरेपन का आभास होता है। और कदाचित् ऐसा इसीलिये कि उसे वास्तविक आनद की अनुभूति नही हो सकी है। वह अनुभूति तो वास्तव मे उसे केवल अपनी निष्ठा, श्रद्धा और धर्म मे ही मिल सकती है। और तब ही धर्म की प्रतिष्ठा मे हम ज्ञान को सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक दायित्व के साथ जोड सकेंगे। आज आध्यात्मिक चेतना के विकास के लिये यह आवश्यक है कि ऐसे प्रेरणादायक रचनात्मक कार्य होते रहे। इनसे न

केवल हमारी लौकिक उन्नति का मार्ग मिलेगा वरन् पारमार्थिक कल्याण और सच्चे आनद की अनुभूति भी होगी।

आज हम सभी के लिये हर्ष का ही नही वल्कि गौरव का विषय है कि हमे भगवान् वाहुवली की इतनी वडी प्रतिमा के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, जिसकी कुल ऊँचाई ४५ फुट ६ इच है। इतनी वडी प्रतिमा को वनाना और फिर उसे यहाँ लाने का कार्य वास्तव मे वडा सराहनीय है।

शुभ्रसमरमरी मदिर मे भगवान् वाहुवली की इस मूर्ति की प्रस्थापना शीघ्र ही हो जाएगी। भावुक लोग इसका दर्शन कर यहाँ के परिसर देख मनोमन प्रसन्न होगे व भगवान् से प्रार्थना करके कुछ वर भी माँगेंगे। भगवान् गौमतेश्वर सुदर तो थे ही किंतु अत्यत शक्तिशाली, पराक्रमी भी थे। मुझे विश्वास है कि ये सव महानुभाव जिनका सहयोग इस मदिर के निर्माण मे प्राप्त हुआ, उन्हें तथा दर्शनार्थियो को भगवान् गौमतेश्वर यही आशीर्वाद देगे कि वे शक्तिशाली वनें, उनके मन मे उदात्त विचार आएँ और वे अपनी शक्ति तथा स्फूर्ति राष्ट्रोत्थान मे लगाएँ। यद्यपि ऐसा हुआ तो मदिर निर्माताओ का स्वप्न साकार होगा। इसकी प्रेरणा से हमे वास्तविक मन की शाति तथा सच्चे आनद की अनुभूति होगी।

मैं एक वार फिर अपनी ओर से उन सभी महानुभावो को वधाई देता हूँ जिन्होने अपनी श्रद्धा और अथक प्रयास से इस श्रेष्ठ कार्य को पूर्ण कर दिखाया है। मैं आशा करता हूँ कि भविष्य मे भी वे ऐसे ही प्रेरणादायक कार्य करते रहेंगे।

---

४. भाषा और साहित्य

कालिदास : साहित्य देवी का विलास

इस ऐतिहासिक नगर मे महाकवि कालिदास की स्मृति मे आयोजित समारोह के समापन के अवसर पर उपस्थित होने की मुझे बडी प्रसन्नता है। यहाँ आने, आप सबसे मिलने का जो अवसर मुझे प्राप्त हुआ, उसके लिये मैं आप सबका और विशेषकर, श्री प्रकाशचद्र सेठी जी का आभारी हूँ। यह देखकर मुझे बडा सतोष है कि उज्जयिनी की इस प्राचीन नगरी मे यह समारोह पिछले कई वर्षों से निरतर बडे उत्साह से मनाया जा रहा है। इस कार्यक्रम के अतर्गत विश्व-विख्यात कालिदास की याद को बनाए रखने के लिये उनकी कृतियो पर साहित्य प्रेमियो द्वारा प्रकाश डालना तथा सास्कृतिक आयोजन करना उचित ही है। यह हमारा कर्तव्य है कि हम अपने देश की उन महान् विभूतियो को अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करे, जिन्होने अपने कार्यों, अपनी साहित्य सेवाओ से इस देश के लिये गौरव अर्जित किया। आज यह समारोह सफलतापूर्वक पूर्ण हो रहा है, इसके लिये मैं इस नगर के निवासियो तथा समारोह से सबधित सभी लोगो को बधाई देता हूँ।

महाकवि कालिदास भारतीय साहित्य के गौरव के प्रतीक हैं। उनकी रचनाओ मे ऋतु सहार, मेघदूत, रघुवश, कुमारसभव, मालविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशीय और अभिज्ञानशाकुतल सर्वमान्य है। काव्यो मे रघुवश और कुमारसभव महाकाव्य है और नाटको मे अभिज्ञानशाकुतल उनकी अतिम कृति हैं। यह सत्य है कि सस्कृत साहित्य की उन्होने जितनी सेवा की है, अन्य कोई अकेला साहित्यकार नही कर सका। इन्ही रचनाओ ने उन्हे सार्वभौमिकता प्रदान की है। ये कवि कालिदास की ही रचनाएँ थी, जिनके अनुवादो ने पश्चिमी देशो के शिक्षित समाज को भारतीय साहित्य की ओर आकर्षित किया था। भारतीय एव पाश्चात्य विद्वानो ने उनकी रचनाओ को मुक्त कठ से सराहा है। जयदेव ने उन्हे 'कवि कुलगुरु' और 'कविता कामिनी का विलास' कहकर सबोधित किया है। डा० भावे ने उन्हे राष्ट्रीय कवि बताते हुए, उनकी रचनाओ को भारतीय जीवन का सारसग्रह माना है। इसी प्रकार विश्वविख्यात समालोचक श्लेगल ने कालिदास को कविता के अनन्यतम साधको मे महान बताया है। सर मोनियर विलियम्ज ने

उन्हें मानव हृदय का पारखी, मृदुभावो का कुशल शिल्पी कहा हैं, इससे इस तथ्य की पुष्टि होती है कि देश विदेश के प्रसिद्ध साहित्यकारो ने कालिदास की रचनाओ की यदि प्रशसा की है, तो उन्हे साहित्य जगत् के लिये एक वडी उपलब्धि भी माना है। यही कारण है कि आज कवि कालिदास की विश्व के इने गिने साहित्यकारो मे गणना की जाती है। साहित्यिक दृष्टि से उनकी रचनाओ को जो आदर मिला, उसका अनुमान हम ससार की विभिन्न उन्नत भाषाओ मे अनूदित साहित्य से लगा सकते हैं। इसमे सदेह नही कि कवि की यह सार्वदेशिक मान्यता हमारे लिये गर्व की वात है।

कवि कालिदास के साहित्य के अध्ययन करने से हम उन विशेषताओ को समझ सकते हैं जिनके कारण उन्हें सस्कृत साहित्य मे इतना ऊँचा स्थान मिला है। उनकी प्रसादपूर्ण, लालित्ययुक्त और परिष्कृत शैली, अनुपम-पद विन्यास, करुण-रस तथा भावो की गहनता ने इन रचनाओ को इतनी लोकप्रियता प्रदान की है। उनके काव्य मे हमे सर्वत्र एक सरसता और स्वाभाविकता दिखाई देती है। उसमे यदि मृदुलता है, तो प्रौढता के गुण भी विद्यमान हैं। प्रकृति सौंदर्य चित्रण मे इतनी मनोहरता है कि उसका एक सजीव चित्र हमारे सामने आ जाता है। कवि की सबसे वडी विशेषता यह है कि उसने मानवीय भावनाओ को चित्रित करते समय उन्हे पार्थिव सौंदर्य से ऊपर उठाकर आत्मा की ऊँचाई पर ले जाने का प्रयत्न किया है। वह न केवल मानव की मानसिक क्रियाओ और प्रति-क्रियाओ के पारखी थे, वल्कि वह प्रकृति के महान् उपासक और ललित कलाओ के मर्मज्ञ भी थे। वह सस्कृत साहित्य से पूर्णत परिचित थे। तत्कालीन राजनीतिक और सामाजिक परिस्थितियो की उन्हें पूरी जानकारी थी। भारत के भूगोल का उन्हे असाधारण ज्ञान था। इनके साथ उनके हृदय की विशालता, कल्पना की व्यापकता और दृष्टि की सूक्ष्मता ने सँवारा था, उनकी रचनाओ को। इसीलिये उनके साहित्य मे उस समय के भारतीय जीवन, आदर्श तथा सांस्कृतिक परपराओ का चित्र प्रतिबिंबित होता है।

कवि कालिदास समन्वयवादी कवि थे। वे एक महान् युग प्रवर्तक माने गए। क्योंकि उन्होंने साहित्य को एक नवीनता प्रदान की थी। जहाँ तक उनके देश प्रेम का संवध है, उन्होने भारत की वदना के ही गीत गाए है। उन्हें

इसके कण कण से प्यार था। इस देश के सामाजिक जीवन को ही उन्होने अपने महाकाव्यो और नाटको मे चित्रित किया है। यहाँ के प्राकृतिक सौंदर्य तथा ऋतुओ का ही वर्णन किया है। यहाँ की हर चीज ने कवि की दृष्टि अपनी ओर आकर्षित की है। ये सब बाते उनके असीम देशप्रेम की परिचायक हैं। उनकी साहित्यिक साधना समन्वय और सहअस्तित्व का ही प्रतीक है।

कालिदास का ससार और जीवन के प्रति काफी स्वस्थ दृष्टिकोण था। वह भौतिक सुख समृद्धि के प्रति भी अशावादी थे और आध्यात्मिक उन्नति के प्रति भी सजग थे। देखा जाए तो वह ससारिक उन्नति के साथ आत्मा को भी उन्नत देखना चाहते थे। कालिदास की रचनाओ से हमे उनके जीवन दर्शन का पता चलता है। अभिज्ञानशाकुतल की समाप्ति पर कालिदास ने इस प्रकार कामना की है—

प्रवर्तता प्रकृतिहिताय पार्थिव
सरस्वनी श्रुतिमहती महीयताम्।
ममापि च क्षपयतु नीललोहितः
पुनर्भव परिगतशक्तिरात्मभूः॥

अर्थात् शासन प्रजा की भलाई के लिये प्रवृत्त हो, विद्वानो की वाणी को आदर मिले और सर्वशक्तिमान् शिव मेरा पुनर्जन्म नष्ट कर दें।' जीवन का अतिम लक्ष्य मोक्ष है। इसलिये हमारे प्राचीन साहित्य मे आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यो को प्राथमिकता दी गई है क्योकि ये मूल्य ही मनुष्य को ऊँचाई की तरफ ले जाते है।

इस महान् साहित्यकार के जीवन तथा अन्य व्यक्तिगत परिस्थितियो के बारे मे आज तक कोई प्रामाणिक जानकारी हमारे पास नही है। वैसे तो सस्कृत के सभी प्राचीन कवियो के बारे मे हमे बहुत कम मालूम है। साहित्य के इन आराधको ने अपने बारे मे किसी ग्रथ मे उल्लेख नही किया, शायद यह काम वह हमारे लिए छोड़ गए हैं।

आधुनिक सदर्भ मे यह उचित है कि हम नवीन विचारो को अपने जीवन मे स्थान दे, परतु प्राचीन जीवन मूल्यो से कट कर नही। हमे उनसे भी लाभ उठाना है। इसके लिये जरूरी है प्राचीन साहित्य से भी हमारा नाता कायम रहे। प्राचीन और नवीन की उपयोगी चीजो को पूरी तरह से समझकर यदि हम आगे बढें तो हमे जीवन का रास्ता कठिन

महसूस नही होगा। यह मैं इसलिये कह रहा हूँ क्योंकि प्राचीन काल मे मानव के समुख जो चीज थी आज भी मानव के समुख वही चीज है। उस समय भी वह सुख और शांति के लिये प्रयत्नशील था, आज भी उसी के लिये सघर्ष कर रहा है। इसलिये हमारे लिये प्राचीन भी महत्वपूर्ण है। क्योंकि जिस मजिल पर हम पहुँचे हैं उससे आगे वढने का उत्साह हम प्राचीन के अनभावो से ग्रहण करते हैं। आज हमारे लिये आवश्यक है कि हम इस चीज को समझे। नई उपलब्धियो के साथ अपनी महान् सास्कृतिक परपरा को भी कायम रखें जिसने इस देश के गौरव को सदा गरिमा प्रदान की है।

आज हम आपात् कालीन स्थिति मे से गुजर रहे हैं। दूसरे शब्दो मे यह ऐसा समय नही है, जब हम इस तरह के समारोहो मे एक वडी सख्या मे केवल भाषण सुनने के लिये इकट्ठे हो और फिर अपने अपने घर चले जाएँ। समय की यही माँग है कि कुछ ठोस और रचनात्मक काम हो। प्रश्न यह है कि इस तरह के समारोहो से हम क्या सीखे? क्या हम अपने पुरातन इतिहास और सस्कृति की गौरव गाथा मे ही सतुष्टि मान लें? क्या हम कवि कालिदास की उपलब्धियो से खुश हो जाएँ? मैं समझता हूँ कि यदि हमारी यही धारणा रही तो हम आगे नही वढ सकेंगे। हमारा यह प्रयत्न होना चाहिए कि लोगो को इस तरह के समारोहो मे प्रेरणा मिले।

यह हमारा सौभाग्य है कि वर्तमान परिस्थितियो के अतर्गत हमारी प्रधान-मत्री ने देश की सर्वांग उन्नति के लिये तथा गरीब लोगो, पिछड़े हुए वर्गो को ऊपर उठाने के लिये २० सूत्री आर्थिक कार्यक्रम की घोषणा की है। युग-सदर्भ मे लेखक और साहित्यकार की देश के प्रति जो जिम्मेदारी है वह पहले से कही अधिक है। आज जरूरत इस बात की है कि राष्ट्रीय एकता, पारस्परिक सद्भावना को वढाने, पिछड़ेपन और गरीबी को हटाने, आर्थिक और सामाजिक असमानताओ को दूर करने, शिक्षा के विस्तार तथा देश की सर्वांग उन्नति और समृद्धि के लिये किए जाने वाले प्रयत्नो मे नवोदित साहित्यकार और कलाकार अपनी रचनात्मक प्रतिभा द्वारा इस राष्ट्रीय कार्य मे अपना हाथ वटाएँ।

यहाँ एकत्रित होने का लाभ हमे तभी प्राप्त होगा, जब हम ऐसे अवसर पर अपने देश को अधिक गौरवशाली वनाने का सकल्प लें और इसके लिये पूरी निष्ठा से काम करे, यही हमारी महाकवि कालिदास के प्रति सच्ची श्रद्धाजलि होगी।

———

विद्यापति : संस्कृति के सेवक

मिथिला संघ, दिल्ली के सदस्यो और व्यवस्थापको को धन्यवाद देता हूँ कि जिन्होने मुझे यहाँ निमन्त्रित करके आप सब के साथ देश के उस महान् कवि विद्यापति को अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करने का अवसर दिया, जिसने भक्ति की काव्य रस धारा प्रवाहित करके आज से सैकडो साल पहले भारत के लगभग सारे पूर्वांचल को आनद विभोर किया था। भारत की सस्कृति की उन्होने जो सेवा की है, उसके लिये वह सदा स्मरणीय रहेंगे।

महाकवि विद्यापति वहुमुखी प्रतिभा के स्वामी थे। सस्कृत भाषा के जितने प्रकाड विद्वान थे, देशी भाषा पर भी उन्हे उतना ही अधिकार प्राप्त था। उनके युग मे सस्कृत अध्ययन की मुख्य भाषा ही नही थी, बल्कि एक प्रकार से शिक्षित वर्ग पर छाई हुई थी। सस्कृत भाषा मे साहित्य रचना एक प्रतिष्ठा की बात मानी जाती थी। लेकिन उस जमाने मे जबकि देशी भापा मे लिखना अच्छा नही समझा जाता था या प्रतिष्ठा हानि के सकोच के कारण इस काम के लिये लोग आगे आना पसद नही करते थे, विद्यापति ने एक उदार नीति का आश्रय लेकर देशी भाषा को अपनी काव्य रचना का माध्यम बनाने का जो निश्चय किया, वह उस समय के लिये एक बहुत वडा जनवादी कदम था। हम जानते है कि इस कसौटी पर वह पूरे ही नही उतरे, वल्कि यूं कहना चाहिए कि सास्कृतिक विनिमय के सूत्रधार वन गए और इसीलिये, विहार से वाहर वगाल, असम, उडीसा और नेपाल तक वैसे ही समादृत हुए जैसे वह अपने प्रदेश मे थे। स्वात सुखाय के लिये लिखना और वात है, लेकिन वहुजन हिताय तथा वहुजन सुखाय के लिये जिन लोगो ने लिखा, वह युग युग के लिये ऐसी निधि छोड गए हैं, जिसके कोमल, कात और मृदु मधुर स्वर सदैव जन जन को प्रफुल्लित और उत्साहित करते रहेंगे।

महाकवि विद्यापति, उसी परपरा के प्रतीक हैं, जिन्होने जन साधारण की अवहेलना नही की, लोक जीवन से अपना नाता नही तोडा और राज दरवार मे प्रतिष्ठित स्थान पाकर भी जन साधारण को नहीं भुलाया। उन्होने इस चीज को पहचाना था कि राजदरवार की भापा केवल शिक्षित वर्ग तक सीमित है, उसमे जो ज्ञान, विज्ञान, कला, साहित्य की मूल्यवान चीजे हैं, उनसे जनसाधरण लाभ नही उठा सकता, उसका रसपान नही कर सकता। उन्होने अपने काव्य

की रचना इसीलिये लोकभाषा मे आरभ की थी कि इस माध्यम से साहित्य-कार अपने मन के भाव स्वाभाविक सरलता से व्यक्त करके जन साधारण के समीप रह कर उसे समझ सकें और अपनी बात भी समझा सकें। अपनी प्रेरणा-दायी काव्यधारा से जनता को उन्होंने न केवल आमोदित प्रमोदित किया, बल्कि उनमें सास्कृतिक चेतना को जागृत किया और उन्हें भक्ति का स्वर देकर, तुष्टि प्रदान की। उनके पदो की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे संगीतमय हैं। इसीलिये, वह आज तक लोगो के कठ स्वर का हार बने हुए हैं। तीज त्यौहारो मे आज भी ये पद नर नारियो द्वारा गाए जाते हैं।

ग्लेडिस्टोन ने कहा है कि साहित्यकार समाज से जो कुछ वाष्प के रूप मे लेता है, वृष्टि के रूप मे उसी जन समुदाय को लौटा देता है। विद्यापति ने अपने पदो की ऐसी ही वृष्टि से जन जन को आनदित किया था। इस महान् कवि की प्रेरणा से वैष्णव पदावली का एक बडी मात्रा मे साहित्य निर्मित हुआ, वह "ब्रजबुली" के नाम से प्रचलित हुआ। कई लेखको और कवियो ने विद्यपति की शैली, भाषा और कला को अपनाया। चैतन्य महाप्रभु के अनुयायियो ने लीला विषयक पदो की रचना, गीत माधुर्य के लिये ब्रजबुली मे की। आज विद्यापति सारे भारत की जनता के लिये कवि हैं। यह हमारा कर्तव्य है कि हम उनकी याद को बनाए रखें और उनके साहित्य का रसपान सभी को करवाएँ।

आज हम अपने राष्ट्र के पुनर्निर्माण का महान् प्रयास कर रहे हैं और समाज को एक नया रूप देना चाहते हैं जो हर दृष्टि से सुदर और स्वस्थ हो, जिसमें हर व्यक्ति अधिक सुखी जीवन बिता सके। इसमें हमारे कवि बहुत कुछ कर सकते हैं। वह इस परिवर्तनशील जगत् के नित्य नूतन रूप को सँवारने मे समाज के विचारो को प्रगति प्रदान कर सकते हैं। किसी कवि ने कहा है :—
"लोग कहते हैं बदलता है जमाना, (लेकिन) मर्द वह हैं जो जमाने को बदल देते हैं"

आज हमें उस जमाने को बदलना है जिसने हमारी प्रगति की राह को रोका था, भेदों की दीवारें खडी करके देश को कमजोर करने का दुस्साहस किया था। उसके स्थान पर हम नए युग की प्रतिष्ठा करनी है, जिसने प्रगति के लिये नई स्फूर्ति पैदा की है। हमे यह कभी नहीं भूलना है कि यह देश हम सबका है, हम ही इसके रखवाले हैं। हम मिलकर काम करेंगे, इसे ऊँचा उठाएँगे, यह भावना आज हम सबमे होनी चाहिए, तभी हम तरक्की कर सकते हैं

और भावी पीढियो के लिये ऐसे निशान छोड़ सकते हैं कि हमें वह आदर की दृष्टि से स्मरण करे। विद्यापति ने जनता की सेवा अपने साहित्य के द्वारा की, तो वह महान् हो गए, यह जन सेवा ही सभी को वडा बनाती है। इन्ही शब्दों के साथ मैं पुन आप सब को धन्यवाद देता हूँ कि आज के इस समारोह मे उपस्थित होने का आपने मुझे अवसर प्रदान किया।

नारी चेतना की उन्नायक : मीरा

मैं आप सबका आभारी हूँ कि आपने मुझे महिला मडल के तत्वावधान मे आयोजित मीरा व्याख्यान माला के उद्घाटन का गौरव प्रदान किया। मुझे यह देखकर वडी प्रसन्नता है कि महिला मडल, उदयपुर अपने क्षेत्र मे महिलाओ की शिक्षा की सुविधा जुठाने तथा उन्हे स्वावलवी वनाने की दिशा मे सुदर कार्य कर रहा है। श्रोत्रिय दपति तथा इस संस्था के दूसरे कार्यकर्ताओ के सतत प्रयासो से आज यह सस्था प्रगति के पथ पर अग्रसर है और महिला जागरण एव उत्थान की विभिन्न प्रवृत्तियो द्वारा जो समाज सेवा का कार्य पिछले इकतालीस वर्षो से इस सस्था ने सपादित किया है वह वास्तव मे एक स्तुत्य कार्य है।

मीरा प्रतिष्ठान की स्थापना इसी कार्यक्रम की एक कडी है जिसका उद्देश्य है भक्त शिरोमणि महिला के साहित्य तथा जीवन का अनुसधानात्मक अध्ययन तथा मीरा के भक्ति प्रभाव एव क्रांति चेतना द्वारा सामाजिक जागरण के लिये व्यापक आधार तैयार करना। सदियो मे भारतीय जनमानस को मीरा के भजन प्रभावित करते आ रहे हैं और मीरा का साहित्य, सगीत तथा भक्ति आज भी हमारे साहित्यकारो, सगीतज्ञो तथा साधक भक्तजनो के लिये एक निर्मल प्रेरणा का स्रोत है। मीरा का व्यक्तित्व असाधारण एवं अद्वितीय है। उसका त्याग, साधना, प्रतिभा, पवित्रता, सरलता, तल्लीनता, सव अनुपम है। अपने युग मे भारतीय सस्कृति की सात्विक चेतना की वह प्रहरी थी।

जव मीरा का जन्म हुआ, भक्ति आदोलन तेजी मे आगे वढ रहा था। समाज मे आध्यात्मिक चेतना जगाने का भरसक प्रयत्न हो रहा था। मीरा को भक्तिमय वातावरण अपने पिता के घर मे वचपन से ही मिल गया। उसी प्रभाव मे वह भक्ति के पथ पर आगे वढती गई। छोटी आयु मे विवाह हुआ, अभी वच्ची ही थी कि माँ का देहात हो गया। अपनी ससुराल मे भी वह भक्तिभावना मे तल्लीन रही। समय वरावर प्रहार करता रहा, छोटी सी आयु मे वैधव्य, फिर ससुर और पिता की छत्रछाया भी छिन गई। यही वह समय रहा होगा, जव मीरा ने अपने को भक्ति के लिये पूर्णतया समर्पित कर दिया। लेकिन उसके सामने

जितनी बाधाएँ आई, वह भक्ति के पथ पर उतने ही वेग से आगे बढती रही ।

भक्तिकाल के इतिहास पर दृष्टि डालें तो मालूम होगा कि तीसरी से नवी शताब्दी के बीच तमिल प्रदेश मे आलवार भक्तो का उदय हुआ, जो गा गाकर विष्णु भक्ति का प्रचार करते थे । इन भक्तो मे एक महिला भक्त भी थी, जिनका नाम था—गोदा आडाल । इस वैष्णव भक्त वयित्री का तमिल साहित्य मे वैसा ही संमान है, जैसा हिंदी साहित्य मे मीरा का है। दोनो मे गोपीभाव की भक्ति है । दोनो की उपासना विधि मे समानताएँ मिलती हैं । इसी प्रकार सभवतः आपको मालूम होगा कि कर्नाटक मे मीरा के समान भक्त महिला अक्का महादेवी हुई । उनके जीवन का त्याग तथा भक्ति मे मीरा के साथ बहुत कुछ साम्य प्रतीत होता है, बारहवी शताब्दी का समय कर्नाटक मे एक धार्मिक आदोलन का समय था । उस समय 'अनुभव मटप' नामक एक धार्मिक सभा स्थापित हुई थी, जिसमे धार्मिक विचारक अपने अपने अनुभव रखते, विचार विनिमय होता और जो श्रेष्ठ विचार होते उन्हे सूक्ति या वचनो के रूप मे निबद्ध किया जाता । इस सभा मे भेद भाव, ऊँच नीच, स्त्री पुरुष का कोई विचार नही था। महिलाएँ पुरुषो के समान धार्मिक चिह्न ग्रहण करती और धार्मिक चिह्न ग्रहण करती और धार्मिक लाभ मे बराबर की भागीदार मानो जाती थी । चौदहवी शताब्दी मे कश्मीर मे इसी प्रकार भक्त महिला लल्लेश्वरी ने अपने भक्ति काव्य से जनमानस को प्रभावित किया था । प्रेम और सहिष्णुता का सदेश देनेवाला उनका काव्य उनकी आत्म अनुभूति का पुज है । सोलहवी शताब्दी मे राजस्थान मे सत मीरा ने भक्तिरस की निर्मल धारा प्रवाहित की थी । इन्होने अन्य भक्त महिला वयित्रियो के समान ही क्षेत्रीय भाषा के साहित्य का गरिमा प्रदान की। आध्यात्मिकता की जो ज्योति जलाई, उससे मानव हृदय सदा पवित्र होता रहेगा । इन भक्त महिलाओ के साहित्य, जीवन इत्यादि के ऊपर यदि अभी तक कोई तुलनात्मक ग्रथ न लिखा गया हो तो ऐसा प्रयास किया जाना चाहिए और उसे सभी प्रातीय भाषाओ मे उपलब्ध होना चाहिए ।

भक्त लल्लेश्वरी और मीरा के पारिवारिक और सामाजिक जीवन पर यदि हम दृष्टि डाले तो हमे मालूम होगा कि दोनो ही कठिन परिस्थितियो मे से गुजरी हैं । जबकि भक्त आडाल और भक्त अक्का महादेवी की पारिवारिक और

सामाजिक परिस्थितियाँ उनकी भक्ति साधना के लिये सामान्यतः अनुकूल रही हैं। हम जब मीरा के समय की ओर दृष्टि डालते है तो हम अनुमान लगा सकते हैं कि मीरा ने कितनी प्रतिकूल परिस्थितियो का सामना किया होगा। सामाजिक अस्थिरता, सामन्ती षड्यत्रो तथा सर्वत्र अशाति के उस वातावरण मे भारतवासियो की स्थिति अच्छी नही थी, परतु सब से अधिक शोचनीय थी महिलाओ की स्थिति। उस समाज मे सकुचित विचारो के बधन इतने बढ गए थे कि महिलाओ को कोई भी सामाजिक अथवा सास्कृतिक अधिकार प्राप्त नही थे। इतना ही नही, समाज मे बाल विवाह, वृद्ध विवाह, बेजोड विवाह, सती प्रथा, परदा प्रथा, जैसी अनेक कुप्रथाएँ प्रचलित हो गई थी। कितना अतर आ गया था हमारे सामाजिक दृष्टिकोण मे। प्राचीन काल मे नारी के लिये जितना समान था, इस युग मे वह प्राय सभी मानवीय अधिकारो से वचित हो गई। मीरा उस जमाने की शायद पहली नारी थी, जिसने इन रीति रिवाजो को चुनौती दी। वह सत्य के पथ की एक सत्याग्रही थी। वह किसी मत विशेष की प्रचारिका नही, उनकी भक्ति उदार एव पावन है। वह अपनी बात मे समूचे समाज की बात कह गई है, उस बात मे सामाजिक दशा पर जो असतोष व्यक्त किया गया है, यद्यपि वह भक्ति प्रभाव से ओतप्रोत है, तथापि इस बात से इनकार नही किया जा सकता कि वह इसके लिये स्वय व्यथित है।

मीरा की भक्ति अपरा भक्ति है। उसकी समस्त आकाक्षाएँ अपने उच्चतम लक्ष्य पर ही केद्रित हैं। उसका सारा काव्य वेदना से भरा हुआ है। उसमे सारे समाज की मन स्थिति का चित्र सामने आता है। इतनी विपरीत परिस्थितियो मे उसके असतुलन शक्ति का आधार था उसका आत्म उत्कर्ष। मीरा का यह आत्मविश्वास और आत्मबल दूसरो के लिये एक प्रकाश की किरण हैं। उसने लोगो को जीवन के उच्चतर धरातल पर जीना सिखाया, उसने लोगो की सोई हुई चेतना को अपने करुणामय स्वरो से जगाया। वह नारी जाति को आध्यात्मिक विकास का अधिकार दिलाना चाहती है। यह सत्य ही कहा गया है कि मीरा ग्रामवासिनी भारतीय नारी की गीतात्मक अनुभूति है।

आजादी पाने के लिये हमारे महापुरुषो ने देशवासियो मे जब चेतना जगाई, उसके साथ ही यह अनुभव किया गया कि पिछडेपन और सामाजिक विषमताओ को दूर किया जाना जरूरी है। इस नई चेतना के साथ महिलाओ की जागृति के लिये जोरदार कदम उठाए जाने लगे। सती प्रथा, बाल विवाह को रोकने तथा विधवाओ के विवाह के लिये कानून बने। महात्मा गाधी जी ने स्वतन्त्रता के अहिंसक आदोलन मे महिलाओ को भाग लेने के लिये प्रेरित किया। आज जो

चीज आसान और स्वाभाविक जानी जाती हैं, उनके पीछे कितना लवा इतिहास है। आज हमारे देश मे महिलाओ की शिक्षा, रोजगार एव जीवन के सभी क्षेत्रो मे भाग लेने के अवसर प्राप्त हैं, वह अपनी प्रतिभा से देश के उच्च से उच्च स्थान को सुशोभित कर सकती है। परतु हम जानते है कि महिला जागृति का काम शहरी क्षेत्रो मे जितना हो पाया है, उतना ग्रामीण क्षेत्रो मे नही हो पाया है। वास्तव मे यह काम बहुत बडा है। सरकार की ओर से जितने प्रयास हो रहे हैं, उनके साथ दूसरी समाजसेवी सस्थाओ का योगदान भी आवश्यक है। अभी तक रूढियाँ, कुरीतियाँ कही तो अपने पुराने भेष मे जड जमाए हुए है और कही वे नए परिवेश मे उपस्थित होकर हमारी प्रगति मे बाधाएँ पैदा करती है। हम चाहते हैं कि महिला जागृति का काम तेजी से आगे वढे। गाँव गाँव मे ऐसी महिला सस्थाएँ बनें, जो प्राचीन और नवीन के निर्दोष अशो को ग्रहण करके समाज उत्थान का दायित्व पूरा कर सकें।

मुझे प्रसन्नता है कि महिला मडल, उदयपुर ने ग्रामीण अचलो की ओर अधिक ध्यान दे रखा है। आज के समय मे देश भर मे आर्थिक पिछडापन दूर करने, नई सामाजिक एव सास्कृतिक चेतना के लिये जो काम हो रहा है, उस मे महिलाओ का अधिक योगदान अपेक्षित है। समय की यही माँग है कि महिलाएँ समाज सेवा के काम मे ज्यादा से ज्यादा आगे आएँ।

मीरा का जीवन और साहित्य भारतीयो के लिये एक महान् प्रेरणा है। हमे मीरा के सात्विक साहित्य से लाभ उठाना चाहिए। मुझे आशा है कि मीराप्रतिष्ठान ने मीरा के सदेश को जनसुलभ बनाने का जो कार्यक्रम वनाया है, वह उपयोगी सिद्ध होगा। मैं आपके प्रयासो की सफलता की कामना करता हूँ।

साहित्य और राष्ट्रोत्थान

आज तुलसीदास जी द्वारा रचित रामचरितमानस का रचना दिवस आप लोग मना रहे है और इस उत्सव मे आपने मुझे आमत्रित किया, इसके लिये आप सबके प्रति आभारी हूँ। नागरीप्रचारिणी सभा हिंदी की सबसे पुरानी संस्था है और सभी जानते हैं कि इस संस्था ने सर्जनात्मक ढग से हिंदी की महत्वपूर्ण सेवा की है। लगभग दो हजार ग्रथो का प्रकाशन इस सस्था ने किया है और आए दिन कोई न कोई महत्वपूर्ण उत्सव वह करती रहती है, अपने उपयोगी कार्यों के कारण इस सस्था को सबका स्नेह और सहयोग प्राप्त होना एक स्वाभाविक बात है।

तुलसीदास ने चार सौ दो वर्ष पूर्व रामचरितमानस की रचना की थी, हिंदी जगत् के लिये तब से निरतर यह ग्रथ प्रेरणा का अनत स्रोत रहा है। राष्ट्रपिता महात्मा गाधी को इस ग्रथ से प्रेरणा मिली और उनके जीवन पर इसकी छाप थी, जिसे उन्होंने सर्वत्र स्वीकार किया। तुलसीदास जी एक सामान्य परिवार मे उत्पन्न हुए थे, दुख और वेदना के बीच उनका जीवन बीता था, किंतु उन्होने जो रचनाएँ की, उनके द्वारा वह मानव जाति के लिये उन्नयन का सोपान प्रस्तुत कर गए है। यह सर्वविदित है कि जनजीवन मे जब जब विचार के अमृत की आवश्यकता पडी, तब तब इस देश को ऋषियों, सतो और महापुरुषो ने प्रेरणात्मक विचार दिए और लोकहित के लिये मानवीय चिंतन दिया है।

सभी भाषाओ मे प्रायः रामचरित के ऊपर महाकाव्य लिखे गए हैं। आदि कवि वाल्मीकि भी रामचरित के गायक थे। विद्वानो के बीच सस्कृत भाषा मे अपना सदेश पहुँचाना, जितना साधनापरक कार्य है, लोकमानस के भीतर जीवन के गूढ तत्वो और मत्रो को उद्बुद्ध करना, उससे भी कही कठिन है, तुलसीदास ने काशी मे रहकर भी सस्कृत मे नही बल्कि लोकभाषा मे ही रचना की और ऐसी रचना की, जिससे आध्यात्मिक तत्व चयन केवल सस्कृत मे ही नही अन्यान्य भारतीय भाषाओ मे भी उन्होंने किया। रामचरितमानस केवल इस देश के साहित्य की ही सपदा नही है, वरन् ससार के विभिन्न देशों मे रामकथा मिलती है, रामकथा को देश और काल के परिवेश मे इस प्रकार तुलसीदास ने सयोजित किया कि प्रेरणा

के एक अनन्य प्रकाश स्तभ के रूप मे यह चार सौ भी अधिक वर्षों से ज्योतिदान करता चला आ रहा है और दैविक, दैहिक और भौतिक तापो से मुक्ति का रास्ता बता रहा है। वह ग्रंथ लोगो के दिलो को जोडनेवाला ग्रंथ है, नाना प्रकार की दार्शनिक, आध्यात्मिक और सास्कृतिक विचार-धाराएँ जो तुलसी के देश काल मे चल रही थी, उन सबको उन्होने इस प्रकार सँजोया कि सबका अमृत पचगव्य की भाँति उसमे भर गया और इसका रसपान कर सभी आनद का अनुभव करने लगे, यह सत्य है कि यह कालजयी रचना आज भी अमृत लुटाती है।

उत्तर भारत मे राष्ट्र की मुक्ति के आदोलनो के समय यह ग्रथ सत्याग्रहियो का सबल रहा तो दुःखो से पीडित जनता इससे जीवनशक्ति ग्रहण करती रही। तुलसीदास की इस कृति की ससार के सभी देशो के विद्वानो ने प्रशसा की है। वह राष्ट्र की सास्कृतिक चेतना की धरोहर है। तुलसीदास की कृतियो का भारत की सभी भाषाओ और ससार की सपन्न भाषाओ मे अनुवाद हो चुका है और रामकथाएँ जो दूसरी भाषाओ मे हैं वे हिंदी मे आ चुकी हैं और जो शेष हैं, हमारा विश्वास है कि वे भी जल्दी ही हिंदी मे आ जाएँगी। आज के देश और परिवेश मे रामचरित-मानस की अपनी सार्थकता है, उसमे अनुशासन, सयम का जो मत्र है वह देश और समाज को ऊँचा उठा सकता है। लोग तभी महान् कार्य कर सकते हैं यदि उनके भीतर श्रद्धा और विश्वास हो, रामचरितमानस उच्च एव आदर्श जीवन का सदेश सबको देता है।

तुलसीदास का रामचरितमानस किसी एक जाति, धर्म या सप्रदाय की सपत्ति नही है, बल्कि यह उन सभी की सपत्ति है जो लोकहित और उसके अभ्युदय मे विश्वास रखते हैं। भारत की मनीषा का सर्वोपरि गुण विविधता मे एकता देखने का था। उनका यह अटल विश्वास था कि सुदर के समन्वय से, भेद भाव मिटाने से, राग विराग से मुक्त होकर सेवा करने से, लोक मगल मे सहयोग देने से तथा सत्व को उजागर करने से राष्ट्र भी ऊँचा उठता है और मनुष्य जाति भी। देखा जाए तो मानस हमे यही शिक्षा देता है।

मैं इस समारोह का उद्घाटन करने मे प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूँ। मेरा विश्वास है कि इन ग्रथो मे जो कुछ लिखा गया है, उसे आचरण मे उतारा जाएगा, तभी रामचरित मानस-रचना-दिवस मनाना

सार्थक होगा। मैं आप सबको धन्यवाद देता हूँ कि आपने रामचरित-मानस का रचना दिवस बनाकर उन मूल्यों को श्रद्धांजलि देने का विशेष आयोजन किया है जिनके कारण यह देश उन्नत और जागृत है तथा उन मूल्यों को अपनाने से यह देश आगे बढ़ेगा, जनता में जागरूक सत्य का आत्म-साक्षात्कार करने की भावना बढ़ेगी।



साहित्य के द्वारा मानव-हित की साधना

मैं आपका आभारी हूँ कि आपने मुझे आज के समारोह मे उपस्थित होकर भाई वीर सिंह को अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करने का मौका दिया।

आज से एक सौ तीन साल पहले भाई वीर सिंह जी का जन्म एक सपन्न और प्रतिभाशाली परिवार मे हुआ था। बचपन से ही उन्हें ऐसा वातावरण मिला जिसके प्रभाव से उनकी प्रतिभा के विकास मे उपयुक्त सहायता मिलती रही। उनके पिता डा० चरणसिह स्वय एक अच्छे कवि और विद्वान् थे। साहित्य साधना की जो परपरा इस परिवार मे रही, उसे भाई वीर सिंह, देखा जाए तो उस ऊंचाई पर ले गए कि पजाबी भाषा ही परिष्कृत हो गई। उससे पहले यह सभी जानते हैं कि पजाबी भाषा उपेक्षित थी। भाई वीर सिंह जी ने इस भाषा मे उच्च कोटि के ग्रथ लिखकर, उसके साहित्य को ही समृद्ध नही किया, बल्कि इसे एक नई दिशा दी। पंजाबी साहित्य मे एक नए युग का सूत्रपात किया।

भाई वीर सिंह के जीवन, व्यक्तित्व और कृत्यो पर दृष्टि डाली जाए, तो हमे मालूम होगा कि वह स्वय एक सस्था थे। उन्होने नाना भाव से साहित्य, धर्म और समाज की सेवा की थी। वह कोरे आदर्शवादी नही थे, बल्कि कहा जाए तो एक सच्चे कर्मवीर थे, जिन्होने केवल साहित्य की साधना ही नही की, उन्होने समाज और शिक्षा के क्षेत्र मे भी पर्याप्त सेवा की थी। उन्होने कई शिक्षा सस्थाएँ खोली, उनका सचालन किया और आधुनिक शिक्षा की ओर लोगो को प्रेरित किया। मानववादी होने के नाते वह समाज कल्याण और समाज सुधार के लिये ही कार्य करते रहे। नेत्रहीनो और अपाहिजो के लिये उन्होने केद्र खोले, समाज के दलित, दीन और उपेक्षित लोगो को ऊपर उठाने का काम किया। उनके हृदय की कोमलता, विचारो की विशालता, चरित्र बल की उज्ज्वलता, सवेदनशीलता, देश भक्ति, प्रकृति प्रेम तथा विनभ्र भावना ने ही उनके व्यक्तित्व को समृद्ध किया था। उसी के अनुरूप वह उच्चकोटि का साहित्य भी देशवासियो को दे सके। यही चीज है जो आनेवाली पीढियो को प्रेरणा देती रहेगी।

यह हमारे देश का गौरव है कि हमारे देश मे प्राचीन काल से ही ऐसे सत और कवि होते रहे हैं, जिन्होने मानवता को उच्च

धरातल पर जीने का मार्ग बताया है । ईश्वर के साथ मनुष्य का नाता जोडकर विश्वबंधुत्व की शिक्षा दी है । लोगो को सहिष्णुता, सच्चाई, पवित्रता, परोपकार और पुरुषार्थ के लिये प्रेरणा दी है । भाई वीर सिंह उसी परपरा की देन थे । देशवासी उन्हे कभी नही भूल सकते । साहित्य के क्षेत्र मे वह सदा समादर से स्मरण रहेंगे । आज हमारा यह काम है कि उनके जीवन और कार्यों से प्रेरणा लेकर हम समाज और मानवता की सेवा के लिये कुछ रचनात्मक कार्य करें । मैं समझता हूँ कि साहित्यकार की युग सदर्भ मे एक महत्वपूर्ण भूमिका है । आज हमे कल्पना लोक की सैर के साथ साथ इस वास्तविक जगत् मे विचरण करना है, देश के ग्रामीण अचलो की ओर ध्यान देना है, जहाँ विकास की सबसे अधिक आवश्यकता है ।

कहा गया है—'हित सपादयति इति साहित्यम्' अर्थात् जिससे मानव हित सपादित हो वह साहित्य है । जीवन मूल्य साहित्य मे प्रतिष्ठित होकर ही मानव जीवन के विकास मे सहायक होते हैं । इसलिये, साहित्य का केंद्र बिंदु है समाज, उसमे रहने वाला मानव । उसको उन्नत और सुखी बनाने मे सहायक होना ही उसका धर्म है । उसे अपूर्णता से पूर्णता की ओर अग्रसर करना ही उसका परम उद्देश्य होना चाहिए । यह कथन सत्य ही है कि जो साहित्य मनुष्य को अज्ञान, रोग, दरिद्रता और परमुखापेक्षिता से बचाकर उसमे आत्मबल का सचार करता है, वह निश्चय ही अक्षय निधि है । हमारे देश के महान् साहित्यकारो ने इस तथ्य को सदैव अपने सामने रखा है । उनका यही प्रयत्न रहा है कि लोकहित से सबद्ध भावो का प्रतिपादन उनकी रचनाओ मे होता रहे । संसार के सभी धर्मों तथा हर अच्छे साहित्य ने मानव को जीवन के उच्च आदर्शों की ओर ही प्रेरित किया है । परन्तु आज भी मानव समाज पर दृष्टि टिकती है, तो ऐसा अनुभव होता है कि मानव अभी तक कृत्रिम संकीर्ण दीवारो को नहीं तोड सका है । आज समय आ गया है कि मनुष्य इन सकीर्णताओं से ऊपर उठे ।

आज हमारे देश मे इस दिशा मे एक महान् प्रयास किया जा रहा है । समाज से गरीबी, पिछडापन, अंधविश्वास, सामाजिक कुरीतियो तथा असमानताओ को दूर करने के लिये, एक नए आर्थिक कार्यक्रम का सूत्रपात हुआ है, इसे सफल बनाने के लिये हमारा सबका सहयोग अनिवार्य

है। मैं तो समझता हूँ कि आज का साहित्यकार इस दिशा मे पूरे मनोयोग से अपना योगदान दे, तो बडा काम हो सकता है।

यह तो सभी जानते हैं कि यदि आर्थिक दशाएँ सामाजिक जीवन को प्रभावित करती है तो सामाजिक परपराएँ आर्थिक जीवन से सबद्ध हैं। इसलिये समाज से सकीर्णताओ, अधविश्वासो, कुरीतियो, भेद भावनाओ, दुर्व्यसनो को दूर किया जा सके, तो सामाजिक जीवन मे एक क्रातिकारी परिवर्तन लाया जा सकता है। इसी प्रकार कर्तव्यपरायणता, श्रम, निष्ठा, आत्मसयम और राष्ट्रीय दृष्टिकोण की प्रतिष्ठा हो तो आर्थिक सपन्नता की संभावनाएँ अधिक उज्ज्वल हो सकती हैं। मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि हमारे समाज मे आध्यात्मिक, नैतिक और सामाजिक मूल्यो की अधिक से अधिक प्रतिष्ठा होनी चाहिए। इसलिये मेरा नवोदित साहित्यकारो से यह अनुरोध हैं कि वे इस राष्ट्रीय चेतना के विस्तार तथा सामाजिक उत्थान मे सक्रिय सहयोग दे। वास्तव मे यही हमारी भाई वीर सिंह जी के प्रति सच्ची श्रद्धाजलि होगी।

इन्ही शब्दो के साथ मैं आज के समारोह का उद्घाटन करता हूँ और मुझे यहाँ उपस्थित होने का अवसर प्रदान करने के लिये आप सबको मैं पुन धन्यवाद देता हूँ।



साहित्यकारों एवं कलाकारों का दायित्व

भारत विकास परिषद् के तत्वावधान में आयोजित राष्ट्रीय समूहगान-प्रतियोगिता-समारोह में उपस्थित होने का जो सुयोग आपने मुझे दिया, उसके लिये मैं आपको धन्यवाद देता हूँ। आपकी संस्था पिछले कई वर्षों से जन उपयोगी कार्यक्रमों द्वारा लोगों में नवचेतना के विस्तार एवं भारतीय संस्कृति के अनुकूल आत्म अनुशासन, राष्ट्रीयता, पारस्परिक सहयोग, एकता एवं मेलजोल की भावना सबल बनाने के लिये सक्रिय है, इसके लिये आपकी संस्था प्रशंसा की पात्र है। आज जरूरत इस बात की है कि प्रबुद्ध और चिंतनशील व्यक्ति जनमानस को नई दिशा की ओर प्रेरित करें।

कलाकार अपनी कला के द्वारा सारे समाज का चित्रण करता है। वह युग की वास्तविकता को ग्रहण करने से ही उत्कृष्ट कला का निर्माण करता है। अपने युग का प्रतिनिधि कहलाता है, क्योंकि वह अपनी कलाकृतियों द्वारा समाज को प्रभावित ही नहीं करता उसे बदलने की शक्ति भी रखता है।

वास्तव में, संगीत और कला, हमारे भाव जगत् की अभिव्यक्ति के मुख्य साधन माने जाते हैं। संतोष का जीवन में विशेष स्थान है, मनोरंजन का इसमें अपना ही गुण है। परंतु इस छोटी सीमा में बांधना संगीत को एक छोटे स्तर पर लाकर खड़ा करने जैसा है। यह तो साधन रहा है, उस व्यापक विचारक क्रांति का, जिसमें आध्यात्मिकता, भक्ति, शौर्य, नैतिकता और देश भक्ति के स्वर गूंजते हैं। आजादी के आंदोलन के समय राष्ट्रीयता के गीतों ने देशवासियों को क्या उस गहरी निद्रा से झँझोड़ा नहीं था? प्रभात फेरियों में पुरुषों और महिलाओं की टोलियों ने देशवासियों में नया उत्साह और जोश पैदा नहीं किया था? यह सभी जानते हैं कि उसमें हमारे साहित्यकारों ने एक बड़ी भूमिका निभाई थी।

आज देश स्वतंत्र हैं। देश की हर जिम्मेदारी हम पर है, इसे बनाना, सँवारना हमारे हाथ में है। हमारे देश में संगीत, नृत्य तथा नाटयकला की एक बहुत पुरानी परंपरा है। साहित्य तथा अन्य ललित कलाओं की भाँति वह हमारी संस्कृति का अंग है। हमें अपनी ललित कलाओं को कायम

ही नही रखना है, हमे उन्हें और उन्नत करना है। यह आवश्यक है कि नवचेतना के स्वर लोगो तक पहुँचे और उस नई भावना को जागृत कर दें, जिसे पाकर कौम तरक्की की ओर वढती है।

संगीत का उद्देश्य है कि वह भावना मे एकत्व स्थापित करे और इस प्रकार पारस्परिक सहयोग और सगठन को दृढ करने मे सहायक वने। सामूहिक अनुभूति के विस्तार मे सामूहिक गान का महत्व है। इसमे वह शक्ति है, जो मानव हृदय को स्पर्श कर सकती है और उसे केंद्रित स्वार्थ की परिधि के ऊपर उठाकर उसमे 'बहुजन हिताय' और 'वहुजन सुखाय' की भावना जागृत कर सकती है। आज हमारी सारी शक्ति अज्ञान, दरिद्रता, वैषम्य, शोषण जैसी वुराइयो को समाज से दूर करने की ओर होना चाहिए। इसके लिये आज ऐसी रचनाएँ होनी चाहिए जो जनमन मे सामाजिकता के आदर्श संस्कारो को स्थापित कर सकें और उन्हें एक नई दृष्टि दे सकें। नए भारत के निर्माण के लिये यह समवेत स्वर देशवासिवो के रोम रोम को जगा दें, एक नया उत्साह भर दें उनके जीवन मे और यह उचित उक्ति सत्य हो जाए :—

कदम चूम लेती है खुद आके मजिल,
मुसाफिर अगर आप हिम्मत न हारे।

राष्ट्र को मजबूत और खुशहाल बनाने के लिये हमे दत्तचित होकर कार्य करना होगा, यही समय की माँग है। देश के साहित्यकार और कलाकार इस राष्ट्रीय दायित्व को पूरा करेंगे, ऐसी आशा ही नही की जाती, ऐसा विश्वास है।

आज जिन कलाकारो ने पुरस्कार प्राप्त किए, उन्हें मैं हार्दिक बधाई देता हूँ और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

चित्रकला

चित्रकला सगम के तत्वावधान मे आज के इस समरोह मे उपस्थित होने की मुझे प्रसन्नता है। चाचा नेहरू बाल दिवस के उपलक्ष मे स्पाट पेंटिंग तथा निबंध प्रतियोगिता का जो आयोजन किया गया था, उसमे विजेताओं को पुरस्कृत करके उनकी योग्यता एव प्रतिभा को प्रोत्साहित करने मे ऐसे कार्यक्रमों को मै महत्वपूर्ण समझता हूँ। जिन युवक और युवतियो ने पुरस्कार प्राप्त किए, उन्हें मैं बधाई देता हूँ और कामना करता हूँ कि वे अपनी इस प्रतिभा को विकसित करके उच्च कोटि के कलाकार और लेखक बनेंगे और देश के साहित्य और कला की उन्नति मे अपनी मौलिक रचनाओं से अपना सहयोग देंगे। आज हमारे ये बालक जो कुछ ग्रहण करेंगे और रचनात्मक प्रवृत्ति मे जितनी दिलचस्पी लेंगे, उससे उनका अपना व्यक्तित्व भी निखरेगा और राष्ट्र को ऐसे कलाकार प्राप्त होंगे जो देश का नाम चमका सकें, देश को कुछ दे सकें। हम यही चाहते है कि आने वाली पीढियाँ, जीवन के हर क्षेत्र मे वर्तमान युग से भी आगे हो और परपरागत जो सास्कृतिक निधि हमने पाई है, उसको हम सुरक्षित भी रखे और उसे अधिक समृद्ध भी बनायें।

आज प्रतियोगिता का युग है, उसके मुकाबले हमे किसी से भी पीछे नही रहना है। ज्ञान, विज्ञान, कला और साहित्य के क्षेत्र मे निरतर आगे बढना है। हमे चाहिए कि हम बालको और बालिकाओ को ऐसी रचनात्मक प्रवृत्ति के लिये प्रोत्साहित ही नही करें बल्कि उन्हे मार्ग दर्शन भी दें, जिससे वे अपनी कला का विकासत कर सकें। ससार भर की कलाकृतियो और इस क्षेत्र मे होने वाली नित नई उपलब्धियो की जानकारी जुटा सकें, इससे एक व्यापक दृष्टि समुन्नत होगी और उन ऊँचाईयो पर पहुँचने को चेष्टा होगी, जिसपर पहुँचकर उनसे भी ऊची चोटियो के दर्शन होते हैं। विकास के लिये कोई अतिम सीमा नही है, यह निरतर बढने वाली धारा है, जिसे अवरोध नही गति चाहिये और जिसे पाकर ही हम अपनी मजिल तक पहुँच सकेंगे। निचली घाटियो से ऊँची चोटियो की ओर बढना ही प्रगति है। बच्चो मे हमे यह धारणा जागृत करनी है, उसमे यह आत्मविश्वास जगाना है कि इन ऊँचाइयो तक इन्हे पहुँचना है। और वहाँ तक जाने के लिये यदि यह मजबूती से कदम आगे बढाएँगे तो इच्छित फल प्राप्त होगा।

आपको मैं बधाई देता हूँ और आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

भारतीय समीक्षा

मैं इस समारोह के आयोजको का बहुत कृतज्ञ हूँ कि उन्होने मुझे आज आप सब साहित्य रसज्ञो और साहित्य प्रेमियो के बीच आकर दो शब्द कहने का अवसर दिया है।

हम लोग अक्सर अपने देश की सस्कृति की चर्चा करते समय उसके मूल तत्व 'अनेकता मे एकता' की बात कहना कभी नही भूलते है। एक प्रश्न जो मेरे मन मे सदा आया करता है, वह यह है कि इस 'एकता की प्रतिष्ठा और रक्षा' के लिये हम लोग क्या कर रहे है और जो कर रहे हैं, कितने मनोयोग से कर रहे है और क्या वह काफी है? क्या यह 'एकता' कोई ऐसा तत्व है जो अपने आप विकसित हो गया है और चाहे हम कुछ भी करते रहे, या न करे, वह सदा इसी तरह विकसित होता चला जायेगा? बात वास्तव मे ऐसी नही है, यह एकता हमारे पूर्वजो के अथक परिश्रम का फल है और इसे बनाए रखने के लिये अथक परिश्रम के रूप मे हमे इसका मोल चुकाते रहना पडेगा। जैसे स्वतन्त्रता का हमने मोल चुकाया, वैसे ही एकता का मोल चुकाना भी जरूरी है। भारत जैसे अनेक धर्मो, विभिन्न जाति वर्णो, सप्रदायो, विविध भाषाओ बोलियो वाले देश मे एकता का मोल स्वभावत कुछ ज्यादा ही होना चाहिए और सच बात यह है कि इस एकता के अभाव मे हमारी स्वतन्त्रता भी अधूरी और अस्थिर ही रहेगी।

अगर साहित्य का समाज से कुछ संबध है और अगर सोद्देश्य होता हैं तो उसका सबध सबसे पहले अपने समाज से होना चाहिए और उसकी जडे अपने समाज मे अपनी धरती मे फैली होनी चाहिए। मानव समाज की बेहतरी से बडा उद्देश्य साहित्य का और कुछ नही हो सकता। हमारे देश मे और हमारे समाज मे आज सबसे बडी आवश्यकता इसी बात की है कि हम विविध भाषा-भाषी प्रदेशो मे बिखरे हुए अपने समाज को जाने, उसकी आशाओ आकाक्षाओ को समझें, उनके चिंतन की दिशाओ से परिचय प्राप्त करे। अत मुझे यह बात बड़ी ही प्रिय लगती है कि हमारा साहित्य भले ही विविध माध्यमो मे अभिव्यक्ति पाता हो, पर उसकी आत्मा एक है। अगर आज का साहित्यकार साहित्य रसिको और साहित्य के पाठको को इस एक तथ्य के प्रति जागरूक

बना सके तो मैं समझता हूँ, वह उस दौर की अपनी एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी पूरी करेगा।

किसी समाज में साहित्य सृजन की जितनी महत्ता होती है, उससे किसी तरह कम महत्व साहित्य समालोचना का नहीं होता। स्रष्टा की मानसिकता से पाठक का साक्षात्कार करा पाना कोई मामूली उपलब्धि नहीं होती और उसके लिये भी एक विशिष्ट स्तर की सृजन प्रतिभा अपेक्षित होती है। साहित्य समीक्षा की समृद्धि बहुत हद तक सृजन की समृद्धि का भी दर्पण होती है। मुझे प्रसन्नता है कि इन ग्रंथों में जहाँ एक ओर भारत की प्राचीन काव्य शास्त्रीय परपरा का अध्ययन किया गया है, वहीं आधुनिक भाषाओं के समालोचनात्मक प्रयासो का भी मूल्याकन किया गया है। LITERARY CRITICISM IN INDIA और उसके हिंदी सस्करण 'भारतीय समीक्षा' मे भारत की सभी प्रमुख भाषाओ मे समीक्षा के उद्भव और विकास के अध्ययन रूप मे एक साहित्यिक महायज्ञ सपन्न हुआ है। और विशेष प्रसन्नता इस बात की है कि हर भाषा का सर्वेक्षण उस भाषा एव साहित्य के अधिकारी विद्वान द्वारा किया गया है। हमारे देश मे अनेक लोग ऐसे हैं जो अनेक ऐतिहासिक, राजनीतिक कारणों से हिंदी पढ लिख या बोल नही पाते, किंतु भाषाओ के साहित्यिक एवं समालोचनात्मक क्रियाकलाप के बारे में जानने पढने की ललक उनमे भी उतनी ही है। इस दृष्टि से LITERARY DRITICISM IN INDIA की अपनी उपादेयता है क्योंकि मैं समझता हूँ अतत प्रमुख लक्ष्य अपनी बात अधिक से अधिक लोगो तक पहुँचाना ही होना चाहिए। ज्ञान यज्ञ मे ज्ञान का महत्व ही सर्वोपरि है, यों माध्यम के महत्व को भी नकारा नही जा सकता।

इन ग्रंथों के सपादक प्रो० नगेंद्र ने सचमुच अपने प्रयासो के द्वारा एक महत् कार्य की सिद्धि की है। फैलाव मे एकान्विति तथा व्यवस्था के सधान के लिये तलस्पर्शी और व्यापक दृष्टि की अपेक्षा होती है। हमारी सस्कृति और साहित्य की अनेकता मे एकता का मोती उसी के हाथ लग सकता है जो बहुत गहरे पैठ सके। हमारी भाषाओ और साहित्य मे विविधता और अनेकता के तत्वो की तलाश करके तरह तरह के फतवे देने का काम विदेशी विद्वानो ने किसी जमाने मे बडी खूबी से किया था। उसका फल हम लोग आज भी भुगत रहे हैं। परतु ऊपर के सारे बेमेलपन और बेसुरेपन के तुफानी बहाव के नीचे मधुर ध्वनि करके बहने वाली जो अत सलिला है,

उसकी ओर उन्होने अनजाने या शायद जानकर कभी ध्यान नही दिया था। इसीलिये हमारे इतिहासकारो के सामने इतिहास के पुनर्लेखन की विकट समस्या है--पूरी गतिविधियो और विकास प्रक्रिया को सही परिप्रेक्ष्य मे जानने की आवश्यकता है। विभिन्न भाषाओ के समीक्षात्मक साहित्य मे समान तत्वो की तलाश करके उन्हे एक सूत्र मे अनुस्यूत करने का काम कितनी गहरी दृष्टि चाहता है और उसके लिये मूल तत्वो की कैसी अचूक पकड अपेक्षित है यह मैं कल्पना कर सकता हूँ। डा० नगेद्र के काव्य शास्त्रीय अध्ययन का यह एक स्पृहणीय आयाम रहा है। हिंदी के अतिरिक्त अन्य भारतीय भाषाओ की साहित्यिक विवेचनाओ के वे अध्येता रहे हैं--उनकी "भारतीय वाङमय" आदि कृतियाँ इसका पर्याप्त प्रमाण है। यह कार्य करके डा० नगेद्र ने न केवल हिंदी का हित किया है, वलिक अन्य भाषाओ के विद्वानो का मार्गनिर्देश भी किया है। समग्र और व्यापक दृष्टि से भारतीय साहित्य के अध्ययन का यह कार्य पहले पहल हिंदी मे हुआ है यह तो उचित ही है, परतु अन्य भाषाओ मे भी इस प्रकार के अध्ययन होने चाहिए--यह कहने की आवश्यकता नही। मनोवैज्ञानिक स्तर पर देश को इससे अपार लाभ होगा। राष्ट्रीय एकता का वीज हमारे मनो मे पडेगा, तभी वह फलोदभूति होगी और वैदिक ऋषि की वाणी --"समानी व आकूती समाना हृदयानिव, समानमस्तु वो मनो यथा व सु सहासति" तभी सार्थक होगी। मैं डा० नगेद्र का तथा प्रकाशको का इस सुन्दर प्रयास के लिये हृदय से साधुवाद करता हूँ। आप सब लोगो को आज यहाँ उपस्थित होने के लिये धन्यवाद देता हूँ।

भारत की प्राचीन नीतियाँ

किताबघर की ओर से कुछ दिन पूर्व यह अनुरोध किया गया कि मैं आचार्य दीनानाथ सिद्धातालकार द्वारा हिंदी मे सपादित "भारत की प्राचीन नीतियाँ" नामक ग्रथ का विमोचन करूँ। लेखक के बारे मे मुझे जो परिचय दिया गया तथा उनकी देश सेवाओ का वर्णन सुनकर मै बडा प्रभावित हुआ और मैंने इस कार्य के लिये अपनी सहमति प्रदान की।

आचार्य सिद्धातालकार गुरुकुल कागडी के स्नातक है। स्वामी श्रद्धानद जी के शिष्य और सचिव रह चुके है। कई पत्रिकाओ के सपादन तथा स्वतत्रता सग्राम के दिनो महात्मा गाधी तथा डा० राजेद्रप्रसाद के सान्निध्य मे इन्हे कार्य करने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ है। वैदिक धर्म के प्रचार मे भी इनकी सेवाएँ मूल्यवान रही है। अब यह इक्यासी वर्ष के हो गए है। लेकिन इस अवस्था मे भी साहित्यसाधना मे लगे हुए है। वास्तव मे एक सार्थक जीवन की प्रेरणा, ऐसे ही निष्ठाप्रिय कर्मठ व्यक्तियो से भावी पीढियो को हस्तान्तरित होती है।

मै इनकी पुस्तक "भारत की प्राचीन नीतियाँ" का इन दिनो मे जो कुछ थोडा बहुत पढ पाया हूँ, उससे मै यह कह सकता हूँ कि इस ग्रथ के सकलन के लिये भारतीय दर्शन शास्त्रो का गहराई से अध्ययन किया गया है और उसमे वैदिक धर्म के मूलभूत सिद्धातो की पृष्ठभूमि मे उन ही सर्व उपयोगी नीतियो का सकलन किया है जो समय और औचित्य की दृष्टि से आज की परिस्थितियो मे भी उतनी ही तर्कसगत और मूल्यवान हैं, जितनी प्रचीन युग मे थीं। इसके लिये मै लेखक तथा प्रकाशक को बधाई देता हूँ।

हम जानते है कि मानवीय सबधो मे तादात्म्य स्थापित करने, आचार–व्यवहार को नियोजित करने और समाज को एक स्वस्थ और सुदृढ आधार प्रदान करने के उद्देश्य से हमारे देश के ऋषियो और महापुरुषो ने नीति सहिता की रचना की। हमारे देश मे कई नीति ग्रथ लिखे गए है और ये सभी ग्रथ सस्कृत मे हैं। परिस्थितियो और काल के प्रवाह मे ये कहाँ तक अपनी मौलिकता कायम रख सके है यह कहना कठिन है। इसलिये प्रेक्षण की सभावना को हम उपेक्षा भी नही कर सकते। समय समय पर इन्हे परिस्थितियो और युग के अनुरूप ढालने की जो कोशिश हुई है, उससे कही कही इनमे बडा विरोधा–

भास प्रतीत होता है। कई स्थानो पर नीति पथ इतन सँकरा और जटिल हो गया कि उसपर न केवल चलना ही कठिन हो गया, बल्कि उसने हमारी प्रगति को भी रोक दिया और हमे इतना कमजोर कर दिया कि हम अपने आप को वाहरी आक्रमणो से सुरक्षित नही रख सके। यहाँ मेरा तात्पर्य भेद विभेंद, जाति पाँति, छुआछूत इत्यादि उस अमानवीय दृष्टिकोण से है जिसने हमारी सगठन शक्ति और सुदृढना को क्षति पहुँचा कर देश के समग्र व्यक्तित्व को पगु वना दिया था।

सशोधन की आवश्यकता हर युग मे होती है जो लोकोपकारी तथ्य उपयोगी है, उनका चयन वैज्ञानिक और तर्कयुक्त दृष्टि से कर लेने से हम अपने सत्साहित्य का उपयोग राष्ट्र निर्माण के लिये कर सकते है। क्योकि हम जानते है कि हमारी इन चिंतनधाराओ मे शाश्वत मूल्यो की जो प्रतिष्ठा हुई है, वह सार्वकलिक और सार्वजनीन है। व्यावहारिक जगत मे समाज के स्वस्थ स्वरूप, उसकी सुदृढता और सगठन को कायम रखने के लिये नीति दायित्व-वोध से प्रेरित होकर अभिव्यक्त होती है, जिसकी सरचना मे मानव हितो की रक्षा ही मूल लक्ष्य होता है। व्यक्ति का परिवार के प्रति, व्यक्ति का समाज और राष्ट्र के प्रति क्या कर्तव्य है, किन परिस्थितियो मे क्या उपयुक्त है और क्या त्याज्य है ये नीति की बातें है। इसे उत्तरदायित्व की परिधि से अलग नही किया जा सकता। नीति की राह पर चलने का अर्थ उन अनुशासनो और सयमो का पालन करना करवाना है, जो लोक जीवन को सुखी, समृद्ध और स्वस्थ वनने मे सहायक होते हैं।

देश की स्वतत्रता के वाद अतर्देशीय और अतर्राष्ट्रीय नीति निर्धारण मे मानवीय पक्ष को ही हमारे राष्ट्रनायको ने सामने रखा। किसी एक वर्ग, जाति, सम्प्रदाय अथवा धर्म के वर्चस्व के स्थान पर उसे समानता का प्रवल आधार प्रदान किया। इसके लिये हमने चार आदर्श अपनाए। प्रथम है—लोकतत्र, द्वितीय है—समाजवाद, तृतीय है—धर्मनिरपेक्षता और चौथा है गुट-निरपेक्षता। इस नीति निर्धारण मे हमे सवसे वडी सहायता भारतीय वङ्मय की अमूल्य निधि से मिली है। हम यदि अपने प्राचीन ग्रथो मे उपलब्ध जीवन मूल्यो का आधुनिक युग के परिप्रेक्ष्य मे मूल्याकन कर सकें तो समाज उनसे लाभ उठा सकता है। इस दृष्टि से आचार्य सिद्धातालकार जी की यह पुस्तक मुझे आशा है कि वडी उपयोगी सिद्ध होगी। किताववर के प्रवधक और सदस्यो का इस पुस्तक के प्रकाशन मे सहयोग वडा सराहनीय है। मुझे खुशी

है कि आप नैतिक देश भक्ति तथा शिक्षाप्रद पुस्तकों को प्रकाशित करने का कार्य कर रहे हैं। ऐसी पुस्तकें आधुनिक शैली और भाषा में अधिक मात्रा में छपनी चाहिए, जिससे कि भावी पीढ़ी अपने प्राचीन राष्ट्रीय गौरव से परिचित हो और उनमें राष्ट्रीय स्वाभिमान दृढ़ हो। इन्हीं शब्दों के साथ मैं पुनः आपको धन्यवाद देता हूँ कि आपने मुझे आप सबसे मिलने का सुयोग दिया।

सस्कृत पांडुलिपियों की सूची एवं गोरक्षनाथ

दो महत्वपूर्ण ग्रंथ

यह प्रसन्नता की बात है कि आज सबसे भेंट पाने का मुझे सुयोग प्राप्त हुआ और नागरीप्रचारिणी सभा की हिंदी के विकास और समृद्धि की दिशा मे की जा रही सेवाओ के विषय मे कुछ अधिक जानने का मौका मिला। मैं नागरी प्रचारिणी सभा से काफी समय से परिचित हूँ और जानता हूँ कि हिंदी के प्रचार प्रसार मे कार्यरत देश की यह एक प्राचीन सस्था है। राष्ट्रीय जागरण मे अपने रचनात्मक कार्यों द्वारा इसने सराहनीय योगदान दिया है और हिंदी साहित्य तथा भारतीय सस्कृति के प्रचार तथा उन्नयन मे इसने एक विशेष भूमिका निभाई है और निभा रही है। पिछले बयासी वर्षों से राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी की जो सेवा इसने की और जो काम किए, उनसे इसने लोगो के हृदय मे बडा मान पैदा किया है। वास्तव मे किसी सस्था के लिये यह एक बहुत बडी उपलब्धि है।

अपनी हीरक जयती के अवसर पर भविष्य के लिये सभा ने जो योजनाएँ घोषित की थी, उनमे यह भी सकल्प लिया गया था कि सभा श्रेष्ठ साहित्य के निर्माण और प्रकाशन मे अपना विशेष योगदान देगी। यह प्रसन्नता की बात है कि आपकी सस्था इस सकल्प को साकार रूप देने मे काफी उत्साहवर्धक रही है। आपने हिंदी विश्वकोष, हिंदी शब्दसागर, हिंदी साहित्य का बृहद् इतिहास तथा अनेक ग्रथ प्रकाशित किए है। अब तक लगभग दो हजार ग्रथ प्रकाशित हो चुके हैं, जो अपने प्रतिमान के कारण उच्चकोटि के माने जा सकते हैं।

हिंदी के प्राचीन हस्तलिखित ग्रथो की खोज और उनके संग्रह में आपकी सस्था ने अभूतपूर्व कार्य किया है और यह जानकर खुशी हुई कि सभा का हिंदी के हस्तलेखो का सग्रहालय विश्व मे आज सबसे बड़ा सग्रहालय कहा जा सकता है। सस्कृत के हस्तलेखो का भी काफी बड़ा भडार आपने एकत्रित किया है। सस्कृत के हस्तलिखित प्राचीन ग्रथ हमारी मूल्यवान राष्ट्रीय निधि हैं क्योंकि इनमे भारत की मनीषा और अतुल ज्ञान संपदा सरक्षित है। यह हमारे उस वैभवशाली अतीत का प्रमाण

है, जिसके लिये आज भी हमारा मस्तक ऊँचा है और हमेशा ऊँचा रहेगा। लेकिन दुर्भाग्य से कितने ही मूल्यवान हस्तलेख आज प्रवाह और उचित संरक्षण के अभाव में हम खो बैठे हैं, उसका अनुमान लगाना कठिन है। कई ऐसे भी हैं जो उचित योग क्षेम न होने के कारण बिखरे पड़े हैं। अभी कई ग्रंथ हैं, जो प्रकाश में नहीं आ सके। ऐसे ग्रंथों का एकत्रित करना बड़े महत्व का काम है और जो संस्थाएँ यह कार्य कर रही हैं, वे राष्ट्र सेवा का एक महान कार्य कर रही हैं।

अंग्रेजों ने १८६८ ई० से संस्कृत ग्रंथों की खोज का काम सारे देश में आरंभ किया था। रायल एशियाटिक सोसाइटी, बंगाल, बंबई, मद्रास की प्रेसिडेंसी सरकारों ने इस कार्य में जो सेवाएँ की, वे सराहनीय हैं। नागरी प्रचारिणी सभा के आग्रह पर रायल एशियाटिक सोसाइटी ने हिंदी के उपलब्ध ग्रंथों, हस्तलेखों का जो विवरण प्रकाशित किया, उनकी संख्या ६०० थी। इसके उपरांत सोसाइटी ने जब हिंदी का काम समाप्त कर दिया, तो सभा ने इसे सँभाला, और तब से आपकी संस्था हिंदी और संस्कृत ग्रंथों की खोज का कार्य करती आ रही है और यह प्रसन्नता की बात है कि सभा के पास संस्कृत के ग्रंथों का भी एक अच्छा संग्रह हो गया है। हिंदी के ग्रंथों का विवरण, तो आपकी संस्था प्रकाशित करती है पर अब सभा ने भारत सरकार के सहयोग से संस्कृत ग्रंथों का विवरण चार भागों में प्रकाशित किया है। इसके लिये मैं नागरी प्रचारिणी सभा को बधाई देता हूँ। आपने जो सामग्री इन ग्रंथों में उपलब्ध की है, उससे शोधार्थियों और अन्य जिज्ञासु व्यक्तियों को विविध विषयों पर प्राचीन ग्रंथों के विवरणों में बड़ी सहायता मिलेगी। इन ग्रंथों की संख्या लगभग नौ हजार बताई गई है, जिनके विवरण सरकार की विवरण निर्देशिका के अनुसार तै किए गए हैं। सभा ने यह श्रमसाध्य और उपयोगी कार्य करके मेरी दृष्टि में अपनी गौरवपूर्ण परंपरा का निर्वाह किया है। मैं समझता हूँ कि ऐसे ग्रंथों के प्रकाशन से भारत का प्रबुद्ध समाज इस ज्ञानकोष का सदुपयोग कर पाएगा और यह भी जान सकेगा कि हमारी यह संपदा कितनी बड़ी है और आज हम इससे कैसे लाभ उठा सकते हैं।

दूसरा ग्रंथ, जिसका आज प्रकाशोद्घाटन हो रहा है, वह नाथ संप्रदाय के प्रवर्तक गोरक्षनाथ जी के संबंध में है। गोरक्षनाथ देश के ऐसे संत और महापुरुष रहे हैं, जिन्होंने अपने चरित्र और सिद्धांतों द्वारा देश में एक नई साधनात्मक चेतना का विकास किया था। वह

रहस्यवादी साधक थे, जिन्होने रहस्यवाद, नीति, सिद्धात, प्रवचन, सभी को आचरण मे उतारा और समभाव एव समता की दृष्टि को लोक मे उतारा और समभाव एव समदृष्टि का लोक मे विकास कर सामाजिक और सप्रदायिक विषमता के उन्मूलन का काम किया। उनका आदर्श मानवीय है और उन्होने देश के सभी भू भागो के सतो को प्रेरणा देकर भारत मे भावात्मक एकता उत्पन्न की। अतिवाद, अमर्यादा, भोग, आडबर सभी का विरोध उन्होने किया और चेतना द्वारा सतुलित जीवन दर्शन का, जो शैव सिद्धात पर आधारित था, युग के अनुसार प्रचार और प्रसार किया। मेरे विचार मे यह शोध ग्रथ उन सभी बातो को प्रस्तुत करता है, जिनकी जानकारी गोरक्षनाथ के संबध में आवश्यक है।

मुझे विश्वास है कि इन ग्रथो का सदुपयोग सुबुद्ध विद्वान् करेंगे। मैं इन दोनो पुस्तको का उद्घाटन कर प्रसन्नता अनुभव कर रहा हूँ। आशा है कि नागरीप्रचारिणी सभा ऐसे ग्रथो का प्रकाशन करती रहेगी, जिनसे हिंदी वाङमय बढता रहे और दूसरे लोगो के लिये प्रेरणा बनकर, उन्हें उत्साहित करती रहेगी, जो सच्चे अर्थो मे देश की सेवा करना चाहते हैं।

अभिवंदन और अभिनंदन

आदर्श का अनावरण

आज के इस समारोह मे उपस्थित होने तथा वीर महाराणा प्रताप की इस प्रतिमा का अनावरण करने मे मुझे अत्यत प्रसन्नता हो रही है। इस समारोह का आयोजन दिल्ली नगर निगम के तत्वावधान मे रहा है। यह बात, मैं समझता हूँ, सद्य परिस्थिति मैं अत्यत औचित्यपूर्ण है। मैं निगम के अधिकारियो को इस स्तुत्य कार्य के लिये बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि इस प्रकार की और अन्य योजनाएँ वे कार्यरूप मे लावें ताकि हम सब अपने ध्येय की ओर एक आवाज होकर अपने मार्ग पर आगे बढते जाएँ।

मैंने अभी जो बात कही वह ऐसी गूढ बात नही है। मैं सरल शब्दो मे आपके सामने अपने विचार रख रहा हूँ। हमारे सामने जो प्रश्न है, हमे जो काम करना है, वह जनहित का काम है, सबके हित का काम है और हमारा सदैव यह प्रयत्न रहा है कि जहाँ तक हो सके, हम किसी को बिना दुखाए अपने रास्ते पर चलें, जिसके द्वारा सबका हित हो, परमार्थ भी हो, परतु हमेशा ही ये सब बातें साध्य नही होती। यह सभी जानते हैं कि निगम के अधिकारियो की दिल्ली को अधिक सुदर और स्वच्छ बनाने की भी योजना है, यह काम सरल नही, कितनी कठिनाइयाँ इसके सामने हैं। अनधिकृत बस्तियाँ इधर उधर फैली है, कुछ लोग तो खुली जमीन पर अनधिकार बस गए हैं और बेढब बेढगी और भद्दी इमारतें खडी हैं। निगम अधिकारियो को उन्हे साफ करने का अधिकार नही, कोर्ट मे वर्षो तक मुकदमेबाजी चलती है। अब आप ही सोचें कि कब होगी हमारी दिल्ली साफ और सुथरी ?

मैं आशा करता हूँ कि यह महाराणा प्रताप की मूर्ति, इसके दर्शन करनेवालो को अपना अपना कार्य करने मे स्फूर्ति देती रहेगी। कर्तव्यरत तो सभी को होना चाहिए, चाहे वे छोटे हो या बडे। महाराणा प्रताप ने कैसी तीव्र प्रतिज्ञा की थी—"जब तक मैं अपना ध्येय हासिल नही करता, तब तक किसी प्रकार सुख, चैन और आराम की जिंदगी नही जीऊँगा"। इसी भावना से अपना कर्तव्य निभाते रहेंगे। महाराणा प्रताप ने अन्याय के खिलाफ अपना नारा बुलद किया था और जन साधारण का कायरता को त्याग कर निर्भीक बनने का आह्वान किया था।

झुग्गी झोपड़ीवालों को शहरी अनधिकरण में अन्य स्थानों पर, इसलिये बसाया जा रहा है ताकि यह नगर सुंदर बने, और उनकी आवश्यकता अनुसार क्षतिपूर्ति भी हो। अगर इस काम में अधिकारीगण ज्यादती करते हैं तो उनके ऊपर भी उचित देख भाल की आवश्यकता होती है और हमारी व्यवस्था में इसका अंतर्भाव है। जहां तक जनता की बात है, उसे भी भारत की राजधानी को सुंदर और साफ सुथरा बनाने में नगर निगम को सहयोग देना चाहिए। हम सब यह बात सोचें और अपने नागरिक दायित्व को पूरा करने का प्रयत्न करें तो बहुत से विकास के काम हम थोड़े समय में पूरा सकते हैं और इस राजधानी के स्वरूप को और सुंदर बना सकते हैं।

स्वातंत्र्य संग्राम के महान् योद्धा : श्री नेताजी

मैं आपका हृदय से आभारी हूँ कि आपने मुझे आज के इस जयंती-समारोह मे उपस्थित होकर, स्वतन्त्रता के महान् सेनानी को अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करने का अवसर प्रदान किया है। सुभाषचद्र वोस हमारे देश के उन अग्रणी राष्ट्रनायको मे से थे, जिन्हे देशवासी सदा समादर के साथ स्मरण रखेंगे। वह महारे मन व मस्तिष्क से कभी अलग नही हो सकते। उनका स्थान हमारे मन मे है, भूल से भी उन्हें भुलाया नही जा सकता। मैं तो समझता हूँ कि कोई भी गौरवशाली देश अपने उन महापुरुषो को नही भूल सकता, जो अपने देश के लिये ही जिए और देश के लिये ही मिट गए। मुझे प्रसन्नता है कि दिल्ली नगर निगम ने नेता जी सुभाषचद्र वोस की इस भव्य प्रतिमा की स्थापना करके न केवल श्रद्धा की अगाध भावना का परिचय दिया है, वल्कि एक राष्ट्रीय कर्तव्य की भी पूर्ति की है। मैं आपको इसके लिये वधाई देता हूँ।

यह बहुत पुरानी बात तो नही, लेकिन भारत के इतिहास मे यह विशेष महत्व रखती है। इस अरसे मे एक पीढी जवान हो गई। पुरानी पीढी के वहुत थोडे लोग रह गए हैं, जिन्होने स्वतन्त्रता के आदोलन मे भाग लिया था। वह समय ही कुछ ऐसा था, लोगो मे एक असीम उत्साह, एक अनूठी उमग दिखाई देती थी। सारे देश के लिये एक ही लक्ष्य था और वह था आजादी। इसके लिये एक अजीव सी तडप और जोश था उन दिनो, एक ही धुन थी और आजादी के लिये त्याग और वलिदान की एक अनूठी भावना थी। गुलामी का दौर जिन लोगो ने देखा है, वे वता सकते हैं कि गुलामी क्या चीज है। गुलामी और आजादी मे कितना अतर है। किसी ने कहा है कि गुलामी कितनी ही अच्छी क्यो न हो, वह एक अभिशाप से अधिक सुखद नही हो सकती, और आजादी भले ही श्रमसाध्य क्यो न हो, वह फिर भी वरदान है। जव तक देश का स्वाभिमान सोया रहा, देश भी सोता रहा। परतु कर्तव्य ने जव इसे जगाया, तो वह उद्यत हुआ उन वेडियो को काटने के लिये, जिन्होने इसे जकड रखा था। प्रतिभाशाली त्यागमूर्ति देशभक्त आगे आए, उन्होने आजादी के लिये आदोलन की

अगुआई की। देशवासियों को सगठित किया। मुझे वह समय याद है, जब राष्ट्रीय स्तर पर देश के वरिष्ठ नेता कार्य कर रहे थे। देश के उन सिपाहियों मे मैं छोटा था और मैं कोशिश करता था कि यह कदम उनके साथ मिलकर चले। मैं जानता हूँ कि स्वतत्रता सेनानियो के साथ कैसा व्यवहार होता था। उन्हें कितनी कठिनाइयों का सामना करना पडता था। परतु राष्ट्र-नेताओं के साहसिक कदम जिस दृढता से आगे बढते थे, कठिनाइयाँ भी शरमा जाती। कडी से कडी यातनाएँ भी उनके उत्साह को कम नही कर सकी, न जाने कितने ही वीर हँसते हँसते इस मातृभूमि के लिये बलिदान हो गए, तब मिली आजादी। हमारे देशवासियो ने इसके लिये हर गम गवारा किया। हमारे लिये यह सब से बहुमूल्य है। क्योंकि इसके पीछे त्याग, तपस्या और बलिदानो का एक बडा इतिहास है। नई पीढी ने जब आँखें खोलीं, तो समा दूसरा था। उन्होंने महात्मा गाधी, सुभापचद्र वोस, सरदार पटेल, मौलाना अब्दुल कलाम आजाद के बारे मे किताबो मे पढा होगा। जिन्होंने उन्हें देखा नही, इसलिये वह यह पूरी तरह से अनुमान नही लगा सकते कि कितना त्याग और बलिदान किया गया था, कितने कष्ट और यातनाएँ सहन की गई थी। इस अनुभव की अपेक्षा मे जो अतर दिखाई देता है, वह स्पष्ट है। कभी कभी लोग सोचते है कि जो भावना और जजबा उस समय था, देश के लिये काम करने का जो शौक लोगो में उस समय था क्या अब भी है? जितनी उन लोगो मे देश और जाति के लिये भावना थी जिस प्रकार से वह देश के लिये काम करते थे, क्या आज की पीढी मे भी देश के प्रति वही भावना और उत्साह है? ऐसा मैं नही मानता कि हमारे देश मे उत्साह नही है, या प्रतिभा, शौर्य या निष्ठा आदि का अभाव है। इतना अवश्य है कि कभी कभी हम सही दिशा की ओर बढना भूल जाते हैं। परिस्थिति और समय के अनुकूल हमारे काम के तरीको मे अतर तो होगा। लेकिन देखना यह है कि लक्ष्य एक हो, देशवासियों के हितो की अवहेलना न हो, देश को हम सर्वोपरि माने और प्रेरणा लें, उन महान् आत्माओ से जिनकी नस नस मे राष्ट्रप्रेम भरा हुआ था, जिनकी हर साँस देश के लिये थी। जिन मूल्यों को उन लोगो ने ग्रहण किया, उसपर चल कर नाम कमाया, यदि हम उन मूल्यो को जीवन मे उचित स्थान दें तो देश और व्यक्ति दोनो को ही लाभ होगा।

सुभापचद्र वोस के जीवन को एक महान् कर्तव्य के लिये प्रेरित करने-

वाली शक्ति यदि कोई थी तो स्वामी विवेकानद और रामकृष्ण परमहस की शिक्षा थी, जिसे पाकर उन्हे एक रोशनी मिली थी और उन्हें यह मालूम हुआ था कि समाज सेवा से ही आध्यात्मिक शक्ति बढती है। विवेकानद जी के शब्द उनके हृदय मे बस गए थे। जीवन के प्रारभिक और विकास काल मे रोशनी मिल जाए तो जीवन का अभिप्राय ही बदल जाता है। बचपन से ही सुभाषचद्र बोस के विचारो मे एक क्राति दिखाई देती थी। बचपन मे उन्होने एक पत्र अपनी माँ को लिखा था कि मै यह जानने के लिये व्याकुल हूँ कि आप मुझे क्या बनते देखना चाहोगी। प्रभु की कृपा से हमे यह बहुमूल्य जीवन मिला, सुदर और सुदृढ शरीर मिला, बुद्धि और शक्ति मिली परतु किस लिये ? भगवान् ने हमे कितना कुछ दिया है कि हम वह कार्य करें जिसके लिये उसने हमे भेजा है। परतु वास्तव मे क्या हम उस परम शक्ति के लिये कार्य करते है। शायद यही वह प्रश्न था, जिसने जीवन का दृष्टिकोण ही बदल दिया। आत्महित और जगत् हित का आदर्श ग्रहण करके, जिस प्रकार वह आगे बढे, देश के लिये काम किया, उससे सभी परिचित है। किसी ने कहा है कि कई लोग सफलताओ के लिये जन्म लेते हैं, परतु उन्हे उन सफलताओ से सतोप नही होता, जो सहज मे प्राप्त हो जाए। सुभाषचद्र बोस भी ऐसे ही लोगो मे थे। जिस तरह वह शिक्षा मे होशियार थे, वह इडियन सिविल सर्विस की परीक्षा मे जिस ख्याति से उतीर्ण हुए, वह चाहते तो एक बडे अधिकारी बन सकते थे। परतु एक बडा काम उन्हे करना था, वह देशसेवा का काम था और उनका सारा जीवन देश के लिये रहा। वह जहाँ भी रहे, जिस परिस्थिति मे भी रहे, उन्होने देश का ख्याल नही छोडा। कठिनाई और यातनाओ के होते हुए भी, वह अपने निश्चय पर अडिग रहे। ससार का कोई आकर्षण उन्हे अपने पथ से विचलित नही कर सका। वह वीरो के समान जिए और देश के कण कण से उन्हे प्यार था, उसकी आजादी के लिये अपना सर्वस्व न्योछावर करके वीरगति को प्राप्त हुए।

जैसा कि मैंने पहिले भी निवेदन किया कि यह आजादी बहुत बलिदानो और कुर्बानियो के पश्चात् मिली है। नेताजी सुभाषचद्र बोस जी का स्थान उनमे बहुत ही ऊँचा और महान् है। उनका जीवन देश भक्ति, त्याग, शौर्य, साहस, सहानुभूति तथा बलिदान का एक ऐसा आदर्श है, जो सदैव हमारे हृदयो को आलोकित करता रहेगा। हमारे नवजवानो के लिये तो नेताजी सुभाषचद्र बोस शक्ति और जीवन के प्रतीक है, जिनसे कदम कदम पर देश के लिये काम करने की हम प्रेरणा ग्रहण कर सकते हैं।

देश को आजाद कराना एक बड़ा काम था और उसके पश्चात् जो काम है वह है देश को उन्नति की ओर ले जाना, एक सुदृढ़ आर्थिक और सामाजिक आधार तैयार करना, अपने दूसरे भाइयों को आगे ले चलना, यह काम वह हमें सौंप गए हैं। अब यह हमारा दायित्व है कि इन कार्यों को पूरा करें।

हम महापुरुषों के स्मारक स्थापित करते हैं, ताकि हमें उनके जीवन से प्रेरणा मिलती रहे। कठिन समय में हमें बल मिले और देश के लिये काम करने की हममें उनके समान उमंग पैदा हो, हम अपने पथ से विचलित न हो सकें। एक स्थितप्रज्ञ के समान जीवन को देखें। उस महालक्ष्य की प्राप्ति के लिये निरंतर प्रयत्नशील रहें। आज देश को इसकी सबसे ज्यादा जरूरत है। मैं समझता हूं कि नेताजी सुभाषचंद्र बोस की यह प्रतिमा उस स्मारक का प्रतीक है जो आनेवाली पीढ़ियों को सदा प्रेरित करती रहेगी। उनमें देश के लिये हर कठिनाई से जूझने के लिये आत्मबल और आत्मविश्वास प्रदान करती रहेगी। जय हिंद के मन्त्रदाता को हम कभी नहीं भूल सकते। किसी ने ठीक ही कहा है कि वतन पर शहीद होनेवाले कभी नहीं मरते। हमारा यही कर्तव्य है कि हम उनके जीवन आदर्शों को अपने व्यवहार में लाने का प्रयत्न करें, यही हमारी उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। मैं आपको पुनः धन्यवाद देता हूँ कि आपने मुझे इस प्रतिमा के अनावरण का गौरव प्रदान किया।

कर्मयोगी श्री राजेंद्र प्रसाद जी

मैं आप सबका बडा आभारी हूँ कि आपने मुझे इस समारोह मे भाग लेने और स्वर्गीय डा० राजेंद्र प्रसाद के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करने का अवसर दिया है।

डा० राजेंद्र प्रसाद भारत के उन महान सपूतो मे एक थे जिनके जीवन और चिंतन की, हमारे देश के आधुनिक इतिहास पर गहरी छाप पडी है। उनके जीवन की ओर जब हम देखते है तो हमे पूज्य महात्मा जी के प्रेरणा-दायी नेतृत्व मे सचालित स्वराज्य – आदोलन की अनेक महत्वपूर्ण घटनाएँ याद आती हैं। जब हम राजेंद्र बाबू के व्यक्तित्व की ओर देखते हैं, जो सादगी, नम्रता और विद्वत्ता से परिपूर्ण है, तो उसमे हमे भारतीय संस्कृति और सभ्यता की झलक मिलती है।

डा० राजेंद्र प्रसाद के जीवन मे रीति और नीति, सेवा और त्याग, श्रद्धा और भक्ति, कर्म और धर्म का सुदर मेल है। यही कारण है कि भारत-कोकिला स्वर्गीय सरोजनी नायडू ने कहा था– 'राजेंद्र बाबू के जीवन के बारे मे कुछ लिखने के लिये एक ऐसी स्वर्णिम कलम चाहिए जो शहद मे डुबोई हुई हो'। सचमुच राजेंद्रबाबू एक राजनीतिक संत थे। जीवन भर राजनीति के बवडर मे फँसे रहने पर भी, उनका कोई शत्रु नही, सब उनके मित्र और वे सचमुच अजातशत्रु थे।

राजेंद्र बाबू का जीवन एक कर्मयोगी का जीवन था। उनका जन्म एक छोटे से गाँव जीरादेई मे, एक साधारण परिवार मे हुआ। वे एक प्रतिभावान छात्र थे जो प्रत्येक परीक्षा मे प्रथम श्रेणी मे या सर्वप्रथम उत्तीर्ण होते थे। विद्यार्थी जीवन से ही उनमे देश व समाज सेवा की लगन थी। कलकत्ता विश्व-विद्यालय से न्याय शास्त्र मे पारगत होने के पश्चात् यदि वे चाहते तो उन्हें कोई ऊँचा सरकारी पद मिलता, यदि वे पटना मे वकालत करते रहते, तो वह खूब चमकती और लाखो रुपये कमा सकते थे। लेकिन उन्हें न तो पद की लालसा थी, न धन का लोभ था। उठती जवानी मे, जब परिवार के लोगो की आशाएँ उन पर केंद्रित थी, उन्होने समाज व देश–सेवा का जो सकल्प किया था, वह उनकी गहरी देशभक्ति, कर्तव्यपरायणता और अटूट साहस का ज्वलत उदा-हरण था। उनके जीवन की धारा अब बदल गई।

राष्ट्र और व्यक्ति के जीवन में कभी–कभी कैसे–कैसे विचित्र संयोग होते हैं। चंपारण के सत्याग्रह में महात्मा जी को एक साथ दो सफलताएँ प्राप्त हुईं–एक तो सत्याग्रह में विजय और दूसरी है राजेंद्र बाबू जैसे शिष्य की प्राप्ति। उधर राजेंद्र बाबू को बापू जी जैसे गुरु मिले। फिर क्या, वे स्वतंत्रता यज्ञ में कूद पड़े और जीवन भर बापू के कदमों में चलने लगे। महात्मा जी के सिद्धांतों और रचनात्मक कार्यक्रमों में राजेंद्र बाबू को अटल विश्वास था। सदाकत आश्रम की आश्रम की स्थापना हुई, वहाँ बैठकर इस तपस्वी ने देश की अमूल्य सेवा की। आश्रम बिहार की राजनीति का केंद्र ही नहीं, अपितु अनेक रचनात्मक कार्यक्रमों का आधार बन गया। खादी के प्रचार, कुटीर व ग्राम–उद्योग के विकास, हरिजनों के उद्धार, भाषा और साहित्य के प्रचार व प्रसार में राजेंद्र बाबू का बड़ा महत्वपूर्ण योगदान था। बिहार भूकम्प के समय, गाँव–गाँव और घर घर में जाकर पीड़ितों और निस्सहायों को उन्होंने जो सांत्वना दी, जो मदद की, वह चिरस्मरणीय है। संकट के समय, कई बार कांग्रेस के अध्यक्ष बनकर न केवल उस राष्ट्रीय संस्था को शक्तिशाली बनाया, अपितु उसका गौरव भी बढ़ाया था। कांग्रेस के अध्यक्ष की हैसियत से उन्होंने देश भर की यात्रा की। उनके जीवन और विचारों से, उनकी सादगी और नम्रता से, उनकी विद्वत्ता और कर्तव्यनिष्ठा से लोग बहुत प्रभावित हुए। राष्ट्रपति बनने के पूर्व ही, देश ने उन्हें 'देशरत्न' की उपाधि से अलंकृत किया और वे भारत के जन–जन के हृदय में राजेंद्र बन गए।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी, भारत के नवनिर्माण में राजेंद्र प्रसाद का योगदान महत्वपूर्ण था। संविधान के अध्यक्ष की हैसियत से संविधान के निर्माण में राजेंद्र प्रसाद ने जो महत्वपूर्ण कार्य किया, सारे राष्ट्र ने उसकी प्रशंसा की। १९५० में जब स्वतंत्र भारत, गणतंत्र भारत के रूप में अवतरित हुआ, तो सहज ही राजेंद्र प्रसाद, भारत के प्रथम राष्ट्रपति हुए। राष्ट्रपति पद पर, बारह साल तक रह कर, उन्होंने जो स्वस्थ परंपराएँ स्थापित कीं, वे चिरस्थायी रहेंगी। उन्होंने जो संवैधानिक मार्ग प्रशस्त किया, जो अनौपचारिक नीतियों का प्रचलन किया, उनसे न केवल हमारे लोकतंत्र की जड़ें मजबूत हुईं, अपितु देश की एकता और संस्कृति के विकास के लिये बहुत बल मिला।

डा० राजेंद्र प्रसाद से परिचय पाने और उन्हें नजदीक से देखने का सौभाग्य मुझे भी मिला। उनकी सच्चाई, और सादगी, उनकी सूझबूझ और विचार–धारा से मैं बहुत प्रभावित हुआ। सर्वोच्च पद पर रहते हुए भी उनके मन में जरा भी घमंड या गर्व नहीं था। उनकी वेश–भूषा या दिनचर्या में कोई परि–

वर्तन नही आया। यह एक बहुत बडी बात है। उनकी सहनशीलता, उनकी नम्रता, उनकी कर्तव्य–परायणता बेजोड थी। यही कारण है कि चाहे वे सदाकत आश्रम रहते या राष्ट्रपति भवन मे, एक तपस्वी और कर्मयोगी की तरह रहे, ऐसी कीर्ति और प्रतिष्ठा पा गए, जिसे देखकर बडे–बडे सम्राटो को भी ईर्ष्या होती।

भावात्मक एकता और भारतीय सभ्यता व सस्कृति के प्रचार व प्रसार मे राजेंद्र प्रसाद की सेवाएँ अनुपम थी। उन्होने जो पद प्राप्त किए, जो कीर्ति, पाई, वे उनके व्यक्तित्व की वास्तविक महत्ता को प्रकट करने मे अपर्याप्त ही रह जाती। क्योकि वास्तव मे उनके जीवन का विकास बहिर्मुखी नही, अतर्मुखी था। साधन और साध्य दोनो की ओर उनका ध्यान था। उनका यह दृढ विश्वास था कि हम यदि अपने चरित्र और आचरण को ठीक रखेंगे, साधनों की परवाह करेंगे, तो साध्य स्वयमेव सिद्ध होगे और सभी सफलताएँ स्वयमेव वरण करेंगी। सभवत डा० राजेंद्र प्रसाद के जीवन की अद्वितीय सफलता का यही रहस्य है।

आज जबकि हमे स्वतन्त्रता के मार्ग पर आगे बढते हुए, उन महान नेताओ सपनो को साकार करना है, एक ऐसे समाज की व्यवस्था करनी हैं जिसमे सभी को समान अवसर मिले, कोई भूखा, नगा, बीमार या अशिक्षित न हो। इस महान प्रयास मे, हम सब राजेंद्र प्रसाद की सेवा, देशभक्ति और त्याग की भावना से प्रेरणा ले सकते हैं। विशेषतया, मैं चाहता हूँ कि आज की युवा पीढी राजेंद्र बाबू के जीवन और चितन का अध्ययन करें और उनके सिद्धातो, गुणो और कार्यों से सबक सीखे। केवल राजनीतिक स्वतन्त्रता से ही हमे सतुष्ट नहीं रहना है। लोगो की आर्थिक, सामाजिक, सास्कृतिक और हर प्रकार की उन्नति आवश्यक है।

डा० राजेद्र प्रसाद जैसी महान विभूतियो की याद करने के लिये जब हम उनकी जन्म जयतियाँ मनाते हैं तो हमारा कर्तव्य है कि हम उनके चरित्रबल उनकी नैतिकता, उनकी बुद्धि और ज्ञान से सबक लेकर अपने जीवन को सुधारने का प्रयास करें और प्रयत्न करें कि हम भी चरित्रवान और निष्ठावान बनकर इस देश व समाज की यथाशक्ति सेवा करें। राजेद्र प्रसाद के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धाजलि यही होगी।

एक साधु सत की तरह भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेंद्र प्रसाद ने अपना जीवन निर्लिप्तता और निर्मोह से व्यतीत करते हुए, अपनी चादर को मैला न होते हुए, ज्यो का त्यो धर लिया। तभी डा० राधाकृष्ण ने कहा–'

डा० राजेंद्र प्रसाद पर जनक, बुद्ध और गांधी की छाप पड़ी'। भारत के प्रथम प्रधान मंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने कहा—'हमारे गणतन्त्र के शुरू' के १२ वर्ष राजेंद्र युग के रूप में इतिहास में अमर रहेगा'।

इन शब्दों के साथ मैं स्वर्गीय डा० राजेंद्र प्रसाद के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

——

तप और त्याग की मूर्ति श्रीलालबहादुर शास्त्री जी

आज श्री लालबहादुर शास्त्री जी की दसवी पुण्य तिथि है। सबसे पहले मैं उस महान् आत्मा को अपनी हार्दिक श्रद्धाजलि अर्पित करता हूँ, जिसकी स्मृति हमारे दिलो मे सदैव सुरक्षित रहेगी। उनका जीवन हमारे लिये एक प्रेरणा का स्रोत है। वह तप और त्याग की मूर्ति थे, जिनकी नस नस मे देशप्रेम कूट कूट कर भरा पडा था। वह हमारे बीच नही हैं, परतु उनके आदर्श हमारे सामने हैं। यह सत्य है कि आदर्शों के लिये जीने वाले देह त्याग कर भी ससार मे जीवित रहते है। श्री लालबहादुर शास्त्री की देशसेवाओ से कौन परिचित नही है ? वह उन बिरले लोगो मे से थे, जिन्होने अपना सब कुछ देश के लिये न्योछावर कर डाला, जिन्होने देश हित के सिवाय अपने सामने किसी दूसरी चीज को स्वीकार नही किया। उन्होने अपने लिये कुछ नही चाहा। यदि कुछ चाहा तो वह देशवासियो की भलाई थी।

यह तो सभी जानते हैं कि शास्त्री जी किसी धनी परिवार मे पैदा नही हुए थे। यह विदेशो मे जाकर उच्च शिक्षा भी प्राप्त नही कर सके थे। बाल्यकाल से ही उन्होने कई कठिनाइयां देखी थी, जीवन मे कई दुख झेले थे। लेकिन विपरीत परिस्थितियाँ उनको अपने उत्कृष्ट पथ से विचलित नही कर सकी। अपनी सत्यनिष्ठा और कर्मठता के फलस्वरूप वह आगे बढते रहे। राष्ट्र ने उन्हें जो भी कार्यभार सौंपा, उसे उन्होने पूरी निष्ठा से निभाया। यदि कोई राजनैतिक जिम्मेदारी सामने आई तो उसे भी उन्होने बडी कुशलता से पूरा किया। राजनैतिक जीवन मे भी उन्होने एक ऐसे सेतु का काम किया, जो दिलो को जोड सके। हृदय की विशालता, विचारो की शुद्धता तथा राष्ट्र के प्रति गभीर निष्ठा उनके व्यक्तित्व के अनमोल गुण थे, जिसके कारण वह सभी मे अपना प्रेम बांटते रहे। अपनी सादगी, सरलता और सहनशीलता के कारण दूसरो को प्रभावित करते रहे। एक सच्चे देशभक्त की तरह यदि उन्हें किसी चीज से सबसे अधिक लगन थी तो वह भारत देश है। नेहरू जी के साथ रहकर उन्होने कुछ सँजोया था, उसे पूरा करने के लिये वह जीवन पर्यंत प्रयत्नशील रहे। किसी ने गरीबी की पीडा स्वय सहन की हो, उसमे

अधिक गरीब जनता की व्यथा को कौन समझ सकता है। नेहरू जी ने इस देश की जनता के दुख अपनी आंखों से देखे थे। इसलिये उन्होंने अपना सारा ज्ञान इस देश की आर्थिक और सामाजिक स्थिति को सुधारने की ओर केंद्रित किया था। लोगों में नए भारत की रचना के लिये एक नया उत्साह पदा करके, ऐसे समाज की रचना के लिये प्रेरित किया, जिसमें सब उन्नति कर सकें, सब स्वस्थ और सुखी बन सकें। शास्त्री जी ने सामान्य जनता के दुखों को न केवल देखा था, बल्कि उनके समान वह कष्ट झेले भी थे। इसलिये उन्हें मालूम था कि जब तक सामाजिक और आर्थिक विषमताएँ दूर नहीं की जातीं, हम तेजी से उन्नति नहीं कर सकते। इसके लिये चरित्र बल ऊँचा होना चाहिए। अनुशासन और श्रम की प्रतिष्ठा होनी चाहिए, राष्ट्रीय भावना सुदृढ होनी चाहिए, त्याग की भावना प्रबल होनी चाहिए।

शास्त्री जी की कई अग्नि परीक्षाएँ हुई और वह अपनी हर परीक्षा में सफल हुए। वह कौनसी ऐसी चीज हैं, जिसके कारण वह हर मुश्किल पर विजय प्राप्त करते रहे। वह थी उनकी चरित्र शक्ति, श्रम-साधना एवं अपने कार्य के प्रति पूर्ण निष्ठा। इस महान् विभूति के लिये प० जवाहर लाल नेहरू जी ने स्वयं एक बार कहा था—'उच्चतम व्यक्तित्व वाले निरतर सजग और कठोर कर्मशील व्यक्ति का नाम है, लालबहादुर शास्त्री।' जब वह प्रधान मंत्री बने, उस समय देश के समुख आंतरिक और बाहरी कई चुनौतियाँ उपस्थित थीं। उस समय उन्होंने जिस अदम्य साहस का परिचय दिया उससे सारा ससार परिचित है। बाहरी हमले भी हुए और देशवासियों ने यह साबित कर दिया कि भारत शातिप्रिय देश तो है, परतु अपनी स्वतत्रता की रक्षा करना भी जानता है और उसकी खातिर हर प्रकार का बलिदान करना भी जानता है। अहिंसा कायर का भूषण नही हो सकता, अहिंसा तो वीर पुरुष का शृंगार है। प्रगति के लिये शाति आवश्यक है और शाति भग करनेवालो से सावधान रहना, उसके लिए रक्षा के उपाय करना उतना ही आवश्यक है जितना अपने देश की खुशहाली को बढाने के लिये उत्पादन मे वृद्धि जरूरी है। यही चीज थी जिसकी प्रेरणा शास्त्री जी ने देशवासियों को दी थी जिसके लिये उन्होंने 'जय जवान और जय किसान' का नारा लगाया था। यह आवाज थी, आत्मरक्षा और आत्मनिर्भरता की।

हमारा देश सदा से शातिप्रिय देश रहा है। इस आदर्श की ही सदैव हमारे राष्ट्रनायको ने प्रतिष्ठा की है। हमने सभी की ओर मित्रता का हाथ बढाया है। हमारा यही प्रयत्न रहा है कि पडोसी देशो से हमारे सवध अच्छे हो। ताशकद समझौते मे हमने यह सिद्ध कर दिखाया था कि आत्मरक्षा के लिये हम जितने तत्पर हैं, उतने ही उत्साह से शाति की स्थापना मे भी भारत आगे है। हमने हर अच्छी चीज का स्वागत किया है, ऐसे हर प्रयत्न का समर्थन किया है, जिसके द्वारा कही भी मानवीय हितो के सरक्षण की चेष्टा की जाती हो। लेकिन ऐसी किसी वात के लिये हमारे यहाँ स्थान नही हो सकता जो हमारे अस्तित्व से खिलवाड करना चाहे।

आज हमें जीवन के हर कार्य क्षेत्र मे आगे वढना है, हर अच्छी चीज को अपनाना है। लेकिन अपने राष्ट्रीय आदर्शों और सस्कृति पर दृढ रह कर। शास्त्री जी का जीवन एक ऐसा उज्ज्वल उदाहरण है, जिससे हर देशवासी वहुत कुछ सीख सकता है। किसी को उनके जीवन से कुछ सीखना है तो उन जैसा त्याग सीखे, उनकी तरह देशभक्ति की प्रतिष्ठा करे, उनके समान श्रम साधना का व्रत ले, उनकी सादगी, उच्च विचार, सरलता, विनय के भाव को अपने मे स्थान दे, सव के कल्याण के लिये प्रयत्नशील रहे। शास्त्री जी ने अपने जीवन से यह सिद्ध कर दिखाया था कि गरीवी देशसेवा के लिये वाधा नही वन सकती, यदि हम मे उच्च मनोवल और सकल्प शक्ति हो, यदि हम मे निजी स्वार्थ साधना की कमजोरी न हो। शास्त्री जी के जीवन से सभी शिक्षा ले सकते हैं, विशेषकर युवक वर्ग के लिये तो वह एक महान प्रेरणा है, जिन्होने अपनी प्रतिकूल पारिवारिक परिस्थितियो मे भी देश सेवा का व्रत लिया और उसे पूरा करके दिखाया।

यह सतोष की वात है कि श्री लालवहादुर शास्त्री-सेवा-निकेतन आत्म-निर्भरता की भावना को लोगो मे जागृत करने का पिछले नौ वर्षों से प्रयास कर रहा है। आज देश मे जो नया वातावरण तैयार हुआ है, हमे चाहिए कि हम आत्मनिर्भरता की भावना के प्रसार के साथ, ऐसे कार्यक्रम भी हाथ मे लें जिनसे सामाजिक विषमताओ को दूर करने, सामाजिक कुरीतियो का अत करने मे सहायता मिले। क्योकि आज तक यह चीज हमारे सामूहिक विकास मे एक वडी वाधा वनकर उपस्थित है।

इन्ही शब्दो के साथ मैं पुन शास्त्री जी को अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करता हूँ और आपको धन्यवाद देता हूँ कि आपने मुझे यहाँ उपस्थित होने का अवसर दिया।

राष्ट्रीयता का स्थायी आधार : श्री फखरुद्दीन अली अहमद

यह मेरे लिये परम सौभाग्य की बात है कि आपने मुझे आज के समारोह मे शरीक होने का मौका दिया। आज का दिन हम सब के लिये बडी खुशी का दिन है। हमारे राष्ट्रपति जी का इकहत्तरवां जन्म दिवस राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप मे मनाया जाना, राष्ट्रीय गौरव का प्रतीक है। हमारी सामाजिक सस्कृति के वह महान उपासक हैं। अपने समस्त जीवन को उन्होंने राष्ट्रीय एकता की पवित्र साधना मे समर्पित किया है। राष्ट्र की दृढता, समृद्धि और प्रगति के लिये वह सदा क्रियाशील रहे हैं। देशवासियो की भलाई और उत्कर्ष के लिये उन्होने हमेशा दिशानिर्देशन किया है। ईश्वर से हमारी यही प्रार्थना है कि वह उन्हें दीर्घायु प्रदान करे और देश उनके नेतृत्व और मार्गदर्शन से लाभान्वित होता रहे।

हमारा देश एक बहुत बडा देश है। इसकी अपार जनशक्ति विविध रूपा है, अनेक रग और सुगध लिए हुए उन फूलो के समान जो इस पुष्प वाटिका की शोभा हैं। वेदों मे कहा गया है—"एको अहम् बहु स्याम"। यह विविधता प्रकृति है और इसके पीछे एकत्व का तत्व सर्व विद्यमान है। यह विविधता हमारे देश का सौंदर्य है और उसमे एकता की अनुभूति हमारी राष्ट्रीयता का स्थायी आधार है। हम सब इस जननी जन्मभूमि के बेटे हैं। हमारा इसके साथ एक अटूट सबंध है। हम इसके किसी भी प्रात के निवासी हो, हम किसी भी धर्म के अनुयायी हो, कोई भी भाषा बोलने वाले हो, हम सब भारतीय हैं। यह राष्ट्र ही हमारे लिए सब कुछ है। हमारा सामूहिक जीवन, हमारे सपर्क, प्रयत्न, हमारी सद्भावना यह सब राष्ट्र की दृढता और गरिमा का गठन करते हैं। इसमे महत्व है, हमारे अनुशासित और मिले जुले प्रयत्नो का, और मैं समझता हूँ कि हम मन और मस्तिष्क से अपने रचनात्मक कार्यो और सद्व्यवहार से एक दूसरे के इतने करीब होके हमेशा हमे एक दूसरे की सेवा और सहायता मे ही सतोष प्राप्त हो। यही हमारी एकता का सार तत्व है, यही हमारी प्रगति का विधायक रहस्य है।

हमारी एकता हमारी संस्कृति का प्रतीक है। जिसकी वाटिका को हम सबने मिलकर सींचा है। हम सब एक हैं और हमेशा एक रहे। इसका प्रमाण हमारी जनता ने हमेशा दिया है। जब भी देश के सामने कोई चुनौती आई, उसका सब ने मिलकर सामना किया है। आज हमारी एकता का सूत्र हमारे राष्ट्र की जीवन धारा है, जिसके सग हमे निरतर बढना है, उन राष्ट्रीय लक्ष्यो की ओर जिन से सामाजिकता और लोकतत्रता दृढ से दृढतर होती रहे।

हमने देश की सुदृढता के लिये तथा उपेक्षित और पददलित जन समुदाय उत्थान के लिये राष्ट्र को एक नई दिशा देने की चेष्टा की है। राष्ट्रीय एकता को व्यापक अर्थ प्रदान किया है उसके लिये आर्थिक और सामाजिक भेदो को मिटाने के लिये समाज मे एक नई सजगता पैदा की है। देश भर मे आर्थिक और सामाजिक प्रगति के लिये आज जो हमने कार्यक्रम हाथ मे लिए है, उन्हें सफल बनाना, हम सब का कर्तव्य है। यह कार्यक्रम जन साधारण के अपने कार्यक्रम हैं, उन्हें इनसे लाभ उठाना चाहिए। अपेक्षित सामाजिक परिवर्तनो के लिये अपना सहयोग देना चाहिए। आज अनुशासन और कर्तव्य-परायणता की नवचेतना ने देश भर मे जो स्फूर्ति पैदा की है, उसे हमे बनाए रखना है। उसे जीवन का एक स्थायी आधार बनाना है।

राष्ट्रपति महोदय ने सदैव इस बात पर बल दिया है कि यह देश हम सब का है और इसकी समृद्धि और उन्नति के लिये हम सब को अपना फर्ज पूरा करना है। हमे अपने व्यक्तिगत अथवा पारिवारिक हित और लाभ का नही, बल्कि स्वराष्ट्र हित को सर्वोपरि रखना होगा। हमे यह कभी नही भूलना है कि देश का हम पर जो ऋण है, उसे हमे चुकाना है और अपने साधनो और क्षमताओ के अनुसार हम जो भी काम करें, उसका अधिक लाभ हमारे देश को मिलता रहे। यह समर्पण की भावना हर छोटे बडे मे जहाँ विद्यमान है, वहाँ एकता एक शक्ति है। व्यक्ति की विराटता का स्वरूप है। हमारे सभी महापुरुषो ने हमे यही सीख दी है। पंडित जवाहरलाल नेहरू जी ने कहा था ––

"हर कोई जो भारत मे बसा है, चाहे वह हिंदू है या मुसलमान, सिख या जैन या फिर ईसाई है या पारसी, भारतीय हैं। सभी एक सरीखे, सभी समान ठहरे। हम मे से सभी, चाहे हमारा जो भी धर्म मत रहे, समान रूप मे भारत माता की सतान है। इस कारण सभी को समान अधिकार प्राप्त रहने चाहिए तथा आगे बढने और उन्नति करने के निमित्त भी सभी को एक जैसे अवसर दिए जाने चाहिए।

साम्प्रदायिकता, प्रांतीयता तथा जाति पाँति का भेद भाव ये हमारे देश की तीन बडी बडी बुराइयाँ है। पूरी तरह से इनको हमें मिटा डालना होगा। हमारा कर्तव्य है कि राष्ट्र की एकता और उसके हित और कल्याण को ही सब मे अधिक महत्व दें और जाति, धर्म और भाषा, प्रात के भेद भाव को भूल, समूचे देश और उसके वासियों के विषय में ही हमे अधिक सोचना चाहिए। देश काश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक सारे का सारा एक है। वह हम सभी का है, हम सभी उसके हैं और हम सभी एक हैं।

यह सीख हमारा सदैव पथप्रदर्शन करती रहे, यही हमारी कामना होनी चाहिए। इन्ही शब्दो के साथ मैं आप सबको धन्यवाद देता हुआ आज के इस समारोह का खुशी के साथ उद्घाटन करता हूँ।

हिंदी जगत की एक महान् विभूति :

श्री श्यामसुंदर दास

मुझे इस बात की बड़ी प्रसन्नता है कि श्री श्यामसुंदर दास जन्मशती समारोह के महत्वपूर्ण अवसर पर आप लोगो के बीच आने का सुअवसर मुझे मिला। श्री श्यामसुदर दास हिंदी जगत् की एक महान विभूति थे, जिनकी सेवाओ को हिंदी जगत् हमेशा याद रखेगा। श्री श्यामसुदर जी अपूर्व प्रतिभा के स्वामी थे, उनमे बड़ा उत्साह और लगन थी' और एक ऐसी निष्ठा थी, जिसके द्वारा वे अपने विचारो को मूर्तरूप दिया करते थे। उन्होने अपने जीवन के प्रारभिक दिनो मे ही यह अनुभव किया था कि देश की राष्ट्रभाषा हिंदी के सर्वांगीण विकास के लिये यह आवश्यक है कि इसके भडार को समृद्ध बनाया जाए। उनकी दृष्टि बड़ी व्यापक थी और वह समझते थे कि हिंदी को सर्वसाधारण के दैनिक जीवन से लेकर साहित्य के विभिन्न अगो तक इसके विस्तार को प्रतिष्ठित किया जाना चाहिए। हिंदी की श्रीवृद्धि के लिये उन्होने सिर्फ रस-साहित्य को ही नही, बल्कि ज्ञान साहित्य को भी अपनाया। हिंदी मे उन्होने गणित, अर्थशास्त्र, पुरातत्व, इतिहास, रसायन, नैतिक-शास्त्र आदि की मानक पुस्तकें तैयार करवाईं। इस कार्य मे उन्होने मूल को अधिक महत्व दिया और जहा कही आवश्यकता हुई अनुवाद का भी सहारा लिया।

साहित्य को समृद्ध बनाने के लिये उन्होने सभी आवश्यक चीजो पर ध्यान दिया। महान् कवियो की रचनाओ का सकलन प्रकाशित कराना, शब्दकोश का निर्माण कराना, व्याकरण के ग्रथ लिखाना और साहित्य का इतिहास प्रकाशित कराना, इन सभी कार्यों की ओर उनका ध्यान गया और उन्होने अपने युग के बडे-बडे विद्वानो की सहायता से ये सारे कार्य पूर्ण कराए। उन्होने ही वह विशाल शब्द-कोश (हिंदी शब्द सागर) बनवाया, जिसकी ख्याति आज भी चारो ओर फैली हुई है। हिंदी साहित्य का इतिहास आचार्य रामचद्र शुक्ल ने लिखा, किंतु इसके पीछे भी प्रेरणा श्री श्यामसुदर दास की थी। आज जिस सस्था की ओर से उनका जन्मशती समारोह मनाया जा रहा है उसकी स्थापना उन्होने उन दिनो करवाई जब उनकी अवस्था केवल १८ साल की थी और यह इस बात का बहुत बडा प्रमाण है कि श्री श्यामसुदर दास के

मन मे महान् कार्यों के बीज प्रारभ मे विद्यमान थे जिनकी पूर्ति मे उन्होने अपना सारा जीवन लगाया। उनकी प्रतिभा के अनुरूप पंडित मदनमोहन मालवीय ने काशी हिंदू विश्वविद्यालय मे हिंदी विभाग का उन्हे अध्यक्ष बनाया। इस पद पर रह कर उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र मे अनेक श्रेष्ठ कार्य किए, और ऐसे कीर्तिमान स्थापित किए जिनसे आज भी प्रेरणा मिलती है।

श्री श्यामसुदर दास जी की दृष्टि बहुत व्यापक थी। उन्होने शोध के क्षेत्र मे भी अनेक बडे काम किए। यह उन्ही की कल्पना थी कि काशी नागरी प्रचारिणी सभा के माध्यम से अनेक विद्वानो को देश के विभिन्न क्षेत्रों मे भेजकर हस्तलिखित ग्रथो को एकत्रित किया गया। आज इन ग्रथो को साहित्यिक दृष्टि से मूल्यवान् माना जाता है। उनके ही प्रयत्नो से ये ग्रथ प्रकाश में आये और यह उन्ही के सुप्रयासो का फल है कि काशी नागरी-प्रचारिणी सभा के पुस्तकालय मे अनेक ऐसे दुर्लभ ग्रथ उपलब्ध हैं, जिनका देश और विदेश के विद्वान शोध कार्यों के लिये उपयोग कर रहे हैं। हिंदी के महत्व को वे जानते थे और उस युग मे भी उन्होने ससार के कई देशो के विद्वानों के साथ संपर्क किया था और ससार की प्रसिद्ध सस्थाओ के साथ नागरीप्रचारिणी सभा का सबध जोडा। यह प्रसन्नता की बात है कि उनके साथ आदान-प्रदान का कार्यक्रम आज भी चल रहा है और इस संस्था को संसार के अनेक विद्वानो का सहयोग प्राप्त हुआ।

यह व्यक्ति जो इतना बडा विद्वान् था, जिसकी दृष्टि इतनी व्यापक थी जिसमे निर्माण की इतनी अपूर्व क्षमता थी, जिसने साहित्य के भडार को विपुल कृतियो से परिपूर्ण किया, जिसने हिंदी की श्रीवृद्धि मे अपना सारा जीवन लगा दिया उसके प्रति कृतज्ञ होना, और सम्मान के भाव प्रकट करना, एक सहज बात है। हमारे लिए आवश्यक है कि हिंदी प्रचार के क्षेत्र मे, साहित्य निर्माण के क्षेत्र मे, शोध के क्षेत्र मे, हम उनके बताए हुए रास्ते को अपनाएँ और जो कार्य उन्होने प्रारंभ किए उन्हें पूरा करें। यही सबसे बडी हमारी श्रद्धाजलि होगी।

आज मेरा परम सौभाग्य है कि इस अवसर पर देश और विदेश के सम्मान्य विद्वानो और साहित्यकारो के समान करने का सुखद अवसर मिला। मैं आप सभी विद्वानो के सुखी जीवन की कामना करता हूँ और प्रार्थना करता हूँ कि आपकी लेखनी से उस साहित्य का सृजन हो और सतत होता रहे, जिससे अनतकाल तक हम प्रेरणा ग्रहण करते रहें और हमारा देश जिन आदर्शों के लिये सारे विश्व मे प्रसिद्ध है उस एकता, प्रेम और विश्व-बधुत्व को हम अपने जीवन मे उतार सके, प्राप्त कर सकें। अत मे मैं इस जन्मशती समारोह के आयोजको को धन्यवाद देता हूँ।

मानव कल्याण के साधक : श्री आनंदीलाल पोद्दार

श्री आनदी लाल पोद्दार के जन्म शताव्दी समारोह मे भाग लेने तथा आप सबसे मिलने का जो अवसर आपके स्नेहपूर्ण निमत्रण द्वारा मुझे प्राप्त हुआ, उसके लिये मैं आप सबका हृदय से आभारी हूँ।

पोद्दार परिवार से यूँ तो मै बहुत समय से परिचित हूँ। परतु जयपुर मे जाने और इस प्रदेश के नागरिको से मिलने का मेरा यह पहला मौका है। मुझे यह देखकर बडी प्रसन्नता हुई कि पोद्दार परिवार अपने इस प्रदेश मे औद्योगिक क्षेत्र के अतिरिक्त सार्वजनिक क्षेत्र मे भी सराहनीय कार्य कर रहा है। परतु मैं समझता हूँ कि इसका अधिकाधिक श्रेय उस कर्मनिष्ठ पुरुष को प्राप्त होता है जिनकी मानवेतर भावना से प्रेरित होकर पोद्दार परिवार उस महान् परपरा के विकास और विस्तार मे प्रयत्नशील है।

आज हम उसी महान व्यक्ति को अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करने के लिये यहाँ एकत्रित हुए है। सेठ आनदी लाल पोद्दार, राजस्थान के एक छोटे से कस्बे नवलगढ मे पैदा हुए थे। बचपन से ही साहस, सूझबूझ और धैर्य के धनी रहे। परिवार की आर्थिक दशा अच्छी न होने के कारण १७ वर्ष की छोटी आयु मे ही घर से जीविका उपार्जन के लिये निकल पडे थे। कठिनाइयो के ज्वार से जूझते हुए, जिस प्रकार उन्होने प्रगति की, वह उनकी कार्यनिष्ठा, व्यावसायिक प्रतिभा और परिश्रम का एक ऐसा उदाहरण है, जिससे हरेक व्यक्ति प्रेरणा ग्रहण कर सकता है। प्रतिकूल परिस्थितियो के वावजूद भी वह आगे बढते गए और औद्योगिक क्षेत्र मे उन्होने नाम कमाया, उससे कोई भी अपरिचित नही है। इतना वैभव पाने के पश्चात् भी वह अपने प्रदेश और उन अभावग्रस्त देशवासियो को नही भूले। उनके हृदय मे उनके प्रति सहानुभूति की भावना सदा बनी रही। और धर्म भावना का अकुर मानव उपकार के रूप मे प्रस्फुटित हुआ और यही वह सार्वजनीक भावना थी, जो उन्हे महात्मा गाधी, पडित मदनमोहन मालवीय तथा सेठ जमनालाल बजाज के समीप लाकर आदोलन मे सहयोग के लिये प्रेरित कर सकी। निजी अनुभव के आधार पर उन्होने सर्वप्रथम शिक्षा के प्रसार को आर्थिक, सामाजिक एव राजनैतिक सुदृढता के लिये आवश्यक समझा और इसी सदर्भ मे लोकोपकारी निधि की स्थापना करके अपने देशप्रेम का परिचय

दिया। शिक्षा के अतिरिक्त चिकित्सा तथा सास्कृतिक सस्थाओ की स्थापना के लिये भी उन्होने अपने उदार अनुदान दिए और इस प्रकार भारतीय सस्कृति की भी अमूल्य सेवा की। अपने जीवन मे जो स्वप्न उन्होने देखा था, अपने समय मे ही उसे साकार होते भी देखा। उनके निधन के पश्चात् लोककल्याण के इस कार्य भार को जिन लोगो ने वहन किया मुझे बडी प्रसन्नता है कि उन्होंने अपना उत्तरदायित्व बडी निष्ठा और लगन से पूरा किया है।

कहते हैं—मानव कल्याण की प्रवृत्ति से वैभव बढता है और व्यक्ति के विचार और कृत्य जितने बडे क्षेत्र के अनुपात मे होते हैं, वह उतना ही महान होता है। उच्च स्थान पर बैठने से कोई बडा नही होता, वह बडा बनता है, उस शक्ति के अनुरूप जो उसमे दूसरो का भला करने, सहायता करने तथा उनके जीवन स्तर को ऊचा उठाने के लिये ईश्वर ने उसे दे रखी है। जिस किसी ने जनता की सेवा की है, उनके हित और उनकी आर्थिक, बौद्धिक अथवा आध्यात्मिक उन्नति के लिये कार्य किया है, वह अपनी याद सदा के लिये छोड गया है। उसका जीवन आने वाली पीढियो के लिये सदा प्रेरणाप्रद रहा है। सेठ आनदी लाल पोद्दार के जीवन से हम यह सीख सकते हैं कि उत्साह और लगन है, ईमानदारी और आगे बढने की चाह है, तो बडप्पन कोई असाध्य वस्तु नही है। जो कठिनाईयो को देखकर हिम्मत नही छोड देता, बल्कि निरतर प्रयत्नशील रहता है, वह अवश्य ही सफलता प्राप्त कर लेता है। आज हमे उस आत्मविश्वास और आत्मसयम को सबल बनाना होगा, जो शनै. शनै कमजोर होता दिखाई पडता है।

आज हमारे सामने जो कठिनाइया हैं, कीमते जिस तेजी से आगे बढ रही हैं, आवश्यक वस्तुओ का जिस प्रकार अभाव है, उनके लिये साधनो की कमी यदि एक कारण है तो दूसरा ही मनुष्य का केंद्रित अहम्। मनुष्य का केंद्रित अहम् मनुष्य को अपने साथियो, अपने देशवासियो से पृथक् करके रख देता है। दूसरो के दुखो और पीडा के अनुभव से अपने को अलग समझना न तो व्यक्ति और न समाज के ही हित मे हो सकता है। केवल अपनी ही सुखसमृद्धि को सुदृढ बनाने और सुरक्षित रखने की लालसा, स्वार्थो के रूप मे जितनी प्रबल होगी, आर्थिक और सामाजिक न्याय के ध्येय से हम उतने ही पिछड जाएंगे। यदि मानव को अपना अस्तित्व बनाए रखना है, समानता पर आधारित सामाजिक सरचना की उत्कृष्ट कल्पना को साकार करना है तो उसे अपने अदर मानवीय करुणा को समृद्ध करना होगा। तभी हम एक

स्वस्थ एवं सुदृढ समाज बना सकेंगे। आज हमारे सामने जो कठिनाइया हैं, उनके समाधान मे सभी का सहयोग अनिवार्य है। यदि हम सब मिलकर निष्ठा से सामूहिक प्रयत्न करे तो शीघ्र ही कठिनाइयो के बादल छँट जाएँगे। वर्तमान परिस्थितियो मे समाज अपने वैभवशाली देशवासियो से अधिक आशाएँ रखता है और मैं समझाता हूँ कि देश का सपन्न वर्ग इन कठिनाइयो को कम करने मे अतीत की भाँति अपना पूरा सहयोग देगा। झरने का जल पहाडियो और घाटियो मे से सदैव नीचे की ओर बहता है। यह उसकी प्रकृति है अथवा धरती का आकर्षण। परोपकार की भावना का भी यही उद्देश्य है। हमारी प्रतिभा, हमारी शक्ति, हमारा ज्ञान, हमारी समृद्धि, ये सब जन कल्याण द्वारा ही सार्थक बनते हैं।

मुझे यह देखकर बडा सतोष हुआ, कि पोद्दार परिवार इस क्षेत्र के विकास मे अपना सहयोग दे रहा है और यह सद्भाव और सहयोग आपलोगो को सेठ आनदी लाल के समय से प्राप्त हो रहा है। समाज कल्याण, सस्कृति की प्रतिष्ठा तथा मानव सेवा की जिन मूलभूत भावनाओ से प्रेरित होकर यह परपरा आरभ हुई, पोद्दार परिवार ने उसे कायम ही नही रखा, बल्कि उसमे विस्तार भी किया है। यह सेवा का भाव आप मे बना रहे और देशवासियो की अधिक से अधिक सेवा करने मे आप समर्थ हो।

पोद्दार परिवार राजस्थान विश्वविद्यालय मे बिजनेस मैनेजमेट इसीटीटचूट, जिसका अभी कुछ देर पहले मैंने उद्घाटन किया, के लिये अनुदान देकर अपनी उदारता एव दानशीलता का एक और प्रमाण प्रस्तुत किया है, देशसेवा का यह भाव अनुकरणीय है।

अभी अभी मैंने सेठ आनदी लाल पोद्दार की प्रतिमा का अनावरण किया। मुझे आशा है कि प्रतिमा प्रतीक रूप मे आप सभी का मार्ग दर्शन करती रहेगी और विशेषकर औद्योगिक क्षेत्र मे जो नई प्रतिभाएँ आएँगी उन्हे औद्योगिक विकास के लिये प्रचुर शिक्षा और समाज के प्रति कर्तव्य के लिये प्रेरणा का स्रोत रहेगी।

इन्ही शब्दो के साथ मैं आपको पुन धन्यवाद देता हूँ कि आपने मुझे सेठ आनदी लाल पोद्दार को अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करने का अवसर दिया।

---

६. शिक्षण और समाज

व्यक्तित्व का निर्माण

आप विद्यालय के वार्षिक तथा संस्थापना दिवस के अवसर पर उपस्थित होने का जो सुयोग मुझे प्रदान दिया गया, उसके लिये मैं आपका, विशेषकर श्री कपिला का आभार मानता हूँ।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि विगत बाईस वर्षों से जब से विद्यालय की स्थापना हुई, इस संस्था ने संतोषजनक प्रगति की है। आज मैं देख रहा हूँ कि जो विद्यालय एक छोटे से पैमाने पर आरंभ किया गया था, वहाँ इस समय लगभग एक हजार चार सौ विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। किसी भी विद्यालय के जीवन में यह एक बड़ी उपलब्धि कही जा सकती है। मैं तो कहूँगा कि यह आपके इस विद्यालय का सौभाग्य है कि आपको स्वर्गीय पंडित नरसिंह लाल जैसे कर्मठ शिक्षाशास्त्री की सेवाएँ और योग्य पथ निर्देशन प्राप्त हुआ और पंडित शारदा राम ट्रस्ट का उदार अनुदान मिलता रहा है। इसके साथ इस विद्यालय की उन्नति में उन प्राचार्यों, अध्यापकों तथा कार्यकर्ताओं को श्रेय प्राप्त होता है, जिन्होंने इसके लिये पूरी निष्ठा से अपनी सेवाएँ समर्पित की हैं। इसके लिये मैं उन सभी को बधाई देता हूँ, जिनके योगदान से यह विद्यालय इस क्षेत्र को शिक्षा की सुविधा जुटाने में समर्थ हो सका है।

यह सभी जानते हैं कि मानवीय तथा राष्ट्रीय जीवन में शिक्षा का सर्वोपरि महत्व है। शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति और समाज की उन्नति और विकास संभव है। हमारी आर्थिक, सामाजिक, औद्योगिक तथा सांस्कृतिक प्रगति वस्तुतः हमारी शैक्षणिक क्षमता और रचनात्मक दक्षता पर ही निर्भर करती है। हमारे राष्ट्रनायकों ने इसीलिये शिक्षा के विस्तार पर बल दिया और यह चाहा, कि शिक्षा की सुविधाएँ गाँव गाँव तक पहुँचें। लोग अधिक से अधिक मात्रा में शिक्षित हों और इस प्रकार एक नए समाज की रचना के लिये देश का हर नागरिक अधिक प्रबुद्ध और गुणसंपन्न होकर अपना योगदान दे सके। यह काम बहुत बड़ा काम है, इसलिये इसमें सभी का सहयोग आवश्यक है। हमारे देश में कितनी ही शिक्षा संस्थाएँ हैं, ऐसी अनेक ऐच्छिक संस्थाओं को मैं जानता हूँ, जिन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में अच्छा काम किया है और अब भी कर रही हैं। शिक्षा के विस्तार, अनुशासन और व्यवस्था पर ही विद्यालय की प्रतिष्ठा निर्भर करती है।

मेरे विचार मे, तो शिक्षा के केंद्र, ज्ञान, विज्ञान तथा संस्कृति के आगार होने चाहिए, जहाँ हम भावी नागरिको के सबल व्यक्तित्व का निर्माण कर सके, जहाँ एक सभ्य और सुव्यवस्थित जीवन के लिये हम उन्हें तैयार कर सके, जहाँ उनमे ऐसी क्षमता पैदा की जा सके, कि सामाजिक दायित्वो का वह पूरी योग्यता और कुशलता से निर्वाह कर सकें। आज यह अनुभव किया जाता है शिक्षा ऐसी होनी चाहिए, जो हमारी उदात्त सांस्कृतिक परम्पराओ के भी अनुकूल हो और युग की आवश्यकताओ को पूरी करने मे भी समर्थ हो। वास्तव मे राष्ट्र के उद्देश्यो के साथ शिक्षा का समीप का संबंध होना चाहिए।

आज हम सबके सामने एक ही उद्देश्य होना चाहिए कि हमे राष्ट्र के प्रति अपना दायित्व पूरा करना है। हम कोई भी काम करते हो, राष्ट्र के हित को दृष्टि मे रखकर, यदि हम उसे पूरी निष्ठा से करते है, तो हम अपना कर्तव्य पूरा कर रहे है। शिक्षक का समाज मे एक महत्वपूर्ण स्थान है। इसलिये समाज उससे अधिक आशाएँ भी रखता है, क्योंकि वह शिल्पी है, जो समाज के भावी नागरिको को तैयार करता है, अपनी योग्यता, अनुभव और ज्ञान से उनके जीवन को सँवारता है, उन्हें युग के अनुकूल साँचे मे ढालता है। आर्थिक और सामाजिक दृष्टि मे देश को उन्नत बनाने का जो काम हाथ में लिया है, उस महान प्रयास मे अध्यापको का सहयोग नितांत अपेक्षित है। वह अपने प्रबुद्ध पथ निर्देशन से विद्यार्थियो के व्यक्तित्व का ऐसा विकास करें, जिससे कि उनकी शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक शक्तियाँ पल्लवित हो सकें। वह जब विद्यालय छोडें, तो उनके पास केवल पुस्तकीय ज्ञान न हो, बल्कि उनमे आत्मनिर्भरता की सामर्थ्य भी हो। अनुशासन उनके जीवन का अंग हो। छात्र जीवन मे जो जो संस्कार ग्रहण किए जाते हैं, उनका गहरा प्रभाव पडता है। हमारा यह प्रयत्न होना चाहिए कि विद्यालय मे अनुशासन का ऐसा वातावरण हो, कि सहज मे ही संस्कृति के विनय और शील के भाव तथा नैतिकता के सत्य, निष्ठा, निःस्वार्थता, समता, आत्मसंयम के गुण बालको और बालिकाओ के जीवन मे प्रवेश पा सकें। वह सब के साथ भद्र व्यवहार कर सके, सामाजिक शिष्टाचार का अच्छी तरह से निर्वाह कर सके। सभाषण मे परिमार्जित और परिष्कृत भाषा का प्रयोग कर सके। आज हम छात्रो मे यह गुण पैदा कर सकें, तो निश्चय ही आनेवाला समाज अधिक समृद्ध, स्वस्थ और उन्नत होगा।

छात्र वर्ग से मैं यही कहना चाहूँगा कि उनका यह समय बहुत मूल्यवान् है। यह भविष्य की तैयारी का समय है। आज जो ज्ञान आप संचित करेंगे, जो कलाएँ आप सीखेंगे, जो आदर्श ग्रहण करेंगे, उस पर ही आपका जीवन और विश्व का भविष्य निर्भर करेगा। इसलिये आपका सारा ध्यान और सारी शक्ति शिक्षा पर ही केंद्रित होनी चाहिए। आज हम समाज मे परिवर्तन लाना चाहते है, उन चीज़ो को आपने अपनाया है, क्योकि आज के छात्र ही भावी नागरिक होगे। उन्हे ही समाज के कार्यों का संचालन करना है। वह यदि विवेकी प्रतिभाशाली होने के साथ साथ नैतिक और आध्यात्मिक गुणो से भी संपन्न होगे, तो आनेवाला समाज निश्चय ही अच्छा होगा।

आपके विद्यालय मे आने की मुझे प्रसन्नता है। मैं आशा करता हूँ कि यह विद्यालय अपनी उदात्त परंपराओ का पालन करता रहेगा, तथा राष्ट्रीय आवश्यकताओ के अनुरूप शिक्षा के विस्तार मे अपना योगदान देगा। इन्ही शब्दो के साथ मैं पुन. आप सबको धन्यवाद देता हूँ कि आपने मुझे यहाँ बुलाकर, विद्यालय की गतिविधियो से परिचित किया और आप सभी से मिलने का अवसर दिया।

———

राष्ट्र के प्रति अपना दायित्व

आपके विद्यालय के वार्षिक उत्सव के अवसर पर उपस्थित होने की मुझे प्रसन्नता है। विद्यालय की गतिविधियों तथा उपलब्धियों के विषय में कुछ आगे जानने और यहाँ छात्रों से मिलने का जो अवसर आपने मुझे दिया, उसके लिये मैं आपको धन्यवाद देता हूँ।

यह जानकर संतोष हुआ कि छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिये आपकी संस्था अपने स्थापना काल से सचेष्ट रही है और आज भी इस दायित्व के प्रति सजग है। वास्तव में देखा जाए तो यही वह आधार है जिस पर विद्यालय की उन्नति निर्भर करती है। यदि हम कहते हैं कि अमुक विद्यालय अच्छा है तो कहने का यही तात्पर्य होता है कि वहाँ विद्यार्थियों के शारीरिक, मानसिक तथा बौद्धिक विकास के लिये उपयुक्त वातावरण और सुविधाएँ मौजूद हैं। शिक्षा का स्तर ऊँचा है, अनुशासन और व्यवस्था प्रभावपूर्ण है। जहाँ ये चीजें हैं वह विद्यालय दिनों दिन प्रगति करे, यह स्वाभाविक बात है। जब मैं ऐसे विद्यालय को देखता हूँ तो मुझे बड़ी प्रसन्नता होती है। आज आपका विद्यालय साधनसंपन्न है, विद्यार्थियों के विकास के लिये यहाँ सुविधाएँ भी हैं। शिक्षकों का स्नेह और मार्ग निर्देशन छात्रों को प्राप्त है। इसके लिये मैं इस संस्था के व्यवस्थापकों, शिक्षकों तथा कार्यकर्ताओं को बधाई देता हूँ जिनके अथक प्रयासों से इस विद्यालय ने प्रगति की है।

मानवीय तथा राष्ट्रीय जीवन में आप जानते हैं कि शिक्षा का बड़ा महत्व है। शिक्षा द्वारा ही हम प्रगति कर सकते हैं इसलिये यह स्वीकार किया गया है कि शिक्षा हमारी सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक परिस्थितियों एवं आवश्यकताओं के अनुरूप हो। इसमें हमारा राष्ट्रीय जीवन प्रतिबिंबित होना चाहिए। आज इस बात की बड़ी आवश्यकता है कि शिक्षा के क्षेत्र में किसी प्रकार के संकुचित विचारों के लिये कोई स्थान न हो, बल्कि हमारे विद्यालयों में उदात्त दृष्टिकोण, राष्ट्रसेवा, आत्म-विश्वास और नैतिक मूल्यों का समावेश हो। संकीर्ण विचारों को छोड़कर समता के सिद्धांत को अपनाकर, जातिपाँति के भेदभाव से ऊपर उठकर हमें एक ही चीज अपनानी है और वह है राष्ट्रीय दृष्टिकोण।

ऐसी ऐच्छिक शिक्षासस्थाओ मे जहाँ प्राय साधनसपन्न परिवारो के बच्चे ही शिक्षा का लाभ उठाते हैं, आज जब हम एक भेद भावना रहित समाज की रचना करना चाहते हैं, यह आवश्यक है कि हमारे विद्यालय उसके आदर्श प्रतीक हो। मैं तो चाहूँगा कि आपके जैसे विद्यालयो मे उन साधनविहीन परिवारो के प्रतिभाशाली बच्चो के लिये भी द्वार खुले रहने चाहिए जो अपनी आर्थिक कठिनाइयो के कारण यहाँ प्रवेश नही पा सकते। ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए जिससे वे बच्चे यहाँ शिक्षा ग्रहण कर सकें और अपनी क्षमताओ का विकास कर देश की सेवा कर सके। उन्हे विद्यालय की ओर से ऐसी सुविधाएँ मिल सके, तो मैं समझता हूँ कि यह एक बडा काम होगा। इसके साथ एक और चीज हमे अपने विद्यालयो मे लानी चाहिए, वह है भारतीय सस्कृति। हम ज्ञान, विज्ञान के क्षेत्र मे आधुनिकतम चीजो को अपनाएँ, परतु यह आवश्यक है कि हम अपनी सस्कृति के मूल्यवान आदर्शों को न भूलें। इन्हें अपने जीवन मे उतारने का भरसक प्रयास करें।

आज हम सबके सामने एक ही उद्देश्य होना चाहिए कि हमे अपने राष्ट्र के प्रति अपना दायित्व पूरा करना है। जिस देश से हमे हर प्रकार के सुख सुविधाएँ प्राप्त है, उसके प्रति पूरी निष्ठा से हमे काम करना है। छात्र अपने समय का पूरा उपयोग करें और यही कामना करे कि उपयोगी तथा आँतरिक शक्तियो का विकास करनेवाली विद्या से सपन्न होकर देश सेवा के योग्य बन सकें। जहाँ तक शिक्षा का सबध है, मैं तो मानता हूँ अच्छी शिक्षा आदर्श उपस्थित करके ही दी जा सकती है। बच्चे बडो के आचरण का ही अनुकरण करते हैं। विद्यालय के समय के पश्चात् बच्चो को घर मे भी उपयुक्त वातावरण मिले तो वह उसके विकास मे बडा सहायक होता है। इसलिये विद्यालय के बाद जब बच्चे घर जाएँ तो उनके माता पिता का कर्त्तव्य है कि वे अपने बच्चो मे दिलचस्पी ले, उनमे अच्छी आदतें डालने के लिये समय का उपयोग करना सिखाएँ। उनमे अपना विश्वास पैदा करे, ऐसा होने से वह बडो का आदर करना सीखेगें और छोटी आयु मे आपको सहयोग भी दे सकेगे। मुझे प्रसन्नता है कि आपके विद्यालय मे इस बात को ध्यान मे रखा जाता है और उनके माता पिता व अभिभावक से सबध स्थापित करके, बच्चो की समस्याओ को सुलझाने का प्रयत्न भी किया जाता है। इन्ही शब्दो के साथ मैं आपको पुन धन्यवाद देता हूँ कि आपने मुझे यहाँ आने का मौका दिया। मैं आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ कि आप अपना कर्तव्य निष्ठा से पालन करते रहेगे।

समाज की एक जिम्मेदारी

कुछ दिन हुए श्रीमती डोडे मेरे निवास स्थान पर यह अनुरोध लेकर पधारी थी कि मैं आपके इस नर्सरी स्कूल का मुख्य संरक्षक बनूँ। जब इन्होंने मुझे यह बताया कि अखिल भारतीय मूक बधिर संस्थाओं के अंतर्गत बहरेपन से पीड़ित बच्चों के लिये फिनर्ज नर्सरी स्कूल की स्थापना हाल ही में की है, मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। एक मानवीय उद्देश्य से प्रेरित होकर स्वर्गीय डा० विन फिनर, जो कि फोर्ड फाउंडेशन की भारतीय शाखा के आर्थिक मामलों के सलाहकार थे, की स्मृति में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती फिनर के उदार आर्थिक अनुदान से आरंभ किया गया है। मैं श्रीमती फिनर के इस स्पर्धास्पद कार्य को उनके जीवन की एक अमूल्य उपलब्धि मानता हूँ। मानवी दृष्टि से प्रेरित होकर किए जाने वाले कार्य सदा स्मरण रहते हैं और समाज पर अपनी छाप छोड़ जाते हैं।

आपका यह स्कूल अभी आरंभिक अवस्था में है। आपको नागरिकों के सहयोग और समर्थन की आवश्यकता रहेगी। परोपकारी और मानव प्रेमी लोगों की ओर से आपको आर्थिक सहायता भी मिलती रहेगी, ऐसा मेरा विश्वास है। हमारे देश में बाल कल्याण को प्राथमिकता दी गई है। सरकार की ओर से मूक और बधिर बच्चों के लिये शिक्षण, प्रशिक्षण की यथेष्ट व्यवस्था की गई है। बहुत से स्कूल और विद्यालय इस उद्देश्य से देश भर में सुचारु रूप से कार्य कर रहे हैं। जहाँ हमारे देश के अबोध बच्चों की चिकित्सा का भी प्रबंध है और आधुनिक यंत्रों द्वारा उनकी इस कमी को दूर करने का प्रयत्न भी किया जाता है। ताकि वह बड़े होकर सम्मानित नागरिकों की भाँति जीवन बिता सकें, अपने पाँव पर खड़े हो सकें। परंतु यह कार्य बहुत बड़ा है। लाखों की संख्या में हमारे देश में ऐसे बच्चे हैं जो सुनने और बोलने की शक्ति से वंचित हैं। इनकी शिक्षा, प्रशिक्षण और चिकित्सा के लिये यह नितांत आवश्यक है कि स्वयंसेवी और स्वेच्छिक संस्थाओं का भी इस दिशा में सहयोग हो। देश में बहुत सी संस्थाएँ कार्य कर रही हैं। मानव सेवा से प्रेरित होकर और प्रतिफल की इच्छा के बिना जो परोपकारी कार्य किया जाता है, वह निष्फल नहीं जाता है, ऐसा सभी धर्मों और विचारकों का मत है। वास्तव में मानव सेवा ही मनुष्य का सबसे बड़ा धर्म है। उस धर्म के प्रति हमें सदैव सजग रहना चाहिए।

यह सभी जानते है कि बहरापन मनुष्य शरीर के लिये कोई साधारण कमी नही। यदि यह दोष बचपन अथवा जन्म से हो, तो इसका प्रभाव व्यक्ति के सामान्य विकास पर पडता है। वाणी और शब्द ध्वनियो से वचित व्यक्ति जीवन की नीरवता भले ही सहन कर ले, परतु एक मानसिक पीडा का अनुभव होता ही रहता है। हीन भावना से मुक्त हो पाना कठिन तो है परतु यह समाज के हित मे नही है। इसलिये मैं समझता हूँ कि देश के सभी प्रबुद्ध एव समृद्ध नागरिको का ध्यान इस ओर आकर्षित होना ही चाहिए। ताकि वे अबोध बालक इस कारण एकागी और अलग अलग महसूस न करें और यह न माने कि राष्टोय जीवन मे वे शामिल नही हो सकते। वे अन्य लोगो की तरह देश के सदस्य है और इन्हे अपनी मानसिक, बौद्धिक योग्यताओ से समाज उपयोगी बनने का पूरा अधिकार है।

आज का मनुष्य बहरेपन के मुख्य कारणो को काफी मात्रा मे जानने लग गया है। विज्ञान के क्षेत्र मे जो आश्चर्यजनक प्रगति हुई है, उसकी उपलब्धियो से चिकित्सा मे भी एक क्राति सी आ गई है। अब बहरेपन की चिकित्सा के लिये ऐसे उपकरण तैयार किए गए हैं, जिनसे इस कमी को बडी हद तक पूरा किया जाना सभव हो गया है। यह प्रसन्नता का विषय है कि स्वदेश मे अब ऐसे सयत्र बनाए जाने लगे हैं। परतु फिर भी माता पिता की जिम्मेदारी कम नही होती है, जिन कारणो से बच्चो मे यह कमी आ जाती है, उसके लिये नितात सावधान रहना आवश्यक है। जहाँ उन्हे तनिक भी सदेह हो, चिकित्सा मे उन्हे देर नही करनी चाहिए और इसे दूर करने का भरसक प्रयास करना चाहिए। अथवा उन्हें ऐसे स्कूलो मे भरती करवा देना चाहिए, जहाँ उनकी देख रेख, शिक्षा, प्रशिक्षण और चिकित्सा का भी प्रबध हो। जहाँ माता पिता गरीब हैं उन बच्चो की जिम्मेदारी समाज पर आती है और हर सभ्य समाज इसके लिये अपने कर्तव्य से विमुक्त नही हो सकता। इसके साथ ही एक बडा दायित्व उन शिक्षको और सस्थाओ पर भी आता है जिनको देख रेख मे इन अबोध बालको को सौपा जाता है। कार्य कठिन अवश्य है परतु त्याग और निरतर परिश्रम से असाध्य को साध्य बनाना सभव है। इन बच्चो को व्यक्तिगत रूप से शिक्षा मिलनी चाहिए। यहाँ धैर्य की सबसे अधिक आवश्यकता है क्योकि सामान्य बच्चो से कही अधिक समय इन बच्चों को देना पडेगा। एक दीर्घ समय की प्रतीक्षा के पश्चात् ही यह परिश्रम फलीभूत होगा।

थोडे दिन पूर्व ही आपने इस नर्सरी स्कूल की नींव रखी है और आपके सामने अन्य योजनाएँ भी हैं। मुझे पूरी आशा है कि उदारचित्त देशवासियों के आर्थिक और बौद्धिक सहयोग से तथा आप के निरतर परिश्रम, त्याग और दिलचस्पी से यह पाठशाला इन बच्चों के जीवन मे खुशी और सुख आनद लाने मे सफल होगी। मैं आपके इस प्रयास एव नर्सरी स्कूल के सफल भविष्य की कामना करता हूँ और इन्ही शब्दो के साथ आपके स्कूल का उद्घाटन करता हूँ।

———

अशांति के कारण

मोतीराम आर्य सीनियर माडल स्कूल के स्वर्ण-जयती समारोह के उद्घाटन के लिये उपस्थित हो पाना मै अपने लिये गौरव की बात समझता हूँ और आपके निमन्त्रण के लिये मैं हृदय से आभारी हूँ। शिक्षा सस्थाओ मे जब कभी भी मुझे जाने का अवसर मिलता है, अपनी व्यस्तता के होते हुए भी देश के इन भावी नागरिको से मिलने के अवसर को हाथ से जाने नही देता। विद्यार्थियो के साथ थोडा बहुत समय जब भी बिता पाया हूँ, मैंने उसे अपने लिये मूल्यवान ही माना है।

मुझे यह जानकर बडी प्रसन्नता हुई कि आपकी इस शिक्षा सस्था की स्थापना पुरुषार्थ और परोपकार की जिस भावना से की गई थी, उन्ही मानवीय मूल्यो से यह आज भी प्रेरित है। शिक्षा के क्षेत्र मे जो कार्य आप से सपन्न हुआ, उसकी मैं सराहना करता हूँ। किसी सस्था के जीवन मे ५० वर्ष बहुत महत्व रखते है और विशेपकर वह अवधि जिसमे शिक्षा के विस्तार का कार्य किया हो, राष्ट्र सेवा ही कही जाएगी। मैं आप सबको इस स्वर्ण-जयती के अवसर पर बधाई देता हूँ।

अभी विद्यालय की प्रधानाचार्या ने, विद्यालय की गतिविधियो, उपलब्धियो तथा छात्र जीवन का जो सविस्तार विवरण प्रस्तुत किया, उससे यह जानकर मुझे बडी प्रसन्नता है कि इस विद्यालय ने अपने स्थापना काल से लेकर आज तक काफी तेजी से प्रगति की है और इस समय यहां १७३० छात्र शिक्षा प्राप्त कर रहें है। यह भी बडे सतोप की बात है कि इस सस्था के प्रबधको, शिक्षको तथा कार्यकर्ताओ के निरतर प्रयासो से इस विद्यालय ने अच्छी शिक्षा का प्रबध करने मे सफलता प्राप्त की है और छात्रो के समन्वित विकास के लिये कानवेट शिक्षा प्रणाली को अपनाया है। प्रगतिशील युग की माँगो को पूरा करने, और उसके अनुरूप पाठचक्रम तथा शिक्षा के आधुनिक तौर तरीको को अपनाने का जो आपने दृष्टिकोण अपनाया है, यह युगानुकूल एव स्वस्थ दृष्टिकोण है। क्योकि जब तक हम आज से कम से कम दस साल आगे का विचार नही करते, उसके अनुसार योजना नहीं बनाते हमारी शिक्षा उस समय की आवश्यकताओ को पूरा करने मे समर्थ नही हो सकती। जो शिक्षा आज दी जाएगी, वह भविष्य की तैयारी है। कल हमारे सामने जो प्रश्न पैदा होंगे,

उनके समाधान की उनमे सामर्थ्य हो, यही हमारा प्रयत्न रहना चाहिए। इन बच्चो को आनेवाले समय मे देश का नागरिक बनना है, देश के लिये काम करना है तो इन्हें हम आने वाले समय के लिये तैयार न कर सकें तो दोष हमारा होगा। इसलिये मैं समझता हूँ कि इस संबध मे शिक्षको का भी बहुत बड़ा दायित्व है। ये बच्चे जो देश की अमानत हैं, उन्हें माँ बाप ने आपको सौंपा है, इस आशय से कि वे अच्छे इन्सान बन कर अपने समाज और देश का नाम ऊँचा करे। इन्हें जो शिक्षा और संस्कार इस आरंभिक काल मे प्राप्त होंगे, वह सदैव इनके साथ होंगे, गुरु और शिष्य की हमारी उस महान् परंपरा को सुदृढ बनाना ही राष्ट्रीय हित मे है।

आज हम देखते हैं कि सारे विश्व मे अशांति व्याप्त है, क्योंकि अभी तक मानव ने भाइयो की तरह जीना नही सीखा। अभी तक जाति, धर्म, भाषा, रंग और संप्रदाय के भेद विद्यमान हैं। भारत मे भी कभी यह भेद विरोध और असहिष्णुता के स्वरूप मे राष्ट्रीय एकता को हानि पहुँचाते है। परंतु इन चीजों से बचने के लिये, मानवीय एकता जब तक सुदृढ नही होती, स्थायी समाधान हमें प्राप्त नही हो सकता। इसलिये मैं यह आवश्यक समझता हूँ कि शिक्षा संस्थाओ मे दी जाने वाली शिक्षा मे केवल इस बात पर बल नही दिया जाना चाहिए कि हमारे विद्यार्थी, सच्चे देश-भक्त, कार्य-कुशल एवं निष्ठावान् नागरिक बनें, बल्कि शिक्षा मे राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर वर्तमान समस्याओ को सुलझाने की उपयुक्त क्षमता भी होनी चाहिए। विद्यार्थियो की मनोवृत्ति इस प्रकार सँवारी जानी चाहिए कि नए युग की चुनौतियों का सामना करने की उनमें शक्ति हो। हमे एक मानवोचित दिशा प्रशस्त करनी होगी। ताकि भावी पीढी मे नैतिक तथा बौद्धिक गुणो को विकसित करके अच्छे प्रशासक, नियोजक, प्रबंधक, साहित्यकार, राजनीतिक, वैज्ञानिक इत्यादि क्षेत्रो के लिये गुणसंपन्न, निष्ठावान नागरिक तैयार किए जा सकें। विद्या का यही अर्थ है कि उसके द्वारा हमारे जीवन और चिंतन मे उचित मूल्यो का समावेश हो सके।

मुझे यह जानकर बड़ा संतोष हुआ है कि आपके विद्यालय मे छात्रो के बहुविध विकास पर विशेष ध्यान दिया जाता है। यह जानकर भी प्रसन्नता हुई कि इस विद्यालय के छात्रो ने कई पुरस्कार और सम्मान प्राप्त करके संस्था के यश मे वृद्धि की है और शिक्षा पूर्ण करने के बाद भी नाम कमाया है। मैं छात्रो को उनके प्रशंसनीय कार्यों के लिये बधाई देता हूँ और उन्हें सीख देता हूँ कि ज्ञान अर्जित करने मे किसी प्रकार प्रमाद न करें। उपनिषदो मे कहा है कि ज्ञान से सब संशय दूर हो जाते है—

"भिद्यते हृदयग्रंथिश्छिद्यते सर्वसंशया ।" दूसरे स्थान पर कहा है—
"अथो खल्वाहु काममय एवाय पुरुष इति स यथा कामो भवति तत्कतुर्भवति, यत्कतुर्भवनि तत्कर्म कुरुते, यत्कर्म कुरु ते तदभिमपद्यते।"

जैसी हम कामना करते है वैसा हमारा ज्ञान होता है, जैसा ज्ञान होगा, वैसा ही मनुष्य कर्म करेगा और जैसा हम कर्म करेंगे, वैसा ही हमे फल मिलेगा।

जिस तरीके से यहाँ कार्य हो रहा है और जिस लगन और निष्ठा से आप सब इस सस्था द्वारा समाज की सेवा कर रहे है, उसे देख कर हार्दिक प्रसन्नता हुई है। आपके सामने कुछ आर्थिक कठिनाइयाँ है। मुझे आशा है कि दानशील लोग आपको हताश नही होने देंगे। आपकी सस्था के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ और विद्यालयो के छात्रो को मेरी हार्दिक शुभ कामनाएँ। आप फले फूलें और पूरी निष्ठा से अपनी शिक्षा ग्रहण करें। ताकि आप जब समाज मे प्रवेश करें तो आप सभी सशयो से निवृत्त हो।



परिवार की खुशहाली

उदयपुर विश्वविद्यालय के प्रागण मे उपस्थित होने का जो सुयोग आपने मुझे प्रदान किया, उसके लिये मैं आपका आभारी हूँ। आज गृह-विज्ञान कालेज के नए भवन की आधार शिला रखी गई। मुझे बताया गया है कि यह कालेज पिछले कुछ वर्षों से गृह विज्ञान के शिक्षण प्रशिक्षण की सुविधा जुटा रहा है। कालेज के विकासक्रम तथा गतिविधियो के विषय मे जानकर प्रसन्नता हुई और सतोष हुआ कि उदयपुर विश्वविद्यालय युग के अनुकूल शिक्षण व्यवस्था के लिये सजग है।

आजादी के बाद राष्ट्र निर्माण के लिये शिक्षा को प्राथमिकता मिली। शिक्षा के बारे मे कई विचार सामने आए। आज सभी यह मानते हैं कि शिक्षा अधिक व्यावहारिक होनी चाहिए, जिससे कि युवा पीढी अधिक स्वावलबी बन सके और आनेवाले समय की आवश्यकताओ को पूरा करने की उसमे सामर्थ्य हो। वह हमे एक स्वस्थ जीवन जीने के योग्य भी बना सके। विज्ञान, तकनीकी, साहित्य, कला, वाणिज्य इत्यादि विषयो मे विस्तार आ जाने के साथ आज इनमे बडी व्यापकता आ गई है। एक एक विषय की कितनी ही शाखाएँ और उपशाखाएँ हैं जिनका महत्व बढता जा रहा है। उनमे विशिष्टता प्राप्त की जा सकती है। अच्छे रोजगार के अवसर प्राप्त किए जा सकते हैं। गृह विज्ञान आज बडा आवश्यक और उपयोगी माना जाता है। इस विषय के बारे मे लोगो मे पहले कुछ गलत धारणाएँ रही, परतु अब इसे समझा जा रहा है और ऐसे कालेजो मे विद्यार्थियो की सख्या मे तेजी से वृद्धि हो रही है।

यह प्राय सभी जानते हैं कि हमारा घर समाज की एक महत्वपूर्ण इकाई है। उसके बिना न समाज बनता है, न सामाजिक जीवन। घर के सुव्य-वस्थित होने का अर्थ है, सुखी और स्वस्थ पारिवारिक जीवन। घर का महत्व प्राचीन काल से रहा है। वह अब भी महत्वपूर्ण है और भविष्य मे भी रहेगा। किसी ने कहा है कि राष्ट्र की समृद्धि और विकास इस बात पर निर्भर करते हैं कि उस देश मे रहनेवाले लोगो के घरो की स्थिति कैसी है।

प्राचीनकाल से घर की सर्जक नारी रही है। घर की समुचित व्यवस्था का दायित्व तब से उसने ही सँभाला है। इस समय मे इस युग मे एक विशेष

परिवर्तन आया है। वैज्ञानिक तथा तकनीकी प्रगति तथा नए जीवन मूल्यो के साथ आज महिलाओ का कार्यक्षेत्र सीमित नही रहा। वे जीवन के विभिन्न क्षेत्रो मे कार्य करती दिखाई देती है। आज वे आर्थिक और सामाजिक जीवन के महत्वपूर्ण कार्यो को बडी दक्षता से निभा रही है। महिलाओ के लिये शिक्षा और रोजगार के अवसर बढते जा रहे हैं। परतु यह भी सत्य है कि गृह का प्रवध आज भी उसी के कधो पर है।

परिवार की खुशहाली केवल आर्थिक स्थिति पर ही निर्भर नहीं करती। इसके साथ स्वस्थ और सुदर तरीको का अपनाया जाना भी जरूरी है। आर्थिक सपन्नता के वावजूद पारिवारिक जीवन असतुष्ट और कष्टमय हो सकता है। जवकि एक चतुर गृहनिर्माता महिला सीमित साधनो के होते हुए भी एक सुदर घर का निर्माण कर सकती है। अपने घर के समस्त दायित्वो को सुयोग्य ढग से निभाने के लिये युग सदर्भ मे गृह विज्ञान का व्यावहारिक ज्ञान आवश्यक है। क्योकि एक सखी, स्वस्थ एव सतुष्ट जीवन के लिये आवश्यक और उपयोगी सामग्री का इस विषय मे समावेश है।

आज गृहविज्ञान मानव के सतुलित जीवन यापन से सवध रखता है। इसमे घर की सज्जा, उसकी व्यवस्था, अच्छे पारिवारिक सवध, नियोजन इत्यादि के बारे मे सभी कुछ है। यह विज्ञान हमारे लिये घर मे जितना उपयोगी है, उतना ही रोजगार का एक सवल साधन भी वनता जा रहा है। ऐसे कई कार्य है, जिनमे गृह विज्ञान के स्तानको की माँग वढती जा रही हैं। इसमे विस्तार की अधिक सभावनाएँ है। इसलिये अधिक से अधिक महिलाएँ यदि यह विषय अपनाएँ तो मैं समझता हूँ कि घरो मे जो तवदीली आएगी, उससे समाज को एक नया रूप प्राप्त होगा। यह एक सामान्य समझ की वात है कि सरकार हर परिवार के लिये एक एक शिक्षिका या परिचारिका का प्रवध नही कर सकती। इसलिये गृह निर्माण महिलाओ को युग के अनुकूल विभिन्न जीवन उपयोगी विपयो की समन्वित जानकारी की सुविधा प्राप्त हो तो सही माने मे वह वच्चो के लिये एक अच्छी शिक्षिका, एक हितैपी परिचारिका का दायित्व भी पूरा कर सकती है तथा अपने परिवार के लिये एक सुघड व्यवस्थापिका एवं मार्गदर्शिका भी सिद्ध हो सकती है। मैंने महिलाओ के लिये इस विपय को अधिक उपयोगी मानकर इस वात पर वल दिया। आज यह विषय इतना व्यापक है कि पुरुप भी इनसे लाभ उठा समाज की सेवा मे अपना योगदान दे सकते हैं। आज यह चेतना जग रही है कि

वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने से ही हम उन्नति कर सकते हैं। देश को ऊँचा उठा सकते हैं।

मैं विश्वविद्यालय के उन कार्यक्रमों को सबसे अधिक महत्व देता हूँ जिन से सामान्य जनता भी शिक्षा का लाभ उठा सके। हमारे देश मे इस बात की बडी जरूरत है कि शिक्षा के प्रसार का काम न केवल अध्यापकों द्वारा ही सपन्न हो, बल्कि उस कार्य मे विद्यार्थियों का भी योगदान हो। इस प्रकार की यदि व्यवस्था हो तो विश्वविद्यालय की शिक्षा का प्रभाव समाज के एक बड़े क्षेत्र पर पडेगा। यदि विद्यार्थी अवकाश के दिनो मे देहात मे जाकर, प्रौढ और अशिक्षित महिलाओ तथा बालिकाओ को शिक्षा का लाभ पहुँचाएँ, समाज मे जो कमजोर वर्ग हैं, उनको शिक्षित बनाने का कार्य करें, तो इससे उन्हें एक अच्छा विद्यार्थी बनने के साथ साथ समाज के उस ऋण से मुक्त होने का भी अवसर मिलेगा, जो समाज उनकी शिक्षा पर करो के रूप मे सरकार को अदा करता है और सरकार इस राजस्व का एक बडा भाग देश के युवक और युवतियो की शिक्षा एव प्रशिक्षण पर व्यय करता है।

मुझे प्रसन्नता है कि आपने इस वर्ष से गृहविज्ञान की स्नातकोतर कक्षाएँ भी आरभ की हैं और अगले वर्ष से आप गृहप्रबध तथा शिशु विकास के विषयो मे स्नातकोत्तर कक्षाएँ आरभ करने जा रहे हैं। मुझे आशा है कि विद्यार्थी यहाँ समुचित ज्ञान अर्जित करके समाज सेवा का निर्वाह करेंगे। वह अपनी विद्या को दूसरो मे बाँट कर इसको अधिक लोगो तक पहुँचाएँगे। एक से एक दीपक जलाने का अर्थ है, सर्वत्र प्रकाश। अन्त मे मैं आप सबके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ और चाहता हूँ कि आपका कालेज प्रगति के पथ पर आगे बढ़ता रहे।

व्यास शिक्षा

मैं अखिल भारतीय सस्कृत शिक्षा समेलन के अध्यक्ष का आभारी हूँ कि उन्होने मुझे आज के समारोह मे आमन्त्रित कर आप लोगो के दर्शन का सौभाग्य प्रदान किया है । मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि उनके नेतृत्व मे शिक्षा-समेलन दिन प्रतिदिन प्रगति की ओर अग्रसर हो रहा है तथा सस्कृत और भारतीय सस्कृति के कार्यक्रम को आगे वढा रहा है ।

लगभग एक वर्ष पूर्व आचार्य श्री पट्टाभिराम शास्त्री जी द्वारा सपादित दो हजार पृष्ठो से भी अधिक विशाल ग्रथ "कुतूहलवृत्ति" के विमोचन का इसी भवन मे मुझे अवसर मिला था । काची शकराचार्य जी की प्रेरणा से सस्थापित वेद मीमासा अनुसधान केन्द्र, वाराणसी द्वारा प्रकाशित तथा आचार्य श्री पट्टाभिराम शास्त्री जी के द्वारा सपादित दूसरे ग्रथ "व्यास–शिक्षा" का विमोचन अभी मेरे द्वारा सपन्न हुआ है । यह सब आचार्य श्री पट्टाभिराम शास्त्री जी द्वारा लगातार की जा रही साधना का ही सुपरिणाम है । इस ग्रथ का सबध वैदिक साहित्य से है । इसमे प्राचीन परपरा से आ रही वैदिक उच्चारण परपरा के नियमो की व्याख्या की गई है। एक प्रकार से यह वैदिक भाषा विज्ञान से सबधित उच्चकोटि का ग्रथ है–जो अब तक प्रकाशित नही हुआ था जिस पर शोध कर आचार्य जी ने इसका समालोचनात्मक सपादन किया है ।

वेद, भारतीय सस्कृति और सभ्यता के मूल स्रोत है । सारे ससार के विद्वानो ने उनकी प्राचीनता और गौरव को समान के साथ स्वीकार किया है । आज के युग मे वैदिक तत्वज्ञान का प्रचार–प्रसार बहुत आवश्यक है । इस दृष्टि से हमारे मूल स्रोत वेद की ओर इस ग्रथ के द्वारा सारे ससार का ध्यान आकृष्ट कर आचार्य श्री पट्टाभिराम शास्त्री जी ने एक वडे उपकार का काम किया है । इसके लिये मैं उनका अभिनदन करता हूँ और उनके द्वारा सस्कृत और भारतीय सस्कृति के क्षेत्र मे की गई सेवाओ को स्तुत्य मानता हूँ ।

इसी प्रसग मे मैं सस्कृत के अध्ययन–अध्यापन की ओर आप लोगो का ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूँ। मेरी यह मान्यता है कि हमारे राष्ट्र की सास्कृतिक एकता और हमारी प्राय सभी प्रादेशिक भाषाओ के साहित्य के

विकास के लिये हमारे राष्ट्र मे सम्कृत के प्रचार की विशेष आवश्यकता है। हमारे गौरवमय प्राचीन इतिहास का ज्ञान भी हम सस्कृत के द्वारा ही प्राप्त कर सकते हैं। सस्कृत का दर्शन एक क्रान्तिकारी दर्शन है—जिसमे सदा राष्ट्र को प्रगति की ओर ले जाने का सदेश दिया है। मेरे विचार मे सस्कृत के पढने पढाने का अधिक से अधिक प्रचार—प्रसार होना चाहिए और प्रत्येक बच्चे को इसके पढने का अवसर मिलना चाहिए।

यह प्रसन्नता की बात है कि यह ग्रथ श्रीमती रामप्यारी देवी सिंहानिया की स्मृति मे प्रकाशित किया गया है। मुझे बताया गया है कि उनकी धार्मिक सेवाओ के प्रति आदर प्रकट करने के लिये सभी लोग उन्हें "मा जी" के नाम से सबोधित करते थे। उनकी प्रेरणा से जे० के० सगठन ने समाज सेवा और भारतीय सस्कृति के प्रचार—प्रसार के क्षेत्र मे जो उल्लेखनीय कार्य किए हैं, उनके लिए मैं सगठन को बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि यह सगठन इस प्रकार के वैदिक ग्रथो के प्रकाशन मे अधिक से अधिक सहयोग प्रदान करेगा।

एक बार फिर मैं इस आयोजन के उपलक्ष मे शिक्षा समेलन के अध्यक्ष, उसके कार्यकर्ताओ, आचार्य श्री पट्टाभिराम शास्त्री जी एव सिंहानिया परिवार को धन्यवाद देता हूँ।

समाज के नन्हें पौधे

आज के समारोह मे उपस्थित होने की मुझे बडी प्रसन्नता है । मैं आप सबको धन्यवाद देता हूँ कि मुझे यहाँ आने का अवसर दिया ।

पजाब विश्वविद्यालय मे उच्च शिक्षा के लिये जो सुविधाएँ उपलब्ध हैं उन्हें आप सभी जानते हैं । यह जरूरी था कि यहाँ एक नर्सरी स्कूल भी हो, जहाँ नन्हे–मुन्ने बालको और बालिकाओ को आधुनिक और मनोवैज्ञानिक शिक्षा सुलभ की जा सके । बुनियाद मजबूत हो तो उस पर एक भव्य भवन का निर्माण किया जा सकता है । इस बात को सामने रखकर, मेरा विश्वास है कि अकुर नर्सरी स्कूल की स्थापना की गई है । बच्चा की तीन से चार साल की अवस्था भावी जीवन के साथ बडा सबध रखती है । इस अवस्था मे इनका जिस प्रकार से लालन पालन होगा, इनमे आप एक सुदर ढग से शिक्षा के प्रति रुचि पैदा की जाएगी, अच्छी आदतें डाली जाएँगी, उन्ही के अनुसार उनका व्यक्तित्व निखरेगा ।

वास्तव मे यह समय बच्चो के स्वभाव के निर्माण का है । हम जानते हैं कि मनुष्य का स्वभाव ही वह आधार है जिस पर मनुष्य का चरित्र और व्यक्तित्व स्थिर होता है । स्वभाव के माने है कि किसी चीज को बराबर किया जाए और उसके बाद वह स्वतः ही होती रहे, यह स्वभाव की परिधि है । जब हम बच्चो को नैतिक और शिष्टाचार की बातें सिखाते है और उन बातो की पुनरावृत्ति होती रहती है तो वह स्वभाव मे परिणत हो जाती हैं । इसलिये यह माना गया है कि जितनी छोटी अवस्था मे स्वभाव के निर्माण की चेष्टा होगी, उसके परिणाम उतने ही स्थायी और सुदर होगे । किसी बालक और बालिका मे अच्छे गुण डालने का अर्थ यह नही कि उसे हम सदा उपदेश ही देते रहें इससे अधिक लाभ नही होता । लेकिन बडे यदि ऐसा आचरण करे तो बच्चे उसे शीघ्र ग्रहण करते है । बच्चो मे अनुकरण की क्षमता अधिक होती है । जो वह देखते हैं, उसे ग्रहण करने मे उन्हे कठिनाई नही होती । इसीलिये मैं समझता हूँ कि बच्चो के भावी जीवन के लिये शिक्षा का जितना महत्व है उतना ही उसकी पारिवारिक परिस्थितियो तथा समाज के वातावरण का भी महत्व है । बच्चो मे जिन आदर्शो और क्षमताओ को हम विकसित होते देखना चाहते हैं उसके लिये वैसे आदर्श उन्हे अपने परिवार,

शिक्षा केन्द्र तथा समाज, इन तीनो के द्वारा प्रस्तुत होने चाहिए। लेकिन हम जब एक नए समाज के निर्माण की बात करते है तो इसका यही अर्थ है कि उस परिवर्तन के लिये हमे इन बच्चो को तैयार करना है, यह चीज हमारे सामने रहनी चाहिए।

दूसरी बात यह है कि बच्चो की इस अवस्था मे उनमे अपनी ज्ञानवृद्धि की बडी जिज्ञासा रहती है। वे अपने अभिभावको और शिक्षको से कई बातें पूछते है और अपने प्रश्नो का समाधान चाहते है। परतु हम यदि इस उत्सुकता को दबा दे, उन्हें सतोषजनक उत्तर न दे तो उनका विकास रुक जाता है और उनके विपथगामी होने की सभावना होती है। इसलिये बच्चो को अपनी सुचेष्टाओ के अनुरूप अपने विकास के लिये उत्साहित किया जाता रहे तो वे देश के योग्य नागरिक बन सकते है। छोटे बच्चे स्वय क्रियाशील रहने मे आनद की अनुभूति करते है और यदि विद्यालय मे उन्हे एक आदर्श घर का वातावरण मिले तो वे खेल खेल मे ही अपना व्यक्तित्व विकसित करने लग जाते हैं। अपने कार्यों को स्वय करने का उनमे उत्साह बढता है। चल-चित्र, सगीत, कहानियाँ, आदर्श पुरुषो के जीवन चरित्र और अच्छे खिलौने और खेल कूद का सामान ऐसी चीज है, जिनमे उनकी ज्ञान इन्द्रियो का विकास होता। सारी चीजे वह पृष्ठभूमि तैयार करती है जिसमे बच्चे शिक्षा मे अधिक रुची लेते है।

किसी ने कहा है कि भावी नागरिक के निर्माण मे दूरदर्शिता से काम लिया जाना चाहिए जिससे कि हम भावी समाज के अनुरूप उसे ढाल सकें। वास्तव मे शिक्षा वह साधन है जिससे ऊँची प्रवृत्तियाँ निम्न प्रवत्तियो पर विजय पाती है। इसी सदर्भ मे डा० राधाकृष्णन का विचार था कि समुचित शिक्षा एक बच्चे की प्रवृत्ति को परिवर्तित कर उसे नया जन्म देती है। रोम की प्रसिद्ध मेरिया माटेसरी ने बच्चो के मनोवैज्ञानिक आधार पर यह सिद्धात निश्चित किया था कि दुर्बल कमजोर मस्तिष्क के शिशुओ को यदि नए और मनोवैज्ञानिक ढंग से पढाया – लिखाया जाए और कार्य करने का स्फूर्ति दी जाए तो स्वस्थ बच्चो के समान ही ये भी शिक्षित और सुसस्कृत बनाए जा सकते हैं। उनमे भी अच्छी कार्यकुशलता पैदा की जा सकती है। इसलिये जिन जिन पर यह जिम्मेदारी आती है, उन्हे चाहिए कि वे अपने दायित्व को पूरी निष्ठा से निभाएँ।

एक बहुत रोचक घटना है। गाँधी जी जब घूमने निकलते थे तो बच्चो के प्रति अपने स्नेह के कारण उन्हे भी अपने साथ ले जाते थे। एक बार वह साबरमती मे स्नान करने गए, बच्चे उनके साथ थे। पानी मे खडे।

गाँधी जी अहिंसा के बारे मे बतला रहे थे कि एक कछुए के उनके पाँव के अगूंठे को काट लिया। जब वह बाहर आए तो एक बच्चे ने पाँव से बहते हुए खून को देखकर एक प्रश्न कर डाला, "बापू आपने कछुए को अहिंसा क्यो नही सिखाई।" अन्य लोग जो वहाँ उपस्थित थे यह सुनकर हँस पडे परतु महात्मा गाधी जी विचार मे पड गए। उन्हें लगा कि बच्चे ने एक गूढ प्रश्न किया है, उसकी बुद्धि बडी तीव्र है, उसे संतोषजनक उत्तर मिलना चाहिए। उन्होने कहा, "पहले मनुष्यो को तो सिखा लूं, बाद मे कछुए का नम्बर आएगा"। शिक्षा देते समय हमे यही चीज अपने सामने रखनी चाहिए कि हम बच्चो की जिज्ञासा का उचित ढग से समाधान कर सकें और उन्हे अच्छी बातो के लिये प्रेरित कर सकें।

बच्चे नन्हें पौधो के समान होते हैं। उनकी देख-रेख, सारसँभाल मे बडी सावधानी की आवश्यता होती है। हमे चाहिए कि बच्चो मे प्रकृतिप्रदत्त शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक तथा नैतिक शक्तियाँ समान रूप मे विकसित होती रहें। हम इनके स्वास्थ्य की ओर पूरी दृष्टि रखे। बच्चो मे यदि कोई शारीरिक कमी अनुभव हो तो उसकी चिकित्सा का प्रबध जुटा सकें, पौष्टिक भोजन की व्यवस्था कर सकें। यह एक बडी जिम्मेदारी है, जो हर समाज को पूरी करनी चाहिए। हमारी यही चेष्टा होनी चाहिए कि हमारे देश के बच्चे प्रसन्नचित्त, हंसते और खिलते दिखाई दे।

आपने एक अच्छा कार्य आरभ किया है और मुझे आशा है कि आप इस कार्य मे सफल होगे। मैं इस स्कूल के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ और मुझे यहाँ आमन्त्रित करने के लिये आप सबको पुनः धन्यवाद देता हूँ।

आशाओं के अनुरूप : शिक्षा का स्वरूप

इस महाविद्यालय मे दीक्षात भाषण देने के लिये आपने जो निमत्रण मुझे दिया है और यहाँ आने पर मेरा जो प्रेमपूर्ण सम्मान किया है, उसके लिये मैं आप सबका अत्यत आभारी हूँ।

हमारे देश के इतिहास मे प्राचीनकाल मे गगा यमुना की इस पुण्य भूमि का एक अनोखा और विशिष्ट स्थान है। हमारी सस्कृति और सभ्यता की यह क्रीडास्थली रही है। अनेक अवतार पुरुषो के पावन चरणस्पर्श से यह धरती पुनीत हुई है। ऋषि मुनियों, सतो, सूफियो की वाणी की गूंज यहाँ के कण-कण मे है। इधर आधुनिक काल मे भी इस प्रदेश ने जो गौरवपूर्ण भूमिका निभाई है वह भी अत्यत महत्वपूर्ण है। सन् ५७ की क्राति की लहर जिसने ब्रिटिश साम्राज्यवाद की जडो को हिला दिया, इसी प्रदेश से उठकर देश भर मे फैल गई। उन्नीसवी सदी मे हमारे देश की आजादी की लडाई मे इस प्रदेश के लोगो ने जो कुर्बानियाँ की और यहाँ के नेताओ ने महात्मा जी के प्रेरणादायी नेतृत्व मे स्वतत्रता सग्राम मे जो प्रमुख दायित्व वहन किया है, ये सब हमारे आधुनिक इतिहास के पन्नो मे स्वर्णाक्षरो मे लिखे जाएँगे। इस महान और गौरवशाली परपरा को और भी उज्ज्वल बना रही हैं हमारे देश की प्रधान मत्री श्रीमती इन्दिरा गाधी, जिन पर इस प्रदेश के लोग ही नहीं, सपूर्ण देश के लोग गर्व का अनुभव कर सकते हैं।

आपका यह महाविद्यालय भी उसी गौरवशाली परपरा की एक कडी है। यह उचित ही है कि इसका नाम इसके सस्थापक के नाम के साथ जुड गया है। स्वर्गीय फिरोज गाधी न केवल एक महान देशभक्त थे, बल्कि एक प्रतिभाशाली व्यक्ति भी थे जिनकी दृष्टि आज से १५ साल पहले ही ग्रामीण, पिछडे और दबे हुए लोगो की उन्नति की ओर गई थी। वे जानते थे कि व्यक्ति और समाज की उन्नति के लिये शिक्षा ही एक सशक्त साधन है। यही कारण है कि उन्होने रायबरेली मे इस महाविद्यालय की स्थापना की थी। किंतु यह बडे दु ख की बात है कि जिस पौध को उन्होने लगाया था, उसको वे अधिक दिन तक सीच नही सके और उसको फलते फूलते नही देख सके। यदि मैं यह कहूँ तो कोई अतिशयोक्ति नही होगी कि इस महाविद्यालय का जो सर्वतोमुखी

विकास हुआ है उसके मूल मे जो उनकी प्रेरणा, तपस्या और संकल्प था उसी के फलस्वरूप आज यह महाविद्यालय फल और फूल रहा है। इसलिये आज के इस अवसर पर, आइए, हम उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए अपनी श्रद्धांजलि समर्पित करे और उनके कर्मठ जीवन से देश के लिये कुछ कर सकने की प्रेरणा ग्रहण करे।

यह देखकर मुझे बडी प्रसन्नता होती है कि इस महाविद्यालय ने पिछले १०-१५ वर्षो मे काफी प्रगति की है और इसमे कला, वाणिज्य और विज्ञान के विषयो के शिक्षण की व्यवस्था है। कुछ विषयो मे स्नातकोत्तर वर्ग भी चलाए जा रहे हैं और विद्यार्थियो की संख्या दिन प्रतिदिन बढ रही है, ये सब इसकी प्रगति के सूचक हैं। सबसे बडी बात यह है कि हमारी शिक्षा पद्धति ऐसी होनी चाहिए कि जिससे हमारे समाज और देश की मांगे पूरी हो सके। आप सब जानते हैं कि आज हम अपने राष्ट्र के पुर्ननिर्माण और समाज की रूप रेखा को बदलने के महत्वपूर्ण प्रयास मे लगे हुए हैं। हम ऐसे नए भारत का निर्माण करना चाहते हैं जिसमे कोई पददलित और शोपित न हो और सबको, खासकर पिछडे हुए और कमजोर वर्गो के लोगो को उन्नति के लिये अवसर प्राप्त हो। यह एक महान प्रयास है, एक बहुत बडी चुनौती है। हमे एक जुट होकर इसका सामना करना है। वास्तव मे उन सभी साधनो मे, जिनके जरिए हम इस लक्ष्य को प्राप्त करके एक कल्याणकारी राज्य की स्थापना कर सकते हैं, शिक्षा का स्थान महत्वपूर्ण है। इसके द्वारा न केवल सामाजिक और आर्थिक उन्नति के लिये मार्ग प्रशस्त होता है बल्कि व्यक्ति का निजी विकास भी होता है।

हमारे महाविद्यालयो मे हमारी सामाजिक, आर्थिक, ऐतिहासिक और सास्कृतिक गतिविधियो का स्पदन होना चाहिए। शिक्षा हमारे देश की आवश्यकताओ और लोगो की आशाओ और आकाक्षाओ के अनुरूप होनी चाहिए, तभी हमारे विद्यालय और महाविद्यालय देश मे एक नई सामाजिक व्यवस्था के निर्माण मे सहायक हो सकेगे।

शिक्षा का एक और मुख्य उद्देश्य यह भी है कि छात्र के व्यक्तित्व का विकास हो, चरित्र का विकास हो। उसकी सारी शक्ति, योग्यता और प्रतिभा का पूर्ण रूप से विकास हो। यह तभी हो सकता है जब हम छात्रो को कुछ नैतिक और सास्कृतिक मूल्यो का पाठ पढाएं। इनके मन मे उन ऐसे आदर्शों को प्रतिष्ठापित करें जो उनके जीवन के अग बन जाएं और

जिनके फलस्वरूप वे पूर्ण मानव बनें और इस देश के सुयोग्य नागरिक बनें। इस संदर्भ में हमारे विद्यालयो और महाविद्यालयो का यह दायित्व है कि वे ऐसे युवक युवतियो को तैयार करें जो स्वस्थ, आत्मविश्वासी और आत्मावलम्बी हो और जिनमे राष्ट्रीयता और देशभक्ति की भावना भरपूर हो।

आधुनिक जगत् ने निश्चय ही विज्ञान और टेकनोलोजी मे अभूतपूर्व प्रगति की है। इन दोनो के सहारे मानव के सुखी और संपन्न जीवन के अनेक साधन उपलब्ध हुए हैं। विश्व के सभी देश एक दूसरे के इतने निकट आ गए हैं कि वे एक दूसरे के पडोसी बन गए हैं। यही कारण है कि आज के युग मे कोई भी देश चाहे वह छोटा हो या बडा, किसी क्षेत्र मे, दुनिया की हलचलो से अपने को संपूर्ण रूप से पृथक् नही रख सकता। पारस्परिक साधन संपत्ति और टेकनोलोजी के ज्ञान के आदान प्रदान द्वारा दुनिया के विकसित देश विकासशील और अर्द्धविकसित देशो की आर्थिक और औद्योगिक उन्नति मे सहायक हो सकते हैं। यह तभी संभव हो सकता है जब विश्व भर मे मैत्री, सद्भावना और शांति का वातावरण हो।

नवीन स्नातको, हम आज एक कठिन समय मे गुजर रहे हैं। हमारे देश के सामने अनेक जटिल समस्याएँ हैं। गरीबी, जनसंख्या की वृद्धि, शिक्षितो और अशिक्षितो की बेकारी और पिछडे और कमजोर वर्गों की सर्वतोमुखी उन्नति आदि। मगर इन कठिनाइयाँ और समस्याओ को देखकर आपको और हमको न तो घबडाना है, न कर्तव्यविमुख होना है। इनका सामना करने के लिये हममे और आप मे आत्मविश्वास और आदर्श होना चाहिए। राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य मे विश्वास और अपनी शक्ति तथा योग्यता पर पूरा भरोसा होना चाहिए। इन सबसे अधिक हमे अपने देश, अपनी संस्कृति और सभ्यता के प्रति आदर और प्रेम होना चाहिए। विद्यालयो के प्राध्यापक यदि स्वयं इन महान् आदर्शों और भावनाओ से प्रेरित होकर काम करे तो छात्रो मे उत्साह और शक्ति भर सकते हैं। जिससे वे देश और समाज के हित मे अपने जीवन को अर्पित कर सकें। शिक्षक नई पीढी के निर्माता हैं और वे अपने इस महान् दायित्व को निभाते हुए छात्र समुदाय का सही मार्ग-दर्शन करें, यही मेरी कामना है। हमारे विद्यालय एक ऐसे जलाशय हैं, जिसकी धाराओ मे छात्रो की शक्ति को प्रवाहित कर एक नए समाज को उर्वरा बना सकते हैं।

स्नातको, आपने बडा परिश्रम करके मूल्यवान शिक्षा प्राप्त की है। आपके हाथ मे ज्ञान की ज्योति है। आप निष्ठावान् और चरित्रवान् होकर उस

ज्योति के द्वारा देश और समाज की अच्छी तरह से सेवा कर सकते है। आप अपने इस विद्यालय के सस्थापक की देशभक्ति, समाज सेवा और कर्तव्य-निष्ठा से प्रेरणा ग्रहण करें। आप सबको मैं बधाई देता हूँ और कामना करता हूँ कि आपके जीवन सफल और आपके भविष्य उज्ज्वल हो। अत मे मैं फिर एक बार इस महाविद्यालय के सचालको, प्राध्यापको और छात्र छात्राओ को धन्यवाद देता हूँ कि आपने मुझे इस विद्यालय को देखने और यह दीक्षात भाषण देने का गौरव प्रदान किया है।

शिक्षण का पुनर्निर्माण

मेरे लिये यह वडी प्रसन्नता की वात है कि आपके महाविद्यालय के वार्षिकोत्सव के अवसर पर मै यहाँ आ सका। आपने मुझे आप सवसे मिलने, यहाँ शिक्षा के विस्तार मे जो कार्य हो रहा है, उसे देखने का अवसर प्रदान किया, उसके लिये मै आप सवका आभारी हूँ।

मुझे यह जानकर वडी प्रसन्नता हुई कि इस महाविद्यालय ने अपने स्थापना काल से लेकर आज तक जो प्रगति की, उससे वे शिक्षण सस्था एक महत्व का स्थान प्राप्त कर सकी है। नि सदेह, इसके लिये वे सभी लोग वधाई के पात्र है, जिनके सहयोग, सहायता, कुशल मार्गदर्शन तथा अनथक परिश्रम से यह विद्यालय उन्नति कर सका।

आज जव हम अपनी शिक्षा सस्थाओं की ओर दृष्टि डालते हैं, तो आँकडे देखकर हम यह अदाजा लगा सकते है कि शिक्षा का कितना विस्तार हुआ, इसके लिये देश मे कितना काम हुआ। इसके साथ जव हम दूसरी चीजों की ओर ध्यान देते है तो कई वाते सामने आती है। शिक्षा केवल साक्षरता नही, शिक्षा तो व्यक्ति और देश के विकास का साधन है। इसका सवध राष्ट्र के आर्थिक, सामाजिक, औद्योगिक एव सास्कृतिक जीवन से है। इसका दूसरा महत्वपूर्ण उद्देश्य है विद्यार्थिओ का सर्वांगीण विकास, जिससे उनका व्यक्तित्व सपूर्ण रूप से प्रस्फुटित हो यह तभी हो सकता है जव हमारे विद्यालयो मे उदात्त दृष्टिकोण, राष्ट्रसेवा की भावना, नैतिक मूल्यो की पूर्ण रूप से प्रतिष्ठा हो, सकुचित विचारो के लिये कोई स्थान न रहे, हम उच्च शिक्षा प्राप्त करने के अवसर सभी को समान रूप से प्रदान कर सकें।

आप जानते हैं कि शिक्षा की सुविधाएं जुटाने के लिये देश को कितना खर्च उठाना पडता है, और यदि देश की नई पीढी को इस योग्य न वना सकें कि राष्ट्रीय उद्देश्यो की पूर्ति कर सकें, अपना जीवन सार्थक वना सकें, तो इतना कुछ करने के वाद भी एक कमी का एहसास प्रश्नचिह्न वनकर सामने आता है, केवल प्रमाण पत्र प्राप्त कर लेना काफी नही, विद्यार्थी जव विद्यालय छोडे तो उसमे इतनी सामर्थ्य हो कि वह अपने जीवन यापन के लिये उचित साधन स्वव जुटा सके। वास्तविक जीवन मे जो प्रश्न और कठिनाइयाँ सामने आती है, उनका सामना कर सके। परतु एक ही चीज या ध्येय को

सामने रखकर कि उन्हें पढकर नौकरी हासिल करनी है, इस एकागी दृष्टि से जब उनके सामने दूसरे काम आ जाते हैं तो अपने आप को उनके लिये तैयार नही पाते, इसलिये कठिनाई आती है और निराशा भी उठानी पडती है। इसकी एक ही वजह है कि समय के साथ हमारी शिक्षापद्धति मे जो परिवर्तन होने चाहिए थे, वह नही हो सके, और भावी आवश्यकताओ, विद्यार्थियो की रुचि और क्षमता को ध्यान मे रखकर, उन्हें सही मार्गदर्शन नही मिला। राष्ट्र के उद्देश्यो और शिक्षा मे निकट का सम्वन्ध होना चाहिए। चाहे वह शिक्षा कला, इतिहास की हो, विज्ञान की हो अथवा अर्थ वाणिज्य की। तभी वह एक नई सामाजिक व्यवस्था के निर्माण मे सहायक हो सकती है। आज इन चीजो को समझा जा रहा है, और शिक्षा मे पर्याप्त सुधार लाए जा रहे है। राष्ट्रीय नीति के अनुरूप जो नई पद्धति प्रस्तुत हुई है, वह वर्तमान परिस्थितियो के अधिक अनुकूल होगी, क्योकि इसमे शिक्षा और वेरोजगारी की युगल समस्या को सुलझाने मे एक ओर यदि सहायता मिलेगी तो दूसरी ओर इससे जितने परिपक्व और प्रखर होकर विद्यार्थी महाविद्यालयो और विश्वविद्यालयो से निकलेंगे, उससे न केवल शिक्षा का स्तर ऊँचा होगा वल्कि उच्च ज्ञान और विज्ञान के लिये अधिक प्रतिभाशाली स्नातक उपलब्ध होगे। शिक्षा की उपादेयता इन दो ही चीजो पर निर्भर करती है कि वह अच्छे नागरिक तैयार कर सके तथा उन्हें अपने पाँवो पर खडा होने के योग्य वना सके। हमे चाहिए कि इस नई व्यवस्था के अन्तर्गत अपनी सँजोई हुई आशाओ और आकाक्षाओ को साकार करने का भरसक प्रयत्न करे और इस प्रकार नए समाज की रचना और देश की आर्थिक प्रगति मे अपना योगदान दें, जिससे कि राष्ट्रीय विकास के लक्ष्यो को पूरा किया जा सके। शिक्षा के इस आमूल पुर्ननिर्माण से देश के आर्थिक और सास्कृतिक ढाचे को एक समाजवादी रूप दे सके।

आप जानते है कि आज देश मे चारो ओर निर्माण कार्य हो रहा है। कृषि, उद्योग, विज्ञान और तकनीकी के क्षेत्र मे त्वरित गति से आगे वढ रहे हैं। एक नया वातावरण तैयार हुआ है, छोटे और कुटीर उद्योगो को जीवित किया जा रहा है। ग्रामीण जनता, विशेषकर, पिछडे और कमजोर वर्गो को ऊपर उठाने, उनका जीवन स्तर सुधारने के लिये अनेक प्रयत्न हो रहे है, उन्हे कई प्रकार की सुविधाएँ प्रदान की जा रही है। आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से देश को उन्नत वनाने का हर सभव प्रयास किया जा रहा है। वास्तव मे अनुशासन और कर्तव्यपरायणता की भावना के उदय से देश एक नई दिशा की ओर आज अग्रसर है। शिक्षा के हमारे केंद्र इससे अछूते नहीं, इस महान् प्रयास

मे उनकी एक महत्वपूर्ण भूमिका है। इसलिये मेरा यही अनुरोध है कि हम इस राष्ट्रीय अनुष्ठान मे अपना सहयोग दे और विद्यालयो को ऐसा बनाएं कि वह हमारी आधुनिक आवश्यकताओ की पूर्ति कर सके।

युवक वर्ग राष्ट्र की मूल्यवान् सपत्ति है। आज उन्हे शिक्षा की जो सुविधाएँ प्राप्त है, उनका वह पूरा लाभ उठाएँ, हर नई और अच्छी बात को अपने जीवन मे स्थान दे। साथ मे अपने प्राचीन, सास्कृतिक और नैतिक आदर्शों को भी बनाए रखे। इन आदर्शों और मूल्यो को अपने जीवन मे उतार कर, देश व समाज की उन्नति के लिये अपना योग दान दें। आज हम, शिक्षक है, कार्यकर्ता हैं, अधिकारी हैं या विद्यार्थी, हम सबको अपने कर्तव्य के प्रति सजग रहना है और कोशिश करनी है कि हम अपना दायित्व कुशलतापूर्वक पूरा करें।

मुझे देश के इस युवा वर्ग मे मिलकर बडी प्रसन्नता हुई है, ईश्वर से यही चाहूंगा कि वह आपके सत्कार्यो मे सहायक हो और आप एक योग्य नागरिक बनें। इन्ही शब्दो के साथ मैं पुन आप सबको धन्यवाद देता हूँ कि आपने यहाँ आने का मुझे अवसर दिया और विद्यालय की गतिविधियो से मुझे परिचित कराया। यह विद्यालय निरतर प्रगति करता रहे, यही मेरी शुभकामना है।

हमारी शिक्षण पद्धति

दिगबर जैन महाविद्यालय के दीक्षात समारोह मे उपस्थित होने का जो सुयोग आपने मुझे प्रदान किया और यहाँ आने पर मेरा जो समान किया, उसके लिये मैं आप सबका आभारी हूँ।

आपकी यह शिक्षा सस्था काफी पुरानी है। आज से आठ वर्ष पूर्व यहाँ इस सस्था की स्थापना एक पाठशाला के स्तर पर हुई थी। यह देखकर प्रसन्नता होती है कि आज यह एक स्नातकोत्तर शिक्षा सस्था के रूप मे महत्व का स्थान प्राप्त कर सकी है। आज यहाँ ज्ञान विज्ञान की शिक्षा की समुचित सुविधाएँ उपलब्ध हैं, एक बृहत् पुस्तकालय है, सुसज्जित प्रयोगशाला है तथा शोधकेंद्र की भी व्यवस्था है। ये सब चीजें किसी शिक्षा सस्था की साधन सपन्नता की प्रतीक है। इस सस्था के विकास और उन्नति के लिये जिन दानशील कर्मठ व्यक्तियो का सहयोग मिला, प्राचार्यों और आचार्यों की सेवाएँ प्राप्त हुई, वे सब बधाई के पात्र हैं।

यह सभी जानते हैं कि व्यक्ति और समाज की उन्नति के लिये शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण साधन है। इसलिये यह आवश्यक है कि शिक्षापद्धति ऐसी हो जो राष्ट्रीय लक्ष्यों की पूर्ति मे सहायक हो, जो राष्ट्रीय जीवनधारा के अनुकूल हो। हमारे देश मे इस शिक्षाप्रणाली का अपना एक इतिहास है। अग्रेजी शासन के समय इसकी स्थापना हुई थी। उस समय व्यक्तिवादी दृष्टिकोण और उदार भावना की नीव पर इसकी सरचना हुई थी। इसमे सदेह नही कि उदार भावना के पक्ष ने हमारे समाज मे सुधार का मार्ग प्रशस्त किया। परतु इसके व्यक्तिवादी पक्ष ने निजी हितो की महत्वाकाक्षा को उजागर करके सामाजिक दायित्व के महत्व की प्रतिष्ठा मे उतना सहयोग नहीं दिया, जितना होना चाहिए था। अत आज यह स्वीकार किया जाता है कि हमारे देश की परपरा, सस्कृति, राष्ट्रीय उद्देश्यो के अनुरुप हमारी शिक्षा प्रणाली होनी चाहिए, जिसमे व्यक्ति के महत्व को नकारा न जाए, लेकिन सामाजिकता के मूल्यो की सर्वाधिक प्रतिष्ठा हो। सार्वजनिक हितो की रक्षा हो।

हम नही चाहते कि उच्च शिक्षा का अधिकार केवल थोडे मे लोगो को

ही प्राप्त हो, या कुछ लोगो का ही उच्च शिक्षा पर आधिपत्य हो । हमारे सविधान ने यह अधिकार सभी को दिया है । जाति, धर्म, भाषा, प्रात, लिग-भेद कोई इसके आडे नही आना चाहिए, हर छोटे बडे को यह सुविधा प्राप्त है। सरकार की ओर से पददलित और समाज के पिछडे हुए वर्गो को पर्याप्त प्रोत्साहन दिया जा रहा है ।

जहाँ तक शिक्षा के स्तर की बात है, यह पहलू भी बहुत महत्वपूर्ण है। ईश्वर ने सभी व्यक्तियो मे कोई न कोई गुण दिया है, एक के अदर एक खूबी है तो दूसरे के अदर दूसरी। शिक्षा का काम उस क्षमता को पूर्ण रूप मे विकसित करना है। हमारे विद्यालय ऐसे केंद्र होने चाहिए, जहाँ छात्रो की बौद्धिक और मानसिक शक्तियो को परिपक्वता प्रदान करने के साथ साथ मानवीय गुण भी पूरी तरह से विकसित किए जाएँ। उनकी रुचि और क्षमता के अनुरूप उन्हें सही मार्ग दर्शन और परामर्श की सुविधा जुटाई जाँए और उन ही विद्याओ के लिये प्रोत्साहन किया जाए, जिनमे वह अधिक सफल हो सकते है। केवल आर्थिक लाभो का आकर्षण आज की शिक्षा का लक्ष्य नही हो सकता, उसे आज राष्ट्रीय उद्देश्यो की पूर्ति का माध्यम बनना है। निजी लाभो को आज हमे सामाजिक उपलब्धियो से जोडना है।

रोजगार की समस्या के पीछे एक बड़ा कारण यह भी है कि एक व्यवसाय के लिये माँग मे प्रत्याशियो की सख्या अधिक होती है । यदि शैक्षणिक स्तर पर भी देश के साधनो और योजनाओ को सामने रखकर अलग अलग विद्याओ के लिये, माँग के समुचित अनुपात मे हम विद्यार्थी तैयार कर सकें तो रोजगार की समस्या इतनी तीव्र नही रह सकती। सरकार की ओर से पूरे प्रयत्न हो रहे है, परतु यह देखा गया है कि कितने ही ऐसे भी रोजगार है जिनके लिये उपयुक्त प्रशिक्षण प्राप्त और अनुभवी कार्यकर्ता नही मिलते। इसका एक बडा कारण यह है कि शिक्षण सस्थाओ का रोजगार की सस्थाओ से सबध नही होता और न ही कोई ऐसा अध्ययन केंद्र होता है जो विद्यार्थियो को भावी सभावनाओ की जानकारी दे सके और सरकार द्वारा नए उद्यमो के लिये जो सुविधाएँ दी जा रही है उनसे लाभ उठाने के अवसर सुलभ कर सके। मेरे विचार मे हर महाविद्यालय मे ऐसे केंद्र अवश्य होने चाहिए।

शिक्षा हमारी एक सामाजिक आवश्यकता है। इसके समान अवसर हमे सभी को उपलब्ध कराने है। आजादी के बाद से शिक्षा के क्षेत्र मे बहुत काम हुआ है और इसमे स्वायत्त सस्थाओ का योगदान भी सराहनीय रहा है। परतु

फिर भी अभी तक एक बडी जनसख्या शिक्षा के लाभो से वचित है। इसके लिये एक व्यापक पैमाने पर कार्य होना चाहिए और इस काम मे विद्यार्थी हाथ बँटा सकते है। जिन लोगो को उच्च शिक्षा का सौभाग्य प्राप्त हुआ, वे अपने क्षेत्र के एक या दो व्यक्तियो को विद्यादान करे। इस तरह साक्षरता के काम मे वह योगदान दे सकेंगे और समाज के कार्यो मे उनकी रचनात्मक अभिरुचि भी पैदा होगी।

आज यह बात महसूस की जाती है कि हमारे देश मे शिक्षा भारतीय समाज और उसके बदलते हुए जीवन मूल्यो के अनुरूप हो। उससे इस देश की समृद्धि और प्रगति के लिये नए आयाम प्रस्तुत होगे। इसके लिये जरूरी है कि हमारी शिक्षा हमारी ग्रामीण समस्याओ का समाधान करने मे सक्षम हो। सामाजिक और आर्थिक चुनौतियो के समाधान मे सहायक हो। आज देश मे पुर्ननिर्माण और समाज की रूपरेखा बदलने का महत्वपूर्ण प्रयास हो रहा है। हम ऐसे नए भारत का निर्माण करना चाहते है, जिसमे कोई पददलित न रहे, जहाँ शोषण के लिये कोई स्थान न रहे, सबको उन्नति के समान अवसर उपलब्ध हो, किसी प्रकार की सामाजिक और आर्थिक विषमताएँ समाज मे न रहें। आज हमारे सामने गरीबी, बेकारी, जनसख्या जैसे जटिल प्रश्न हैं, इनके समाधान के लिये अन्य साधनो मे शिक्षा का स्थान महत्वपूर्ण है और आज इसे यह दायित्व पूरा करना है।

युवक वर्ग राष्ट्र की मूल्यवान सपत्ति है। आज उन्हें शिक्षा की जो सुविधाएँ प्राप्त हैं, उन्हें उसका पूरा लाभ उठाना चाहिए। आप जानते हैं कि शिक्षा की सुविधाएँ जुटाने के लिये समाज को कितना खर्च उठाना पडता है। हम इसे पूँजी का विनियोग मानते है। इसलिये यह आशा भी रखते हैं कि हमारा युवा-वर्ग अपनी सेवाओ और कार्य कौशल से इस देश की उन्नति मे सहायक होगा। अध्ययन काल मे नैतिक, सास्कृतिक और मानवीय मूल्यो की अमूल्य निधि से विद्यार्थियो के व्यक्तित्व का निर्माण होना चाहिए। उनकी शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक शक्तियो का प्रस्फुटन होना चाहिए। ऐसे सुयोग्य नागरिक गढने मे शिक्षा सस्थानो की व्यवस्था, प्रबध, अनुशासित वातावरण और शिक्षित वर्ग का अनुकरणीय जीवन, बडा सहायक होता है। इसलिये शिक्षकवर्ग पर एक बडी जिम्मेदारी है, वास्तव मे वे भावी नागरिको के निर्माता है उनसे भी मेरा अनुरोध है कि वह राष्ट्रीय लक्ष्यो को सदैव अपने समुख रखें और उनकी पूर्ति मे अपना सहयोग दें।

मुझे प्रसन्नता है कि आपकी यह संस्था अपनी गौरवपूर्ण परंपरा को बनाए हुए है और युग आवश्यकताओं के प्रति भी सचेत है। आपके इस विद्यालय ने सराहनीय प्रगति की है। मुझे यहाँ आकर आप सबसे मिलने और विद्यालय की गतिविधियों का परिचय पाने का अवसर प्रदान किया, इसके लिए मैं आपको पुन. धन्यवाद देता हूँ। यह विद्यालय निरंतर प्रगति करता रहे और यहाँ का हर स्नातक इसके नाम को चमकाए, यही मेरी शुभ कामना है।

———

महिलाएँ और शिक्षण

यह मेरे लिए प्रसन्नता का विषय है कि मैं जैन स्थानकवासी महिला डिग्री कालेज के प्रथम दीक्षात समारोह मे भाग ले सका। आपके निमंत्रण के लिये मैं आप सबको धन्यवाद देता हूँ।

आपके इस महाविद्यालय की स्थापना सन् १९५४ मे प्राथमिक पाठशाला के रूप मे हुई थी और यह देखकर मुझे प्रसन्नता हुई कि जैन समाज के आर्थिक सहयोग, व्यवस्थापको, शिक्षको और कार्यकर्ताओ के सतत प्रयासो से आज यहाँ प्रथम से लेकर बी० ए० तक की कक्षाओ मे शिक्षा पानेवाली लगभग एक हजार कन्याएँ हैं। किसी भी सस्था के लिए यह एक बडी उपलब्धि है। मैं आप सभी को, जिनके सहयोग, सहायता तथा परिश्रम से आज यह विद्यालय प्रगति के पथ पर अग्रसर है, बधाई देता हूँ।

यह सभी जानते हैं कि शिक्षा ही व्यक्ति और देश की प्रगति का एक सबल साधन है। इसका सबध एक ओर यदि व्यक्ति के सर्वांगीण विकास से है तो दूसरी ओर राष्ट्र के आर्थिक, सामाजिक, औद्योगिक और सास्कृतिक जीवन से भी इसका नाता है, इसलिये यह जरूरी है कि हमारे विद्यालय भारतीयता और सामाजिकता के केद्र हो, जहाँ पर देश के ऐसे भावी नागरिको का निर्माण होता रहे जो उदात्त दृष्टिकोण, देशभक्ति, सहिष्णुता और सहकारिता के गुणो से सपन्न हो। इसके लिये हमारे विद्यालयो मे अनुशासन, सहयोग और सेवा की भावना का वातावरण आवश्यक है। यहाँ किसी प्रकार के सकुचित विचारो के लिये स्थान नही होना चाहिए और हमे उच्च शिक्षा प्राप्त करने के अवसर सभी को समान रूप से प्रदान करने चाहिए।

महिला शिक्षा के लिये देश भर मे सरकारी और गर सरकारी क्षेत्रो मे जो प्रयत्न हुए और हो रहे है, उनके द्वारा यह प्रयास किया जा रहा है कि इन सुविधाओ से अधिक से अधिक लोग लाभ उठावें। आजादी से पहले समाज मे महिला शिक्षा के प्रति इतनी जागृति नही थी, जितनी आज देखने को मिलती है। इस शिक्षाविस्तार के परिणामस्वरूप आज हम महिलाओ को समाज के विभिन्न क्षेत्रो मे ऊँचे पदो पर देखते हैं, आज शिक्षा

के क्षेत्र मे, राजनीति के क्षेत्र मे, समाज और विज्ञान के क्षेत्र मे महिलाओ को काम करने के अवसर हैं। लेकिन महिला शिक्षा का बहुत बडा काम अभी शेष है। आज भी शिक्षा के तुलनात्मक आँकड़ों पर दृष्टि डाली जाए तो मालूम होगा कि हर चार विद्यार्थियो मे केवल एक छात्रा शिक्षा ग्रहण कर रही है। हमे इस एक और चार के अतर को कम करने का भरसक प्रयत्न करना है।

आज हम देश को जो रूप देना चाहते हैं और जो हमारे सामने राष्ट्रीय लक्ष्य है उनकी प्राप्ति मे बाधाएँ और चुनौतियाँ हैं और वे आर्थिक और सामाजिक दोनो रूपो मे है, उनके उन्मूलन मे महिला शिक्षा का एक बड़ा महत्व है। आज जो हमारे समाज मे नाना प्रकार की कुरीतियाँ और प्रवृत्तियाँ विद्यमान हैं, उनको दूर करने के लिये महिलाएँ अधिक प्रभावी कार्य कर सकती हैं। एक तो हमे समाज की इन बुराइयो को दूर करना है और दूसरे निरक्षरता को कम करना है। मैं तो समझता हूँ कि एक महिला के शिक्षित होने का अर्थ है, एक परिवार को शिक्षित करने की चेष्टा करना है। हमे अधिक से अधिक छात्राओ को शिक्षा के अवसर जुटाने चाहिए। सरकार की ओर से जितना कुछ हो सकता है, उसके लिये पूरे प्रयत्न हो रहे हैं। लेकिन इस कार्य की विशालता को देखते हुए, यह जरूरी है कि इस दिशा मे आप जैसी सस्थाओ का पूर्ण सहयोग प्राप्त हो। मैं बहुत सी ऐसी सस्थाओं को जानता हूँ, जिन्होने शिक्षा के प्रचार प्रसार मे मूल्यवान काम किया है और देश को प्रतिभाशाली और योग्य नागरिक दिए हैं।

आपकी सस्था अभी अपने शैशव काल मे है। इस अवस्था मे, इसमे सदेह नही कि कुछ कठिनाइयाँ रहती हैं परतु निष्ठापूर्वक किए गए प्रयासो और जन सहयोग से आगे बढने मे सदैव सहायता मिलती है। मुझे आशा है कार्यकर्ताओ की लगन और परिश्रम से यह सस्था दिनो दिन अपने लक्ष्य की ओर बढती रहेगी।

आज सबसे विशेषकर विद्यार्थियो से मिलकर तथा इस कालेज के कार्यों को देखकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई है। मैं आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ और आशा करता हूँ कि आपकी यह सस्था गुणवान नागरिको के निर्माण में सहयोग देकर इसी प्रकार समाज की सेवा करती रहेगी।

आज के तीर्थ स्नान

आज यहाँ आने का सुयोग बना और यह देखकर मुझे प्रसन्नता हुई कि बुलदशहर मे कई शिक्षासस्थाएँ काम कर रही हैं। लोगो मे प्रगति और उन्नति के लिये पर्याप्त उत्साह है।

उत्तर भारत मे डी० ए० वी० शिक्षा सस्थाओ की एक प्रमुख भूमिका रही है। शिक्षा के विकास और विस्तार मे इन्होंने बडा प्रशसनीय कार्य किया है। मुझे प्रसन्नता है कि आज भी ये सस्थाएँ उसी भावना और उत्साह से काम कर रही हैं, जिस उद्देश्य को लेकर इनकी स्थापना हुई थी।

शिक्षा केंद्र हमारे पवित्र स्थान हैं। यहाँ मानवता पुष्पित और पल्लवित होनी चाहिए। यहाँ मनुष्य की रचनात्मक प्रतिभा विकसित होनी चाहिए। आज सभ्यता उन्नति के जिस शिखर की ओर बढ रही है, वह मनुष्य की रचनात्मक शक्ति की प्रतीक मानी जाए तो अधिक सगत होगा। सभ्यता हमारे क्रमिक विकास की परिचायक है, जो कुछ मनुष्य के पूर्वजो ने बनाया, वह आनेवाली पीढियो के लिये छोड गए। इससे मनुष्य की शक्ति मे, सुख सुविधाओ मे, ज्ञान और जानकारी मे वृद्धि हुई और वर्तमान आगे बढा अतीत की शक्ति और सम्पत्ति से सपन्न होकर। परतु वर्तमान भविष्य की तैयारी मात्र होने से आगे की ओर इशारा करता है कि मजिल अभी बहुत दूर है, तुम्हे उस स्थान से, जहाँ तक तुम्हारे पुरखा तुम्हें ले आए है, आगे बढना है, अनत भविष्य की ओर।

हर विचारशील व्यक्ति मनुष्य को सघर्ष और विनाश की अपेक्षा रचनात्मक कार्यों की सलाह देगा। उन उपलब्धियो से लाभ उठाने, उन्हे सुरक्षित रखने तथा नई चुनौतियो के लिये समय और परिस्थिति के अनुकूल नए समाधान ढूंढने के लिये कहेगा। जो चीज हमे मिली है, उसमे वृद्धि करना हमारा कर्तव्य है।

एक पीढी ने काम किया, देश की स्वतत्रता के लिये। उनके त्याग और बलिदानो से देश स्वतत्र हुआ। परतु कर्तव्य का दायित्व वह आनेवाली पीढियो को सौंप गए कि वे इस देश को संवारें, मजबूत बनाएँ और आजादी को कायम रखें। सदा देश की हितसाधना मे तल्लीन रहे। राष्ट्र का हित ही

व्यक्ति का हित है। देश आगे बढता है, हमारी रचनात्मक क्षमता पर, हमारे त्याग और मिलकर साथ चलने पर। सघ एकता का प्रतीक है, एकता शक्ति है और शक्ति मनुष्य की रचनात्मक क्षमता पर निर्भर करती है। इसलिये हमारा सघ रचनात्मक होना चाहिए। हमारी संपूर्ण आशाओ और अभिलाषाओ का केंद्र स्थल हमारा राष्ट्र है, जिस पर हर एक देशवासी की सुख समृद्धि निर्भर करती है। इसलिये निजी हितो से आगे बढकर देखनेवाले हमेशा पहले व्यापक हितो की रक्षा को प्राथमिकता देंगे। आज यह अनुभव किया जाता है कि हमारी शिक्षा संस्थाओ मे दी जानेवाली शिक्षा मे इतनी सामर्थ्य हो कि वह न केवल हमारे विद्यार्थियो को सच्चे देशभक्त, कार्यकुशल एव निष्ठावान् नागरिक बना सके, बल्कि राष्ट्रीय एव अतर्राष्ट्रीय समस्याओ को सुलझाने की उनमे उपयुक्त योग्यता भी पैदा कर सके। हमारी शिक्षा हमारे जीवन और चिंतन मे उचित मूल्यो को उभारने मे सक्षम होनी चाहिए ताकि नैतिक, बौद्धिक तथा मानसिक गुणो के विकास से देश को हम अच्छे प्रशासक, वैज्ञानिक, नियोजक, प्रबधक, इंजीनियर, डाक्टर, कार्यकर्ता इत्यादि क्षेत्रो के लिये योग्य नागरिक उपलब्ध हो सकें।

मुझे प्रसन्नता है कि आपके इस शिक्षासस्थान मे विद्यार्थियो के बहुविध विकास पर विशेष ध्यान दिया जाता है। मैं आशा करता हूँ कि योग्य शिक्षको के निर्देशन मे यह विद्यालय प्रगति के पथ पर अग्रसर होता रहेगा और इस कार्य मे विद्यार्थी वर्ग का पूरा सहयोग आपको मिलेगा। छात्र अपने शिक्षक का आदर करें, शिक्षक विद्यार्थी को स्नेह से सिखाएँ, लिखाएँ, पढाएँ। विद्यालयो मे छात्र-सघो के लिये जो कार्य हैं, वे हैं अनुशासन और एकता के, सद्भाव और सहानुभूति के, सहायता और सहकारिता के। उचित यही है कि युवा-शक्ति रचनात्मक कार्यों मे काम आए। रोगियो की सेवा, गरीबो की सहायता। जो पढाई, लिखाई मे किसी प्रकार से पीछे रह गए हैं उनको अपने साथ लेकर चलना, जो भूले भटके है, उन्हें अच्छे रास्ते पर लाना और एक मैत्रीपूर्ण वातावरण तैयार करना, जिसकी छाप हमारी जिंदगी पर बनी रहे। पढाई से जो समय बचे, विद्यार्थी इसका उपयोग इस तरह करे, तो मानसिक सतोष के साथ साथ उसका आत्मिक बल भी बढेगा।

मैं आशा करता हूँ कि इस विद्यालय मे जिस छात्रसघ की स्थापना हुई है, वह सत्य, सेवा और सदाचार के आदर्श हमेशा सामने रखेगा। आप सबको मेरी हार्दिक शुभ कामनाएँ।

अच्छी शिक्षा देने की आवश्यकता

आपने मुझे यहाँ बुलाकर गाधी बाल निकेतन माटेसरी स्कूल मे हो रहे कार्य को देखने और इन बालको और बालिकाओ से मिलने का अवसर दिया है। मुझे यह देखकर बडी प्रसन्नता हुई कि आपका यह विद्यालय शिक्षा के विस्तार मे एक अच्छा कार्य कर रहा है।

गाधी जी के नाम पर आपका विद्यालय है। किसी महापुरुष से सबध का अर्थ यही है कि वह संस्था उन आदर्शो के अनुरूप भी हो, वैसा वहाँ काम भी हो। और लोगो को कुछ कहने का मौका न मिले। गाधी जी तो सत्य, सेवा और सहानुभूति के प्रतीक थे। उन्होने हृदय जोडे, अपने आदर्श जीवन से लोगो को प्रभावित किया। मुझे आशा है कि आपका विद्यालय भी उन्ही आदर्शों से प्रभावित होगा। मुझे प्रसन्नता है कि विगत कुछ ही वर्षों मे आपके विद्यालय का इतना विस्तार हुआ। विस्तार होना अच्छा है, यदि शिक्षा का स्तर भी ऊँचा रहे। इसी से सफलता निश्चित और लोकप्रियता मे वृद्धि सभव है।

आजादी के बाद शिक्षा विस्तार का काम जितनी तेजी से हुआ, उतना पहले कभी नही हुआ था। शिक्षा हमारी प्राथमिक आवश्यकता है, यह जानकर ही इस दिशा मे इतना काम हुआ। क्योकि शिक्षा के बिना हम आगे नही बढ सकते थे, कोई भी नही बढ सकता। सरकारी योजनाओ के अतर्गत कार्यक्रम बनाया गया। काम बहुत बडा था, इसलिए मिलजुलकर काम हुआ। सरकारी क्षेत्र के अतिरिक्त गैर-सरकारी क्षेत्र ने भी सहयोग दिया और अब भी मिल रहा है। कुछ देशो को छोडकर, अन्य देशो मे भी शिक्षा का कार्य सरकारी और गैर सरकारी दोनो क्षेत्रो मे है। हमारे देश मे भी अनेक शिक्षा-सस्थाएँ हैं, जहाँ बहुत अच्छा काम हो रहा है। शिक्षा ग्रहण करके बच्चे अच्छी जगहो पर पहुँचे है। शिक्षा सस्था सरकारी हो या गैर सरकारी, बात बच्चो की अच्छी शिक्षा की है। मुझे प्रसन्नता है कि आपकी इस सस्था मे छोटे बच्चो की पढाई, लिखाई, खेल-कूद तथा आमोद प्रमोद की उचित व्यवस्था है।

बच्चे राष्ट्र की वास्तविक सपत्ति हैं। इनका बचपन मे जैसा शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक विकास होगा, वैसे ही वे बनेंगे। इसलिये यह जरूरी है कि बच्चो का शिक्षा बड़े नियोजित ढग से हो, ताकि उनका समुचित विकास हो सके। यह हम सभी का कर्तव्य है कि हम बच्चो के कल्याण के अनुकूल

सामाजिक वातावरण तैयार करें, ताकि धन के अभाव के कारण, प्रतिभाशाली बच्चे भी विकास और उन्नति के अवसरो से वंचित न रह सकें।

यहाँ छात्राओ की शिक्षा का भी प्रबंध किया गया है। यह खुशी की बात है कि महिलाओ की शिक्षा के बारे मे अब लोगो मे पर्याप्त जागृति है। सुदूर के गाँवो मे भी लोगो को अपनी बालिकाओ की तालीम का ख्याल तेजी से फैला है। महिलाओ की शिक्षा के औचित्य को अब बताने की जरूरत नही। अच्छी तालीम हासिल करके पुरुषो के साथ महिलाएँ भी बराबर कदम-ब-कदम चल रही हैं। जीवन के हर क्षेत्र मे आज उनकी पहुँच है। वे विज्ञान, शिक्षा-प्रबंध, न्याय, राजनीति, ललित-कला इत्यादि सभी जगह अपनी योग्यता से आगे उन्नति कर रही है। समय बदल गया है और इसे अच्छा बनाने के लिये हम सब मिलकर काम करें तो कोई संदेह नही कि हम हर मुश्किल और कठिनाई पर विजयी होगे। हमारी दिलचस्पी, हमारी मेहनत और हमारे काम करने के तरीको पर ही हमारा वर्तमान और भविष्य निर्भर है। हमारी इस शिक्षा मे यदि अपनी पुरातन संस्कृति की जानकारी मिलती रहे, उसे हम अपने जीवन से अलग न होने दें। हमारे देश की महिलाओ ने इस संस्कृति को हमेशा बल प्रदान किया है, इसे जीवित रखा है। आज भी वेही इसकी महानता, इसकी गरिमा को बनाए रखेंगी, ऐसा मेरा विश्वास है। जिस प्रकार आज दूसरे क्षेत्रो मे वे आगे आई हैं समाज उपयोगी कार्यो के लिये, नैतिक उत्थान और आध्यात्मिक चेतना के विकास मे भी वे आगे होगी। आप सबको मेरी शुभ कामनाएँ।

———

स्वास्थ्य और समाज

प्रगति के पथ पर आयुर्वेद

आज आपके बीच अपने को पाकर बडी प्रसन्नता हो रही है। आपने यहाँ इस आयुर्वेदिक चिकित्सालय का उदघाटन करने का जो गौरव मुझे प्रदान किया, उसके लिये मैं आपका आभारी हूँ। जिस मानवीय भावना से प्रेरित होकर इस चिकित्सालय की यहाँ स्थापना हुई, उसे मैं स्तुत्य मानता हूँ और उन सबको बधाई देता हूँ कि जिनके सत्प्रयासो और सहयोग से यह निर्मित हो सका है।

आयुर्वेद हमारी प्राचीन चिकित्सापद्धति है। हम जब ससार के इतिहास का अध्ययन करते हैं, तो यह बात स्पष्ट हो जाती है कि इससे प्राचीन कोई दूसरी चिकित्सा प्रणाली नही है और भारतवर्ष के लोग ही इससे लाभ नही उठाते रहे, बल्कि हमारे पडोसी देशो तक भी यह पहुँची। जब ससार के दूसरे देश सभ्यता के आरभिक काल से भी पीछे थे, हमारे ऋषियो ने इस विज्ञान का विकास किया और तब से यह विज्ञान पीडित और निरीह लोगो की सेवा कर रहा है, हम जानते हैं कि आज जो अन्य चिकित्सा प्रणालियाँ प्रचलित हैं, वे अधिक साधनसपन्न है, नवीन उपकरणो और यन्त्रो से सुसज्जित हैं। लेकिन प्रतिकूल परिस्थितियो के कारण हमारी यह प्राचीन चिकित्सापद्धति पिछड गई। हम उसका विकास नही कर सके। परपरा से हमने जो कुछ पाया, उसे आगे नही बढा सके। परतन्त्रता ने हमारी प्रगति मे हर तरह से अवरोध पैदा किए, यह सभी को मालूम है। अग्रेजो के जमाने मे देश की क्या दशा थी। उन्होने यहाँ की हर चीज को उखाड फेंकने के लिये क्या कुछ नही किया। अपनी हर चीज हमपर थोपने की कोशिश की। यहाँ तक कि हम अपनी सस्कृति को भूल जाएँ। ऐसा प्रतीत हो कि जैसे हमारा अपना कुछ था ही नही, लेकिन जब देश ने अपनी खोई हुई आजादी हासिल की, समय ने पलटा खाया, इसके साथ शुभारभ हुआ एक नए दौर का, एक नए युग का, जिसके साथ हमारी आशाएँ और आकाक्षाएँ जुडी हुई हैं और देश मे नवनिर्माण का कार्य आरभ हुआ। पिछले अट्ठाईस वर्षो मे देश मे क्रातिकारी परिवर्तन हुए। विज्ञान और तकनीकी मे, शिक्षा और चिकित्सा मे, कृषि और उद्योग के क्षेत्र मे हमने आशाजनक प्रगति की। और इस मार्ग मे

अनेक कठिनाइयों के होते हुए भी हम आगे वढने के लिये हौसले रखते है और अवश्य आगे वढेगे। कोई ताकत हमे रोक नही सकती।

आज आयुर्वेद भी प्रगति के पथ पर अग्रसर है। सुयोग्य आयुर्वेदज्ञो, चिकित्सको एव दूरदर्शी मनीषियो के प्रयत्नो से अधिक समृद्ध और उन्नत हो रहा है। आज इसे सरकार की मान्यता है और वढावा भी मिल रहा है। हमारा यह प्रयत्न होना चाहिए कि हम इसे अन्य चिकित्सापद्धतियो के समान उन्नत वनाएँ, इसे वह आधुनिक स्वरूप दे सके, जिससे यह अधिक प्रभावी और रोगनिदान मे अधिक सवल हो। मानक औषधियाँ तैयार हो, अनुसधान और अन्वेपण की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित किया जाए, वे सभी ससाधन जुटाए जाएँ जो आज के जमाने मे आवश्यक हैं। इसकी इस तरीके से प्रतिष्ठा हो कि देश के प्रतिभाशाली और योग्य छात्र आयुर्वेद की ओर अधिक आकृष्ट हो और इसकी सेवा करें, सामयिक आवश्यकताओ के अनुरूप अपने को वदल न सके तो हम आगे नही वढ पाएँगे। हमे जमाने की रफ्तार के साथ चलना है और हमारी रफ्तार मे इतनी तेजी होनी चाहिए कि हम उन्नत देशो के साथ वरावरी कर-सके।

भारत एक कृपिप्रधान देश है। इसके पाँच लाख गाँवो मे आज भी एक वडी जनसख्या निवास करती है। यह हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य है कि हम चिकित्सा की सहायता सभी देशवासियो तक पहुँचाएँ। आज हमारे देश मे कई चिकित्सापद्धतियाँ है, सभी की अपनी अपनी विशेपताएँ हैं, उपयोगिता है और सवके सामने एक ही लक्ष्य है, वह है जनकल्याण, लोगो का स्वास्थ्य सरक्षण एव उनकी आयु वृद्धि करना। आज जरूरत इस वात की है कि हम सव मिलकर एक दूसरे के सहयोग से देशसेवा के इस काम को पूरा करें। आज भी आयुर्वेद चिकित्सा के प्रति श्रद्धा है, हमे चाहिए कि हम इस विश्वास को वनाए रखें और आयुर्वेद की सेवाएँ द्वार द्वार तक पहुँचाएँ। उन्हे स्वास्थ्य, स्वच्छता, दिनचर्या, ऋतुचर्या आदि विषयो का ज्ञान कराएँ, जिससे लोग रोग के शिकार न हो। ग्रामीण अचलो मे रहन सहन, खान पान तथा आचार व्यवहार को एक वैज्ञानिक आधार प्रदान करने से ही देश के स्वास्थ्य की समस्या को हल किया जा सकता है। वहुत से रोग अज्ञान और असावधानी के कारण होते हैं। आयुर्वेद पद्धति मे यह सबसे वडी विशेपता है कि उन कारणो को दृष्टि से ओझल नहीं होने देता, इसलिये ओपधि के साथ पथ्य तथा स्वास्थ्य के नियमो के पालन

को भी महत्वपूर्ण समझता है। जिस रूप मे पुराने जमाने मे आयुर्वेद गाँव गाँव तक पहुँचा, इसने लोगो के हृदय मे अपने लिये स्थान बनाया, आज के साइस और तकनीकी के युग मे यह वहाँ पूरे आधुनिक ससाधनो के साथ पहुँचना चाहिए। चिकित्सा के क्षेत्र मे जो नई नई ओपधियाँ निर्मित हो रही है, नए प्रयोग हो रहे हैं, उसके लिये आयुर्वेद मे उचित उत्तर हमे ढूँढने होगे, तभी हम इस प्रतियोगिता के युग मे अपना अस्तित्व कायम रख सकते हैं।

शहरो के जो बडे अस्पतालो तक नही पहुँच सकते, कीमती दवाइयाँ नही खरीद सकते, उनके लिये उनके प स पहुँचा जाए और चिकित्सा की सुविधाएँ उन्हे जुटाई जाएँ तो मैं समझता हूँ कि स्वास्थ्य सुधार का काम बहुत अच्छा हो सकता है। दूसरे, हमारा प्रयत्न यह होना चाहिए कि योग्य और प्रमाणित चिकित्सक अधिक मात्रा मे तैयार हो, जो सेवा और त्याग की भावना से आयुर्वेद की प्रतिष्ठा मे कारगर ढग से काम कर सके। इससे आयुर्वेद अवश्य ही अपना प्रतिष्ठित स्थान ग्रहण करेगा और लोग इसकी ओर आकृष्ट होगे।

आपके इस चिकित्सालय को देखकर मझे प्रसन्नता है। यह सत्य है कि जिस काम के लिये अच्छे और त्यागी व्यक्ति काम करने के लिये मिल जाते है, उसके लिये सब साधन जुटते चले जाते हैं। आपकी सस्था इस दृष्टि मे भाग्यशाली है और मैं आशा करता हूँ कि आपका यह चिकित्सालय आप जैसे कर्तव्यनिष्ठ लोगो की श्रमसाधना मे लोगो की अधिक से अधिक सेवा कर सकेगा और अपनी व्यवस्था, कार्यकुशलता तथा मानवीय सद्भावना से दूसरो के लिये एक उदाहरण कायम करेगा। मैं इस सस्था के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हुआ, अब इसका उद्घाटन करता हूँ।

———

स्वास्थ्य केंद्रों की स्थापना

आपके बीच आज यहाँ आकर मुझे प्रसन्नता हो रही है। मैं आपको धन्यवाद देता हूँ कि आपने मुझे यह अवसर दिया। यह खुशी की बात है कि इस प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र का अब एक अस्पताल मे रूपातर हो जाएगा जिसके शिलान्यास करने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ। इसका अर्थ यही है कि वहाँ के कार्यकर्ताओ ने अपना कार्य निष्ठा से किया। मैं इन सबको बधाई देता हूँ।

भारत की लगभग आधी से अधिक जन-सख्या गाँवो मे निवास करती है तथा भारत गाँवो का देश है। जब तक गाँवों तथा ग्रामवासियो की दशा मे समुचित सुधार नही होगा और जब तक हमारे गाँवो मे रहनेवालो का स्वास्थ्य अच्छा नही होगा, उस समय तक हमारा पूरा विकास नही हो सकता है- कोई भी काम देश उत्थान का तब तक पूर्ण रूपेण सफल नही कहा जा सकता, जब तक हम गाँवो को भली भाँति उन्नत करने के लिये प्रयत्नशील न हो।

यह सभी जानते हैं कि गाँवो मे अथवा देहातो मे बीमारी, दुर्बलता एव गरीबी अधिक है और इसी को दूर करने के लिये हमारा सरकार दृढ सकल्प है तथा इन ग्राम-वासियो की उन्नति के लिये सरकार हर सभव सहायता भी प्रदान कर रही है जिससे हमारे ग्रामवासी सुखी रहकर देश का कल्याण कर सकें। आज इस प्रकार के चिकित्सालय सरकार द्वारा खोले गए हैं और खोलने का प्रयत्न जारी है। जहाँ तक मेरा विचार है और मैं समझता हूँ कि इस विचार से और लोग भी सहमत होंगे कि जब तक गाँवो तक सपूर्ण चिकित्सा सुविधा को नहीं पहुँचा दिया जाएगा, तब तक हमारा काम पूरा नही समझा जाएगा।

आज ऐसे चिकित्सालयों की देश को नितात आवश्यकता है, जहाँ परिवार नियोजन केंद्र भी हो। देश की जनसख्या दिन प्रतिदिन बडी तेजी से बढती चली जा रही है जिसका नियत्रण देश के हित मे है। आज यहाँ परिवार-नियोजन-केंद्र भी है जिसके द्वारा हम जनता मे इसकी उपयोगिता का प्रचार करके, इस तेजी से बढती हुई जन-सख्या को नियत्रित

कर सकते हैं। केवल बच्चो की उत्पत्ति से ही काम पूरा नही हो सकता है जब तक उन बच्चो का चहुँमुखी विकास न हो और उनके सपूर्ण विकास के लिये स्वस्थ होना बहुत ही जरूरी है जिससे उनका मानसिक, शारीरिक और बौद्धिक विकास सभव हो सके। इस प्रकार यह परिवार-नियोजन-केंद्र देश की ज्वलत समस्या को आराम से हल कर सकता है।

गांवो मे गरीबो के पास इतना पैसा नही होता कि वह अपना इलाज कर सके। ऐसी स्थिति मे वे इस प्रकार के चिकित्सालयो से अपना इलाज आसानी से करा सकते हैं जिससे उनका स्वास्थ्य बिगडने से रुक सकता है। परतु एक चीज मैं और आपको कहना चाहता हूँ कि आप अपनी सीमा केवल रोगी के इलाज तक ही सीमित न रखे, बल्कि उनको चाहिए कि लोगो को यह भी बतावे कि वह कैसे स्वय स्वस्थ रहकर औरो को भी स्वस्थ रख सकते है, जिससे वे बीमार न पडे। अगर हमारी जनता नीरोग रहेगी तो देश भी उन्नति की ओर अग्रसर होगा। एक स्वस्थ व्यक्ति ही राष्ट्र की उन्नति मे अपना अधिक योगदान दे सकता है।

मैं जानता हूँ कि जन-स्वास्थ्य मुख्यत राज्य सरकारो का उत्तरदायित्व है। किंतु यह काम इतना बडा है कि केवल सरकारी प्रयत्नो से ही पूर्ण रूपेण सफल नही हो सकता। परोपकारी धनिको एव समाजसेवी संस्थाओ को भी इसमे योगदान देना चाहिए। इस केंद्र की अध्यक्षा और यहाँ के सरकारी वर्ग भी धन्यवाद के पात्र है। मैं भगवान् से प्रार्थना करता हूँ कि यह अस्पताल अपने कार्य द्वारा इस इलाके की जनता की सेवा करने मे प्रयत्नशील रहे।

अंधत्व निवारण के लिये एक अभियान

नेत्रहीनो और नेत्ररोगियो के लिये राष्ट्रीय नेत्र सुरक्षा-सस्था की ओर से यहाँ सेवा और चिकित्सा का जो कार्य हो रहा है, उसे देखने लिये जब मुझे निमत्रण मिला, तो मैंने उसे सहर्ष स्वीकार किया। मैं मानता हूँ कि यह नि स्वार्थ सेवा का कार्य है, इसमे मानवीयता की झलक है। यही नही, यह एक पुण्य का कार्य है, इसलिये, जो भी इसमे अपना योगदान दे रहे हैं, चाहे वे चिकित्सक हो, कार्यकर्ता हो, दानी हो या सचालक, उन सभी का मैं बधाई देता हूँ और ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि आपके प्रयास फलदायी हो।

हमारे देश मे लगभग ३० लाख नेत्रहीन हैं। अधिकतर लोग गाँवो मे ही रहते है जहाँ उनकी सेवा और चिकित्सा के लिये बहुत कम अवसर उपलब्ध है। इसलिये यह वाछनीय ही नही, अत्यन्त आवश्यक है कि उनकी सेवा, चिकित्सा, शिक्षा दीक्षा और रहन सहन के लिये उचित व्यवस्था की जाय। जो लोग ईश्वर की कृपा से भाग्यशाली हैं, शक्तिसपन्न है, उनका यह नैतिक और सामाजिक कर्तव्य है कि वे इन नेत्रहीनो और नेत्ररोगियो के जीवन को यथासभव सुखमय बनाएँ। समाज कल्याण सस्थाओ और स्वास्थ्य सेवाओ का भी यह कर्तव्य है कि वे इन विधिवचितो का सेवा करने मे कोई कसर उठा न रखें।

हम और आप जानते ही है कि नेत्रहीन केवल देख नही सकते, लेकिन उनमे प्रतिभा की कोई कमी नही है। कई ऐसे प्रतिभावान् नेत्रहीनो को मैं जानता हूँ, जो अच्छे कलाकार है, गायक हैं, वाद्यवादक है, शिक्षा-दीक्षा-विद् है और दस्तकार हैं। उनकी प्रतिभा के विकास के लिये, उनकी शिक्षा-दीक्षा और प्रशिक्षण के लिये हम यदि अवसर उपलब्ध कराएँ, तो कोई आश्चर्य नही कि वे समाज का भार न रह कर, उसका एक उपयोगी अग बन सकेंगे। ऐसे लोगो की सहायता करना और उन्हें अपने जीवन निर्वाह के लिये क्षमता प्रदान करना, समाज और राष्ट्रहित का कार्य है। यही नही, यह एक ऐसा मानवीय कार्य है जो किसी भी समाज की उन्नति और सभ्यता का प्रतीक माना जाएगा। इसलिये जो लोग इस कार्य मे रत हैं, वे सचमुच समाज और देश की महत्वपूर्ण सेवा कर रहे हैं।

इससे भी एक और महत्वपूर्ण बात है और वह दृष्टिहीनता की रोकथाम के लिये देशव्यापी अभियान चलाना, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रो मे, आवश्यक है। आज का युग विज्ञान का युग है। चिकित्सा के क्षेत्र मे नितनूतन आविष्कार हो रहे है, नए नए तरीको और साधनो का प्रयोग हो रहा है। ऐसी दशा मे, नेत्ररोगियो की, प्रारभ से यदि हम उचित चिकित्सा का प्रबध कर सके, तो कोई कारण नही कि वे रोगमुक्त न हो जाएँ। पौष्टिकता की कमी के कारण जो लोग इस रोग के शिकार हो जाते हैं, उन्हे यदि पौष्टिक आहार सुलभ किया जाए तो वे भी इस रोग के चगुल से छूट सकते है। मेरा विश्वास है कि सरकारी और गैर सरकारी सस्थाओ के द्वारा इस दिशा मे भी एक राष्ट्रव्यापी अभियान चलाया जाए।

इसी प्रकार दाँतो की रक्षा, दत रोगो की चिकित्सा तथा शल्य चिकित्सा की सुविधाएँ ग्रामीण जनता को उपलब्ध की जा सकें, तो कई रोगो के निवारण और उनकी रोकथाम मे बडा उपयोगी काम हो सकता है। ऐसे शिविर ग्रामीण क्षेत्रो मे लगाए जाने चाहिए, क्योंकि वहाँ तक ये सुविधाएँ कम पहुँचती हैं।

एक बार फिर मै इस शिविर के सचालको, चिकित्सको और कार्यकर्ताओ को उनकी दक्षता और कर्तव्यपरायणता के लिये बधाई देता हूँ और अपनी सहानुभूति का उन्हें आश्वासन दिलाता हूँ।

आपने जिस प्रेम और स्नेह के साथ मेरा समान किया, उसके लिये मैं आप सबका बडा आभार मानता हूँ।

———

नेत्र चिकित्सा

नेत्रहीनो और नेत्र रोगियो की चिकित्सा के लिये नेत्र चिकित्सालय की आधारशिला रखने के लिये, आपने मुझे आमंत्रित किया, उसके लिये मैं आपका आभारी हूँ।

जब भी किसी व्यक्ति के नाम पर कोई स्मारक खडा किया जाता है, तो उसके पीछे यही भावना रहती है कि ऐसे मानवसेवी पुरुष से दूसरो को प्रेरणा मिलती रहे, मानवीय कार्यो के लिये समाज मे उत्साह जागे। दीन दुखी, असहाय एव रोगग्रस्त प्राणी की सहायता करना, उन्हें पीडा और कठिनाई से मुक्त करना एक महान् कार्य है। जो लोग साधनसपन्न हैं, स्वस्थ एव सबल हैं, उनका यह सामाजिक दायित्व है कि वे अपने इन देशवासियो का ख्याल रखे। यह एक निःस्वार्थ सेवा है, जो लोग ऐसे कार्यो मे योग देते हैं और रोगनिवारण मे सहायक हो रहे हैं, वे धन्य है। जो मनुष्य अपने लिये ही जीता है, उसका जीना भी कोई जीना है? ऊँचा जीवन तो वही है जो दूसरो के लिये जिया जाता है। आपको मैं बधाई देता हूँ कि आपने एक अच्छे कार्य का बीडा उठाया है। मेरी यही ईश्वर से प्रार्थना है कि आपके प्रयास फलदायी हो और यह भवन शीघ्र ही बनकर तैयार हो और नेत्रहीनो की चिकित्सा की सुविधाएँ इस क्षेत्र के निवासियो को जुटाने मे समर्थ हो।

हमारे देश मे नेत्रहीनो की सख्या बहुत बडी है, लगभग तीस लाख के करीब आँकी गई है। ग्रामीण क्षेत्रो मे नेत्ररोगो का प्रकोप अधिक है। गाँवो मे तो आप जानते ही हैं कि अभी चिकित्सा की वैसी सुविधाएँ कम है, जैसी नगरो मे हैं। इसलिये यह जरूरी है कि नेत्ररोगो की रोकथाम के लिये उचित व्यवस्था की जाए। चिकित्सा के साथ ऐसी शिक्षा का प्रबध भी किया जाय, जिससे लोग उन असावधानियो से बच सकें, जिनके कारण मनुष्य नेत्ररोगो का शिकार होता है। इसके लिये रहन सहन के तौर तरीको मे परिवर्तन लाना अति आवश्यक है। स्वास्थ्य के नियमो की जानकारी सुलभ कराई जाए, तो ऐसे रोगो से आनेवाली पीढियो को सुरक्षित रखने मे बडी सहायता मिल सकती है। इस दिशा मे केवल समाजकल्याण सस्थाओ और स्वास्थ्य सेवाओ को ही ध्यान नहीं देना है। अन्य जो भी सस्थाएँ इस कार्य

मे सलग्न है, उन्हें भी इन विधिवंचितो का जीवन सुखमय बनाने के प्रयत्न मे अपना सामर्थ्य और साधनो का भरपूर सहयोग देना चाहिए।

यह सभी जानते हैं कि नेत्रहीन केवल देख ही नही सकते, उनकी मानसिक और बौद्धिक क्षमता मे कोई विशेष कमी नही होती। कई ऐसे प्रतिभावान इनमे आपको मिलेंगे जो गायक है, वाद्यवादक हैं, शिक्षाविद् हैं या दस्तकार है। उनकी यह प्रतिभा और भी विकसित होती, यदि उन्हे नेत्र मिल जाते। आँखे तो अनमोल है, परतु जिनसे यह ज्योति छिन गई है, उसे हम यह दे सके तो वह समाज के और अधिक उपयोगी अग बन सकते है। जिनकी चिकित्सा हो सकती है, उनकी चिकित्सा हो, जिनकी नही हो सकती, उन्हे शिक्षा और प्रशिक्षण की सुविधाएँ जुटाकर उन्हे आत्मनिर्भर बनाने की पूरी कोशिश की जानी चाहिए।

आज का युग विज्ञान का युग है। चिकित्सा के क्षेत्र मे दिनो दिन प्रगति हो रही है, नए आविष्कारो द्वारा नित नए साधन और औषधियाँ सुलभ हो रही है। ऐसी दशा मे प्रारभ से ही यदि नेत्र रोगियो की उचित चिकित्सा का प्रबध हो सके, तो इस रोग से बहुत लोगो को छुटकारा दिलाया जा सकता है। पौष्टिकता के अभाव मे जो इस रोग के शिकार होते है, उन्हे यदि पौष्टिक आहार सुलभ किया जाए तो एक बडी मात्रा मे लोगो को इस रोग से बचाया जा सकता है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि इस दिशा मे एक देशव्यापी अभियान चलाया जाए और ऐसे शिविरो का ग्रामीण अचलो मे आयोजन किया जाए, जिनके द्वारा आँख, कान, दाँत इत्यादि के रोगो की चिकित्सा तथा शल्य चिकित्सा की सुविधाएँ जुटाई जा सके, इसके साथ प्रचार भी हो। मैं समझता हूँ कि इस प्रकार हम नेत्र रोगो पर काबू पाने मे सफल होगे, जिस प्रकार मलेरिया और चेचक को रोक सके हैं।

आपने जिस प्रेम और स्नेह से मुझे यहाँ बुलाकर मेरा समान किया, उसके लिए मैं आप सबको पुन धन्यवाद देता हूँ।

अंधों को आत्मनिर्भर बनाने की प्रशंसनीय योजना

मै नेशनल ब्लाइंड रिलीफ ट्रस्ट के प्रबंधको का आभारी हूँ कि आपने मुझे आज के इस समारोह मे उपस्थित होने का अवसर प्रदान किया। यह बडे संतोष और प्रसन्नता की बात है कि आपका यह ट्रस्ट नेत्रहीनो को आत्म-निर्भर बनाने की एक प्रशसनीय योजना को कार्यान्वित करने के लिये तत्पर है।

हमारे देश मे नेत्रहीनो की बहुत गभीर समस्याएँ है। एक अपार जन-शक्ति को किन्ही प्राकृतिक प्रकोपो अथवा असावधानियो के कारण आँखो की ज्योति से हाथ धोने पड जाते है, जिसके बिना मनुष्य भी असहाय और अभागा अनुभव करता है। एक ऐसी कमी जो सारे जीवन मे एक बोझ बनकर रह जाती है। जब कभी हमारे समक्ष आँकडे रखे जाते है, तो दिल काँप उठता है। सारे विश्व के नेत्रहीनो की सख्या का एक तिहाई भाग भारत मे है। इडियन काउसिल आव मेडिकल साइसेज के नवीनतम सर्वेक्षण के अनुसार यह अनुमान लगाया गया है कि अब यह सख्या ७५ लाख तक पहुँच गई है। देशवासियो के लिये सचेत होने तथा सामूहिक रूप से विचार करने का यह विषय है। हमे उन कारणो को दूर करने का भरसक प्रयत्न करना होगा, जिसके कारण आँखो की ज्योति छिन जाती है। हमारे देश मे यह ग्रामीण समस्या है और इसकी पृष्ठभूमि मे है अज्ञान, असावधानी और निर्धनता। अनुमान लगाया गया है कि प्रतिवर्ष १२ हजार बच्चे विटामिन की कमी के कारण अपनी आँख खो बैठते हैं। अंधेपन की इस भयकर प्रकोप से उचित शिक्षा एव जीवन स्तर मे सुयोग्य सुधार द्वारा ही छुटकारा पाया जा सकता है।

देश भर मे नेत्रहीनो के पुनर्वास, चिकित्सा, शिक्षा तथा प्रशिक्षण के लिये जितने भी समुचित प्रयास किए गए हैं, बढती हुई सख्या के लिये पूरे साधन जुटाने मे उनकी आवश्यकताओ को पूरा करने मे सक्षम नही माने जा सकते। सरकार द्वारा जो कार्य सपन्न हो रहा है, उसका एक व्यापक क्षेत्र अवश्य है परतु भारत जैसे देश मे यह काम इतना बडा है कि अकेले सरकार को यह भार सौप देना तर्कसगत नही कहा जा सकता। देशवासियो का सहयोग और सक्रिय योगदान नितात आवश्यक है।

हमारे देश मे कितनी ही ऐसी सस्थाएँ मानवीय भावनाओ से प्रेरित होकर समाज कल्याण का कार्य कर रही हैं। मैं तो कहूँगा कि मानव सेवा तथा समाज कल्याण का बहुत बडा काम अभी शेष है, उसके लिये सुनियोजित ढग से निष्ठापूर्वक तथा सच्चे दिल से जितना भी कार्य किया जा सके, कम है। युग सदर्भ मे यही उचित है कि मानव अपने केंद्रित अहम् से ऊपर उठकर अपने उन भाइयो को विकास पथ पर अपने साथ लेकर चलने का प्रयत्न करे, जिन्हें सहारे की जरूरत है।

अन्य देशो की भाँति हमारे देश मे भी नेत्रहीनो की चिकित्सा, शिक्षा एव प्रशिक्षण की व्यवस्था है। दो सौ से भी अधिक ऐसी सस्थाएँ हैं, जो इस काम मे हाथ बँटा रही है। देश की स्वतत्रता के पश्चात् इन २७ वर्षों मे जो पीढी जवान हुई, उसमे हमारे वे युवक भी शामिल हैं जो अभाग्यवश अपनी आँखो की रोशनी खो बैठे हैं। सरकार तथा विभिन्न सस्थाओं के सतत प्रयासो से उनमे से कितने ही आज अपने पाँव पर खडे होने योग्य बन सके है। उन्हें आज रोजगार चाहिए ताकि वे भी अपने अन्य नागरिको की भाँति आत्मनिर्भर बनकर एक समानित जीवन व्यतीत कर सके। परतु यह काम तब तक सफल नही हो सकता, जब तक समाज अपने दायित्व के प्रति पूरी तरह जागरूक न हो। इनकी कठिनाइयो से कोई भी सभ्य समाज मुख मोड नही सकता। यह एक मानवीय प्रश्न है और इसकी जिम्मेदारी समाज के हर एक नागरिक की है और मुझे यह देखकर प्रसन्नता है कि लोगो मे मानव उपकार का उत्साह उभर रहा है और मैं समझता हूँ कि यह उत्साह जितना प्रबल और गतिमान होगा, हमारी आर्थिक और सामाजिक समस्याएँ उतनी तेजी से कम होगी।

यह तो सभी जानते हैं कि ये लोग अपने पाँव पर खडे होने मे समर्थ और जीवन के विकास क्रम मे आगे पग बढा सकते हैं। परतु उन्हे सहारे की आवश्यकता है जो इन्हें डग भरने के लिये दृष्टि का काम दे। इन्हे उपयोगी नागरिक बनाकर, इनके नीरस जीवन मे ताजगी लाने का काम पुण्यो मे एक श्रेष्ठ पुण्य है।

नेशनल ब्लाइड रिलीफ ट्रस्ट ने नेत्रहीनो तथा अन्य विकलागो को ऊनी वस्त्र, ब्रेल कागज आदि के जो ५०१ उपहार प्रदान किए हैं, वह उनके प्रति सद्भावना का एक प्रतीक है। आज के दिन आपको कुछ उपयोगी उपहार दिए जा रहे है। इनमे मसाले पीसने तथा मोमबत्ती बनाने के उपकरणों

द्वारा आपके लिये रोजगार के जो नए अवसर पैदा होंगे, उनमें आपको स्वावलम्बी बनने में काफी सहायता मिलेगी। मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि ट्रस्ट की ओर से भविष्य में ऐसे उपहार देने की योजना है। मुझे आशा है कि धन की कमी के कारण जहाँ कार्य आरम्भ नहीं किया जा सका, उसकी भी उचित व्यवस्था होगी। मुझे बताया गया है कि ट्रस्ट अपनी एक शेल्टर्ड वर्कशाप खोलने जा रहा है जिसमें नेत्रहीनों को खाने पीने की सुविधा जुटाई जा सकेगी तथा रोजगार के अवसर भी उपलब्ध किए जाएँगे। मैं आपकी इन योजनाओं की सफलता की कामना करता हूँ। वास्तव में इस प्रकार की योजनाएँ राष्ट्रीय स्तर पर आरम्भ की जायें और सुदूर गाँव-गाँव तक पहुँच सकें तो अवश्य ही अपेक्षित लाभ प्राप्त हो सकेगा। मैं समझता हूँ कि समाज का सम्पन्न वर्ग यदि मिलकर छोटी-छोटी उद्योगशालाएँ खोल दे, जहाँ नेत्रहीनों तथा विकलांगों को अपनी जीविका कमाने का अवसर मिल सके तो इस काम में बड़ी सहायता होगी। मुझे आशा है कि आपकी यह योजना कारगर सिद्ध होगी और दूसरे नगरों और कस्बों में भी सम्पन्न वर्गों की सहायता से इस प्रकार के ट्रस्ट स्थापित होंगे।

आज जिनको उपहार मिले हैं, उनको मैं बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि नेत्रहीनों को रोजगार देने के लिये सम्पन्न वर्ग सहानुभूति का दृष्टिकोण अपनाएगा।

———

मानवीय अनुकंपा का कार्य

मुझे जो आज के इस समारोह मे समिलित होने का सुअवसर प्राप्त हुआ उसके लिये मैं रोटरी क्लब आफ देहली नार्थ के सभी सदस्यो तथा यहाँ उपस्थित सभी महानुभावो का आभारी हूँ।

इस क्लब की गतिविधियो से मैं भली भाँति परिचित हूँ। पिछले कई वर्षों से जनसमुदाय के पीडित और पिछडे हुए वर्ग की सेवा मे नि स्वार्थ भाव से सलग्न यह क्लब काफी सराहनीय कार्य करता आ रहा है। वास्तव मे जो भी कार्य किया जाय वह मानव कल्याण की उदात्त भावना से प्रेरित होकर किया जाय तो सामाजिक महत्व का होता है। कितने ही अनगिनत लोग प्रचुर अर्थ और सहायता के अभाव मे क्षय रोग जैसे भयकर रोगो का शिकार हो जाते है। ऐसा भी देखा गया है कि यह भयकर रोग पीढी दर पीढी चलता ही जाता है। और ऐसे रोगग्रस्त घरो मे जहाँ उचित और स्वस्थ वातावरण तथा जलवायु का भी अच्छा प्रबध नही होता, वहाँ उनके बच्चे भी इस रोग से अधिक दिन अपने को नही बचा पाते। ऐसे ही पीडित वर्ग को उठाने, उनकी समस्याओ को समझने और उन समस्याओ का हल ढूंढने के लिये निरतर प्रयास करनेवाली ऐसी अनेक समितियो की देश को आज बडी आवश्यकता है। ऐसे कल्याणकारी कार्यो मे सरकार का सहयोग सदैव रहा है, और विशेष-रूप से क्षयग्रस्त रोगियो के लिये उचित चिकित्सा की व्यवस्था करने के प्रयास निरतर ही होते आ रहे है। परतु ऐसे कल्याणकारी कार्यो मे जनता का और ऐसी सस्थाओ का सहयोग आवश्यक है।

यह हर्ष की बात है कि इस क्लब ने ऐसे बच्चो के लिये, जिनके माता पिता क्षय रोग से पीडित है, एक क्रैच भवन इस चिकित्सालय मे बनवाया है। इसमे १२ बेड्स तथा अन्य सभी चिकित्सा सबधी वस्तुएँ उपलब्ध रहेंगी।

ऐसे क्रैच भवन प्राय विदेशो मे अक्सर देखे गए हैं। परतु यह व्यवस्था भारत मे प्रथम बार की जा रही है। जैसा कि मुझे बताया गया है कि इस योजना की नीव सर्वप्रथम डा० एम० एम० सिह जी ने ही रखी थी और उन्ही की प्रेरणा और मार्गदर्शन से इस क्लब के सदस्यो ने आज उसे पूर्ण कर दिखाया है। निसदेह डा० सिह बधाई के पात्र है। इस क्लब का जैसा उद्देश्य है—

"सर्विस बिफोर सेल्फ"--त्याग, तपस्या, निष्ठा और बलिदान का एक अनूठा उदाहरण है। मुझे आशा है कि देश की अन्य संस्थाओं को इससे प्रेरणा मिलेगी।

मैं क्लब के सभी सदस्यों को उनके इस सराहनीय कार्य के लिये बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि ऐसे ही समाजकल्याण के कार्यों में यह क्लब भविष्य में भी सराहनीय कार्य करता रहेगा। इसके साथ ही मैं इस कैंच भवन का उद्घाटन करता हूँ।

दृष्टिकोण में अपेक्षणीय परिवर्तन

आज का दिन भारत भर मे कुष्ठ निवारण दिवस के रूप मे मनाया जाता है। मुझे इस समारोह मे उपस्थित होने मे बडी प्रसन्नता है। ऐसे अवसर राष्ट्रीय महत्व के होते हैं और आवश्यक समझा जाता है कि कुष्ठ रोग के पीडितो के लिये किए गए राहत के कार्यों पर दृष्टि डालकर यह अनुमान लगाया जाए कि हम इन रोगियो की कितनी सहायता कर सके है, कितना काम अभी शेष है और भविष्य मे हमारे इस कार्यक्रम की क्या रूपरेखा हो कि देश से इस रोग का जड से उन्मूलन किया जा सके। वरिष्ठ नागरिको, चिकित्सको तथा रसायन शास्त्रियो का सहयोग अधिक मात्रा मे उपलब्ध हो सके, तो मैं समझता हूँ कि पाश्चात्य देशो ने जिस प्रकार इस भयकर रोग की रोकथाम के लिये समुचित प्रबध जुटाकर, ऐसे रोगियो को इस असह्य पीडा से बचाने की चेष्टा की है और काफी हद तक इस रोग के निदान मे सफलता प्राप्त की है, हमारे देश से भी इस रोग को मिटाया जा सकेगा। आधुनिक उपलब्धियो तथा वैज्ञानिक प्रगति को देखते हुए, यह आशा की जाती है कि आनेवाले समय मे अन्य रोगो पर मानव जिस प्रकार नियत्रण कर पाया है, कुष्ठ रोग परभी काबू पाया जा सकेगा। परतु अभी जो साधन हमारे पास है, उनको हम पूरी तरह से उपयोग मे ला सके, तो भी एक बडी सख्या को बचाया जा सकता है। सरकारी तथा गैरसरकारी क्षेत्रो मे प्रशसनीय कार्य हो रहा है। परतु इसे अभी एक व्यापक रूप धारण करना है। कुष्ठ रोगियो की जितनी सख्या है, उसे देखते हुए, यही प्रतीत होता है कि अभी बहुत काम शेष है। यह तो आपको मालूम ही है कि पूरे विश्व मे जितने कुष्ठ रोगी है, उनका चौथा भाग भारत मे है। यह दिल दहलाने वाले आँकडे हैं। इस ओर ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता, वर्तमान परिस्थितियो मे कही अधिक है।

रोग कोई भी अच्छा नही। परतु कुछ रोग ऐसे हैं, जो मनुष्य के समूचे जीवन को प्रभावित करते है। उसके समस्त अस्तित्व को निर्जीव बना के रख देते है। ऐसे रोगियो को कितना कष्ट और पीडा सहन करनी पडती है, समाज से वे कितनी दूर हो जाते हैं, हम ऐसे रोगियो की शारीरिक तथा मानसिक यत्रणा का अनुमान लगा सकते है। इनकी दशा अधिक विचारणीय है और

विशेषत भारतीय समाज मे, जहाँ अभी तक वहुत से लोग रूढिगत, अंधविश्वासो से मुक्त नही हो सके है। इन रोगियो को समाज से उतनी सहायता और सहानुभूति नही मिल पाती, जिन्हे इसकी सबसे अधिक आवश्यकता है।

गाधी जी ने हमारी दृष्टि इस ओर आकृष्ट की थी और लोगो के दिलो से छूत का भय दूर किया था। अपने हाथो कुष्ठ रोगियो की सेवा करके उन्होने हमे यही वताया, कि इन अभागे लोगो की सेवा, एक श्रेष्ठ सेवा है। यदि समाज अपने कर्तव्य से पीछे हटना चाहे तो यही समझा जाएगा कि मानव-हृदय से मानवता उठ गई है। कोई भी सभ्य तथा विचारशील व्यक्ति इसे स्वस्थ दृष्टिकोण नही कह सकता, और न ही यह मानवता के हित मे है। सहानुभूति एव करुणा की भावना ने प्रकृति से पिछली मे पिछली मनुष्य जाति का भी हृदय वचित नही रखा। करुणा मनुष्य की वहुमूल्य निधि है। जहाँ करुणा है वहाँ पुरुषार्थ और उत्सर्ग की उत्कृष्ट भावना है। समाज इन मूल्यो के विना निरर्थक समझा जाएगा।

कुष्ठ रोग मे पीडित व्यक्ति समाज के सपूर्ण सरक्षण तथा सहायता का पात्र है। लोगो के दृष्टिकोण मे परिवर्तन आना आवश्यक है। मैं तो समझता हूँ कि एक वडे पैमाने पर ऐसा प्रचार होना चाहिए, जिससे कि निराधार भ्रम दूर हो। इस वीमारी के लक्षणो को तथा कुछ विशेष सावधानियो की जानकारी जनता को सुलभ हो तो मैं समझता हूँ कि इस वीमारी की रोकथाम मे जनता का पूरा सहयोग प्राप्त हो सकेगा और व्यक्ति विशेष को तुरत चिकित्सा की सहायता जुटाकर उसे शारीरिक तथा मानसिक यत्रणा मे वचाया जा सकेगा। यह विशेष ध्यान देना चाहिए कि वच्चे इस रोग के आघात से वचे रहे और परिवार के लोग नि सकोच ऐसे वच्चो का त्याग न करें, वल्कि उनकी तुरत चिकित्सा करवाएँ ताकि ठीक होने पर उनका स्थान अपने घर मे सुरक्षित रहे। हमारे देश मे अज्ञान और सकोच के कारण लोगो मे वीमारी छुपाने का प्रचलन है और यही पहला कारण है कि रोगी पहली अवस्था मे पकड मे नही आता। रोग के वढ जाने पर, शारीरिक दशा शोचनीय हो जाने पर चिकित्सा सस्थानो की ओर रोगी आकृष्ट होता है। इन छोटी छोटी असावधानियो के कारण व्यक्ति और समाज दोनो को एक भारी कीमत चुकानी पडती है। इससे समस्याएँ वढती ही हैं, कम नही होती। ऐसा वातावरण तैयार किया जाना चाहिए कि लोग निश्चित और निर्भय होकर इस कार्य मे अपना सहयोग दें। कुष्ठ निवारण के

लिए जितनी भी संस्थाएँ देश मे कार्यरत है, उनको अपनी गतिविधियो को संस्था के क्षेत्र तक सीमित रखने के बजाय, इसकी सेवाओ को गाँव गाँव तक पहुँचाना चाहिए। ग्रामवासियो को आवश्यक जानकारी उपलब्ध कराई जानी चाहिए। मेरे विचार मे कुष्ठ रोग निवारण सील बेचे जाने चाहिए, जैसे क्षय रोग के सील बेचकर इस कार्य मे पूरी जनता का सहयोग प्राप्त किया जाता रहा है। ऐसा हो तो एक बड़े पैमाने पर कुष्ठ रोगियो की चिकित्सा और पुनर्वास के कार्यो मे बडी सहायता मिलेगी। किसी भी कार्य मे सफलता तभी मिल सकती है, जब पूरी जनता इस कार्य मे भागीदार हो।

कुष्ठ रोगी दया का ही पात्र नही, उसके प्रति समाज का बडा दायित्व भी है, समाज उसे भूल नही सकता। मुझे खुशी है कि हिंद कुष्ठ-निवारण-संघ कई वर्षो से मानव की बडी सेवा कर रहा है। मजबूर लोगो के दुखो को कम करना, एक स्तुत्य कार्य है।

आपके सेवाकार्यों की निरंतर सफलता की मैं कामना करता हूँ और आशा करता हूँ कि अधिक से अधिक लोग इस मानवीय कार्य के लिये आगे आवेगें।

सार्थक कदम

अखिल भारतीय स्वास्थ्य सघ के तत्वावधान मे वैशाखी मेले का यहाँ जो आयोजन किया गया है वह जितना सोद्देश्य है, उतना ही सम्यक् भी है। मुझे यहाँ उपस्थित होने की बडी प्रसन्नता है।

मुझे बताया गया है कि अखिल भारतीय स्वास्थ्य सघ एक स्वायत्त सस्था के रूप मे १९२८ से नारी उत्थान एव सामाजिक स्वास्थ्य की रक्षा के लिये स्थापित हुई थी और यह खुशी की बात है कि तब से आज तक इस सस्था द्वारा सामाजिक क्षेत्र मे काफी कुछ उपयोगी कार्य हुआ है। मैं जानता हूँ कि आपकी सस्था की शाखाएँ समूचे भारत मे फैली हुई है और राह से भटके हुए लोगो को सही रास्ते पर लाने, उन्हें सार्थक जीवन के लिये प्रशिक्षित और प्रेरित कर समाज का एक उपयोगी अग बनाने मे सहायता करने, सामाजिक और नैतिक अपराधो के मूल कारण की ओर जनता का ध्यान आकर्पित करने, इस प्रकार के स्वच्छद जीवन से होनेवाली हानियो, समाज पर पडनेवाले कुप्रभाव इत्यादि की जानकारी उपलब्ध कराने, जैसे अनेको कार्यों को हाथ मे लिया है।

सरकार की ओर से जो सहायता इस सस्था को प्राप्त है, वह कुछ कार्यक्रमो के लिये प्रयोग मे लाई जाती है। परतु अन्य समाज सुधारक प्रवृत्तियो के लिये धन सग्रह इस दृष्टि से किया जाना कि जनता का भी ऐसे कार्यो के लिये बराबर का सहयोग मिले, यह विचार एक उच्च लक्ष्य से प्रेरित होने के कारण, मैं समझता हूँ कि समय समय पर इस प्रकार के आयोजन सगत ही हैं।

भौतिक आवश्यकता मानव जीवन से संवद्ध है, लेकिन व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी है। वह केवल अपने लिये नही जीता और न ही वह अकेला जी सकता है। समाज पर वह सदैव निर्भर करता है। इसलिये व्यक्ति के व्यवहार और आचरण का, जीवनचर्या और गतिविधियो का समाज पर असर पडता है, इस बात से इनकार नही किया जा सकता। नैतिक मूल्यो की अवहेलना, व्यक्ति और समाज दोनो के लिये घातक है, इन चीजो को हम चाहे, नैतिकता के तराजू मे तोलें, चाहे विज्ञान की कसौटी पर परखें,

अतीत के अनुभवो पर यह बात साफ तौर पर जानी जा सकती है कि असामाजिक प्रवृत्तियो ने समाज मे न केवल नाना प्रकार के दोष उत्पन्न किए हैं, बल्कि आनेवाली पीढ़ियो के स्वास्थ्य को भी प्रभावित किया है।

स्वास्थ्य मानव जीवन का आधार है, समाज की शक्ति है तथा राष्ट्र की समृद्धि, उन्नति एव गौरव का प्रतीक है। यह हम जानते हैं कि ऐसी चीजें अज्ञान, उचित शिक्षा के अभाव, लालन पालन मे असावधानी बिना परिश्रम के अपनी महत्वाकाक्षाओ की पूर्ति के स्वप्न लेनेवाली क्षुधा तथा शोषण का प्रतीक है। स्वच्छदता की खुली छूट मिल जाए, तो समाज का स्वरूप कितना विकृत हो सकता है, यह सोचना भी कठिन है। हमे अस्वस्थ समाज नही चाहिए, हमे ऐसा समाज चाहिए, जहाँ मानवता का आदर हो, जहाँ एक दूसरे को सन्मार्ग पर ले चलने का उत्साह हो। जो लोग अपनी राह से भटक जाते है, वे हमारी दया के पात्र है। यह समाज की जिम्मेदारी है कि भूले हुए लोगो का समाज का उपयोगी अग बनने का मौका दे, यह काम कठिन अवश्य है परंतु असभव नही इसके लिये आवश्यकता है कि विलासप्रिय जीवन के स्थान पर श्रमयुक्त जीवन की प्रतिष्ठा हो। आत्म-गौरव और स्वाभिमान की अनुभूति ही जीवन दृष्टि मे एक क्रातिकारी परिवर्तन ला सकती है। यह सभी मानते हैं कि सामाजिक बुराइयो को दूर करने के लिये कानून आवश्यक तो है परतु जन सहयोग के बिना सफल नही हो सकता। वैज्ञानिक और नैतिक आधार लेकर ही हम समाज के बहुत से प्रश्नो का समाधान कर सकते है, इसलिये मै समझता हूँ कि समाज मे स्वास्थ्य रक्षा के लिये स्वच्छता के नियमो को एक व्यापक अर्थ दिया जाना चाहिए। उन कारणो की ओर लोगो का ध्यान आकृष्ट करना चाहिए, जिन से समाज का वातावरण ही दूषित नही होता बल्कि कमजोर हो जाता है।

मै आपके इस जन उपयोगी कार्य को समाज के लिये बहुत मूल्यवान मानता हू और चाहता हूँ कि आपके सत्प्रयासो मे आपको सदैव सफलता मिलती रहे।

---

८. कृतज्ञता

नवभारत के निर्माण में सहयोग

आपने जिस स्नेह और आदर के साथ मेरा समान किया और मेरे प्रति जो सद्भाव प्रकट किए, यह मैं अपने लिये बड़े सौभाग्य की बात समझता हूँ और इसके लिये मैं आप सबका बड़ा आभार मानता हूँ ।

आपने अभी ठीक ही कहा है कि मेरे पहले, भारत के जिन सपूतो ने इस पद को सुशोभित किया है, वे सबके सब अपने अपने क्षेत्र के उज्ज्वल तारे है, पर उनके साथ मेरी गिनती कहाँ ? मैं तो सदा अपने को देश का एक साधारण सेवक समझता हुआ यथाशक्ति देश की सेवा करता रहा । अब भी मेरी वही भावना है और मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि दिन-रात मेरी यही कोशिश रहेगी कि भारतीय जनता के विश्वास और प्रेम का मै पात्र बनूं ।

मैं कर्नाटक का रहनेवाला हूँ । मेरी मातृभाषा कन्नड है और इन दोनों से मेरा गहरा प्रेम और लगाव है, लेकिन फिर भी, मैं सर्वप्रथम अपने को भारतीय मानता हूँ और यह मैं अपने लिये गौरव की बात समझता हूँ । यही नही, मेरी एक और कमजोरी यह है कि जिस किसी से मिलता हूँ, जहाँ कहीं भी जाता हूँ, देश मे विदेश मे, भारत की महान् सभ्यता और संस्कृति की गरिमा का गुणगान करते नही थकता ।

जबलपुर का इतिहास अत्यंत प्राचीन और बड़ा गौरवशाली है । स्वतन्त्रता संग्राम मे, यहाँ के लोगो ने जो अनुपम त्याग किए हैं और जो महत्वपूर्ण योगदान दिया है, वह निश्चय ही जबलपुर के इतिहास मे एक उज्ज्वल अध्याय है । यह बड़ी प्रसन्नता की बात है कि स्वतंत्रता के बाद, इस नगर का सर्वांगीण विकास हो रहा है और आज यह न केवल इस प्रदेश का बल्कि भारत का एक प्रमुख नगर माना जाता है । इसके लिये मैं आप सबको बधाई देता हूँ ।

बड़ी बड़ी सडकें, ऊंचे ऊँचे भवन, शिक्षण सस्थाएँ, आवास और परिवहन की सुविधाएँ, कल कारखाने, ये सब किसी भी नगर की शोभा को अवश्य बढाते हैं, किंतु नगर की असली महानता के मापदड येही नही हो सकते । नगर की सच्ची महानता नागरिको पर आधारित है । आपके नगर मे,

भिन्न भिन्न राज्यो के, धर्मों के और भाषाओ के लोग रहते हैं । नगर की शाति व्यवस्था भग न हो, यहां के लोग मिल जुलकर रहते हो, आपस में एक दूसरे का सहयोग करते हो । नगर को कितना साफ सुथरा रखते हो, भौतिक उन्नति के साथ साथ, नैतिक मूल्यो की ओर भी ध्यान देते हो। वास्तव मे, इन्ही वातो पर किसी नगर की महानता निर्भर रहती है । मुझे यह देखकर वडी खुशी होती है कि पावन नर्मदा के तट पर स्थित इस नगर में सभी धर्मों, भाषाओं, वर्गों और जातियो के लोग मिल-जुलकर रहते हैं और इस नगर को उन्नत और समृद्ध वनाने मे लगे हुए है ।

आज हमारे देश का भाग्य हमारे हाथो मे है । हम एक प्रगतिशील, समाजवादी, लोकतत्रीय भारत का निर्माण करने के लिये कृतसकल्प हैं । देश इतना बडा है और समस्याएँ इतनी विकट हैं कि यह कोई आसान काम नही है, एक वहुत वडी चुनौती है । लेकिन हमे साहस, आत्मविश्वास और दृढ सकल्प से, एक जुट होकर, प्रगति के रास्ते पर आगे वढना है । हमे गरीबी, अज्ञान, वीमारी और वेकारी की समस्याओ को हल करना है । कमजोरो, दलितो और पिछडे हुए लोगो ऊपर उठाना है। यही नही, कही किसी कोने मे, किसी राज्य मे, अतिवृष्टि या किसी दूसरे प्रकार की दैवी विपत्ति आती है और तव हमारे सामने एक वहुत वडा प्रश्न आ जाता है। अभी अभी पटना मे जो भयकर वाढ आई और उससे लोगो को जो अनगिनत मुसीबतें उठानी पडी, वह सब आप जानते ही हैं । ऐसे सकट के समय उन पीडितो और प्रताडितो की सहायता करने मे हरेक को अपना योगदान करना है। यही सच्ची देशभक्ति है, यही सच्ची भारतीयता है और यही मानवता का तकाजा है। हमे यह देखकर प्रसन्नता हुई कि ऐसे सकट के समय सारा देश एक होकर सहायता के कार्य में जुट गया। इन कठिनाइयो व समस्याओ को देखकर आपको और हमको न तो घवराना है और न कर्तव्यविमुख ही होना है। इसका सामना करने के लिये हम मे और आप मे आत्मविश्वास होना चाहिए और आदर्श भी । विज्ञान और टैकनोलाजी की सहायता से राष्ट्र की असीम प्राकृतिक सपदा का विकास कर, भारत को समृद्धिशाली बनाना है। आर्थिक विकास और सामाजिक पुनरुद्धार को साकार करना है ।

आज हमारे देश के लिये दो चीजें आवश्यक हैं। सब से वडी चीज तो यह है कि हमें कोई वात ऐसी नही करनी चाहिए, कोई ऐसा काम नही करना चाहिए जिससे हमारी स्वतंत्रता पर किसी तरह आंच लगे या किसी तरह

का जोखिम आए और इस स्वतत्रता को हम सुरक्षित रख सकें, इसकी योग्यता हमे प्राप्त करनी चाहिए। इसके लिये आवश्यक है कि सारे देश को हम अपना देश समझें।

हमे अपने इतिहास और सस्कृति की एक महान् विरासत मिली है। हमारा कर्तव्य है कि हम अपने पूर्वजो की इस देन मे अपनी कृतियो से इसकी श्रीवृद्धि करें। कुछ आगे वढने का यत्न करें और देश को आगे वढाने मे सहायक बने। यदि हम काम मे जुट जाएँगे, तभी ये सारी बातें सभव होगी। काम करने मे हमारी पूरी श्रद्धा होनी चाहिए। भगवद्गीता मे कहा है --'कुरु कर्मैव तस्मात् त्वम्' अर्थात् तुम्हे काम करने मे जुट जाना चाहिए। आइए, हम और आप एक नए भारत के निर्माण मे--एक ऐसे भारत के जहाँ सबको समान अवसर मिलेंगे, सब सुखी व सपन्न रहेंगे, जी जान से लग जाएँ।

आपने मेरा जो वहुत स्वागत किया और मुझे जो सुदर उपहार दिया, उसके लिये मैं आप सबको बहुत वहुत धन्यवाद देता हूँ। यह नगरनिगम विकास के पथ पर अग्रसर हो और जबलपुर की जनता सदा सुखी व सपन्न रहे, यही मेरी कामना और प्रार्थना है।

सेवा करने का सौभाग्य

इस प्राचीन और ऐतिहासिक नगर मे आपने जिस उत्साह के साथ मेरा स्वागत किया और इस अभिनदनपत्र मे मेरे सवध मे जो कृपापूर्ण शब्द व्यक्त किए हैं, उनके लिये मैं आप सवका अत्यत आभारी हूं। मैं जानता हूँ कि यह मेरे प्रति आपके प्रेम और स्नेह की उदारता है। मैं तो हमेशा अपने को एक साधारण व्यक्ति मानता हूँ और जिन विभिन्न पदो पर रहकर इस महान् देश और जनता की सेवा करने का जो मौका मिला है, उसे मैं अपना परम सौभाग्य समझता हूँ। हाँ, मैं आपको यह आश्वासन अवश्य दे सकता हूँ कि जीवन पर्यंत, किसी भी पद पर रहूँ या न रहूँ, अपने देश की गौरवशाली परपराओ का पालन करूँगा और अपनी महान् सस्कृति के अनुरूप आचरण करने का प्रयत्न करता रहूँगा।

उज्जैन न केवल प्राचीन और ऐतिहासिक नगर है, वल्कि सदा से साहित्य, कला और सस्कृति का विकासस्थल भी रहा है। उज्जयिनी का नाम लेते ही, भारत की सस्कृति की गौरवगाथा और इतिहास का वह स्वर्णयुग हमारी आँखो के सामने चित्रवत् उपस्थित होता है। देवाधिदेव महाशिव महाकाल की महिमा से मडित यह धरती, कलकल करती क्षिप्रा, कविकुल से शोभायमान भोज का वैभवशालो राज्य, महाकवि कालिदास की कल्पनाओ से मुखरित यहाँ की पर्वत और मेघमालाएँ साकार हो उठती हैं। कालिदास के महाकाव्य और नाटक, जिनमे हमारे देश की सस्कृति और साहित्य का विपुल भडार है, हमारी अमूल्य निधि है। वास्तव मे, युगो से सचित अनुभव, सास्कृतिक परंपराओ और नैतिक आदर्शों को उस महाकवि ने अपनी रचनाओ मे प्रतिष्ठापित किया है। उन परपराओ और आदर्शो से आज भी हम प्रेरणा ग्रहण कर सकते हैं। महाकवि कालिदास के देशप्रेम, प्रकृतिप्रेम, राष्ट्रीय एकता और मानवीयता के महान् आदर्शों को हम अपने जीवन मे उतारने का प्रयास कर सकते हैं।

आज हमारे देश मे, हमारी प्रधान मत्री की दूरदर्शिता और दृढ सकल्प के परिणाम स्वरूप एक ऐसे नए युग का सूत्रपात हुआ है, जिसे पूज्य विनोवा जी ने 'अनुशासन पर्व' की सज्ञा दी है। यह हमारे देश के भविष्य के लिये अत्यत महत्वपूर्ण है। हम सवका यह उत्तरदायित्व है कि हम वर्तमान को

सुधारें और भविष्य को ऐसा सँवारे कि वह हमारे अतीत के गौरव के अनुरूप हो। हम इस बात का प्रयत्न करें कि हमारी सांस्कृतिक परंपराएँ और नैतिक आदर्श स्थिर रहें और भविष्य को उज्ज्वल बनाने मे वे सहायक सिद्ध हो। इसलिये आवश्यकता इस बात की है कि साहित्य, सस्कृति और कला के क्षेत्र मे हमारी जो विशेषता है, उसका लाभ सभी को उपलब्ध हो। साथ ही हमारा यह भी प्रयास है कि आज ससार में विज्ञान और टेकनोलाजी की जो अभूतपूर्व उन्नति हो रही है, जो नए नए आविष्कार हो रहे हैं, जो नए नए साधन जीवन को सुखी बनाने के लिये उपलब्ध हो रहे हैं, उन सबको हम अपनाएँ, ग्रहण करें। इस तरह के समन्वय के द्वारा ही हम अपने देश का समुचित विकास कर सकते हैं। हमे यह समझ लेना चाहिए कि कोई भी प्रणाली अथवा विचारधारा न अपने आप मे अच्छी है और न बुरी। हमे यह देखना है कि वह हमारे लिये हमारी प्राचीन परपराओ और वर्तमान परिस्थितियो के परिवेश मे, कहाँ तक उपयोगी हो सकती है। उसे उपयोगी और अपनी आवश्यकताओ के अनुकूल बनाना हमारा काम है। परिवर्तन और सशोधन प्रगति का लक्षण है।

आज हम एक ऐसे समृद्धिशाली भारत का निर्माण करना चाहते है जिसमे सबको उन्नति के लिये समान अवसर उपलब्ध हो, जिसमे कोई पददलित वा प्रपीड़ित न हो, जिसमे जाति पाँति का कोई भेद न हो और सब एक जुट होकर देश को सपन्न बनाने के लिये कार्यरत हो। इसी लक्ष्य की प्राप्ति की प्रधान मत्री का २० सूत्री कार्यक्रम एक कडी है। जनता के पूर्ण सहयोग से ही यह कार्यक्रम सफल हो सकेगा। इसलिये मैं आप लोगो से अनुरोध करता हूँ कि आप इसमे अपना हाथ बटावें।

स्वतत्रता सग्राम मे हमको त्वरित सफलता इसलिये प्राप्त हुई कि हम स्वतंत्रता प्राप्ति के लिये कोई भी त्याग करने के लिये तैयार थे। पूज्य महात्मा जी, पडित जवाहरलाल जी, सरदार पटेल जैसे उन्नायको के नेतृत्व मे पूर्ण विश्वास से काम किया। आज भी यदि हम उसी त्याग, कर्तव्यपरायणता और विश्वास के साथ काम करें तो अपने सपनो के भारत का निर्माण कर सकेंगे। यह एक महान् प्रयास है और एक वहुत वडी चुनौती भी। आइए, हम सब इस प्रयास मे दत्तचित होकर सलग्न हो जाएँ और अचचल आत्मविश्वास और अटूट एकता के साथ इस चुनौती का मुकावला करे।

आप सब ने जिस प्रेम और स्नेह से मेरा स्वागत किया है, उसके लिये फिर एक बार, मैं आप सबको हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। मेरी यह कामना और प्रार्थना है कि उज्जैन का भविष्य उज्ज्वल हो और यहां की जनता सदा सुखी व संपन्न रहे।

संदर्भ

१–सामाजिक और आर्थिक : चुनौतियां समाजवादी लोकमन्त्र के तत्वावधान मे आयोजित राष्ट्रीय सगोष्ठी के उद्घाटन के अवसर पर दिनाक २६ अप्रैल १९७६।

२–लोकमत की जिम्मेदारी : हिंदुस्तान समाचार बबई की रजत जयती समारोह के अवसर पर, दिनाक २७ मार्च १९७५।

३–पचायतो का दायित्व : रायबरेली जिला पचायत समेलन के अवसर पर दिनाक ११ फरवरी १९७६।

४–भूदान की रजत जयती : दिल्ली भूदान रजतजयती समिति के तत्वावधान मे पदयात्रा सप्ताह के उद्घाटन के अवसर पर, दिनाक १२ अप्रैल १९७६।

५–ऐच्छिक सस्थाओ के सहयोग का महत्व : लाल गयालाल ट्रस्ट, कोसीकलाम द्वारा निर्मित भवन के उद्घाटन के अवसर पर, दिनाक १६ फरवरी १९७५।

६–आर्यसमाज और सामाजिक न्याय : आर्यसमाज शताब्दी समारोह, वाराणसी के द्वारा आयोजित आर्य समेलन के उद्घाटन के अवसर पर, २७ फरवरी १९७६।

७–औद्योगिक प्रगति के प्रतीक : नई दिल्ली मे आयोजित 'इडिया ७६' भारतीय औद्योगिक मेले के उद्घाटन के अवसर पर, दिनाक १६ अप्रैल १९७६।

८–मूल्यो के प्रति श्रद्धा अखिल भारतीय दिगबर भगवान् महावीर के २५००वें निर्वाण महोत्सव सघ के तत्वावधान मे इदौर मे आयोजित समारोह के अवसर पर, दिनाक १३ जून १९७६।

९– भावात्मक एकता के साधन दिल्ली शिशु कल्याण परिषद् के तत्वावधान मे आयोजित वसंत मेले के उद्घाटन के अवसर पर; दिनाक ४ फरवरी १९७६।

१०–ग्रामोद्योगो का महत्व भरतपुर जिला खादी ग्रामोद्योग समिति के निरीक्षण के अवसर पर कार्यकर्ताओ को सबोधन, दिनांक ६ दिसबर १९७५।

११–किसानो का किस्सा अखिल भारतीय किसान गोष्ठी के उद्घाटन समारोह के अवसर पर, दिनाक ७ नववर १९७५ ।

१२–मानव कल्याण का एक ठोस कार्य . अखिल भारतीय नशावदी परिषद् के तत्वावधान मे आयोजित प्रशिक्षण शिविर के उद्घाटन के अवसर पर, दिनाक १ फरवरी ।

१३–देश की उन्नति मे महिलाओ का योगदान अतरराष्ट्रीय महिलावर्ष के उपलक्ष्य मे फिल्म समारोह के अवसर पर, दिनाक २५ दिसवर १९७५ ।

१४–सामूहिक अनुभूति का विस्तार · भारत विकास परिषद् के तत्वावधान मे आयोजित राष्ट्रीय समूहगान प्रतियोगिता समारोह के अवसर पर, दिनाक ४ फरवरी १९७६ ।

१५–नैतिकता के सरक्षक ' अखिल भारतीय जैन युवक सघ के तत्वावधान मे आयोजित समारोह के अवसर पर, दिनाक २६ मई १९७६ ।

१६–सामूहिक अनुभूति का विस्तार भारत विकास परिषद के तत्वावधान मे आयोजित राष्ट्रीय समूहगान प्रतियोगिता समारोह के अवसर पर, दिनाक ४ फरवरी १९६६

१७–नैतिकता के सरक्षक अखिल भारतीय जैन युवक सघ के तत्त्वाधान मे आयोजित समारोह के अवसर पर, दिनाक २६ मई १९७६

१८–कर्मवीरों की जन्मभूमि राजस्थान सस्था सघ, दिल्ली, के तत्वावधान में आयोजित राजस्थान दिवस समारोह के अवसर पर दिनाक ३० मार्च १·७६ ।

१९–सीमा के मरक्षक : भारत तिव्वत सीमा पुलिस के जवानों को जोशीमठ मे सवोधन, दिनाक २१ मार्च १९७६ ।

२०–भविष्य का मार्ग नेशनल चेम्बर आफ इडस्ट्रीज ऐंड कामर्स, उत्तर प्रदेश, आगरा, की रजत जयती समारोह के अवसर पर, दिनाक २८ दिसवर १९.४ ।

२१–देश और भापा : दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास, के दीक्षात समारोह के अवसर पर, दिनाक १२ जुलाई १९७५ ।

२२–सद्भावना और प्रेम का नया युग 'आलोक भरती' (मासिक) के विशेपाक 'विश्व हिंदी समेलन उपलब्धि अक' के प्रकाशनोद्घाटन के अवसर पर; दिनाक ६ जून १९७५ ।

२३–हिंदी की उपलब्धियां विश्व हिंदी समेलन, नागपुर, के समापन समारोह के अवसर पर, दिनाक १३ जनवरी १९७५।

२४–हिंदी के लिये एक समन्वित स्वरूप कर्नाटक महिला हिंदी सेवा समिति के दीक्षात समारोह के अवसर पर, दिनाक १५ जुलाई १९७५ ।

२५–साहित्यिक आदान प्रदान की आवश्यकता . हिंदी साहित्य समिति, भरतपुर की हीरक-जयती समारोह के अवसर, दिनाक ६ दिसबर १९७५ ।

२६–राष्ट्रभाषा . सही परिप्रेक्ष्य : भारतीय हिंदी परिषद्, कालीकट, के तत्वावधान मे आयोजित २७ वे अधिवेशन के समापन के अवसर पर, दिनाक ३१ दिसबर १९७५।

२७–राजभाषा अखिल भारतीय हिंदी सस्था सघ तथा हिंदी विद्यापीठ, देवघर, के तत्वावधान मे आयोजित द्वितीय राजभाषा समेलन के उद्घाटन के अवसर पर, दिनाक १४ मई १९७६ ।

२८–उद्बोधक सतवर : श्री विवेकानद जी . विवेकानद प्रतिष्ठान परिषद् के तत्वावधान मे आयोजित स्वामी विवेकानद जयती समारोह के अवसर पर, दिनाक ११ जनवरी १९७६ ।

२९–त्यागमय जीवन की शिक्षा : सत ज्ञानेश्वर जी वाराणसी मे सत ज्ञानेश्वर महाराज की स्मृति मे आयोजित समारोह मे, दिनाक २१ फरवरी १९७६ ।

३०–सत्य के आराधक गुरु तेग बहादुर यमुना नगर मे गुरु तेग बहादुर के तीन सौवे शहीदी दिवस के अवसर पर, दिनाक २ नवम्बर १९५५ ।

३१–धर्म के अनोखे प्रचारक आचार्य श्री तुलसी जी आचार्य श्री तुलसी जी के ५० वर्ष सपन्न होने पर, शिक्षा कल्याण समारोह के अवसर पर, दिनाक २८ दिसबर १९७५ ।

३२–गीता का सदेश . गीता जयती के समापन समारोह के अवसर पर, दिनाक २१ दिसबर १९७५ ।

३३–भगवान् महावीर अखिल भारतवर्षीय दिगबर जैन विद्वत्परिषद के तत्वावधान मे आयोजित समारोह के अवसर पर, दिनाक २ फरवरी १९७५ ।

३४ धर्म का सही रूप पाचवें विश्व धर्म समेलन के अवसर पर, दिनाक २२ नवबर १९७४

३५ एक समाज सुधारक सगठन अंतरराष्ट्रीय आर्य समाज स्थापना शताब्दी समारोह के उद्घाटन के अवसर पर, दिनाक २४ दिसबर १९७५

३६ भूखे भजन न होय विश्वकल्याण आध्यात्मिक परिषद् के तत्वावधान मे आयोजित आध्यात्मिक तथा सास्कृतिक समेलन के अवसर पर, दिनाक ८ फरवरी १९७६

३७ मानव धर्म मानव धर्म मिशन के तत्वावधान मे आयोजित मानव धर्म-सम्मेलन, कुरुक्षेत्र, के उद्घाटन के अवसर पर, दिनाक ३ मई १९७५

३८ आध्यात्मिक मूल्यो का पुनरुत्थान ज्ञान बोध सभा के तत्वावधान मे आयोजित समारोह के अवसर पर; दिनाक २१ दिसम्बर १९७५

३९ विश्व कल्याण विश्व कल्याण आध्यात्मिक परिषद् के तत्वावधान मे आयोजित आध्यात्मिक तथा सास्कृतिक समेलन के अवसर, दिनाक ८ फरवरी १९७६

४० विश्वशाति सर्वधर्म समभाव विश्वशाति महायज्ञ के आयोजन के अवसर पर, दिनाक २२ जनवरी १९७५

४१ आत्मोन्नति के उन्नायक फिरोजाबाद मे भगवान गोमटेश्वर जी की मूर्ति के स्वागत तथा प्रस्थापना के अवसर पर दिनाक १२ जून १९७५

४२ कालिदास साहित्य देवी का विलास कालिदास समारोह समिति, उज्जैन, के तत्वावधान मे आयोजित अष्टदश कालिदास समारोह के समापन के अवसर पर, दिनाक २० नवम्बर १९७५

४३ विद्यापति : सस्कृति के सेवक मिथिला सघ, दिल्ली, के तत्वावधान मे आयोजित विद्यापति स्मृति समारोह के अवसर पर, दिनाक २३ मई १९७६।

४४ मीरा नारी चेतना की उन्नायक मीरा प्रतिष्ठान महिला मडल, उदयपुर, के तत्वावधान मे आयोजित 'मीरा व्याख्यान माला' के उद्घाटन के अवसर पर, दिनाक, २० अक्तूबर १९७५।

४५ साहित्य और राष्ट्रोत्थान नागरी प्रचारिणी सभा दिल्ली, के तत्वावधान मे आयोजित 'रामचरितमानस' रचना दिवस समारोह के उद्घाटन के अवसर पर, दिनाक १ अप्रैल १९७६।

४६ साहित्य के द्वारा मानव हित की साधना भाई वीर सिंह के जन्म जयती के अवसर पर, दिनाक ५ दिसबर १९७५।

४७ साहित्यकारो एव कलाकारो का दायित्व · भारत विकास परिषद् के

तत्वावधान मे आयोजित राष्ट्रीय समूहगान प्रतियोगिता समारोह के अवसर पर; दिनाक ४ फरवरी १९७६।

४८ चित्रकला चित्रकला सगम, नई दिल्ली, के तत्वावधान मे आयोजित समारोह के अवसर पर; दिनाक १० फरवरी १९७६।

९–'गोरखनाथ और पाडुलिपियो की सस्कृत ग्रथ सूची नागरी प्रचारिणी सभा के द्वारा प्रकाशित पुस्तको के प्रमोचन के अवसर पर, दिनाक १२ जून १९७६

५०–आदर्श का अनावरण दिल्ली नगर निगम की ओर से कुदसिया बाग मे स्थापित महाराणा प्रताप की प्रतिमा के अनावरण के अवसर पर, दिनाक १९ फरवरी १९७६।

५१–स्वातत्र्य सग्राम के महान योद्धा श्री नेताजी : नेताजी सुभाषचद्र बोस की प्रतिमा अनावरण के समारोह के अवसर पर, दिनाक २३ फरवरी १९७५।

५२–कर्मयोगी श्री राजेंद्र प्रसाद जी बिहार एसोसिएशन, दिल्ली के तत्वावधान मे आयोजित स्वर्गीय डा० राजेंद्र प्रसाद जी की जन्म जयती के अवसर पर, दिनाक ३ दिसंबर १९७५।

५३–तप और त्याग की मूर्ति : श्री लालबहादुर शास्त्री जी श्री लालबहादुर शास्त्री सेवा निकेतन के तत्वावधान मे आयोजित श्री लालबहादुर शास्त्री जी की दसवी पुण्य तिथि के अवसर पर दिनाक ११ जनवरी १९७६।

५४–राष्ट्रीयता का स्थायी आधार श्री फखरुद्दीन अली अहमद . राष्ट्रपति श्री फखरुद्दीन अली अहमद जी के ७१ वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य मे आयोजित एकता दिवस समारोह के उद्घाटन के अवसर पर, दिनाक १३ मई १९७६।

५५–हिंदी जगत् की एक महान विभूति . श्री श्यामसुदर दास : श्री श्यामसुदर दास जी जन्मशती समापन समारोह के अवसर पर; दिनाक १९ मई १९७५।

५६–मानवकल्याण के साधक : श्री आनदी लाल पोद्दार · श्री आनंदी लाल पोद्दार जन्म-शताब्दी समारोह के अवसर; दिनाक ७ सितंबर १९७४।

५७–व्यक्तित्व का निर्माण . श्री एस० आर० सनातन धर्म उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, लाजपतनगर, नई दिल्ली के वार्षिक समारोह के अवसर पर, दिनाक ३ दिसंबर १९७५।

५८–राष्ट्र के प्रति अपना दायित्व : केम्ब्रिज विद्यालय नंबर–२ के वार्षिकोत्सव के अवसर पर, दिनांक १३ दिसंबर १९७५।

५९–समाज की एक जिम्मेदारी : मूक-बधिर बच्चों के फिनर्ज नर्सरी स्कूल के उद्घाटन के अवसर पर, दिनांक २ अक्तूबर १९७४।

६०–अशांति के कारण : मोतीराम आर्य सीनियर माडल स्कूल, चंडीगढ़ के स्वर्ण जयंती समारोह के अवसर पर, दिनांक ५ फरवरी १९७४।

६१–परिवार की खुशहाली : उदयपुर विश्वविद्याय के गृहविज्ञान कालेज के भवन के शिलान्यास के अवसर पर, दिनांक २० अक्टूबर १९७५।

६२–व्यास शिक्षा : अखिल भारतीय संस्कृत शिक्षा संमेलन के तत्वावधान में आयोजित 'व्यास शिक्षा' प्रमोचन समारोह के अवसर पर, दिनांक १७ जुलाई १९७६।

६३–समाज के नन्हें पौधे, अंकुर नर्सरी स्कूल, चण्डीगढ, द्वारा आयोजित समारोह के अवसर पर; दिनांक ३ मार्च १९७६।

६४–आशाओं के अनुरूप शिक्षा का स्वरूप : फिरोजगांधीमहाविद्यालय, रायबरेली, के दीक्षांत समारोह के अवसर पर; दिनांक ११ फरवरी १९७६।

६५–शिक्षण का पुनर्निर्माण : लालगंज डिग्री कालेज, रायबरेली, के वार्षिकोत्सव के अवसर पर, दिनांक ११ फरवरी १९७६।

६६–हमारी शिक्षण पद्धति : दिगंबर जैन महाविद्यालय, बड़ौत, के दीक्षांत समारोह के अवसर पर, दिनांक २ मई १९७६।

६७–महिलाएँ और शिक्षण : जैन स्थानक-वासी महिला डिग्री कालेज, बड़ौत, के प्रथम दीक्षांत समारोह के अवसर पर, दिनांक २ मई १९७६।

६८–योग्य शिक्षण प्रणाली : दिगंबर जैन महाविद्यालय, बड़ौत, के दीक्षांत समारोह के अवसर पर, दिनांक २ मई १९७६।

६९–आज के तीर्थ स्थान : डी ए वी इंटर कालेज, बुलंदशहर, के छात्रसंघ में, दिनांक ४ फरवरी १९७५।

७०–अच्छी शिक्षा देने की आवश्यकता : गांधी बाल निकेतन मांटेसरी स्कूल, बुलंदशहर, में, दिनांक ४ फरवरी १९७५।

७१–प्रगति के पथ पर आयुर्वेद : आयुर्वेद चिकित्सालय, हरचंदपुर (रायबरेली) के उद्घाटन के अवसर पर, दिनांक ११ फरवरी १९७५।

७२–स्वास्थ्य केन्द्रो की स्थापना : उच्चीकृत प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, लाल गज (रायबरेली) के शिलान्यास के अवसर पर, दिनाक ११ फरवरी १९७६

७३–अधत्व निवारण के लिये अभियान : राष्ट्रीय नेत्र सुरक्षा संस्थान, उज्जैन, के तत्वावधान मे आयोजित नेत्र सुरक्षा प्रदर्शनी के उद्‌घाटन के अवसर पर; दिनाक २१ नवबर १९७५

७४–नेत्र चिकित्सा : मोहन सिह स्मारक नेत्र चिकित्सालय, रायबरेली, की आधार शिला रखने के अवसर पर; दिनाक ११ फरवरी १९७६।

७५–अधो को आत्मनिर्भर बनाने की प्रशसनीय योजना. नेशनल ब्लाइड रिलीफ ट्रस्ट के समारोह के अवसर पर, दिनाक १९ दिसबर १९७४।

७६–मानवीय अनुकपा का कार्य ' रोटरी क्लब आफ देहली के द्वारा निर्मित ऋैच भ॰न उद्‌घाटन के अवसर पर राजेन बाबू टी. वी. चिकित्सालय, किग्जवे कैंप, दिल्ली मे, दिनाक १० जून १९७५

७७–दृष्टिकोण मे अपेक्षणीय परिवर्तन: हिंद कुष्ठ निवारण सघ के तत्वावधान मे आयोजित कुष्ठ निवारण दिवस के अवसर पर; दिनाक ३० जनवरी १९७५।

७८–सार्थक कदम : अखिल भारतीय स्वास्थ्य सघ के तत्वावधान मे आयोजित वैशाखी मेले के अवसर पर, दिनाक १० अप्रैल १९७६।

७९–नवभारत के निर्माण मे सहयोग. जबलपुर नगर निगम के तत्वावधान मे आयोजित अभिनदन समारोह मे, दिनाक ८ नवबर १९७५।

८०–सेवा करने का सौभाग्य . उज्जैन नगर निगम की ओर से आयोजित नागरिक अभिनदन के अवसर पर; दिनाक २१ नवबर १९७५।
